14

ह्रास

टिप्पणी

व्यवसाय की सम्पत्तियों पर व्यय जैसे फर्नीचर, फिक्सचर एवं दुकान की फिटिंग, मोटर कार, मशीन और औजार ये सभी वर्ष के न तो सामान हैं और न ही खर्चे। इस प्रकार के व्यय व्यवसाय को बहुत वर्षों तक सेवाएं प्रदान करते हैं और इसलिए ये स्थायी सम्पत्तियां कहलाते हैं। यदि स्थायी सम्पत्तियों पर व्यय किसी भी एक साल के लाभ में से घटाया जाए, तो यह गलत हो जाएगा। जबकि उसका फायदा व्यवसाय में एक से अधिक वर्षों तक मिलता है। सही तो यह रहेगा कि उनकी लागत को व्यवसाय के लिए उनके उपयोगी वर्षों में बांट दिया जाए। स्थाई सम्पत्तियों की लागत के जिस भाग को प्रति वर्ष व्यय माना जाएगा वह ह्रास कहलाता है।

इस अध्याय में आप ह्रास को लगाने की विधि और उसके अर्थ के बारे में जानेंगे और ह्रास को खातों की किताबों में अभिलेखित करना सीखेंगे। साथ ही स्थायी सम्पत्ति खाते को तैयार करना भी सीखेंगे।

उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात आप :

- ह्रास की अवधारणा और अर्थ को समझ सकेंगे;
- ह्रास के कारणों का वर्णन कर पाएंगे;
- ह्रास के उद्देश्यों का वर्णन कर सकेंगे;
- ह्रास को प्रभावित करने वाले कारक बता सकेंगे;
- ह्रास लगाने की विधियों को समझ सकेंगे एवं
- स्थायी सम्पत्ति खाता तैयार कर पाएंगे जिसमें प्रत्येक वर्ष के ह्रास की राशि को दर्शाया गया हो।

टिप्पणी

14.1 ह्रास का अर्थ

आप पहले से ही सम्पत्तियों और देनदारियों के अर्थ को जानते हैं। सम्पत्तियों को मुख्यतः दो श्रेणियों में विभक्त किया गया है, चालू सम्पत्तियाँ (नकद, देनदार या ग्राहकों का शेष, माल और सामग्री का स्टॉक) और स्थायी सम्पत्तियाँ (भवन, फर्नीचर एण्ड फिक्सचर्स, मशीन, प्लांट, मोटर वाहन)।

स्थायी सम्पत्तियाँ लम्बे समय तक की सम्पत्तियाँ कहलाती हैं, क्योंकि वे व्यवसाय को एक वर्ष से अधिक वर्षों तक फायदा पहुँचाती हैं। अधिकतर स्थायी सम्पत्तियों के मूल्य में समय व्यतीत होने के साथ उनके प्रयोग में कमी आती है तथा किसी नए अविष्कार के होने, बदलते फैशन आदि कारणों से भी कमी होती है। इसलिए उनके उपयोगी जीवन काल के समाप्त होने पर उनको बदलते रहना चाहिए। इसलिए स्थायी सम्पत्ति की कीमत उसके उपयोगी जीवन काल में बांट दी जाती है। प्रत्येक वर्ष के भाग को उस वर्ष का ह्रास माना जाता है।

उदाहरण के लिए एक कार्यालय के लिए कुर्सी ₹ 2,500 में खरीदी और यह अनुमान लगाया कि दस साल बाद यह बेकार हो जाएगी। कुर्सी के उपयोगी जीवन काल के दस वर्षों में उसकी लागत के ₹ 2,500 को बांट दिया जाएगा। प्रतिवर्ष के भाग की गणना निम्न प्रकार से की जाएगी।

$$\text{ह्रास} = \frac{\text{सम्पत्ति की लागत - अवशेष मूल्य (अगर है तो)}}{\text{सम्पत्ति का जीवन}}$$

$$\frac{₹\ 2{,}500}{10} = ₹\ 250$$

इसलिए ₹ 250 प्रत्येक वर्ष का ह्रास व्यय है।

इस प्रकार से ह्रास एक व्यय है, जो साल के दौरान स्थायी सम्पत्तियों के मूल्य में होने वाली कमी है। यह निम्न कारणों से होता है।

- इसके प्रयोग के कारण एवं समय व्यतीत होने के साथ–साथ सामान्य घिसावट एवं टूट–फूट।
- टैक्नोलॉजी, फैशन, तथा अन्य बाजार की स्थितियों के रूचि बदलने के कारण प्रचालन से बाहर होना।

14.2 ह्रास के कारण

निम्नलिखित कारणों से सम्पत्तियों में ह्रास हो जाता है :

(i) सामान्य घिसावट

अ) इस्तेमाल करने के कारण : प्रत्येक सम्पत्ति का एक जीवन होता है, जिसमें इसका प्रयोग होता है तथा यह उत्पादन करती है या सेवा देती है। यदि किसी सम्पत्ति का इस्तेमाल लगातार होता रहता है तो उसके मूल्य में कमी आ जाती है। जैसे कि एक साईकिल के लगातार चलने और इस्तेमाल करने से उनके कार्य करने की क्षमता और कुशलता में कमी आ जाती है।

ब) समय व्यतीत होने के कारण : जैसे–जैसे समय व्यतीत होता है, प्राकृतिक तत्वों जैसे– हवा, रोशनी, बारिश इत्यादि वैज्ञानिक कारणों से भी सम्पत्तियों के भौतिक रूप से कमी के कारण उसकी की कीमत में कमी आती है। जैसे फर्नीचर को चाहे हमने उसे इस्तेमाल भी नहीं किया हो, समय व्यतीत होते–होते उसकी कीमत में कमी आ जाती है।

(ii) अप्रचलन

अ) नए एवं श्रेष्ठ उपकरणों के विकास के कारण : कभी–कभी पुरानी स्थाई सम्पत्तियों को इनमें से किसी एक कारण से उनके वास्तव में अनुपयोगी हो जाने से पहले ही, उपयोग में लाना बंद कर दिया जाता है। अच्छे औजार मशीनों के आने पर कम कीमत पर माल का उत्पादन होता है; इस तरह से यह पुराने औजारों को कीमत रहित कर देते हैं। क्योंकि वो ऊँची कीमत पर माल का उत्पादन करते हैं तथा इसे प्रतियोगी नहीं रहने देते। जैसे डीजल और इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव आने से भाप का इंजन बेकार हो गया।

ब) फैशन, स्टाइल, रूचि अथवा बाजार की स्थिति के बदलने के कारण : वस्तुओं और सेवाओं की मांग में कमी सम्पत्तियों को अप्रचलित कर देती है। जो फैशन, स्टाइल, रूचि या बाजार की स्थिति में परिवर्तन के कारण का ही परिणाम हो सकता है। उन सम्पत्तियों के मूल्यों में कमी आ जाती है, जो उन वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में लगी थी, जिनकी अब कोई मांग नहीं है, जैसे फैक्ट्रियां या मशीन जो पुराने फैशन के हैट, जूते, फर्नीचर आदि बनाती थी।

इन कारणों से स्थायी सम्पत्तियों के मूल्यों में हुई हानि का कारण अप्रचलन कहलाता है और यह ह्रास के रूप में व्यय माना जाता है।

14.3 ह्रास के उद्देश्य

सम्पत्तियों पर ह्रास लगाने के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

i) व्यवसाय की सही वित्तीय स्थिति दर्शाना : स्थाई सम्पत्तियों का प्रभावपूर्ण उपयोगी जीवन होता है, जिसमें इसका मितव्ययी प्रचालन किया जा सकता है। ह्रास स्थाई सम्पत्ति के मूल्य में निरन्तर कमी को कहते हैं। सम्पत्तियों के निरन्तर प्रयोग करने

के कारण उनके मूल्य में कमी हो जाती है। यदि ह्रास की व्यवस्था नहीं की जाती है, तो लाभ हानि खाता किसी एक लेखा वर्ष में अर्जित सही लाभ को नहीं दर्शाएगा तथा स्थिति विवरण (Balance-Sheet) में सम्पत्तियाँ बढ़े हुए मूल्य पर लिखी जाएँगी। इस प्रकार स्थिति–विवरण से व्यापार की वित्तीय स्थिति का ठीक ज्ञान नहीं हो सकेगा। यदि वर्ष दर वर्ष ह्रास की अनदेखी की जाती है तो सम्पत्ति के पूर्ण रूप से क्षय हो जाने पर व्यवसायी व्यवसाय को सरलता से नहीं चला पाएगा।

टिप्पणी

ii) **सम्पत्ति का पुनर्स्थापन करने के लिए व्यापार में कोष स्थापित करना :** शुद्ध लाभ स्वामी द्वारा व्यवसाय में लगाई पूँजी का प्रतिफल होता है, जिसे वह नकद रूप में निकाल सकता है। यदि ह्रास लगाया जाएगा तो इससे शुद्ध लाभ कम हो जाएगा और स्वामी द्वारा निकाली गई राशि भी कम हो जाएगी और ह्रास के बराबर की नकदी व्यवसाय में ही रह जाएगी और इस सम्पूर्ण राशि से स्वामी एक नई सम्पत्ति को स्थापित करने के योग्य हो जाएगा।

पाठगत प्रश्न 14.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. ह्रास स्थायी सम्पत्तियों के मूल्यों में ____________ वर्णित करती है।

ii. सम्पत्ति के अवशेष मूल्य का अभिप्राय वह ____________ जिसपर स्थायी सम्पत्ति को ____________ पर बेचा जाता है।

iii. ह्रास को ज्ञात करने के लिए सम्पत्ति के लागत मूल्य में से अवशेष मूल्य को घटाकर ____________ से भाग देते हैं।

iv. अप्रचलन स्थायी सम्पत्तियों की ऐसी स्थिति है, जो ____________ फैशन, रूचि और अन्य बाजार की स्थिति के बदलने के कारण पैदा होती है।

14.4 ह्रास को प्रभावित करने वाले कारक

नीचे सम्पत्ति पर लगाए जाने वाले ह्रास की राशि को प्रभावित करने वाले कारक दिए गए हैं :

i) **सम्पत्ति का लागत मूल्य :** सम्पत्ति की लागत, सम्पत्ति की क्रय राशि होती है और उसमें वे समस्त व्यय जुड़े होते हैं, जो उस सम्पत्ति को इस्तेमाल करने से पहले होते हैं। उदाहरण के लिए सम्पत्ति को उसके उपयोग स्थल तक लदवाने व उतारने में हुए व्यय, गाड़ी भाड़ा, किराया, स्थापना व्यय। इसको खड़ा करने या इसके एसेम्बल करने पर व्यय।

ii) सम्पत्ति का उपयोगी जीवन काल : सम्पत्ति कितने वर्षों तक काम आती रहेगी यही उसका उपयोगी जीवन काल है।

iii) अवशेष मूल्य : सम्पत्ति जब कार्य के योग्य नहीं रहेगी तो जिस मूल्य पर वह बेची जाएगी, यह कबाड़ का मूल्य अवशिष्ट मूल्य है।

iv) सम्पत्ति का ह्रासित मूल्य : सम्पत्ति की लागत मूल्य में से सम्पत्ति के अवशिष्ट मूल्य को घटाकर सम्पत्ति का ह्रासित मूल्य ज्ञात किया जाता है।

उदाहरण 1

एक जेनरेटर ₹ 5,00,000 का खरीदा था। ₹ 1,500 क्रेन ओपरेटर को ट्रक पर लदवाने के दिए, ₹ 7,000 जेनरेटर को फैक्ट्री तक पहुँचाने के लिए दिए। ₹ 2,000 फैक्ट्री साइट पर पहुँचने पर उसको उतरवाने के लिए दिए। यह अनुमान लगाया कि जनरेटर 10 वर्षों तक चलेगा। उसके बाद यह ₹ 60,000 में बिक जाएगा। जेनरेटर के ह्रासित मूल्य की गणना कीजिए।

सम्पत्ति का लागत मूल्य :	क्रय मूल्य	₹ 5,00,000
	लदवाने का व्यय	₹ 1,500
	परिवहन	₹ 7,000
	उतरवाने का व्यय	₹ 2,000
	कुल	**₹ 5,10,500**

जेनरेटर का उपयोगी जीवन काल 10 साल है

अवशेष मूल्य ₹ 60,000

जेनरेटर का ह्रासित मूल्य= ₹ 5,10,500 – ₹ 60,000

= ₹ 4,50,500

14.5 ह्रास लगाने की विधियां

ह्रास लगाने की प्रचलित पद्धतियां हैं : (1) सरल रेखा पद्धति एवं (2) ह्रासित शेष पद्धति।

(1) सरल रेखा पद्धति

इस पद्धति के अनुसार ह्रास की राशि सालों–साल एक जैसी रहती है। माना, अगर एक सम्पत्ति का लागत मूल्य ₹ 1,00,000 है और उसपर स्थायी रूप से 10% की दर से ह्रास लगाना है। तब ₹ 10,000 प्रत्येक वर्ष ह्रास के अपलिखित होंगे। इसलिए इस विधि को ''स्थायी किश्त विधि'' या ''मूल लागत विधि'' कहते हैं। इस विधि के अनुसार, प्रत्येक वर्ष निम्न तरीके से राशि निकालकर अपलिखित कर देंगे :

$$\text{प्रत्येक वर्ष का ह्रास} = \frac{\text{सम्पत्ति का लागत मूल्य - अवशेष मूल्य}}{\text{अनुमानित जीवन अवधि}}$$

सम्पत्ति के लागत मूल्य में से उसके अवशेष मूल्य को घटाकर उसे उसके अनुमानित जीवन अवधि से भाग कर दिया जाता है।

उदाहरण के लिए : एक मशीन ₹ 1,20,000 की खरीदी। उसका अनुमानित जीवन काल 10 साल है। उसका अवशेष मूल्य ₹ 20,000 है। एक साल के ह्रास की गणना नीचे की गई है :

$$\textbf{प्रत्येक वर्ष का ह्रास} = \frac{₹\ 1,20,000 - ₹\ 20,000}{10} = ₹\ 10,000$$

यदि उसका अवशेष बेचा नहीं जा सकता या उसके अवशेष से कोई पैसा वसूल नहीं किया जा सकता तो तब एक वर्ष का ह्रास होगा :

$$\textbf{प्रत्येक वर्ष का ह्रास} = \frac{₹\ 1,20,000}{10} = ₹\ 12,000$$

इस विधि के अनुसार ह्रास की राशि प्रत्येक वर्ष एक जैसी ही रहेगी। इसलिए यह विधि सरल रेखा पद्धति, स्थायी किश्त पद्धति या मूल लागत विधि कहलाती है।

उदाहरण 2

एक मशीन 1 जनवरी 2011, को ₹ 1,00,000 में खरीदी गई। उसका जीवनकाल 10 वर्ष है। अपने जीवन काल को पूरा करने के पश्चात मशीन के अवशेष से कुछ भी राशि प्राप्त नहीं होगी। यह निश्चय किया गया कि मशीन पर सरल रेखा पद्धति से 10% का ह्रास लगाया जाएगा।

मशीन के जीवन अवधि में प्रत्येक वर्ष के ह्रास की राशि की गणना कीजिए।

हल :

वर्ष	ह्रास की दर	ह्रास की राशि (₹)
2011	10%	10,000
2012	10%	10,000
2013	10%	10,000
2014	10%	10,000
2015	10%	10,000
2016	10%	10,000
2017	10%	10,000

2018	10%	10,000
2019	10%	10,000
2020	10%	10,000

ह्रास की राशि प्रत्येक वर्ष समान रहेगी। इसलिए यह विधि ''सरल रेखा पद्धति'' या ''स्थायी किश्त पद्धति'' या ''मूल लागत पद्धति'' कहलाती है।

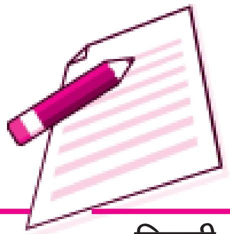

टिप्पणी

सरल रेखा पद्धति के गुण

i) **सरलता :** ह्रास की गणना करने की यह पद्धति बहुत सरल है। इसलिए यह बहुत प्रसिद्ध है। इसमें ह्रास की राशि की गणना एक बार कर ली जाती है, तत्पश्चात प्रत्येक वर्ष में वही राशि अपलिखित करनी होती है। इसलिए यह विधि सरल और गणना करने में आसान होती है।

ii) **सम्पत्तियों का मूल्य शून्य होना :** इस पद्धति से ह्रास का आयोजन करते–करते अन्तिम वर्ष में सम्पत्ति का मूल्य स्वतः ही शून्य अथवा अवशेष के बराबर हो जाता है। दूसरे शब्दों में खाता पुस्तकों में किसी सम्पत्ति का मूल्य उसके जीवन काल की समाप्ति पर या तो शून्य हो जाता है या फिर अवशेष मूल्य के बराबर हो जाता है।

सरल रेखा पद्धति के दोष

i) **गणना करने में कठिनाई :** जब एक से अधिक मशीनें अपने अलग–अलग जीवन काल के साथ होती है, तो ह्रास की गणना करना बहुत मुश्किल हो जाता है, क्योंकि प्रत्येक मशीन पर अलग से ह्रास की गणना करनी पड़ेगी।

ii) **न्याय विरूद्ध/तर्कहीन :** यह हम भली भांति जानते हैं कि जैसे–जैसे सम्पत्ति पुरानी होती है, उस पर मरम्मत और रख–रखाव का व्यय बढ़ जाता है। इस प्रकार ह्रास+मरम्मत व्यय के रूप में लाभ–हानि खाते पर कुल भार पुराने वर्षों की अपेक्षा आने वाले वर्षों में अधिक होगा। यह तर्कहीन होगा क्योंकि सम्पत्ति की कुशलता और कार्य क्षमता पहले अधिक होती है और बाद के वर्षों में कम हो जाती है।

उदाहरण 3

X लिमिटेड ने 1 अप्रैल, 2014 को एक मशीन ₹ 1,00,000 कीमत वाली खरीदी। जिसका अनुमानित जीवन काल 10 वर्ष था। यह अनुमान लगाया गया कि 10 वर्षों के अंत में उसका अवशेष मूल्य ₹ 10,000 होगा। लाभ–हानि खाते में लिखी जाने वाली प्रतिवर्ष की ह्रास की राशि निकालिए। प्रत्येक वर्ष का ह्रास ज्ञात करने की दर भी निकालिए।

हल :

इस प्रश्न में दी गई सूचनाओं से ह्रास की राशि जिसे लाभ–हानि खाता में लिखना है, की गणना इस प्रकार से की जाएगी :

टिप्पणी

i. हास की राशि की गणना

$$\text{वार्षिक हास} = \frac{\text{मशीन की लागत - अनुमानित अवशेष मूल्य}}{\text{सम्पत्ति का अनुमानित जीवन अवधि}}$$

$$\frac{₹\ 1,00,000 - ₹\ 10,000}{10} = ₹\ 9,000$$

ii. हास की दर की गणना

$$\text{हास की दर} = \frac{\text{वार्षिक हास राशि X 100}}{\text{सम्पत्ति का लागत मूल्य}}$$

$$= \frac{9,000 \text{ X } 100}{1,00,000} = 9\%$$

उदाहरण 4

सलमान एण्ड उस्मान ब्रदर्स ने 1 जुलाई, 2014 को एक मशीन ₹ 70,000 की खरीदी और ₹ 5,000 उसकी स्थापना पर व्यय किए। फर्म ने 10% वार्षिक दर से सरल रेखा पद्धति के अनुसार हास को अपलिखित किया। प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को खाते बन्द कर दिए जाते हैं। मशीन और हास खातों को तीन वर्षों के लिए बनाइए।

हल :

मशीन की लागत	=	₹ 70,000
स्थापना लागत	=	₹ 5,000
कुल		**₹ 75,000**

हास की दर = 10%

वार्षिक हास होगा ₹ 75,000 X 10% = ₹ 7,500

हास खाता

नाम — जमा

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2014				2014			
दिस.31	मशीन खाता		3,750	दिस.31	लाभ–हानि खाता		3,750
2015				2015			
दिस.31	मशीन खाता		7,500	दिस.31	लाभ–हानि खाता		7,500
2016				2016			
दिस. 31	मशीन खाता		7,500	दिस.31	लाभ–हानि खाता		7,500

मशीन खाता

नाम ………………………………………………………………………………………… जमा

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2014 जुलाई 1	बैंक खाता		70,000	2014 दिस. 31	हास खाता $70,000 \times \frac{10}{100} \times \frac{6}{12}$		3,750
जुलाई 1	बैंक खाता		5,000	दिस. 31	शेष आ ले		71,250
			75,000				**75,000**
2015 जन. 1	शेष आ ला		71,250	2015 दिस. 31	हास खाता $75,000 \times \frac{10}{100}$		7,500
				दिस. 31	शेष आ ले		63,750
			71,250				**71,250**
2016 जन. 1	शेष आ आ		63,750	2016 दिस. 31	हास खाता $75,000 \times \frac{10}{100}$		7,500
				दिस. 31	शेष आ ले		56,250
			63,750				**63,750**

उदाहरण 5

1 अप्रैल, 2014 को एक कम्पनी ने एक मशीन ₹ 1,00,000 में खरीदी। 1 अक्टूबर, 2016 को एक और मशीन, ₹ 20,000 में खरीदी और ₹ 2,000 उसकी स्थापना पर खर्च किए। प्रत्येक वर्ष 31 मार्च को खाते बंद किए जाते हैं। हास की वार्षिक दर 10% है। सरल रेखा पद्धति से 5 वर्षों का मशीन खाता बनाइए।

हल

मशीन खाता

नाम ………………………………………………………………………………………… जमा

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2014 अप्रैल 1	बैंक खाता		1,00,000	2015 मार्च 31	हास खाता $1,00,000 \times \frac{10}{100}$		10,000

				मार्च 31	शेष आ.ले.		90,000
			1,00,000				**1,00,000**
2015				2016			
अप्रैल 1	शेष आ ला		90,000	मार्च 31	ह्रास खाता		
					$1,00,000\times\frac{10}{100}$		10,000
				मार्च 31	शेष आ ले		80,000
			90,000				**90,000**
2016				2017			
अप्रैल 1	शेष आ ले		80,000	मार्च 31	ह्रास खाता		11,100
अक्टू. 1	बैंक खाता		20,000		$1,00,000\times\frac{10}{100}$		
					$22,000\times\frac{10}{100}\times\frac{6}{12}$		
अक्टू. 1	बैंक खाता		2,000	मार्च 31	शेष आ ले		90,900
			1,02,000				**1,02,000**
2017				2018			
अप्रैल 1	शेष आ ला		90,900	मार्च 31	ह्रास खाता		12,200
					$1,00,000\times\frac{10}{100}$		
					$22,000\times\frac{10}{100}$		
				मार्च 31	शेष आ ले		78,700
			90,900				**90,900**
2018				2019			
अप्रैल 1	शेष आ ला		78,700	मार्च 31	ह्रास खाता		12,200
					$1,00,000\times\frac{10}{100}$		
					$22,000\times\frac{10}{100}$		
				मार्च 31	शेष आ ले		66,500
			78,700				**78,700**
2019							
अप्रैल 1	शेष आ ला		66,500				

उदाहरण 6

1 जनवरी 2014 को एक कम्पनी ने एक प्लांट ₹ 20,000 में खरीदा। उसी वर्ष 1 जुलाई में एक दूसरा प्लांट ₹ 8,000 में खरीदा और ₹ 2,000 उसको स्थापित करने में खर्च हुए।

टिप्पणी

1 जुलाई 2015 को प्लांट जो 1 जनवरी, 2014 में खरीदा था, बेकार हो गया, उसे ₹ 12,500 में बेच दिया। 1 अक्टूबर, 2016 को एक नया प्लांट ₹ 28,000 में खरीदा उसी तारीख में, जो प्लांट 1 जुलाई, 2014 को खरीदा था, ₹ 6,000 में बेच दिया।

प्रत्येक वर्ष उसकी मूल लागत पर 10% की दर से वार्षिक ह्रास ज्ञात कीजिए। प्लांट खाता 2014 से 2016 तक दिखाइए।

हल

प्लांट खाता

नाम जमा

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2014				2014			
जन. 1	नकद खाता		20,000	31 दिस.	ह्रास खाता		
जुलाई 1	नकद खाता		8,000		(i) वार्षिक 2,000		
	नकद खाता (व्यय)		2,000		(ii) अर्द्धवार्षिक 500		2,500
				31 दिस.	शेष आ ले		
					(i) 18,000		
					(ii) 9,500		27,500
			30,000				**30,000**
2015				2015			
जन. 1	शेष आ ला			जुलाई 1	नकद खाता (बेचा)		12,500
	(i) 18,000			जुलाई 1	ह्रास खाता (i)		1,000[1]
	(ii) 9,500		27,500		लाभ–हानि खाता		4,500[1]
				दिस. 1	ह्रास खाता (ii)		1,000
					(10,000 x 10/100 x 1)		
				दिस. 31	शेष आ ले		8,500
					(₹9,500 - ₹1,000)		
			27,500				**27,500**
2016				2016			
जन. 1	शेष आ ला (ii)		8,500	अक्टू. 1	नकद खाता (बेचा)		6,000
अक्टू. 1	नकद खाता (iii)		28,000	अक्टू. 1	ह्रास खाता (ii)		750[2]
				अक्टू. 1	लाभ–हानि खाता (हानि)		1,750
				दिस. 31	ह्रास खाता (iii)		700
					(28,000 x 10/100 x 3/12)		
				दिस. 31	शेष आ ले		27,300
			36,500				**36,500**

नोट : प्लांट के विक्रय पर हानि की गणना

(i)	1 जनवरी, 2015 को बिके हुए प्लांट का लागत मूल्य [प्लांट (i)]	18,000
	घटाएं : छः महीने का ह्रास = $20{,}000 \times \frac{10}{100} \times \frac{6}{12}$	1,000
	1 जुलाई, 2015 को बिके हुए प्लांट का लागत मूल्य	17,000
	घटाएं : प्लांट की बिक्री कीमत	12,500
	बिक्री पर हानि	4,500
(ii)	1 जनवरी, 2016 को बिके हुए प्लांट का लागत मूल्य [प्लांट (ii)]	8,500
	घटाएं : 9 महीने के ह्रास = $10{,}000 \times \frac{10}{100} \times \frac{9}{12}$	750
	1 अक्टूबर, 2016 को बिके प्लांट का लागत मूल्य	7,750
	घटाएं : बिक्री कीमत	6,000
	प्लांट की बिक्री पर हानि	1,750

पाठगत प्रश्न 14.2

रिक्त स्थान भरो :

i. ह्रास की स्थायी किस्त पद्धति की अवधारणा के अनुसार ह्रास की राशि, सम्पत्तियों पर विभिन्न वर्षों के अन्तर्गत ____________ रहती है।

ii. ह्रास लगाने की सरल रेखा पद्धति ____________ के नाम से भी जानी जाती है।

iii. सम्पत्तियों की कीमत, सरल रेखा पद्धति से उसकी जीवन अवधि के अन्त में ____________ या उसके ____________ के बराबर हो जाती है।

iv. सरल रेखा पद्धति के अन्तर्गत लाभ–हानि खाते पर सम्पूर्ण भार पुराने वर्षों की अपेक्षा ____________ वर्षों में ____________ हो जाता है।

(2) ह्रासित शेष पद्धति

इस पद्धति के अनुसार सम्पत्ति की कीमत प्रतिवर्ष घटती रहती है। ह्रास लगाने की राशि भी प्रतिवर्ष कम होती रहती है। इसमें एक निश्चित प्रतिशत दर से सम्पत्ति पर ह्रास लगाया जाता है। जो किताबों में प्रत्येक वर्ष दिखाया जाता है। इस पद्धति के अनुसार सम्पत्ति खाता कभी भी शून्य नहीं किया जा सकता।

माना, सम्पत्ति की कीमत ₹ 40,000 है और प्रत्येक वर्ष 10% वार्षिक दर से ह्रास अपलिखित किया जाता है। पहले वर्ष में ह्रास की राशि ₹ 4,000 होगी अर्थात् ₹ 40,000 का 10%। उसका लागत मूल्य घटकर ₹ 36,000 हो जाएगा (₹ 40,000 – ₹ 4,000)। अब अगले वर्ष ह्रास की राशि ₹ 3,600 होगी (₹ 36,000 का 10%)। इसलिए प्रत्येक वर्ष ह्रास की राशि कम हो जाएगी। ह्रास लगाने की इस पद्धति को घटते हुए शेष या ह्रासित शेष पद्धति कहते हैं।

उदाहरण 7

एक मशीन 1 जनवरी, 2014 को ₹ 1,00,000 में खरीदी और उसका जीवन काल 10 वर्ष है। इसके जीवन काल खत्म होने पर इसको कबाड़ मान लिया जाएगा तथा इससे ₹ 4,000 वसूल कर लिया जाएगा। यह निश्चय किया गया कि मशीन पर 10% वार्षिक दर से क्रमागत शेष पद्धति द्वारा ह्रास की गणना की जाएगी।

इस मशीन के जीवनकाल के प्रत्येक वर्ष के ह्रास की गणना कीजिए।

टिप्पणी

हल

वर्ष	ह्रास की दर	ह्रास की राशि ₹
2014	10%	10,000
2015	10%	9,000
2016	10%	8,100
2017	10%	7,290
2018	10%	6,561
2019	10%	5,905
2020	10%	5,314
2021	10%	4,783
2022	10%	4,305
2023	10%	3,874

इस विधि में ह्रास की राशि प्रतिवर्ष घटती जाती है। इसलिए इस विधि को क्रमागत ह्रास पद्धति या 'घटते हुए शेष पद्धति' या 'ह्रासित शेष पद्धति' कहते हैं।

ह्रासित शेष पद्धति के गुण

लाभ-हानि खाते पर समान भार

प्रारम्भ में सम्पत्ति की उत्पादकता अधिक होती हैं, इसलिए लाभ में इसका योगदान अधिक होता है इसलिए ह्रास के रूप में व्यय भी अधिक लगाया जाना चाहिए।

प्रारम्भ के वर्षों में सम्पत्ति के निरन्तर प्रयोग में आने के कारण मरम्मत व्यय प्रतिवर्ष बढ़ता है तथा इस पद्धति के अन्तर्गत ह्रास राशि निरन्तर घटती रहती है। इन दोनों बातों का सामूहिक प्रभाव यह होता है कि इस विधि के अन्तर्गत ह्रास + मरम्मत के रूप में सम्पत्ति के जीवन काल में प्रत्येक वर्ष लाभ–हानि खाते पर लगभग समान भार पड़ता है।

टिप्पणी

हासित शेष पद्धति के दोष

i) **सम्पत्ति का मूल्य शून्य न होना :** इस पद्धति के अन्तर्गत, सम्पत्ति का मूल्य शून्य तक कम नही हो सकता, चाहे उसका कोई अवशेष मूल्य न हो।

ii) **जटिलता :** इस पद्धति से, हास की दर को आसानी से निर्धारित नहीं किया जा सकता।

पाठगत प्रश्न 14.3

उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

i. हास, स्थायी सम्पत्तियों के मूल्य में ____________ दर्शाता है।

ii. मशीन पर हास की राशि को ____________ खाते में जमा किया जाता है।

iii. हास की सरल रेखा पद्धति में ____________ पर हास की गणना होती है।

iv. हास की क्रमागत ह्रास पद्धति में ____________ पर हास की गणना होती है।

v. सम्पत्तियों का मूल्य, चाहे उसका कोई अवशेष मूल्य न हो, हास की क्रमागत हास पद्धति में ____________ नहीं हो सकता।

उदाहरण 8

विडसन इंटरप्राइजेज ने 1 अक्टूबर, 2012 को एक मशीन ₹ 1,00,000 में खरीदी। यह निश्चय किया गया कि क्रमागत हास विधि से 20% वार्षिक दर से हास अपलिखित किया जाएगा। 1 जनवरी, 2015 को एक और मशीन ₹ 40,000 में खरीदी।

30 मार्च 2016 तक का प्लांट एण्ड मशीन खाता तैयार कीजिए। लेखांकन वर्ष 31 मार्च को समाप्त होता है।

हल :

संयंत्र (प्लांट) और मशीन खाता

नाम   जमा

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2012 अक्टू. 1	बैंक खाता		1,00,000	2013 मार्च 31	हास खाता (6 महीने का)		10,000
				मार्च 31	शेष आ ले		90,000
			1,00,000				**1,00,000**

2013 अप्रैल 1	शेष आ ला		90,000	2014 मार्च 31	ह्रास खाते से (90,000 पर)		18,000
				मार्च 31	शेष आ ले		72,000
			90,000				**90,000**
2014 अप्रैल 1	शेष आ ला		72,000	2015 मार्च 31	ह्रास खाता (72,000 पर एक वर्ष का 14,400 तथा 40,000 पर 3 माह का 2,000)		16,400
2015 जन. 1	बैंक खाता		40,000	2015 मार्च 31	शेष आ ले		95,600
			1,12,000				**1,12,000**
2015 अप्रैल 1	शेष आ ला		95,600	2016 मार्च 31	ह्रास खाता (95,600 पर 1 वर्ष का)		19,120
				मार्च 31	शेष आ ले		76,480
			95,600				**95,600**
2016 1 अप्रैल	शेष आ ला		76,480				

उदाहरण 9

1 अप्रैल, 2014 को गंगा ब्रदर्स ने दो मशीनें, प्रत्येक की कीमत ₹ 75,000 है, खरीदीं। 10% की दर से घटते हुए शेष पद्धति से ह्रास लगाया जाएगा। 31 मार्च, 2016 को एक मशीन ₹ 55,000 में बेच दी। एक नया मॉडल ₹ 80,000 की लागत का उसी दिन खरीदा गया। कम्पनी की पुस्तकों में 2014-15 से 2015-16 का मशीन खाता बनाइए। लेखांकन वर्ष 31 मार्च को समाप्त होता है।

हल

मशीन खाता

नाम | जमा

दिनांक	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि ₹*	*दिनांक*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि ₹*
2014 अप्रैल 1	बैंक खाता		1,50,000	2015 मार्च 31	ह्रास खाता		15,000
				मार्च 31	शेष आ ले		1,35,000
			1,50,000				**1,50,000**

2015 अप्रैल 1	शेष आ ला		1,35,000	2016 मार्च 31	ह्रास खाता		13,500
				मार्च 31	बैंक खाता		55,000
2016 मार्च 31	बैंक खाता		80,000	मार्च 31	लाभ–हानि खाता		5,750
				मार्च 31	शेष आ ले		1,40,750
			2,15,000				**2,15,000**
2016 अप्रैल 1	शेष आ.ला.		1,40,750				

टिप्पणी

नोट : मशीन के विक्रय पर हानि की गणना :

	₹
आरम्भिक लागत	75,000
2015 का ह्रास	–7,500
2015 में पुस्तक मूल्य	67,500
2016 का ह्रास	–6,750
2016 में पुस्तक मूल्य	60,750
घटा बिक्री	–55,000
बिक्री पर हानि	5,750

उदाहरण 10

1 अक्टूबर, 2014 को आकाश ट्रांसपोर्ट कम्पनी ने एक ट्रक ₹ 8,00,000 की कीमत का खरीदा। 1 अप्रैल, 2016 को ट्रक की दुर्घटना हो गई और वह पूरी तरह टूट गया और बीमा कम्पनी से कुल ₹ 6,00,000 प्राप्त हुए। उसी तारीख को कम्पनी ने ₹ 10,00,000 का एक और ट्रक खरीदा। कम्पनी को 20% की वार्षिक दर से घटते हुए शेष विधि से ह्रास लगाना है। वर्ष 2014 से 2016 तक ट्रक खाता बनाइए। लेखांकन वर्ष 31 मार्च को बंद होता है।

हल :

ट्रक खाता

नाम जमा

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2014 अक्टू. 1	बैंक खाता		8,00,000	2014 दिस. 31	ह्रास खाता $\left(8,00,000\times\frac{20}{100}\times\frac{3}{12}\right)$		40,000

				दिस. 31	शेष आ ले		7,60,000
			8,00,000				**8,00,000**
2015				2015			
जन. 1	शेष आ ला		7,60,000	दिस. 31	हास खाता		1,52,000
					$7,60,000 \times \frac{20}{100}$		
				दिस. 31	शेष आ ले		6,08,000
			7,60,000				**7,60,000**
2016				2016			
जन. 1	शेष		6,08,000	अप्रैल 1	बैंक खाता		6,00,000
अप्रैल 1	लाभ–हानि खाता		22,400	अप्रैल 1	हास खाता		30,400
					$6,08,000 \times \frac{20}{100} \times \frac{3}{12}$		
अप्रैल 1	बैंक खाता		10,00,000	दिस. 31	हास खाता		1,50,000
					$10,00,000 \times \frac{20}{100} \times \frac{9}{12}$		
				दिस. 31	शेष आ ले		8,50,000
			16,30,400				**16,30,400**

स्थायी किस्त पद्धति तथा हासित शेष पद्धति में अंतर

अंतर का आधार	*सरल रेखा पद्धति*	*हासित शेष पद्धति*
गणना का आधार	इसमें सम्पत्ति की मूल लागत पर हास की गणना की जाती है।	इसमें प्रथम वर्ष में सम्पत्ति की मूल लागत पर तथा बाद के वर्षों सम्पत्ति के घटते शेष पर हास की गणना की जाती है।
हास की राशि	इसमें हास की राशि प्रतिवर्ष समान रहती है।	इसमें हास की राशि प्रतिवर्ष घटती है।
सम्पत्ति का मूल्य	सम्पत्ति का जीवनकाल समाप्त होने पर सम्पत्ति का मूल्य शून्य हो जाता है।	सम्पत्ति का जीवन काल समाप्त होने पर सम्पत्ति का मूल्य शून्य नहीं हो सकता।
हास और मरम्मत	हास और मरम्मत मिलाकर दोनों की राशि शुरू के वर्षों में कम और बाद के वर्षों में अधिक होती है।	हास और मरम्मत मिलाकर दोनों की राशि प्रतिवर्ष लगभग एकसमान रहती है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 14.4

I. निम्न में से कौन से विवरण सही है और कौन से गलत :

i. ह्रास की राशि प्रतिवर्ष सरल रेखा पद्धति में कम होती रहती है।

ii. ह्रास की राशि क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार समस्त वर्षों में एक समान रहती है।

iii. सरल रेखा पद्धति में सम्पत्ति का मूल्य शून्य तक कम हो जाता है।

iv. क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार सम्पत्ति का मूल्य शून्य तक नहीं घट सकता।

II. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

i जिस पर ह्रास लगाया जाता है वह है :

क) माल का स्टॉक   ख) चालू सम्पत्ति

ग) स्थायी सम्पत्ति   ग) तरल सम्पत्ति

ii. प्रचलन से बाहर शब्द का इस्तेमाल जिनके लिए होता है वह है :

क) सम्पत्तियों की घिसावट

ख) सम्पत्तियों के मूल्य में कमी का होना

ग) औजारों के उत्तम गुण या विकास में सुधार

घ) सम्पत्तियों का जीवन काल और इस्तेमाल के कारण

iii. सरल रेखा पद्धति द्वारा स्थायी सम्पत्तियों पर ह्रास लगाने के लिए सम्पत्ति के जिस मूल्य को लिया जाता है, वह है :

क) लागत मूल्य   ख) घटता हुआ मूल्य

ग) अवशेष मूल्य   घ) पुस्तकीय मूल्य

iv. स्थायी सम्पत्तियों पर क्रमागत ह्रास पद्धति द्वारा ह्रास लगाने पर, सम्पत्ति का मूल्य लिया जाएगा।

क) प्रारम्भिक लागत मूल्य   ख) घटता हुआ मूल्य

ग) अवशेष मूल्य   घ) पुस्तकीय मूल्य

v. ह्रास के लिए राशि की गणना की जाती है :

क) सम्पत्ति की अवशेष मूल्य के राशि को जोड़कर

ख) सम्पत्ति में अवशेष मूल्य की राशि को न जोड़कर

ग) अवशेष मूल्य को सम्पत्ति के मूल्य से कम करके

घ) इनमें से कोई नहीं।

vi. इनमें से कौन सा ह्रास का करण है

क) सामान्य घिसावट	ख) अप्रचलन में होना

ग) सम्पत्ति की कीमत	घ) बाजार मूल्य में कमी या बढ़ोत्तरी

vii. इनमें से कौन सा वार्षिक ह्रास होगा।

क) कुल अवक्षयण + स्थापना व्यय

ख) (कुल लागत – अवशेष मूल्य) ÷ जीवनकाल

ग) (कुल लागत + अवशेष मूल्य)   जीवनकाल

घ) इनमें से कोई नहीं

viii. इनमें से कौन सा तत्व सम्पत्ति के वार्षिक ह्रास को प्रभावित नहीं करता:

क) सम्पत्ति की लागत	ख) सम्पत्ति का अवशेष मूल्य

ग) सम्पत्ति का जीवन काल	घ) सम्पत्ति का वार्षिक रख–रखाव

ix. निम्न में से कौन सी सम्पत्ति पर ह्रास लगाया जाता है :

क) स्टॉक	ख) देनदार	ग) मशीन	घ) भूमि

x. निम्न में से कौन सी सम्पत्ति पर ह्रास नहीं लगाया गया जाएगा :

क) मशीन	ख) संयंत्र	ग) फोटो कॉपीअर	घ) स्टॉक

÷

14.6 सम्पत्ति निस्तारण खाता

यदि किसी सम्पत्ति का कोई भाग बेचा जाता है तो एक नया खाता खोलना अच्छा रहता है, जिसे सम्पत्ति निस्तारण खाता कहते हैं। सम्पत्ति निस्तारण खाते में अभिलेखन दो बातों पर निर्भर करता है :

i. ह्रास प्रावधान खाता नहीं बनाया जाता है।

ii. ह्रास प्रावधान खाता बनाया जाता है।

I. जब ह्रास प्रावधान खाता नहीं बनाया जाता है : इस विधि में ह्रास को सीधे सम्पत्ति खाते से अपलिखित कर लिया जाता है। अतः सामान्यतः सम्पत्ति खाता ही बनाया जाता है। ह्रास प्रावधान खाता न बनाने पर रोजनामचा प्रविष्टि निम्नलिखित तरीके से की जायेंगी।

(i) सम्पत्ति के पुस्तक मूल्य को सम्पत्ति निस्तारण खाते में हस्तान्तरित करने पर

सम्पत्ति निस्तारण खाता	नाम

  सम्पत्ति खाता से

(ii) सम्पत्ति का विक्रय करने पर

बैंक खाता	नाम

  सम्पत्ति निस्तारण खाता से

टिप्पणी

(iii) सम्पत्ति के विक्रय पर लाभ होने पर

सम्पत्ति निस्तारण खाता नाम
लाभ हानि खाता से

(iv) सम्पत्ति के विक्रय पर हानि होने पर

लाभ हानि खाता नाम
सम्पत्ति निस्तारण खाता से

II. जब हास प्रावधान खाता बनाया जाता है : इस विधि में हास सीधे सम्पत्ति खाते से अपलिखित नहीं किया जाता है। एक अवधि की हास की धनराशि हास खाते में नाम और हास प्रावधान खाते में जमा की जाती है। इसमें निम्नलिखित रोजनामचा प्रविष्टि की जाती है :

(i) सम्पत्ति क्रय करने पर

सम्पत्ति खाता नाम
रोकड़/बैंक खाता से

(ii) हास अपलिखित करने पर

हास खाता नाम

हास प्रावधान खाता से

(iii) हास की धनराशि को लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित करने पर

लाभ हानि खाता नाम
हास खाता से

आर्थिक चिट्ठे में सम्पत्ति को पुस्तक मूल्य पर सम्पत्ति पक्ष में तथा हास प्रावधान खाते को दायित्व पक्ष में दिखाया जाता है। जैसे–जैसे समय बीतता जाता है हास प्रावधान खाते की धनराशि बढ़ती जाती है। सम्पत्ति का जीवन काल पूर्ण हो जाने पर ये दोनों खाते बन्द कर दिए जाते हैं। बन्द करते समय हास प्रावधान खाता नाम तथा सम्पत्ति खाता जमा कर दिया जाता है और बची हुई धनराशि लाभ हानि खाते में डाल दी जाती है। प्रविष्टि इस प्रकार है–

हास प्रावधान खाता नाम
सम्पत्ति खाता से
(हास प्रावधान खाता शेष का सम्पत्ति खाते में हस्तांतरण)

लाभ–हानि खाता नाम
सम्पत्ति खाता से
(सम्पत्ति पर हानि)

अथवा

सम्पत्ति खाता नाम
लाभ–हानि खाता से
(सम्पत्ति पर लाभ)

उदाहरण 11

1 जनवरी 2012 को X लिमिटेड ने चैक द्वारा एक सम्पत्ति ₹ 12,00,000 में खरीदी। 1 जुलाई 2012 को उक्त सम्पत्ति का एक भाग जिसकी लागत ₹ 80,000 थी, ₹ 45,000 में बेच दी तथा उसी तिथि को एक नई मशीन ₹ 1,58,000 की क्रय की। कम्पनी 10% प्रतिवर्ष की दर से स्थाई किस्त पद्धति द्वारा ह्रास लगाती है।

आप उपरोक्त की रोचनामचे में प्रविष्टि कीजिए तथा खाता बही में खतौनी कीजिए यदि :

(i) ह्रास संचय खाता नहीं बनाया जाता है;

(ii) ह्रास संचय खाता बनाया जाता है।

हल

(i) जब ह्रास संचय खाता नहीं बनाया जाता है :

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खाता पृ.सं.	नाम ₹	जमा ₹
2012				
दिस. 31	मशीनरी खाता नाम बैंक खाता से (मशीनरी खरीदी)		12,00,000	12,00,000
दिस. 31	ह्रास खाता नाम मशीनरी खाता से (ह्रास लगाया)		1,20,000	1,20,000
दिस. 31	लाभ–हानि खाता नाम ह्रास खाता से (ह्रास लाभ–हानि खाता में हस्तान्तरित किया)		1,20,000	1,20,000
2013 दिस. 31	ह्रास खाता नाम मशीनरी खाता से (ह्रास लगाया)		1,20,000	1,20,000

टिप्पणी

दिस. 31	लाभ–हानि खाता ह्रास खाता से (ह्रास लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित किया)	नाम		1,20,000	1,20,000
2014 जुलाई 1	ह्रास खाता मशीनरी खाता से (छः माह का ह्रास लगाया)	नाम		4,000	4,000
जुलाई 1	मशीनरी निस्तारण खाता मशीनरी खाता से (मशीन को पुस्तक मूल्य पर मशीनरी निस्तारण खाते में हस्तांतरित किया)	नाम		60,000	60,000
जुलाई 1	बैंक खाता मशीनरी निस्तारण खाता से (मशीनरी बेची)	नाम		45,000	45,000
जुलाई 1	मशीनरी खाता बैंक खाता से (नई मशीन खरीदी)	नाम		1,58,000	1,58,000
दिस. 31	ह्रास खाता मशीनरी खाता से (ह्रास लाभ–हानि खाते में हस्तांतरित किया)	नाम		1,19,900	1,19,900
दिस. 31	लाभ–हानि खाता ह्रास खाता से (ह्रास का लाभ–हानि खाते मे हस्तान्तरण)	नाम		1,23,900	1,23,900
दिस. 31	लाभ–हानि खाता मशीन निस्तारण खाता से (मशीन के बेचने पर हुआ लाभ हस्तान्तरित किया)	नाम		15,000	15,000

मशीनरी खाता

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2012			2012		
जन. 1	बैंक खाता	12,00,000	दिस. 31	ह्रास खाता	1,20,000
				शेष आगे ले गये	10,80,000
		12,00,000			12,00,000
2013			2013		
जन. 1	शेष आगे लाये	10,80,000	दिस. 31	ह्रास खाता	1,20,000
			दिस. 31	शेष आगे ले गये	9,60,000
		10,80,000			10,80,000
2014			2014		
जन. 1	शेष आगे लाये	9,60,000	जुलाई 1	ह्रास खाता	
जुलाई 1	बैंक खाता	1,58,000		$80 \times \frac{10}{100} \times \frac{6}{12}$	4,000
			जुलाई 1	मशीन निस्तारण खाता	
				(80,000 - 20,000)	60,000
			दिस. 31	ह्रास खाता	1,19.900
				शेष आगे ले गये	9,34,100
		11,18,000			11,18,000

मशीन निस्तारण खाता

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2013			2013		
जुलाई 1	मशीनरी खाता	60,000	जुलाई 1	बैंक खाता	45,000
			जुलाई 1	लाभ–हानि खाता	15,000
		60,000			60,000

(ii) जब ह्रास प्रावधान खाता बनाया जाता है :

टिप्पणी

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खाता पृ.सं.*	*नाम* ₹	*जमा* ₹
2012 जन. 1	मशीनरी खाता नाम बैंक खाता से (मशीनरी खरीदी)		12,00,000	12,00,000
दिस. 31	ह्रास खाता नाम ह्रास प्रावधान खाता से (ह्रास लगाया)		1,20,000	1,20,000
दिस. 31	लाभ–हानि खाता नाम ह्रास खाता से (ह्रास लाभ–हानि खात में हस्तान्तरित किया)		1,20,000	1,20,000
2013 दिस. 31	ह्रास खाता नाम ह्रास प्रावधान खाता से (ह्रास लगाया)		1,20,000	1,20,000
दिस. 31	लाभ–हानि खाता नाम ह्रास खाता से (ह्रास लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित किया)		1,20,000	1,20,000
2014 जुलाई 1	मशीन निस्तारण खाता नाम मशीन खाता से (मशीन निस्तारण खाते में हस्तान्तरित किया)		80,000	80,000
2014 जुलाई 1	बैंक खाता नाम मशीनरी निस्तारण खाता से (मशीनरी बेची)		45,000	45,000

टिप्पणी

जुलाई 1	ह्रास खाता नाम ह्रास प्रावधान खाता से (चालू वर्ष का छमाही ह्रास मशीन निस्तारण पर लगाया)		4,000	4,000
जुलाई 1	ह्रास प्रावधान खाता नाम मशीन निस्तारण खाता से (मशीन के विक्रय पर कुल ह्रास हस्तान्तरित किया)		20,000	20,000
जुलाई 1	मशीन खाता नाम बैंक खाता से (नई मशीन खरीदी)		1,58,000	1,58.000
दिस. 31	ह्रास खाता नाम ह्रास प्रावधान खाता से (शेष मशीनरी पर ह्रास लगाया)		1,19,000	1,19,900
दिस. 31	लाभ–हानि खात नाम ह्रास खाता से (ह्रास लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित किया)		1,23,900	1,23,900
दिस. 31	लाभ–हानि खाता नाम मशीन निस्तारण खाता से (मशीन के बेचने पर हुई हानि लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित की गई)		15,000	15,000

मशीनरी खाता

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2012			2012		
जन. 1	बैंक खाता	12,00,000	दिस. 31	शेष आगे ले गये	12,00,000
2013			2013		
जन. 1	शेष आगे लाये	12,00,000	दिस. 31	शेष आगे ले गये	12,00,000

टिप्पणी

2014			2014		
जन. 1	शेष आगे लाये	12,00,000	जुलाई 1	मशीन निस्तारण खाता	80,000
जुलाई 1	बैंक खाता	1,58,000	दिस. 31	शेष आगे ले गये	1,78,100
		13,58,000			13,58,000

हास खाता

नाम | जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2012			2012		
दिस. 31	हास प्रावधान खाता	1,20,000	दिस. 31	लाभ–हानि खाता	1,20,000
2013			2013		
दिस. 31	हास प्रावधान खाता	1,20,000	दिस. 31	लाभ–हानि खाता	1,20,000
2014			2014		
जुलाई 1	हास प्रावधान खाता	4,000	दिस. 31	लाभ–हानि खाता	1,23,900
	हास प्रावधान खाता	1,19,900			
		1,23,900			1,23,900

हास प्रावधान खाता

नाम | जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2012			2012		
दिस. 31	शेष आगे ले गए	1,20,000	दिस. 31	हास खाता	1,20,000
2013			2013		
दिस. 31	शेष आगे ले गए	2,40,000	जन. 1	शेष आगे लाए	1,20,000
			दिस.31	हास खाता	1,20,000
		2,40,000			2,40,000
2014			2014		
जुलाई 1	मशीन निस्तारण खाता	20,000[1]	जन. 1	शेष आगे लाए	2,40,000
			जुलाई 1	हास खाता $(80,000\times\frac{10}{100}\times\frac{6}{12})$	4,000
दिस.31	शेष आगे ले गए	3,43,900	दिस. 31	हास खाता	1,19,900
		3,63,900			3,63,900

मशीनरी निस्तारण खाता

नाम | जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2014			2014		
जुलाई 1	मशीनरी खाता	80,000	जुलाई 1	बैंक खाता	45,000
			जुलाई 1	ह्रास संचय खाता	20,000
			दिस. 31	लाभ–हानि खाता	15,000
		80,000			80,000

नोट : (1) मशीन का ह्रास जो बेची गई है = $80,000 \times \frac{10}{100} \times 2.5 = 20,000$

(2) मशीन का ह्रास जो बेची नहीं है

पुरानी मशीन	=	$11,20,000 \times \frac{10}{100}$	=	1,12,000
नई मशीन	=	$1,58,000 \times \frac{10}{100} \times \frac{6}{12}$	=	7,900
				1,19,900

उदाहरण 12

1 अप्रैल 2011 को X लिमिटेड ने एक संयंत्र ₹ 5,00,000 में क्रय किया। 1 जुलाई 2013 को उक्त संयन्त्र का एक भाग जिसका मूल्य ₹ 70,000 था, ₹ 40,000 में बेच दिया तथा उसी तिथि को ₹ 1,00,000 का एक नया संयंत्र क्रय कर दिया गया। ह्रास क्रमागत ह्रास पद्धति के आधार पर 20% प्रतिवर्ष की दर से लगाया जाता है तथा लेखा पुस्तकें 31 दिसम्बर को बन्द होती हैं।

संयंत्र खाता, ह्रास संचय खाता तथा संयंत्र निस्तारण खाता बनाइए।

हल

संयंत्र खाता

नाम | जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2011			2011		
अप्रैल 1	बैंक खाता	5,00,000	दिस. 31	शेष आगे ले गए	5,00,000

टिप्पणी

2012			2012		
जन. 1	शेष आगे लाए	5,00,000	दिस. 31	शेष आगे ले गए	5,00,000
2013			2013		
जन. 1	शेष आगे लाए	5,00,000	जुलाई 1	मशीन निस्तारण खाता	70,000
जुलाई 1	बैंक खाता	1,00,000	दिस. 31	शेष आगे ले गए	5,30,000
		6,00,000			6,00,000

हास प्रावधान खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2011			2011		
दिस. 31	शेष आगे ले गए	75,000	दिस. 31	हास खाता	75,000
2012			2012		
दिस. 31	शेष आगे ले गए	1,60,000	जन. 1	शेष आगे लाए	75,000
			दिस. 31	हास खाता	85,000
		1,60,000			1,60,000
2013			2013		
जुलाई 1	संयंत्र निस्तारण खाता	74,160[1]	जन. 1	शेष आगे लाये	1,60,000
			जुलाई 1	हास खाता	4,760
दिस. 31	शेष आगे ले गए	2,06,080			
			दिस. 31	हास खाता	68,480
		2,33,240			2,33,240

संयन्त्र निस्तारण खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2013			2013		
जुलाई 1	संयन्त्र खाता	70,000	जुलाई 1	बैंक खाता (विक्रय)	40,000
			जुलाई 1	हास प्रावधान खाता	27,160
			जुलाई 1	लाभ–हानि खाता (हानि)	2,840
		70,000			70,000

नोट : (1) संयन्त्र के विक्रय पर ह्रास

2011 में	$70,000 \times \frac{9}{12} \times \frac{20}{100}$	=	10,500
2012 में	$59,500 \times \frac{20}{100}$	=	11,900
2013 में	$47,600 \times \frac{20}{100} \times \frac{6}{12}$	=	4,760
			27,160

(2) संयन्त्र के शेष का ह्रास

कुल संयन्त्र 5,30,000

घटाया जुलाई 2013

1,00,000 पर ह्रास 1/2 वर्ष @ 20% 10,000

पुराना संयन्त्र ₹ 43,000

बकाया संयन्त्र =

$4,30,000 - (1,60,000 + 4,760 + 68,480 - 27,160)$

$= 2,92,400 \times \frac{20}{100}$

$= 68,480$

उदाहरण 13

1 जनवरी 2013 को मैसर्स अतुल एंड ब्रदर्स ने 5 वाशिंग मशीन ₹ 15,000 प्रति की दर से खरीदी। 1 जनवरी 2014 को एक वाशिंग मशीन ₹ 12,500 में बेच दी। मशीनरी पर ह्रास 10% की दर से स्थायी किस्त पद्धति से काटा जाता है है। वाशिंग मशीन खाता, ह्रास प्रावधान खाता और ह्रास खाता को दो वर्षों के लिए बनाइए। पुस्तकें प्रत्येक वर्ष 31 दिसम्बर को बन्द होती है।

हल

वाशिंग मशीन खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2013 जन. 1	बैंक खाता	75,000	2013 दिस. 31	शेष आगे ले गए	75,000
		75,000			75,000

टिप्पणी

2014			2014		
जन. 1	शेष आगे लाए	75,000	जन. 1	मशीन निस्तारण खाता	15,000
				शेष आगे ले गए	60,000
		75,000			75,000

ह्रास प्रावधान खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2013			2013		
दिस. 31	शेष आगे ले गए	7,500	दिस. 31	ह्रास खाता	7,500
2014			2014		
जन. 1	वाशिंग मशीन निस्तारण खाता	1,500	जन. 1	शेष आगे लाए	7,500
			दिस. 31	ह्रास खाता	6,000
	शेष आगे ले गए	12,000			
		13,500			13,500

वाशिंग मशीन निस्तारण खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2014			2014		
जन. 1	वाशिंग मशीन खाता	15,000	जन. 1	ह्रास प्रावधान खाता	1,500
			जन. 1	बैंक खाता	12,300
			जन. 1	लाभ हानि खाता	1,000
		15,000			15,000

नोट : 1. जन. 2014 को एक मशीन की पुस्तक मूल्य =

$$15{,}000 - 1{,}500 = 13{,}500$$

2. मशीन के विक्रय पर हानि = 13,500 – 12,500 = 1,000

3. 4 मशीनों का ह्रास $60{,}000 \times \frac{10}{100} = 6{,}000$

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

- टूट–फूट, काल समाप्ति, अप्रचलन तथा अन्य कारणों से किसी सम्पत्ति के मूल्य में जो कमी होती है, उसे ह्रास कहते हैं।
- **ह्रास के कारण**
  - * उपयोग किए जाने पर घिसावट एवं टूट फूट
  - * समय व्यतीत होने के कारण मूल्य में कमी
  - * उन्नत तकनीक के कारण अप्रचलन।
- **ह्रास के उद्देश्य**
  - * व्यवसाय की सही वित्तीय स्थिति को दर्शाना।
  - * व्यवसाय में नई सम्पत्ति का पुनर्स्थापन करने के लिए कोष बनाना।
- **ह्रास लगाने की पद्धतियां**
  - * सरल रेखा पद्धति
  - * क्रमागत ह्रास पद्धति
- **सरल रेखा पद्धति के गुण**
  - * सरलता
  - * सम्पत्तियों का पूर्णरूप से अपलिखित करना
- **सरल रेखा पद्धति के दोष**
  - * गणना करने में कठिनाई
  - * तर्कहीनता
- **क्रमागत ह्रास पद्धति के गुण**
  - * लाभ–हानि खाते पर एक समान भार
  - * सम्पत्तियों का मूल्य कभी भी शून्य नहीं लिखा जाता।
- **क्रमागत ह्रास पद्धति के दोष**
  - * सम्पत्तियों को पूर्णरूप से अपलिखित नहीं किया जाता
  - * जटिलता

पाठान्त प्रश्न

1. ह्रास क्या है? ह्रास के प्रावधान के विभिन्न उद्देश्य लिखो।

टिप्पणी

2. ह्रास को लगाने के कारण क्या हैं?

3. ह्रास को लगाने की दो पद्धतियाँ कौन सी है? उनके गुण–दोषों का वर्णन कीजिए।

4. ह्रास लगाने के प्रमुख उद्देश्य क्या है?

5. ह्रास की सरल रेखा पद्धति तथा क्रमागत ह्रास पद्धति में अन्तर बताइए।

6. कृष्णमोहन लिमिटेड ने 1 अक्टूबर, 2008 को एक मशीन ₹ 90,000 की खरीदी और उसकी स्थापना करने में ₹ 10,000 रूपये और खर्च किए। ह्रास उसके लागत मूल्य पर 10% की दर से लगाया जाता है। कम्पनी की पुस्तकों में तीन वर्षों का मशीन खाता बनाइए। यदि खाते 31 मार्च को बन्द होते हैं।

7. 1 अप्रैल, 2008 को आसाही लिमिटेड ने ₹ 80,000 में एक मशीन खरीदी और ₹ 20,000 उसकी स्थापना करने व मरम्मत करने में खर्च किए। 30 सितम्बर, 2011 को वह मशीन ₹ 60,000 में बेच दी। वर्ष 2008 से 2011 तक का मशीन खाता तैयार कीजिए, यदि ह्रास 10% वार्षिक दर से सरल रेखा पद्धति द्वारा लगाया जाता है।

8. अजय कुमार एण्ड कम्पनी ने 1 अप्रैल, 2007 को ₹ 20,000 में एक मशीन खरीदी। मशीन पर 10% वार्षिक दर से सरल रेखा पद्धति द्वारा ह्रास लगाया जाता है। 1 अक्टूबर 2010 को मशीन को ₹ 8,000 में बेच दिया। मशीन खाता बनाइए यदि खाते 31 मार्च को बंद होते हैं।

9. 1 जनवरी, 2008 को एक संयंत्र ₹ 80,000 में खरीदा। यह अनुमान लगाया जाता है कि उसका अवशेष मूल्य उसके जीवन काल के 10 वर्षों के अंत में ₹ 27,894 होगा। ह्रास 10% वार्षिक की दर से क्रमागत ह्रास पद्धति द्वारा ज्ञात करना है। कम्पनी के खातों में 4 वर्षों का संयंत्र खाता बनाइए जबकि खाते प्रतिवर्ष 31 मार्च को बंद होते हैं।

10. 1 जनवरी, 1987 को ₹ 10,000 की मशीन क्रय की। 1 जुलाई, 1988 को ₹ 6,000 कीमत वाली एक नई मशीन खरीदी। 30 जून 1990 को 1 जुलाई, 1988 को खरीदी गई मशीन, ₹ 6,000 में बेच दी। 4 वर्षों का मशीन खाता तैयार कीजिए। यदि लेखांकन अवधि 31 दिसम्बर को समाप्त होती हो। ह्रास 10% वार्षिक दर से क्रमागत ह्रास पद्धति द्वारा लगाया जाएगा।

11. X लि. ने 1.1.2010 को रू 2,00,000 की मशीनें खरीदी तथा उसकी स्थापना पर ₹ 50,000 व्यय किए। मशीनों पर 20% वार्षिक से सरल रेखा पद्धति से अवक्षयण लगाना है। 30.6.2012 को 1.1.2010 में क्रय की गई एक मशीन जिसकी लागत ₹ 20,000 थी को ₹ 12,000 में बेच दिया गया।

मशीनरी खाता, मशीन निस्तारण खाता एवं ह्रास के लिए प्रावधान खाता बनाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1 (i) कमी (ii) राशि, जीवनकाल (iii) सम्पत्तियों की जीवन अवधि
(iv) टैक्नोलॉजी

14.2 (i) समान (ii) स्थायी किस्त पद्धति अथवा मूल लागत विधि
(iii) शून्य, शुद्ध अवशेष मूल्य (iv) बाद, अधिक

14.3 (i) कमी (ii) मशीन (iii) मूल लागत पर (iv) प्रतिवर्ष आरम्भिक शेष पर (v) शून्य

14.4 I. (i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य

II. (i) ग (ii) ग (iii) क (iv) ख (v) ग
(vi) क (vii) ख (viii) घ (ix) ग (x) घ

क्रियाकलाप

अपने माता–पिता से विभिन्न स्थायी सम्पत्तियों जैसे टी.वी., फ्रिज, मोटरसाईकिल, कार इत्यादि की खरीदने की तारीख पूछो। उनकी जीवन अवधि के साथ प्रत्येक सम्पत्ति पर प्रत्येक वर्ष की ह्रास की राशि ज्ञात करो।

15

प्रावधान एवं संचय

आप जानते हैं कि व्यवसायी अपने खाते चालू व्यापार अवधारणा के आधार पर बनाते हैं अर्थात् वह मानकर चलते हैं कि व्यवसाय अनंत काल तक चलेगा। इसलिए किसी भी वर्ष के शुद्ध लाभ के निर्धारण के लिए व्यवसायियों को न केवल वर्तमान आकस्मिकताओं को ध्यान में रखना होगा बल्कि भविष्य की आकस्मिकताओं को भी ध्यान में रखना होगा। वास्तव में प्रावधान एवं संचय ऐसे ही आयोजन हैं जो भविष्य की आवश्यकताओं से संबंधित होते हैं तथा जिनके लिए वर्तमान की आय में से एक भाग बचाकर अलग रख लिया जाता है।

उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात आप :

- प्रावधान का अर्थ और उसकी आवश्यकता को समझ सकेंगे;
- संचय के अर्थ एवं उसके उद्देश्यों को समझ सकेंगे;
- संचय के विभिन्न प्रकारों की व्याख्या कर सकेंगे और
- प्रावधान एवं संचय में अंतर को जान सकेंगे।

15.1 प्रावधान : अर्थ एवं आवश्यकता

आप जानते हैं कि हम अपने दैनिक जीवन में भविष्य की संभावित आवश्यकताओं के लिए विभिन्न व्यवस्थाएँ करते हैं। उदाहरण के लिए, माना कि आपके पिता आपको उच्च शिक्षा दिलाना चाहते हैं जैसे कि इंजिनियरिंग, डाक्टोरेट अथवा अन्य कोई पेशागत पाठ्यक्रम, इसके लिए उन्हें काफी धन की आवश्यकता होगी। अब प्रश्न पैदा होता है कि आपके पिता इतनी राशि की व्यवस्था कैसे करेंगे। हाँ, आपका सोचना सही है, वह आज से ही बचत करना प्रारम्भ करेंगे तथा प्रत्येक वर्ष वह यही करेंगे। जो घटनाएं भविष्य में घटित हो सकती हैं,

टिप्पणी

उनकी योजना उपलब्ध संसाधनों से वर्तमान में ही बना ली जाती है। इसी प्रकार व्यवसाय में भी यही किया जाता है। जब भी निश्चित हानि अथवा व्यय की संभावना होती है, तो उनके लिए व्यवस्था वर्तमान वर्ष के लाभ/अधिक्य में से अग्रिम रूप से कर ली जाती है। सम्भावित हानि/व्यय के लिए जो राशि अलग से रख ली जाती है, उसे प्रावधान कहते हैं।

यदि किसी राशि का भविष्य में भुगतान किया जाना है तथा यह राशि निश्चित है तो यह देयता है। उदाहरण के लिए अक्टूबर माह का ₹ 2,000 किराए का भुगतान 31 अक्टूबर को किया जाता है तथा उसका भुगतान अभी तक नहीं किया गया है तो उपक्रम, किराया खाता को नाम तथा अदत्त किराया खाता को जमा करेगा क्योंकि यह एक निश्चित देयता है। लेकिन यदि देनदारी अथवा संभावित हानि की राशि निश्चित नहीं हैं तो लाभ–हानि खाते के नाम में लिखकर एक अनुमानित राशि को अलग से रख लिया जाएगा। इस अलग रखी गई राशि को प्रावधान कहेंगे। इस प्रकार से प्रावधान का अर्थ है भविष्य में अनिश्चित हानि/व्यय के भुगतान के लिए अनुमानित राशि। प्रावधान के कुछ उदाहरण हैं : देनदारों पर संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान, देनदारों पर बट्टा राशि के लिए प्रावधान, ह्रास के लिए प्रावधान।

प्रावधान की आवश्यकता

प्रावधान निम्न के लिए किए जाते हैं :

i. ह्रास, सम्पत्तियों के मूल्य का पुनर्मूल्यांकन अथवा कटौती।
ii. एक ज्ञात देयता जिसकी राशि का सटीक निर्धारण करना संभव नहीं है।
iii. विवादित दावा
iv. सम्पत्ति की वसूली अथवा करों के भुगतान पर विशिष्ट हानि
v. देयता का भुगतान
vi. अप्राप्य ऋणों/संदिग्ध ऋणों का अपलेखन
vii. आकस्मिक देयताएँ

प्रावधान के लिए सामान्य नियम :

i. इसका सृजन लाभ हानि खाते के नाम में प्रविष्टि करके किया जाता है।
ii. इसका सृजन ज्ञात देयता अथवा निश्चित आकस्मिक व्यय के लिए किया जाता है, जैसे कि अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान एवं ह्रास के लिए प्रावधान आदि।
iii. व्यवसाय में लाभ हो अथवा हानि, प्रावधान की व्यवस्था करनी ही होती है।
iv. यह अंशधारकों में लाभांश वितरण के लिए उपलब्ध नहीं होता है।
v. प्रावधान एक निश्चित राशि का किया जाता है, इसलिए ज्ञात आकस्मिकता के लिए प्रतिवर्ष एक निश्चित राशि एक ओर रख दी जाती है।
vi. ज्ञात देयता एवं आकस्मिकता के लिए प्रावधान करना अनिवार्य है।
vii. प्रावधान को सामान्यतः स्थिति विवरण की देयता की ओर दिखाया जाता है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 15.1

उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

i. प्रावधान का अर्थ है अनुमानित राशि जो भविष्य के लिए एक अनिश्चित ____________ अथवा भविष्य में ____________ के भुगतान के लिए होती है।

ii. प्रावधान ____________ दावे के लिए व्यवस्था होती है।

iii. प्रावधान का सृजन ____________ के नाम में लिखकर किया जाता है।

iv. प्रावधान की राशि ____________ को लाभांश वितरण के लिए उपलब्ध नहीं होती है।

v. प्रावधान को सामान्यतः स्थिति विवरण के ____________ पक्ष में दर्शाया जाता है।

15.2 संचय का अर्थ

हमारा भविष्य अनिश्चित है। भविष्य में बहुत सी आकस्मिकताएँ एवं विभिन्न आवश्यकताएं होती हैं। कभी–कभी हम कुछ सम्भावित हानियों/व्ययों का अनुमान लगाते हैं, जिनको हमने भविष्य में वहन करना है। इसके लिए हम अपनी वर्तमान आय में से कुछ धन बचा लेते हैं। यदि सम्भावित घटना घटित होती है तो हम इस बचाई गई राशि का उपयोग कर सकते हैं। माना आपके पिता ₹ 20,000 मासिक कमाते हैं तथा वह किसी अप्रत्याशित घटना के लिए कुछ धन बचाकर नहीं रखते हैं। माना कि महीने के मध्य में आप बीमार हो जाते हैं तो आपके पिता आपके इलाज के विभिन्न खर्चों की किस प्रकार से व्यवस्था करेंगे? निश्चित है कि वह अपने मित्रों, सगे संबंधियों आदि से पैसा मांगेगे। यदि वे आपके पिता की सहायता नहीं करते हैं तो क्या होगा?

यदि आपके पिता ने इस प्रकार की अप्रत्याशित घटनाओं के लिए कुछ धन बचाया होता तो उन्हें इस प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। इस प्रकार से जो राशि हम अपनी वर्तमान आय में से भविष्य की असंभावित घटनाओं का भुगतान करने के लिए एक ओर बचाकर रखते हैं, संचय कहलाता है।

भविष्य अनिश्चित हैं, व्यवसाय में कई ऐसी घटनाएं हैं जो घटित हो सकती हैं जिनकी पहले से कोई संभावना नहीं थी। इसके लिए योजनाबद्ध तरीके से धन की व्यवस्था करना आवश्यक होता है। वर्ष में कुल अर्जित आय में से कुछ राशि को संचय के रूप में अलग रखने की आवश्यकता होती है।

संचय वह राशि है जिसे लाभ में से बचा कर एक ओर रख दिया जाता है। यह लाभ अथवा संचित का विनियोजन होता है जो व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए होता है। यह लाभों के विरूद्ध कोई अधिभार नहीं है। यह किसी देनदारी अथवा सम्पत्ति पर ह्रास को पूरा करने के लिए नहीं होता। संचय के उदाहरण हैं : सामान्य संचय, विस्तार के लिए संचय, लाभांश समानीकरण के लिए संचय, प्रतिस्थापन की लागत में वृद्धि के लिए संचय आदि।

15.3 संचय के प्रकार

कभी–कभी व्यवसाय को, भविष्य की ज्ञात अथवा अज्ञात आकस्मिकताओं/आपात स्थितियों की सम्भाव्यता का अनुमान लगाना होता है। इसके भुगतान के लिए, वह लाभों एवं अन्य आधिक्यों के एक भाग को बचाकर रख लेता है, जिसे संचय कहते हैं। संचय लाभ का विनियोजन होता है न कि लाभ पर अधिभार क्योंकि यह किसी ज्ञात देयता के भुगतान करने अथवा सम्पत्ति के मूल्य में आए ह्रास को पूरा करने के लिए नहीं होता है। यह लाभ का वह भाग है जिसे एक ओर बचाकर रख लिया जाता है, जिससे अप्रत्याशित देनदारी अथवा भविष्य की आपातकालीन स्थिति से निपटा जा सके। इसका सृजन लाभ–हानि विनियोजन खाते के नाम में प्रविष्टि करके किया जाता है। इसका सृजन उसी स्थिति में हो सकता है जबकि व्यवसाय को लाभ हो रहा हो। इसे सामान्यतः स्थिति विवरण के देयता पक्ष में दर्शाया जाता है। संचय निम्नलिखित वर्गों में बांटे जा सकते हैं :

(i) सामान्य संचय (ii) पूंजीगत संचय (iii) गुप्त संचय (iv) आयगत संचय
(v) विशिष्ट संचय (vi) संचित कोष (vii) ऋण शोधन संचय कोष/संचित कोष

i) सामान्य संचय : जैसा कि नाम से स्पष्ट है, सामान्य संचय किसी विशिष्ट उद्देश्य से जुड़ा नहीं होता। इसका उपयोग भविष्य की किसी भी आकस्मिकता अथवा अज्ञात देनदारी के लिए किया जा सकता है। सामान्य संचय का सृजन कानूनी रूप से अनिवार्य नहीं होता। इसका सृजन केवल उस स्थिति में किया जाता हैं जबकि पर्याप्त लाभ हो। इसे लाभ–हानि विनियोजन खाते के नाम पक्ष में दर्शाया जाता है। इसकी विशेषताएं निम्न हैं :

- इसका सृजन किसी उद्देश्य विशेष के लिए नहीं किया जाता बल्कि भविष्य की आकस्मिकताओं के लिए किया जाता है।
- इसका उपयोग भविष्य की किसी भी हानि की पूर्ति के लिए किया जा सकता है।
- इसका सृजन केवल उस स्थिति में किया जाता है, जब व्यवसाय के पास पर्याप्त लाभ हों।
- इसका सृजन लाभ होने की स्थिति में ही किया जाता है अर्थात् यह लाभ पर निर्भर करता है।
- इसको लाभ हानि विनियोजन खाते के नाम में दर्शाया जाता है।
- इसके कारण केवल वितरणीय लाभ में ही कमी होती है।

इस संचय का सृजन आयगत लाभ को अलग रखकर किया जाता है। इसका उद्देश्य व्यवसाय की सामान्य वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करना होता है। यह किसी उद्देश्य विशेष के लिए नहीं होता। यह उन्मुक्त संचय है। यह भविष्य की सभी अदृश्य आकस्मिकताओं के विरूद्ध सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करता है। यह लाभांश के वितरण के लिए तुरंत उपलब्ध रहता है।

सामान्य संचय संगृहित लाभ होते हैं। यह आधिक्य का भाग होते हैं। यह लाभ में से बचाकर रखी राशि होते हैं। यदि लाभ नहीं हैं तो संचय भी नहीं होंगे। संचय अवितरित लाभ होते हैं। यह लाभों का विनियोजन हैं। प्रावधान लाभपूर्व होते हैं, जबकि संचय लाभोत्तर होते हैं, लाभों को ज्ञात किए बिना कोई व्यक्ति संचय के बारे में बात नहीं कर सकता। संचय सृजन, एक अच्छी व्यावसायिक नीति मानी जाती है। संचय, व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सृदृढ़ करते हैं। संचयों का सृजन विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है। यह व्यवसाय विस्तार के लिए हो सकते हैं, यह लाभांश समानीकरण के लिए हो सकते हैं अथवा ऋण पत्रों या ऋणों के भुगतान के लिए हो सकते हैं। संचय का सृजन, आयगत लाभों अथवा पूंजीगत लाभों में से किया जा सकता है। पूंजीगत लाभों में से जिन संचयों का सृजन किया जाता है, वह पूंजीगत संचय कहलाते हैं तथा अन्यों को आयगत संचय कहते हैं।

ii) **पूँजीगत संचय :** पूँजीगत संचयों का सृजन सामान्यतः पूँजीगत प्रकृति के लाभों में से किया जाता है। जैसे कि पूँजीगत लाभ, अंश एवं ऋणपत्रों के निर्गमन पर प्रीमियम, समामेलन पूर्व लाभ, सम्पत्तियों एवं देयताओं के पुनर्मूल्यांकन से लाभ। इसका अंशधारकों में लाभांश के रूप में वितरण नहीं किया जाना चाहिए। यह व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने, पूँजीगत हानियों अथवा असामान्य प्रकृति की हानियों को अपलिखित करने के लिए प्रयुक्त होता है। इस प्रकार से पूँजीगत संचय :

- लाभों का विनियोजन होता है। जिसको रोकड़ लाभांश के रूप में वितरण नहीं किया जा सकता।
- इसकी उत्पत्ति मुख्य रूप से (i) उद्यम एवं इसके अंशधरकों के बीच समता लेनदेनों से; (ii) व्यावसायिक सम्मिश्रण के लेखांकन समायोजनों से; (iii) विदेशी मुद्रा परिचालन लेनदेनों में अन्तर से; (iv) सम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन से उत्पन्न आधिक्य से; (v) ऐसा गैर वसूल लाभ जिसको आय में सम्मिलित नहीं किया जाता है।
- पूँजीगत संचयों के उदाहरण हैं : प्रतिभूति प्रीमियम, पूँजी शोधन संचय, व्यवसाय के विलय एवं अधिग्रहण से उत्पन्न पूँजीगत संचय, वैधानिक संचय, सम्पत्ति का पुनः मूल्यांकन संचय एवं विनिमय उतार–चढ़ाव संचय।

पूँजीगत संचय का सृजन पूँजीगत लाभों में से किया जाता है। पूँजीगत लाभ नियमित व्यावसायिक लाभ नहीं होते। यह उन लेनदेनों से उत्पन्न लाभ होते हैं, जो अनावर्ती होते हैं। पूँजीगत संचय, सामान्यतः लाभांश वितरण के लिए उपलब्ध नहीं होते हैं। इनको व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सृदृढ़ करने अथवा पूँजीगत हानियों की पूर्ति करने के लिए अलग से रखा जाता है।

पूँजीगत लाभों के उदाहरण निम्न हैं:

क) स्थाई सम्पत्तियों के विक्रय से लाभ

ख) समामेलन पूर्व लाभ

ग) ऋणपत्रों के शोधन से लाभ

घ) अंशों अथवा ऋणपत्रों के निर्गमन पर प्रीमियम

ङ) अंशों की जब्ती पर लाभ

च) व्यवसाय के अधिग्रहण पर लाभ

छ) लाभ जो व्यवसाय की नियमित क्रियाओं से अर्जित नहीं किए गए हैं।

पूँजीगत संचय का उपयोग निम्न प्रकार से किया जा सकता है :

क) बोनस अंशों का निर्गमन

ख) ख्याति का अपलेखन

ग) प्रारम्भिक व्ययों का अपलेखन

घ) अंशों/ऋणपत्रों के निर्गमन पर व्ययों का अपलेखन

ङ) समामेलन पूर्व की हानियों का अपलेखन

iii) गुप्त संचय : कभी–कभी फर्म ऐसे संचय का सृजन करती है जिसको तुलनपत्र में नहीं दिखाया जाता। इसे गुप्त संचय अथवा छिपा संचय अथवा आन्तरिक संचय कहते हैं। यह संचय वित्तीय विवरणों में नहीं दिखाया जाता। यह व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करता है, आत्मविश्वास एवं स्थिरता को बढ़ाता है। इसका सृजन बैंक, बीमा एवं वित्तीय कम्पनियों को छोड़कर अन्य संयुक्त पूँजी कम्पनियां नहीं करती।

iv) आयगत संचय : यह संचय आयगत लाभ के उस भाग से लिए जाते हैं, जिनको नकद लाभांश के रूप में वितरित किया जा सकता है, यद्यपि इसके कुछ भाग को किन्हीं अन्य उद्देश्यों के लिए अलग से रखा जा सकता है।

v) विशिष्ट संचय : जैसा कि नाम से स्पष्ट है, विशिष्ट संचय का सृजन विशिष्ट उद्देश्य के लिए किया जाता है। इसका उपयोग केवल उसी उद्देश्य के लिए किया जाता है, जिसके लिए उसका सृजन किया गया है, अन्य किसी उद्देश्य के लिए नहीं। फर्म को लाभ हो अथवा हानि, विशिष्ट संचयों का सृजन करना कानूनी रूप से अनिवार्य है। इसकी प्रविष्टि लाभ–हानि खाते के नाम में की जाती है। इस प्रकार के संचय के उदाहरण हैं : लाभांश समतोलन संचय, निवेश उतार–चढ़ाव संचय, संयंत्र प्रतिस्थापन संचय एवं ऋण पत्रों के शोधन के लिए संचय। इस प्रकार से इसकी विशेषताएं हैं :

क) इसका सृजन विशिष्ट उद्देश्य के लिए किया जाता है।

ख) इसका उपयोग केवल उसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए किया जाता है, जिसके लिए इसका सृजन किया गया है।

ग) चाहे लाभ हो अथवा न हो, इसका सृजन अनिवार्य है।

टिप्पणी

घ) सही लाभ निर्धारण के लिए इसका सृजन आवश्यक है।

ङ) इसे लाभ हानि खाते के नाम पक्ष में दिखाया जाता है।

च) इसके कारण शुद्ध लाभ घट जाते हैं।

इसका सृजन भी आयगत लाभों को अलग रखकर किया जाता है। लेकिन यह विशिष्ट उद्देश्य के लिए ही होता है। यह तुरन्त वितरण के लिए उपब्ध नहीं होता। उदाहरण के लिए ऋण पत्रों के शोधन के लिए सृजन किया गया संचय। देयता अवधि में यह संचय वितरण हेतु उपलब्ध नहीं होता। ऋण पत्रों के शोधन के पश्चात् यह सामान्य संचय बन जाता है। इसी प्रकार से लाभांश समानीकरण के लिए भी संचय का सृजन किया जा सकता है।

vi) **संचय कोष :** जब लाभ के एक भाग को अलग रख दिया जाता है तथा व्यवसाय में इसका उपयोग किया जाता है तो यह संचय होता है। लेकिन लाभ एवं अधिशेष के भाग को अलग कर व्यवसाय से बाहर उसका निवेश कर दिया जाता हैं तो इसे संचय कोष कहते हैं। इस स्थिति में **रोकी गई** राशि का सुरक्षित प्रतिभूतियों में निवेश कर दिया जाता है, जिनको तुरन्त एवं सरलता से विक्रय किया जा सके। निवेश, निश्चित अवधि के लिए नहीं किए जाते। इसका उद्देश्य व्यावसायिक इकाई की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करना होता है। अतः 'कोष' शब्द, संचय के व्यवसाय के बाहर किए गए निवेश को दर्शाता है। संचय कोषों का निवेश निश्चित अवधि के लिए नहीं किया जाता। इसका सृजन सदा आवंटन योग्य लाभों में से किया जाता है। संचय कोष के निवेश से प्राप्त ब्याज का पुनः विनियोग करना आवश्यक नहीं है।

वह लाभ जिसे अलग से रख लिया जाता है तथा व्यवसाय में उपयोग कर लिया जाता है, संचय कहलाता है। लेकिन लाभ के भाग को एक ओर रख लिया जाए और उसका निवेश व्यवसाय के बाहर कर दिया जाए तो इसे संचय कोष कहते हैं।

क) निवेश निश्चित अवधि के लिए नहीं होते हैं।

ख) इसका सृजन सदा आवंटन योग्य लाभों में से किया जाता है।

ग) संचयकोष के निवेश पर प्राप्त ब्याज का पुनः निवेश करना आवश्यक नहीं हैं।

vii) **ऋणशोधन संचय कोष/संचित कोष :** संचित कोष की स्थापना, दीर्घ अवधि ऋण अथवा देयताओं के शोधन अथवा सम्पत्तियों के प्रति स्थापन अथवा पट्टाधिकार के नवीनीकरण के लिए की जाती है। संचित कोष का निर्माण वार्षिक योगदान द्वारा किया जाता है। इस योगदान राशि का व्यवसाय के बाहर, सरलता से बिक्री योग्य प्रतिभूतियों में निवेश किया जाता है। निवेश पर प्राप्त ब्याज को पुनः उन्हीं प्रतिभूतियों में विनियोग कर दिया जाता है। अतः संचित कोष हो सकता है : (i) स्थाई सम्पत्तियों की प्रति स्थापना के लिए अथवा (ii) ऋणपत्रों के शोधन अथवा ऋण के पुनर्भुगतान के लिए।

टिप्पणी

स्थाई सम्पत्तियों की प्रति स्थापना के लिए संचित कोष एक प्रावधान होता है। लेकिन ऋणपत्रों के शोधन अथवा ऋण की वापसी के लिए संचित कोष, लाभ का विनियोजन नहीं होता है। कम्पनी को संचितकोष के सृजन की आवश्यकता नहीं होती।

संचय, लाभ के विनियोजन होते हैं अर्थात् जिनमें प्रावधान एवं अन्य व्यय सम्मिलित हैं, के घटा देने पर लाभों का निर्धारण किया गया हो। संचय, अवशिष्ट आय होते हैं, जो सभी व्ययों एवं कराधान आदि के पश्चात बचे रहते हैं तथा इनपर स्वामियों अर्थात् अंशधारकों का अधिकार होता है।

क) संचित कोष निवेश, एक निश्चित अवधि के लिए होता है।

ख) यह सदा आवंटन के लिए लाभ में से नहीं होता, उदाहरण के लिए सम्पत्ति के प्रति स्थापना के लिए संचित कोष, ह्रास के लिए प्रावधान होता है। इसका सृजन लाभ के न होने पर भी अनिवार्य रूप से किया जाता है।

ग) संचित कोष के ब्याज को सदैव पुनः निवेश किया जाता है।

संचित कोष, वार्षिक योगदानों द्वारा निर्मित होता है। योगदानों को व्यवसाय के बाहर सरलता से बिक्री योग्य प्रतिभूतियों में निवेश कर दिया जाता है। विनियोजित राशि पर प्राप्त ब्याज को उन्हीं प्रतिभूतियों में पुनः निवेशित कर दिया जाता है।

एक संचित कोष (i) स्थाई सम्पत्तियों की प्रति स्थापना के लिए (ii) ऋणपत्रों के शोधन एवं ऋण को चुकता करने के लिए होता है। स्थाई सम्पत्ति की प्रतिस्थापना के लिए संचित कोष एक प्रावधान है। लेकिन ऋणपत्रों के शोधन एवं ऋण के चुकता करने के लिए संचित कोष लाभों का विनियोजन है। संचित कोष यह दर्शाता है कि राशि का व्यवसाय से बाहर निवेश किया गया है।

संचय सृजन के सामान्य नियम

i. इसका सृजन लाभ हानि विनियोजन खाते के नाम में प्रविष्टि करके किया जाता है।

ii. इसका सृजन अज्ञात देयता के भुगतान के लिए किया जाता है या फिर कम्पनी की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए या फिर लाभांश के समानीकरण के लिए।

iii. संचय का सृजन व्यवसाय में लाभ होने की स्थिति में होता है।

iv. इसका वितरण अंश धारकों में लाभांश के रूप में किया जा सकता है।

v. वास्तविक राशि की आवश्यकता को ध्यान में रखे बिना ही संचय का सृजन किया जाता है। केवल ऋणपत्रों के शोधन हेतु संचय सृजन के लिए एक निश्चित धनराशि एक ओर रख दी जाती है।

vi. संचय का सृजन व्यवसाय की वित्तीय नीति एवं प्रबन्ध निर्णयन पर निर्भर करता है।

vii सामान्यतः यह तुलन पत्र के दायित्व पक्ष में दर्शाया जाता है, क्योंकि यह एक विशिष्ट संचय नहीं है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 15.2

उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

i. वर्तमान आय में से जो राशि भविष्य की अप्रत्याशित घटना के भुगतान के लिए एक ओर रखी जाती है __________ कहलाती है।

ii. __________ का सृजन कानूनी रूप से अनिवार्य नहीं है।

iii. __________ संचय का सृजन __________ लाभ से किया जाता है।

iv. स्थाई सम्पत्तियों की बिक्री से लाभ __________ लाभ होता है।

v. __________ संचय को वित्तीय विवरण में नहीं दिखाया जाता।

vi. एक ओर बचाकर रखे लाभ तथा उसके व्यवसाय में प्रयोग को __________ कहते हैं।

vii. एक ओर बचाकर रखे लाभ तथा उसके व्यवसाय के बाहर निवेश को __________ कहते हैं।

viii. संचित कोष निवेश __________ अवधि के लिए होते हैं।

15.4 प्रावधान एवं संचय में अन्तर

क्र.सं.	*प्रावधान*	*संचय*
1.	इसका सृजन लाभ–हानि खाते के नाम में लिखकर किया जाता है।	इसका सृजन लाभ–हानि विनियोजन खाते के नाम में लिखकर किया जाता है।
2.	यह लाभ पर प्रभार होता है, जिसके बिना व्यवसाय का सही लाभ अथवा हानि ज्ञात नहीं किया जा सकता।	यह लाभ का विनियोजन है तथा इसका सृजन सही लाभ या हानि के निर्धारण के लिए नहीं किया जाता।
3.	व्यवसाय को लाभ हो अथवा हानि, इसके लिए व्यवस्था की जाती है।	इसका सृजन केवल तभी किया जाता है जब व्यवसाय में लाभ हो।
4.	यह अंशधारकों में लाभांशवितरण के लिए उपलब्ध नहीं होता है।	इसको अंशधारकों में लाभांश के रूप में वितरित किया जा सकता है।
5.	यह ज्ञातदेयता अथवा निश्चित आकस्मिकता के लिए राशि है जैसे कि अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान या फिर ह्रास के लिए प्रावधान।	यह राशि, भविष्य की अज्ञात देनदारी के भुगतान अथवा व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने अथवा लाभांश के समानीकरण के लिए होती है।

6.	प्रावधान करना, प्रबन्ध के लिए एक कानूनी अनिवार्यता है।	संचय का सृजन कानूनी रूप से अनिवार्य नहीं है। यह व्यवसाय की वित्तीय नीति एवं प्रबंध के निर्णयन पर निर्भर करता है।
7.	प्रावधान को देयता की ओर अथवा ऋणात्मक सम्पत्ति के रूप में संपत्तियों की ओर लिखा जा सकता है।	संचय स्वामी की समता से संबंधित होते हैं। इसे तुलनपत्र के देयता पक्ष में दर्शाया जाता है क्योंकि यह विशिष्ट संचय नहीं है।

पाठगत प्रश्न 15.3

I. निम्नलिखित कथन सत्य हैं अथवा असत्य :

i. प्रावधान सभी संभावित हानियों के लिए लाभ पर अधिभार होते हैं।

ii. सभी संचय तुलनपत्र के देयता पक्ष में होते हैं।

iii. पूँजी संचय स्वतंत्रता से लाभ के रूप में बांटे जाते हैं।

iv. संचय का उद्देश्य व्यावसायिक इकाई की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करना होता है।

v. प्रावधान एक निश्चित राशि के लिए किया जाता है, इसलिए ज्ञात आकस्मिकता के लिए प्रति वर्ष एक निश्चित राशि अलग रख दी जाती है।

II. बहुविकल्पीय प्रश्न

i. निम्न में से कौन सा प्रावधान नहीं है :

क) अप्राप्य ऋणों के लिए प्रावधान

ख) देनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान

ग) लाभांश समानीकरण संचय

घ) ह्रास के लिए प्रावधन

ii. निम्न में से कौन सा संचय नहीं है :

क) विस्तार के लिए संचय ख) लाभांश के लिए संचय

ग) गुप्त संचय घ) अप्राप्य ऋणों के लिए प्रावधान

iii. निम्न में से उस संचय का नाम दें, जिसका सृजन किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए नहीं होता है, बल्कि भविष्य की आकस्मिकताओं के लिए होता है :

क) सामान्य संचय ख) पूँजीगत संचय

ग) विशिष्ट संचय घ) गुप्त संचय

टिप्पणी

iv. निम्न में से उस संचय का नाम दें जिसका बोनस अंशों के निर्गमन के लिए उपयोग किया जा सकता है :

क) सामान्य संचय   ख) पूँजीगत संचय

ग) गुप्त संचय   घ) संचित कोष

v. निम्न में से उस मद की पहचान करें, जिसका सृजन लाभ हानि विनियोजन खाते के नाम में लिखने से होता है

क) अप्राप्य ऋणों के लिए प्रावधान

ख) देनदारों पर बट्टों के लिए प्रावधान

ग) आयकर के लिए प्रावधान

घ) सामान्य संचय

आपने क्या सीखा

- प्रावधान एक अनुमानित राशि होती है, जो भविष्य की अनिश्चित हानि या व्यय के भुगतान के लिए होता है, जैसे कि संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान, बट्टे के लिए प्रावधान, ह्रास के लिए प्रावधान। प्रावधान लाभ में से किए जाते हैं तथा तुलनपत्र के देयता पक्ष में दिखाए जाते हैं। भविष्य की ज्ञात देयता के भुगतान के लिए प्रावधान करना अनिवार्य है।

- चालू आय में से जो राशि भविष्य की अप्रत्याशित घटना के लिए बचाकर रखी जाती है, उसे संचय कहते हैं। जैसे सामान्य संचय, विस्तार के लिए संचय, लाभांश के समानीकरण के लिए संचय आदि। सामान्य संचय अवितरित लाभ या प्रतिधारित आय है। यदि लाभ नहीं है तो संचय का सृजन नहीं किया जा सकता। संचय व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए विनियोजन होते हैं। पूँजी संचय का सृजन पूँजीगत लाभों में से किया जाता है, जैसे कि पूँजीगत लाभ, अंश एवं ऋण पत्रों के निर्गमन पर प्रीमियम, समामेलन पूर्व लाभ आदि। यह संचय लाभांश के रूप में वितरण के लिए उपलब्ध नहीं होते। गुप्त संचय तुलनपत्र में नहीं दिखाए जाते। आयगत संचय, लाभों के भाग हैं, जिन्हें लाभांश के रूप में बांटा जा सकता है। विशिष्ट संचय विशिष्ट उद्देश्य के लिए बनाया जाता है। जैसे कि लाभांश समानीकरण संचय, निवेश संचय, निवेश उतार–चढ़ाव संचय आदि। जब लाभ के एक भाग को अलग रखकर व्यवसाय के बाहर निवेश कर दिया जाता है तो इसे संचय कोष कहते हैं। संचित कोष की स्थापना, दीर्घ अवधि ऋणों के शोधन या देयता या सम्पत्तियों की प्रति स्थापना के लिए की जाती है।

टिप्पणी

पाठान्त प्रश्न

1. संचित कोष का क्या अर्थ है?
2. प्रावधान का क्या अर्थ है?
3. संचय का अर्थ दीजिए।
4. प्रावधान के सृजन के उद्देश्य बताइए।
5. एक व्यवसाय संचयों का सृजन क्यों करता है? संक्षेप में समझाइए।
6. पूँजीगत संचय के उपयोग के उद्देश्य बताइए।
7. प्रावधान एवं संचय में किन्हीं चार आधारों पर अंतर कीजिए।
8. निम्न का वर्णन करें :

   i. गुप्त संचय   ii. आयगत संचय

   iii. विशिष्ट संचय   iv. संचित कोष

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

15.1 (i) हानि, व्यय (ii) विवादित (iii) लाभ एवं हानि खाते
(iv) स्वामी/अंशधारक (v) देयता

15.2 (i) संचय (ii) सामान्य संचय (iii) पूँजी, पूँजीगत
(iv) पूँजीगत (v) गुप्त (vi) संचय
(vii) संचय कोष (viii) निश्चित

15.3 I. (i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य
(iv) सत्य (v) सत्य

II. (i) ग (ii) घ (iii) क (iv) ख (v) घ

क्रियाकलाप

आपके अभिभावक भविष्य के ज्ञात अथवा अज्ञात व्ययों/देयता के लिए अपनी नियमित आय में से कुछ बचत करते हैं। पिछले तीन महीने की बचतों की सूची बनाएँ। उसके कारण दें तथा संचय और प्रावधान के सिद्धान्तों के आधार पर उनमें अन्तर करें, जिससे कि आपको संचय एवं प्रावधान शब्दों का स्पष्ट ज्ञान हो सके।

16

वित्तीय विवरण : एक परिचय

पिछले पाठों में आप व्यावसायिक लेन देनों का विभिन्न लेखा पुस्तकों में लेखा-जोखा करना एवं उनकी खाता बही में खतौनी करना सीख चुके हैं। आप खातों का शेष ज्ञात करना तथा तलपट बनाना भी सीख चुके हैं। लेखांकन का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य अंतिम परिणाम जानना भी है, अर्थात् एक निश्चित अवधि के पश्चात् व्यावसायिक इकाई के व्यवसाय परिचालन से होने वाले लाभ अथवा हानि तथा एक निश्चित तिथि को वित्तीय स्थिति का ज्ञान। इसके लिए कुछ वित्तीय विवरण बनाए जाते हैं जिन्हें, आय विवरण (अर्थात् व्यापार खाता एवं लाभ-हानि, खाता) जिससे यह ज्ञात किया जाता है कि एक निश्चित अवधि में व्यवसाय को क्या आय हुई है तथा स्थिति विवरण (अर्थात् तुलन पत्र) जिससे व्यवसाय की एक निश्चित तिथि को वित्तीय स्थिति का पता लगता है, कहते हैं।

इस पाठ में आप किसी लाभ कमाने वाली व्यावसायिक इकाई द्वारा तैयार किए जाने वाले वित्तीय विवरणों का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- वित्तीय विवरणों का अर्थ एवं उनके उद्देश्यों को समझा सकेंगे;
- वित्तीय विवरणों को व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा स्थिति विवरण में वर्गीकृत कर सकेंगे;
- पूँजीगत व्यय एवं आगम (Revenue) व्यय तथा पूँजीगत प्राप्तियाँ एवं आगम (Revenue) प्राप्तियों में अंतर कर सकेंगे;
- 'व्यापार खाता' एवं 'लाभ–हानि खाता' के उद्देश्य को समझा सकेंगे;

- व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता का प्रारूप बना सकेंगे; तथा
- स्थिति विवरण/तुलन पत्र को बना सकेंगे।

टिप्पणी

16.1 वित्तीय विवरण : अर्थ एवं उद्देश्य

विद्यार्थी एक वर्ष अध्ययन करने के बाद यह जानना चाहता है कि उस अवधि में उसने कितना सीखा है, इसी प्रकार से प्रत्येक व्यावसायिक उद्यम अपनी अवधि विशेष जो कि सामान्यतः एक वर्ष होती है, की अपनी गतिविधियों का परिणाम जानना चाहता है तथा एक तिथि विशेष को, जो कि एक अवधि की अंतिम तिथि होती है, वित्तीय स्थिति के संबंध में जानना चाहता है। इसके लिए यह विभिन्न विवरणों को तैयार करता है जिन्हें वित्तीय विवरण कहते हैं।

> वित्तीय विवरण वह विवरण है जो कि एक लेखा अवधि के अंत में बनाए जाते हैं जो कि सामान्यतः एक वर्ष होता है। यह विवरण व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा स्थिति विवरण अर्थात् तुलन पत्र होते हैं।

वित्तीय विवरणों के उद्देश्य

वित्तीय विवरणों से यह ज्ञात होता है कि एक व्यावसायिक इकाई ने एक निश्चित अवधि में क्या लाभ कमाया है अथवा उसे क्या हानि हुई है तथा यह एक निश्चित अवधि की समाप्ति पर इसकी वित्तीय स्थिति जानने के लिए बनाए जाते हैं।

वित्तीय विवरण सामान्यतः दो प्रकार के होते हैं—(क) आय विवरण जो कि व्यापार खाता एवं लाभ-हानि खाता से मिलकर बनता है तथा (ख) स्थिति विवरण अर्थात् तुलना पत्र।

वित्तीय विवरणों के बनाने के निम्नलिखित उद्देश्य हैंः—

1. **व्यवसाय परिचालन के परिणामों का निर्धारण :** प्रत्येक व्यवसायी यह जानना चाहता है कि अब अवधि विशेष में उसके व्यवसाय ने व्यावसायिक कार्यों से क्या लाभ कमाया है अथवा उसे क्या हानि हुई है? आय विवरण इस उद्देश्य की पूर्ति करता है।

2. **वित्तीय स्थिति का निर्धारण :** वित्तीय विवरण व्यवसाय की एक तिथि विशेष जो कि सामान्यतः लेखा वर्ष की अंतिम तिथि होती है, को वित्तीय स्थिति को दर्शाता है। इसके लिए स्थिति विवरण अर्थात् तुलन पत्र बनाया जाता है।

3. **सूचना का स्रोत :** वित्तीय विवरण व्यावसायिक इकाई के वित्त के संबंध में सूचना का महत्त्वपूर्ण स्रोत होते हैं। इस सूचना में वित्त प्रबंधक को व्यवसाय की वित्तीय गतिविधियों की योजना तैयार करने एवं धन के उचित प्रयोग करने में सहायता मिलती है।

4. **प्रबंधकीय निर्णय में सहायक :** प्रबंधक चालू वर्ष के परिणामों की पिछले वर्षों के परिणामों से तुलना कर व्यवसाय की लाभ अर्जन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन कर सकता है तथा उसी के अनुसार प्रबंधकीय निर्णय ले सकता है।

5. **व्यवसाय की शोधन क्षमता का सूचकांक :** वित्तीय विवरण व्यवसाय की अल्प अवधि एवं दीर्घ अवधि शोधन क्षमता को दर्शाते हैं इससे उद्यम को बैंक तथा अन्य वित्तीय संस्थानों से ऋण लेने तथा वस्तुओं के उधार क्रय करने में सहायता मिलती है।

वित्तीय विवरणों का महत्व

i. **वित्तीय :** प्रथम तो वित्तीय विवरण शब्द का कोई अर्थ नहीं है। गिनती के लिए संख्या होती है, जबकि विवरण शब्दों में दिखाए जाता है। अतः इन दोनों के मिश्रण का कोई औचित्य नहीं है। लेकिन जब हम मौद्रिक विवरण के रूप में देखते हैं तो यह अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

ii. **निर्णय लेना सुगम :** यह न केवल आपके लिए बल्कि प्रबन्धक एवं अंशधारकों के लिए भी महत्वपूर्ण होते है, क्योंकि वित्तीय विवरण कंपनी की सफलता एवं योग्यता को प्रदर्शित करते है, जबकि अंशधारक वित्तीय विवरणों से यह तय करते हैं कि कम्पनी में विनियोग किया जाए कि नहीं। दूसरे शब्दों में वित्तीय विवरणों से पता लगता है कि कम्पनी ने धन खोया है अथवा अर्जित किया है।

iii. **परिचालन निष्पादन को दर्शाना :** वित्तीय विवरणों में कम्पनी के राज छुपे होते हैं। यह कम्पनी लाभ कमा रही है अथवा हानि उठा रही यह तो विवरण बताते ही हैं इसके साथ यह भी सुराग देते हैं कि प्रबन्ध अपनी आगम को बढ़ाने के लिए कहाँ से और अधिक संसाधन जुटा सकता है। इसके अतिरिक्त वित्तीय विवरण कम्पनी के बीते समय के निष्पादन एवं क्षमता को उजागर करते हैं।

पूँजीगत व्यय एवं आगम (Revenue) व्यय, पूँजीगत प्राप्तियाँ तथा आगम (Revenue) प्राप्तियाँ

व्यापार खाता एवं लाभ-हानि खाता बनाने के लिए आगम व्यय, आगम प्राप्तियां एवं पूँजीगत व्यय तथा पूँजीगत प्राप्तियों के ज्ञान की आवश्यकता होती है। यह ज्ञान आगम मदों के वर्गीकरण में सहायक होता है जिन्हें एक ओर तो व्यापार खाता तथा लाभ हानि खाते के एक ओर लिखा जाता है तथा दूसरी ओर पूँजीगत मदों (व्यय एवं प्राप्तियां) के आधार पर स्थिति विवरण तैयार किया जाता है।

पूँजीगत व्यय वह व्यय है जो अचल संपत्तियों के क्रय करने पर किये जाते हैं जो व्यवसाय की अर्जन क्षमता में वृद्धि करते हैं। पूँजीगत व्यय से फर्म को कई वर्षों तक लाभ मिलता है। पूँजीगत व्यय के उदाहरण हैं—भवन, संयन्त्र एवं मशीन आदि को प्राप्त करने के लिए किया गया व्यय।

दूसरी ओर आगम (Revenue) व्यय वह व्यय है जो किसी व्यवसाय के सामान्य व्यावसायिक लेन-देनों पर किया जाता है तथा जिसका लाभ उसी लेखा वर्ष की अवधि में प्राप्त हो जाता है।

व्यय का एक और भी वर्ग होता है जिसे आस्थगित आगम व्यय कहते हैं। यह वह खर्च होते हैं जो किसी एक लेखा वर्ष में किये जाते हैं, लेकिन जो पूर्ण रूप से अथवा उनका एक भाग आगे आने वाले समय से संबंधित होता है। अन्यथा यह व्यय आगम वर्ग के होते हैं। आस्थगित आगम व्यय के उदाहरण हैं—विज्ञापन पर भारी खर्च जैसे कि नई वस्तु को बाजार में लाना, अनुसंधान एवं विकास पर किया गया व्यय आदि।

टिप्पणी

पूँजीगत व्यय एवं आगम (Revenue) व्यय में अंतर

अंतर का आधार	पूँजीगत व्यय	आगम व्यय
1. उद्देश्य	यह स्थायी संपत्ति क्रय करने के लिए किया जाता है।	यह स्थायी संपत्ति के रखरखाव के लिए किया जाता है।
2. लाभ-उपार्जन क्षमता	यह व्यवसाय की लाभ-उपार्जन क्षमता बढ़ाता है।	यह व्यवसाय की लाभ-उपार्जन क्षमता को बनाए रखने में सहायक होता है।
3. लाभ का काल	इसका लाभ कई वर्षों तक मिलता रहता है।	इसका लाभ केवल एक लेखांकन वर्ष की अवधि के लिए है।
4. वित्तीय विवरणों में स्थान	यह स्थिति-विवरण की मद है तथा संपत्ति के रूप में दर्शाया जाता है।	यह व्यापार तथा लाभ-हानि खाते की मद है तथा इन दोनों में से किसी एक के नाम पक्ष में दर्शाया जाता है।
5. व्यय की प्रकृति	यह अनावर्तक (Non-recurring) प्रकृति का होता है।	यह आवर्तक (Recurring) प्रकृति का होता है।

पूँजीगत प्राप्तियाँ एवं आगम (Revenue) प्राप्तियाँ

पूँजीगत प्राप्तियां वह प्राप्तियां हैं जो सामान्य रूप से व्यापार के परिचालन में नहीं होती है। इस प्रकार की प्राप्तियों के उदाहरण हैं—अचल संपत्तियों की बिक्री, ऋण लेना आदि। यह प्राप्तियाँ व्यवसाय की आय नहीं मानी जाती हैं।

आगम प्राप्तियाँ वह प्राप्तियाँ हैं जो व्यवसाय की सामान्य गतिविधियों के परिचालन में होती है, प्राप्त वस्तुओं की बिक्री, किराया प्राप्ति, लाभांश प्राप्ति आदि कुछ आयगत प्राप्तियों के उदाहरण हैं। यह मद व्यवसाय की आय होती है।

टिप्पणी

'पूँजीगत प्राप्तियाँ' एवं 'आगम (Revenue) प्राप्तियाँ' में अंतर

अंतर का आधार	*पूँजीगत प्राप्तियां*	*आगम प्राप्तियां*
स्रोत	प्राप्तियां जो व्यवसाय के सामान्य परिचालन में नहीं उत्पन्न होती।	प्राप्तियां जो व्यवसाय के सामान्य परिचालन में उत्पन्न होती है।
प्रकृति	यह पूँजीगत वर्ग की हैं, इसलिए व्यवसाय की आय नहीं मानी जाती।	यह आगम प्रकृति की होती है, इसलिए व्यवसाय की आय मानी जाती है।
घटित होना	यह अनावर्तक प्रकृति की होती हैं।	यह आवर्तक प्रकृति की होती हैं। हैं।

पाठगत प्रश्न 16.1

I. व्यय की निम्नलिखित मदों को पूँजीगत व्यय, आगम (Revenue expenditure) व्यय एवं आस्थगित आगम व्यय (Deferred revenue expenditure) वर्गों में विभक्त कीजिए:

(i) मशीन के क्रय पर किया गया व्यय।

(ii) भवन की मरम्मत पर किया गया व्यय।

(iii) बाजार में नये उत्पाद को लाने के लिए विज्ञापन पर किया गया भारी व्यय।

(iv) व्यवसाय के प्रयोग के लिए मोटर वाहन का क्रय।

II. वित्तीय विवरणों का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य व्यवसाय के परिचालन के परिणाम जानना है। वित्तीय विवरणों के अन्य उद्देश्यों को लिखिए।

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

16.2 व्यापार खाता

आय विवरण के दो भाग होते हैं—व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता। आइए पहले व्यापार खाते का अध्ययन करें। कोई भी व्यावसायिक इकाई या तो दूसरों से माल का क्रय कर उन्हें लाभ के लिए बेचती है या फिर उनकी विनिर्माण कर उनकी बिक्री करती है। इन क्रियाओं से होने वाले लाभ अथवा हानि का निर्धारण करने के लिए एक विवरण बनाया जाता है जिसे व्यापार खाता कहते हैं।

टिप्पणी

व्यापार खाता व्यवसाय की व्यावसायिक क्रियाओं का परिणाम ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है। यह (व्यापार खाता) दर्शाता है कि खरीदे गये अथवा निर्मित माल को बेचने से व्यवसाय को लाभ हुआ है अथवा हानि। एक लेखा वर्ष की शुद्ध बिक्री में से बिके माल के लागत मूल्य को घटा देते हैं। यदि कुल विक्रय मूल्य बिके माल की लागत से अधिक है तो अंतर की राशि सकल लाभ होगी। दूसरी ओर यदि माल का लागत मूल्य समस्त शुद्ध बिक्री से अधिक है तो अंतर की राशि सकल हानि होगी। बिके हुए माल की लागत से संबंधित सभी खाते जैसे कि प्रारंभिक स्टॉक, शुद्ध क्रय अर्थात क्रय से बाह्य वापसी घटाई गई, प्रत्यक्ष व्यय जैसे कि मजदूरी, भाड़ा एवं अंतिम स्टॉक तथा शुद्ध बिक्री (विक्रय घटा विक्रय वापसी) को व्यापार खाते में ले जाया जाता है। तत्पश्चात् इस खाते का शेष ज्ञात किया जाता है। जमा शेष सकल लाभ दर्शाता है तथा नाम शेष सकल हानि दर्शाता है।

व्यापार खाता बनाने से पहले बिके हुए माल की लागत का अर्थ जानना आवश्यक है।

बिके हुए माल की लागत एवं सकल लाभ (Cost of goods sold and gross profit)

व्यावसायिक इकाई बाजार में बिक्री के लिए या तो माल का क्रय करती है अथवा उसका निर्माण करती है। बिके हुए माल के लागत मूल्य की गणना एक व्यावसायिक इकाई की एक विशेष अवधि की व्यापारिक गतिविधियाँ से अर्जित लाभ (सकल लाभ) अथवा जो हानि हुई है (सकल हानि) को ज्ञात करने के लिए की जाती है।

बिके हुए माल की लागत = क्रय की गई वस्तुओं की राशि + वस्तुओं को विक्रय स्थल पर लाने पर किया गया व्यय अथवा वस्तुओं के उत्पादन पर किया गया व्यय जिन्हें प्रत्यक्ष व्यय कहते हैं।

यदि वर्ष के प्रारंभ में अथवा उसके अंत में विक्रय के लिए उपलब्ध वस्तुओं का स्टाक है तो बिके हुए माल की लागत की गणना इस प्रकार की जायेगी:

बिके हुए माल की लागत =
प्रारंभिक स्टाक + शुद्ध क्रय + समस्त प्रत्यक्ष व्यय – अंतिम स्टाक

सकल लाभ = शुद्ध विक्रय – बिके हुए माल की लागत

उदाहरण 1

नीचे दी गई सूचना से बिके हुए माल की लागत ज्ञात कीजिए:

	₹
प्रारंभिक स्टॉक	10,000
अंतिम स्टॉक	8,000
क्रय	80,000

टिप्पणी

क्रय पर भाड़ा	2,000
मजदूरी	6,600

हल

बिके हुए माल की लागत =

प्रारंभिक स्टॉक + क्रय + प्रत्यक्ष व्यय (क्रय पर भाड़ा + मजदूरी) – अंतिम स्टॉक

= ₹ (10,000 + 80,000 + 8,600) – (2,000 + 8,000)

= ₹ 90,600

उदाहरण 2

नीचे दी गई सूचना से बिके हुए माल की लागत तथा सकल लाभ ज्ञात कीजिए।

	₹
विक्रय	62,500
विक्रय वापसी	500
प्रारंभिक स्टॉक	6,400
क्रय	32,000
प्रत्यक्ष व्यय	4,200
अंतिम स्टॉक	7,200

हल

	₹	₹
शुद्ध विक्रय (विक्रय – विक्रय वापसी ₹ 62,500 – ₹ 500)		62,000
घटा बिके हुए माल की लागत :		
प्रारंभिक स्टॉक	6,400	
जमा : क्रय	32,000	
जमा : प्रत्यक्ष व्यय	4,200	
घटा : अंतिम स्टॉक	(7,200)	35,400
सकल लाभ		26,600

(सकल लाभ = शुद्ध विक्रय–बिके हुए माल की लागत)

= ₹ 62,000 – ₹ 35,400

= ₹ 26,600

टिप्पणी

उदाहरण 3

विक्रम, एक व्यापारी, द्वारा वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 के लिए दी गई सूचना से बिके माल की लागत ज्ञात कीजिए तथा व्यवसाय के सकल लाभ/सकल हानि की गणना भी कीजिए।

	₹
विक्रय	1,20,000
क्रय	80,000
चुंगी	1,600
क्रय पर भाड़ा	4,500
क्रय वापसी	2,400
प्रारंभिक स्टॉक	27,600
अंतिम स्टॉक	32,400

हल :

	₹
बिके हुए माल की लागत	
प्रारंभिक स्टॉक	27,600
जमा शुद्ध क्रय (₹ 80,000 – ₹ 2,400)	77,600
जमा क्रय पर भाड़ा	4,500
जमा चुंगी	1,600
विक्रय के लिए उपलब्ध माल की लागत	1,11,300
घटा : अंतिम स्टॉक	32,400
बिके हुए माल की लागत	78,900
सकल लाभ	
विक्रय	1,20,000
घटा : बिके हुए माल की लागत	78,900
सकल लाभ	41,100

व्यापार खाता की आवश्यकता

व्यापार खाता निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति करता है :

टिप्पणी

1. **सकल लाभ का ज्ञान :** व्यापार खाता सकल लाभ की जानकारी प्रदान करता है। यह एक व्यावसायिक उद्यम का अपनी व्यापारिक क्रियाओं से अर्जित लाभ होता है। बिक्री पर सकल लाभ प्रतिशत व्यवसाय की सफलता की सीमा को दर्शाता है।
2. **समस्त प्रत्यक्ष खर्चों का ज्ञान :** सभी प्रत्यक्ष खर्चों को व्यापार खाते में ले जाया जाता है। प्रत्यक्ष व्यय वह व्यय है जिन्हें बिक्री के लिये माल के क्रय अथवा उत्पादन से सीधे जोड़ा जा सकता है। चालू वर्ष के खर्चों को बिक्री पर प्रतिशत की जब पिछले वर्षों के प्रतिशत से तुलना की जाती है तो इससे प्रबंधक को प्रत्यक्ष खर्चों पर नियंत्रण में सहायता मिलती है।
3. **भविष्य की हानियों का पूर्वोपाय :** यदि व्यापार खाता सकल हानि दर्शाता है तो इसके कारण ढूंढ़े जा सकते हैं तथा उनमें सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाए जा सकते हैं।

व्यापार खाते का प्रारूप

व्यापार खाता

वर्ष समाप्ति .... के लिए

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
प्रारंभिक स्टॉक	``````	विक्रय	``````
क्रय		घटाया विक्रय वापसी	``````
घटाया क्रय वापसी	``````	सकल हानि	``````
प्रत्यक्ष व्यय	``````	(लाभ हानि खाता में	
ढुलाई		हस्तांतरित)	``````
भाड़ा	``````		
मजदूरी	``````		
ईंधन एवं बिजली	``````		
उत्पादन शुल्क	``````		
कारखाने का किराया एवं विद्युत			
कारखाने का किराया एवं बीमा	``````		
कार्य प्रबंधक का वेतन	``````		
सकल लाभ–(लाभ हानि खाते में हस्तांतरण)	``````		

टिप्पणी

व्यापार खाता की महत्त्वपूर्ण मदें :

1. स्टॉक : स्टॉक किसी एक तिथि को रखी वह वस्तुएँ हैं जिनकी अभी बिक्री होनी है। यह दो प्रकार का होता है– (क) प्रारंभिक स्टॉक (ख) अंतिम स्टॉक

(क) प्रारंभिक स्टॉक : प्रारंभिक स्टॉक लेखा वर्ष के प्रारंभ में बचा हुआ वह माल है जिसकी बिक्री होनी बाकी है। इसे व्यापार खाते के नाम पक्ष में दर्शाया जाता है। किसी भी व्यवसाय के प्रथम वर्ष में कोई प्रारंभिक स्टॉक नहीं होता।

(ख) अंतिम स्टॉक : यह लेखा वर्ष के अंत में बचा हुआ वह माल है जिसकी बिक्री नहीं हुई है। यह लागत मूल्य अथवा बाजार मूल्य जो भी कम हो पर दिखाया जाता है। इसे व्यापार खाते के जमा पक्ष में लिखा जाता है।

2. क्रय : क्रय का अर्थ है विक्रय के उद्देश्य से क्रय की गई वस्तुएँ। यह नकद एवं उधार दोनों हो सकती है। क्रय की गई वस्तुओं को व्यापार खाते के नाम की ओर लिखा जाता है। इन्हें सदा शुद्ध मूल्य पर दिखाया जाता है अर्थात् क्रय की कुल राशि में से (क्रय किये गये माल में से लौटा दी गई राशि) क्रय वापसी अथवा बाह्य वापसी) को घटा दिया जाता है। प्रेषण पर प्राप्त माल को क्रय नहीं माना जाता। इसी प्रकार से 'विक्रय अथवा वापस कर दें' के आधार पर प्राप्त माल को भी क्रय नहीं माना जाता।

3. विक्रय : विक्रय उस व्यावसायिक इकाई के द्वारा माल के विक्रय से प्राप्त कुल राशि को कहते हैं जिसका व्यापार खाता बनाया जाता है। इसमें नकद विक्रय एवं उधार विक्रय दोनों सम्मिलित हैं। इन्हें व्यापार खाते के जमा में लिखा जाता है। बिक्री को उसके शुद्ध मूल्य पर अर्थात कुल बिक्री में से बिक्री वापसी को घटाकर दिखाया जाता है। रोकड़ बिक्री जमा उधार बिक्री घटा बिक्री वापसी शुद्ध बिक्री है। बिक्री अथवा लौटा देने की शर्त पर भेजे गये माल को स्वीकृति मिलने पर ही बिक्री मानी जाती है।

4. प्रत्यक्ष व्यय : प्रत्यक्ष व्यय वह व्यय है जिनका संबंध सीधे तौर पर वस्तुओं के क्रय अथवा उनके उत्पादन से होता है। इन्हें व्यापार खाता के नाम में लिखा जाता है। इन्हें तलपट में दिखाए गए मूल्य पर ही लिखा जाता है। उदाहरण के लिए मजदूरी को उसके तलपट में दिखाए गए मूल्य पर व्यापार खाता के नाम में लिखा जाता है।

प्रत्यक्ष व्यय की कुछ महत्त्वपूर्ण मदें :

i. मजदूरी अर्थात उत्पादन से संबंधित मजदूरी। यदि इसमें भवन निर्माण पर किया गया मजदूरी व्यय अथवा कार्यालय के लिए फर्नीचर बनाने के लिए मजदूरी का भुगतान सम्मिलित है तो इसे मजदूरी की मद में से घटा दिया जाएगा।

टिप्पणी

ii. ढुलाई : भाड़ा, ढुलाई अर्थात बिक्री के लिए क्रय किए गए माल अथवा उत्पादन के लिए कच्चे माल का क्रय पर ढुलाई का भुगतान।

iii. अन्य दूसरे प्रत्यक्ष व्यय हैं सीमा शुल्क एवं आयात कर, पैकिंग का सामान, गैस, बिजली, पानी, ईंधन, तेल, गैस, ग्रीस, बिजली, कारखाने का किराया एवं बीमा एवं अन्य दूसरी मदें।

5. **सकल लाभ/सकल हानि :** यह शुद्ध विक्रय से आगम का बिक्री की गई वस्तुओं की लागत पर आधिक्य है। सकल लाभ शुद्ध बिक्री और बिक्री की गई वस्तुओं के लागत की अन्तर राशि के बराबर होता है। यदि जमा पक्ष का योग नाम पक्ष के योग से अधिक है तो आधिक्य राशि को सकल लाभ कहेंगे तथा इसे व्यापार खाते के नाम पक्ष में दिखाया जाएगा। दूसरी ओर यदि नाम पक्ष जमा पक्ष से अधिक है तो अंतर राशि सकल हानि कहलायेगी तथा इसे व्यापार खाते के जमा पक्ष में दिखाया जायेगा।

सकल लाभ = शुद्ध बिक्री – बिक्री की गई वस्तुओं की लागत

सकल हानि = बिक्री की गई वस्तुओं की लागत – शुद्ध बिक्री

पाठगत प्रश्न 16.2

I. रिक्त स्थानों की उचित शब्द/शब्दों से पूर्ति कीजिए :

i. वित्तीय विवरण सामान्यत: .... प्रकार के होते हैं।

ii. आय विवरण .... खाता एवं .... खाता को मिलाकर बनता है।

iii. व्यापार खाता व्यवसाय की क्रियाओं के .... निर्धारण के लिए बनाया जाता है।

iv. बिक्री पर प्रतिशत सकल लाभ व्यवसाय की .... की डिग्री का द्योतक है।

II. निम्नलिखित में परिणाम दिखाइए :

i. बिक्री – विक्रय वापसी =

ii. क्रय – क्रय वापसी =

iii. व्यापार खाते के जमा स्तंभ का योग – व्यापार खाते के नाम स्तंभ का योग =

iv. बिक्री किये माल की कुल लागत – कुल बिक्री =

16.3 हस्तांतरण प्रविष्टियाँ

व्यापार खाता बनाने से पहले व्यावसायिक इकाई के रोजनामचे में अंतिम/हस्तांतरण प्रविष्टियाँ की जाती है।

टिप्पणी

यह रोजनामचा प्रविष्टियाँ इस प्रकार है—

(क) नाम शेषों का हस्तांतरण

व्यापार खाता	नाम
आरम्भिक स्टॉक खाता से	
क्रय खाता से	
प्रत्यक्ष व्यय खाता से	
विक्रय वापसी खाता से	
(प्रारम्भिक व्यय, क्रय, प्रत्यक्ष व्यय एवं विक्रय वापसी खाता के शेषों का हस्तांतरण)	

(ख) जमा मदों का हस्तांतरण

विक्रय खाता	नाम
अंतिम स्टाक खाता	नाम
क्रय वापसी खाता	नाम
व्यापार खाता से	
(तलपट से विक्रय, अन्तिम स्टाक, क्रय वापसी खाता के जमा शेषों का हस्तांतरण)	

(ग) सकल लाभ का हस्तांतरण

व्यापार खाता	नाम
लाभ–हानि खाता से	
(सकल लाभ का हस्तांतरण)	

(घ) सकल हानि का हस्तांतरण

लाभ–हानि खाता	नाम
व्यापार खाता से	
(सकल हानि का हस्तांतरण)	

उदाहरण 4

वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 को खाता बही से लिए गये शेष नीचे दिये गये हैं:

खाते का नाम	*राशि (₹)*
प्रारंभिक स्टॉक	12,000
क्रय	52,000
विक्रय	74,000

क्रय वापसी	2,000
भाड़ा आंतरिक	800
मजदूरी	4,200
अंतिम स्टॉक	13,500

मुख्य रोजनामचा में आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल :

रोजनामचा

तिथि	विवरण		खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
2014					
मार्च 31	व्यापार खाता	नाम		69,000	
	प्रारंभिक स्टॉक खाता से				12,000
	क्रय खाता से				52,000
	मजदूरी खाता से				4,200
	भाड़ा आंतरिक खाता से				800
	(नाम शेषों का व्यापार खाता में हस्तांतरण)				
मार्च 31	विक्रय खाता	नाम		74,000	
	क्रय वापसी खाता	नाम		2,000	
	अंतिम स्टाक खाता	नाम		13,500	
	व्यापार खाता से				89,500
	(जमा की मदों का व्यापार खाते में हस्तांतरण)				
मार्च 31	व्यापार खाता	नाम		20,500	
	लाभ–हानि खाता से				20,500
	(सकल लाभ का लाभ हानि खाते में हस्तांतरण)				

उदाहरण 5

नीचे रोहित एण्ड संस की खाता बही से लिये गये शेष वर्ष 2014 की समाप्ति पर दिये गये हैं।

खाते का नाम	***₹***
स्टॉक (1.1.2014)	21,000
क्रय	1,40,000
विक्रय	2,24,000
क्रय वापसी	8,000
विक्रय वापसी	12,000
मजदूरी	15,000
कारखाना बिजली	12,000
स्टॉक (31.12.2014)	26,500

मुख्य रोजनामचा में अंतिम प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल :

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*		*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
2014					
दिस. 31	व्यापार खाता	नाम		2,00,000	
	प्रारंभिक स्टाक खाता से				21,000
	क्रय खाता से				1,40,000
	विक्रय वापसी खाता से				12,000
	मजदूरी खाता से				15,000
	कारखाना बिजली खाता से				12,000
	(नाम के शेषों का व्यापार खाता में हस्तांतरण)				
	विक्रय खाता	नाम		2,24,000	
	अंतिम स्टाक खाता	नाम		26,500	
	क्रय वापसी खाता	नाम		8,000	
	व्यापार खाता से				2,58,500
	(जमा शेषों का व्यापार खाते में हस्तांतरण)				
	व्यापार खाता	नाम		58,500	
	लाभ–हानि खाता से				58,500
	(सकल लाभ का हस्तांतरण)				

पाठगत प्रश्न 16.3

नीचे दी गई मदों को यदि व्यापार खाते के नाम में लिखा जाना है तो 'नाम' और जमा में लिखा जाना है तो 'जमा' शब्द लिखें :

(i) अंतिम स्टॉक

(ii) भाड़ा आंतरिक

(iii) विक्रय

(iv) सीमा शुल्क

16.4 लाभ हानि खाता

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि आय विवरण दो खातों से मिलकर बनता है—व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता। आप यह भी जान चुके हैं कि व्यापार खाता व्यवसाय की व्यापारिक क्रियाओं के सकल लाभ अथवा सकल हानि का निर्धारण करने के लिए बनाया जाता है। लेकिन यह किसी उद्यम के व्यावसायिक परिचालन का अंतिम परिणाम नहीं होते हैं प्रत्यक्ष खर्चों के अतिरिक्त कुछ अप्रत्यक्ष व्यय भी होते हैं। इनको सुविधानुसार 'कार्यालयी एवं प्रशासनिक व्यय', विक्रय एवं वितरण व्यय, वित्तीय व्यय, अवक्षयण एवं रख-रखाव खर्च आदि में विभक्त किया जा सकता है।

इसी प्रकार आगम बिक्री के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी आय प्राप्त हो सकती है। जैसे कि निवेश पर ब्याज, लेनदारों से प्राप्त बट्टे की राशि, कमीशन प्राप्ति आदि। एक और खाता बनाया जाता है जिसमें सभी अप्रत्यक्ष व्यय एवं विक्रय के अतिरिक्त आगम के अन्य स्रोतों से प्राप्तियों को लिखा जाता है। जब इस खाते का शेष निकाला जाता है तो यह लाभ (अथवा हानि) दिखाता है। इस खाते को लाभ-हानि खाता कहते हैं यह खाता जब लाभ दिखाता है तो उसे शुद्ध लाभ और यदि हानि दिखाता है तो इसे शुद्ध हानि कहते हैं।

लाभ हानि खाते का प्रारूप

मै. .... का लाभ हानि खाता
वर्ष समाप्ति .... के लिए

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
सकल हानि		सकल लाभ	

वेतन		बट्टा प्राप्त किया	
किराया, रेट्स, एवं कर		कमीशन प्राप्त किया	
बीमा प्रीमियम		लाभांश प्राप्त किया	
विज्ञापन		निवेश पर ब्याज	
कमीशन दिया		किराया प्राप्त किया	
बट्टा दिया		शुद्ध हानि का पूँजी खाते में हस्तांतरण	
मरम्मत एवं नवीनीकरण			
अप्राप्य ऋण			
अप्राप्य व्यय			
यात्रा व्यय			
बैंक खर्च			
बिक्री कर/मूल्य जमा कर			
स्थाई संपत्तियों पर अवक्षयण			
शुद्ध लाभ का पूँजी खाते में हस्तांतरण			

टिप्पणी

लाभ-हानि खाते की कुछ महत्त्वपूर्ण मदें

जैसा कि पहले बताया जा चुका है अप्रत्यक्ष व्यय लाभ हानि खाते के नाम की ओर लिखे जाते हैं। इन्हें निम्न में विभक्त किया जा सकता है–

नाम की मदें

1. **विक्रय एवं वितरण व्यय :** बिक्री के लिए जो व्यय किये जाते हैं उन्हें विक्रय एवं वितरण व्यय कहते हैं। यह खर्च इस प्रकार है :

   बिक्री पर भाड़ा/भाड़ा बाह्य, विज्ञापन, बिक्री खर्च, यात्रा खर्च, विक्रयकर्ता का कमीशन, डिलीवरी वैन पर अवक्षयण, डिलीवरी वैन के ड्राइवर का वेतन।

2. **कार्यालयी एवं प्रशासनिक व्यय :** यह कार्यालय के कर्मचारियों एवं रख–रखाव पर व्यय होते हैं। इस शीर्ष के अधीन कुछ व्यय इस प्रकार हैं–

   किराया, रेट्स एवं कर, पोस्टेज, प्रिंटिंग एवं स्टेशनरी, बीमा, कानूनी व्यय, अंकेक्षण, फीस, कार्यालयी वेतन आदि।

3. **वित्तीय व्यय :** व्यवसाय के लिए वित्त की व्यवस्था करनी होती है तथा इस संबंध में जो व्यय किये जाते हैं उन्हें वित्तीय व्यय कहते हैं। कुछ वित्तीय व्यय इस प्रकार हैं–ऋण पर ब्याज, पूँजी पर ब्याज, बिलों पर छूट आदि।

4. **अवक्षयण एवं रख-रखाव संबंधी व्यय :** अचल संपत्ति जैसे कि मशीन, भवन, फर्नीचर आदि के कुछ मूल्य को लाभ हानि खाते में उसी वर्ष में नहीं लिख दिया जाता जिसमें इसका क्रय किया गया है। इस प्रकार की संपत्तियाँ आगे आने वाले कई वर्षों तक व्यवसाय को चलाने में सहायक होती है। इसीलिए इन संपत्तियों के एक भाग को ही व्यय माना जाता है तथा इसे अवक्षयण के रूप में लाभ–हानि खाते में लिख दिया जाता है। अवक्षयण का अर्थ है–टूट-फूट, प्रयोग, समय का बीतना, अप्रचलन इत्यादि के कारण अचल संपत्ति के मूल्यों में कमी आना। अवक्षयण को छोड़कर मरम्मत तथा नवीनीकरण संबंधी व्यय भी इसी श्रेणी के अंतर्गत आते हैं।
5. **अन्य खर्चे :** ये वह खर्चे होते हैं जो कि ऊपर लिखित खर्चों में सम्मिलित नहीं किए गए है जैसे– आग, चोरी के कारण हानि व खर्चे इत्यादि।

जमा की मदें

लाभ–हानि खाते के जमा की ओर आगम आय की मदें लिखी जाती हैं। लाभ–हानि खाते के इस पक्ष में प्रथम मद व्यापार खाते से हस्तांतरित सकल लाभ की होती है। जमा के पक्ष में लिखी जाने वाली अन्य मदें हैं–निवेश पर ब्याज, स्थाई जमा पर ब्याज, किराया प्राप्ति, कमीशन प्राप्ति, बट्टा प्राप्ति, अंशों पर लाभांश आदि।

लाभ-हानि खाता बनाने की आवश्यकता

एक व्यावसायिक इकाई का लाभ हानि खाता बनाने की आवश्यकता को इस प्रकार से बताया जा सकता है :

(i) किसी व्यवसाय का एक लेखा वर्ष के शुद्ध लाभ अथवा शुद्ध हानि का ज्ञान,

(ii) किसी एक वर्ष का शुद्ध लाभ का पिछले वर्ष अथवा वर्षों के लाभों से तुलना की जा सकती है। इससे यह तय किया जा सकता है कि व्यवसाय को कुशलतापूर्वक चलाया जा रहा है अथवा नहीं,

(iii) लाभ हानि खाते में जो खर्चे दिखाए गए हैं उनकी तुलना पिछले वर्ष अथवा वर्षों के खर्चों की राशि से तुलना की जा सकती है। इससे यह निर्धारित करने में सहायता मिलती है कि क्या इन खर्चों पर किसी प्रकार के नियंत्रण की आवश्यकता है।

पाठगत प्रश्न 16.4

I. नीचे खर्च एवं आय की मदें दी गई हैं जिन्हें लाभ-हानि खाते में लिखना है। प्रत्येक मद के आगे व्यय होने पर 'ई' तथा आय होने पर 'आई' लिखें।

(i) स्थाई जमा पर ब्याज

(ii) विज्ञापन

(iii) बीमा प्रीमियम

(iv) लेनदारों द्वारा दी गई छूट

(v) बिक्री पर भाड़ा

II. बताइए कि नीचे दिए गए कथन सत्य हैं अथवा असत्य। 'सत्य' होने पर सत्य तथा 'असत्य' होने पर 'असत्य' लिखें :

(i) लाभ–हानि खाता एक व्यावसायिक इकाई का सकल लाभ ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है।

(ii) आय की मदें लाभ–हानि खाते के जमा पक्ष में लिखी जाती है।

(iii) लाभ–हानि खाता बनाकर ज्ञात किया गया शुद्ध लाभ को व्यापार खाता में हस्तांतरण किया जाता है।

(iv) लाभ–हानि खाता किसी एक लेखा वर्ष के लिए बनाया जाता है।

16.5 लाभ हानि खाता की हस्तांतरण प्रविष्टियाँ

पिछले अनुभाग में दिये प्रारूप के अनुसार लाभ हानि खाता तैयार करने से पहले उद्यम के रोजनामचे में अंतिम प्रविष्टियाँ की जाती हैं। यह रोजनामचा प्रविष्टियाँ इस प्रकार हैं–

(i) अप्रत्यक्ष व्यय खातों का हस्तांतरण :

लाभ-हानि खाता	नाम
वेतन खाता से	
बीमा प्रीमियम खाता से	
अप्राप्य ऋण खाता में	
बट्टा खाता से	
(अप्रत्यक्ष व्ययों का हस्तांतरण)	

(ii) आय एवं लाभ की मदों का हस्तांतरण

निवेश पर ब्याज खाता	नाम
किराया प्राप्ति खाता	नाम
बट्टा प्राप्ति खाता	नाम
लाभ-हानि खाता से	
(आय की मदों का हस्तांतरण)	

(iii) शुद्ध लाभ का हस्तांतरण

लाभ–हानि खाता — नाम
पूँजी खाता से
(शुद्ध लाभ का पूँजी खाता में हस्तांतरण)

(iv) शुद्ध हानि का हस्तांतरण

पूँजी खाता — नाम
लाभ हानि खाता से
(शुद्ध हानि का पूँजी खाता में हस्तांतरण)

उदाहरण 6

माया गुप्ता एंड संस की लेखा बहियों से 31 मार्च, 2014 की समाप्ति पर लिये गये शेष नीचे दिये गये हैं। इसी तिथि को आवश्यक अंतिम प्रविष्टियाँ कीजिए :

मदें	नाम शेष (₹)	जमा शेष (₹)
सकल लाभ	65,000	
वेतन	11,500	
अंकेक्षण फीस	400	
बीमा प्रीमियम	800	
ब्याज प्राप्त किया		1,600
बट्टा (जमा)		460
विज्ञापन	1,200	
अप्राप्य ऋण	150	
बट्टा दिया	340	
अवक्षयण	460	
किराया प्राप्त हुआ	—	1,800

हल :

रोजनामचा प्रविष्टियाँ :

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
(i)	व्यापार खाता — नाम लाभ–हानि खाता से (सकल लाभ का लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरण)		65,000	65,000

(ii)	लाभ–हानि खाता नाम		14,850	
	वेतन खाता से			11,500
	अंकेक्षण खाता से			400
	बीमा प्रीमियम खाता से			800
	विज्ञापन खाता से			1,200
	अप्राप्य ऋण खाता से			150
	बट्टा दिया खाता से			340
	अवक्षयण खाता से			460
	(खर्च की मदों का लाभ-हानि खाता में हस्तांतरण)			
(ii)	ब्याज खाता नाम		1,600	
	बट्टा प्राप्ति खाता नाम		160	
	किराया खाता नाम		1,800	
	लाभ–हानि खाता से		3,860	
	(आय की मदों का लाभ हानि खाता में हस्तांतरण)			
(iii)	लाभ–हानि खाता नाम		54,010	
	पूँजी खाता से			54,010
	(शुद्ध लाभ का पूँजी खाता में हस्तांतरण)			

टिप्पणी

उदाहरण 7

रबीना एण्ड ब्रादर्स की लेखा पुस्तकों से 31 मार्च, 2014 को निम्नलिखित खाता शेष उठाए गए। इन शेषों की वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 को लाभ हानि खाता बनाने के लिये रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

	₹
सकल लाभ	65800
वेतन	8400
किराए का भुगतान किया	2400
बट्टे की छूट दी	500
निवेश पर ब्याज	3100
विज्ञापन	1800
व्यापार व्यय	1600

टिप्पणी

अप्राप्य ऋण	500
अवक्षयण	600
बीमा प्रीमियम	800
कमीशन प्राप्त किया	2700

हल :

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
2014				
मार्च 31	व्यापार खाता नाम		65,800	
	लाभ–हानि खाता से			65,800
	(सकल लाभ का लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरण)			
मार्च 31	लाभ–हानि खाता नाम		16,600	
	वेतन खाता से			8,400
	किराया खाता से			2,400
	बट्टा दिया खाता से			500
	विज्ञापन खाता से			1,800
	व्यापार खर्चे खाता से			1,600
	अप्राप्य ऋण खाता से			500
	अवक्षयण खाता से			600
	बीमा प्रीमियम खाता से			800
	(नाम शेष के खातों का लाभ हानि खाते में हस्तांतरण)			
मार्च 31	कमीशन खाता नाम		2,700	
	ब्याज खाता नाम		3,100	
	लाभ–हानि खाता से			5,800
	(जमा शेष का लाभ हानि खाता में हस्तांतरण)			
मार्च 31	लाभ–हानि खाता नाम		55,000	
	पूँजी खाता से			55,000
	(शुद्ध लाभ का पूँजी खाता में हस्तांतरण)			

प्रचालन लाभ

प्रचालन लाभ प्रचालन व्यय पर सकल लाभ का आधिक्य होता है। सकल लाभ विक्रय किए माल की लागत पर विक्रय आगम का आधिक्य होता है। प्रचालन व्यय में कार्यालयी एवं प्रशासनिक व्यय, विक्रय एवं वितरण व्यय नकद छूट, देय विपत्रों पर ब्याज एवं अन्य लघु अवधि ऋण, अप्राप्य ऋण आदि सम्मिलित होते हैं। शुद्ध विक्रय का अर्थ है नकद विक्रय जमा उधार विक्रय घटा विक्रय वापसी।

प्रचालन लाभ = शुद्ध विक्रय – प्रचालन व्यय

= शुद्ध विक्रय – (विक्रय माल की लागत + प्रशासनिक एवं कार्यालयी व्यय + विक्रय एवं वितरण व्यय)

अथवा

प्रचालन लाभ = शुद्ध लाभ + गैर प्रचालन व्यय – गैर प्रचालन आय

उदाहरण 8

निम्न सूचना से प्रचालन लाभ की गणना कीजिए :

	₹		₹
सकल लाभ	44,000	ऋण पर ब्याज	200
बाह्य भाड़ा	480	निवेश पर ब्याज	280
विज्ञापन	1,200	प्रिंटिग एवं स्टेशनरी	360
वेतन	17,800	फर्नीचर के विक्रय पर हानि	3,500
किराया एवं कर	6,200	सामान्य व्यय	140
बिजली व्यय	1,500	दान	510
बीमा व्यय	240	किराया प्राप्त किया	600
अप्राप्य ऋण	150	आग से हानि	2,000
अंकेक्षण फीस	200	मशीन की विक्रय से लाभ	5,000

हल :

प्रचालन व्यय की गणना

			₹	₹
सकल लाभ				44,000
घटा :	विक्रय एवं वितरण व्यय :			
	बाह्य भाड़ा	480		
	विज्ञापन	1,200		
	अप्राप्य ऋण	1,500	1,830	

घटा :	कार्यालय एवं प्रशासन व्यय :			
	वेतन	17,800		
	किराया एवं कर	6,200		
	बिजली	1,500		
	बीमा	240		
	अंकेक्षण फीस	200		
	प्रिंटिग एवं स्टेशनरी	360		
	सामान्य व्यय	140	26,440	(28,270)
				15,730

स्थिति विवरण/तुलन पत्र

स्थिति विवरण अथवा तुलन पत्र एक और वित्तीय विवरण है। स्थिति विवरण वह विवरण है जो किसी तिथि विशेष जो सामान्यतः लेखा वर्ष के अंत में किसी व्यावसायिक इकाई की वित्तीय स्थिति का निर्धारण करने के लिए बनाया जाता है। इसके दो पहलू होते हैं परिसंपत्तियाँ एवं देयताएँ।

> फ्रांसिस आर स्टील के शब्दों में, ''स्थिति विवरण एक चलते व्यवसाय की एक निश्चित समय पर वित्तीय स्थिति को दर्शाता है।''
>
> फ्री मैन के शब्दों में, ''स्थिति विवरण एक निश्चित तिथि को व्यवसायिक परिसंपत्तियों, देयताओं एवं स्वामित्व की मदों की सूची होती है।''

किसी व्यवसाय की वित्तीय स्थिति उस व्यवसाय की परिसंपत्तियों एवं उनके विरुद्ध विभिन्न लोगों की देयताओं की सूची होती है। वित्तीय स्थिति को दर्शाने के लिए जो विवरण तैयार किया जाता है, उसे स्थिति विवरण कहते हैं।

स्थिति विवरण के संबंध में विस्तार से अगले पाठ में चर्चा करेंगे।

पाठगत प्रश्न 16.5

I. निम्नलिखित मदों को लाभ हानि खाते के यदि नाम में लिखा जाना है तो 'नाम' लिखें और यदि जमा में लिखा जाता है तो 'जमा' लिखें :

(क) कानूनी खर्चे (ख) शुद्ध हानि (ग) किराया प्राप्त किया
(घ) बट्टे की छूट दी (ङ) वेतन

II. (क) आय विवरण के अतिरिक्त जो वित्तीय विवरण बनाया जाता है उसका नाम लिखिए।

(ख) इसे क्यों बनाया जाता है?

(ग) इसे कब बनाया जाता है?

(घ) इसके दो तत्त्व के नाम दीजिए।

III. (क) प्रचालन लाभ = शुद्ध विक्रय – ....

(ख) प्रचालन लाभ = शुद्ध लाभ + गैर प्रचालन व्यय – ....

(ग) यदि शुद्ध विक्रय = ₹ 2,00,000 एवं प्रचालन लागत = ₹ 1,50,000 तो प्रचालन लाभ की गणना कीजिए।

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

- वित्तीय विवरण दो प्रकार के होते हैं :

  (क) आय विवरण अर्थात व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता।

  (ख) स्थिति विवरण अर्थात तुलन-पत्र
- व्यापार खाता व्यवसाय की व्यापारिक गतिविधियों के परिणाम के निर्धारण के लिए तैयार किया जाता है।
- व्यापार खाता लाभ को दर्शा सकता है (अर्थात् बिक्री का विक्री की वस्तुओं की लागत से अधिक होना या जमा पक्ष का नाम पक्ष से अधिक होना। इसे सकल लाभ कहते हैं।

  व्यापार खाता हानि दर्शा सकता है। (अर्थात् बिक्री की वस्तुओं की लागत का बिक्री से अधिक होना या नाम पक्ष का जमा पक्ष से अधिक होना। इसे सकल हानि कहते हैं।
- लाभ–हानि खाता शुद्ध लाभ/शुद्ध हानि के निर्धारण के लिये बनाया जाता है।

  शुद्ध लाभ = सकल लाभ + अन्य आय – अप्रत्यक्ष व्यय

  यह शुद्ध हानि भी दर्शा सकता है।

  सभी अप्रत्यक्ष व्यय लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष में दिखाए जाते हैं।

  सभी आय एवं लाभ की मदों को लाभ–हानि खाते के जमा की ओर दिखाया जाता है।
- स्थिति विवरण फर्म की तिथि विशेष को वित्तीय स्थिति को निर्धारण करने के लिए बनाया जाता है।

पाठान्त प्रश्न

1. वित्तीय विवरणों का अर्थ बताइए।
2. वित्तीय विवरणों के उद्देश्यों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

टिप्पणी

3. निम्न शब्दों को उदाहरण सहित संक्षेप में समझाइए।
   (क) आगम व्यय
   (ख) आगम प्राप्तियाँ
   (ग) पूँजीगत व्यय
   (घ) पूँजीगत प्राप्तियाँ।
4. पूंजीगत व्यय एवं आगम व्यय का निम्न के आधार पर अंतर कीजिए।
   (क) अर्जन क्षमता
   (ख) वित्तीय विवरणों में स्थान
   (ग) व्ययों का उद्‌गम (Occurence)
5. 'पूँजीगत प्राप्तियाँ' एवं 'आगम प्राप्तियाँ' में अंतर कीजिए।
6. बिक्री की गई वस्तुओं की लागत की गणना किस प्रकार की जाती है?
7. व्यापार खाता किसे कहते हैं? इसको क्यों बनाया जाता है?
8. सकल लाभ की गणना किस प्रकार से की जाती है?
9. लाभ-हानि खाते का क्या अर्थ है? इसे क्यों बनाया जाता है?
10. लाभ-हानि खाता कब शुद्ध लाभ दर्शाता है?
11. प्रत्यक्ष व्यय क्या होते हैं? इन खर्चों के दो उदाहरण दीजिए।
12. स्थिति विवरण का अर्थ बताइए।
13. शबाना की निम्न शेष राशियों की सहायता से वर्ष समाप्ति 31 दिसंबर, 2014 के लिए बिक्री में से बिक्री गई वस्तुओं की लागत को घटा कर सकल लाभ अथवा सकल हानि ज्ञात कीजिए।

	₹
स्टॉक (1.1.2014)	26,500
क्रय	64,600
विक्रय	86,800
क्रय वापसी	2,600
विक्रय वापसी	1,800
भाड़ा आंतरिक	750
मजदूरी	1,850
अंतिम स्टॉक	31,100

टिप्पणी

14. सेठ ब्रादर्स की लेखा पुस्तकों से नीचे दिये गये शेषों की सहायता से वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 के लिए व्यापार खाता, लाभ-हानि खाता तैयार करने के लिए रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए :

	₹		₹
स्टॉक (1.4.2013)	20,000	बट्टा प्राप्त हुआ	1,500
क्रय	95,000	बिजली व्यय	5,000
आंतरिक वापसी	2,000	मजदूरी	14,000
आंतरिक भाड़ा	1,850	बिक्री कमीशन	5,500
बाह्य भाड़ा	1,200	मरम्मत एवं नवीनीकरण	2,000
सीमा शुल्क	3,000	सामान्य व्यय	8,000
बाह्य वापसी	5,000	बीमा	2,200
विक्रय	1,65,000	स्टॉक (31.3.14)	45,000

15. परिमल घोष की लेखा पुस्तकों से लिये गये शेष नीचे दिये गये हैं वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 के लिए व्यापार खाता एवं लाभ-हानि खाता बनाने के लिए रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए :

	₹		₹
स्टॉक (1.4.2013)	9,480	क्रय वापसी	1,800
क्रय	50,800	विज्ञापन	1,500
मजदूरी	1,200	कमीशन (जमा)	3,200
वेतन	3,400	किराएदार से किराया	
चुँगी	1,320	प्राप्त हुआ	2,800
किराया एवं कर	850	बिक्री	72,000
अप्राप्य ऋण	250	स्टॉक (31.3.14)	10,700
बट्टा (नाम)	360		
पूँजी पर ब्याज	760		

16. निम्नलिखित सूचना से वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 के लिए बिक्री किये माल की लागत की गणना कीजिए।

	₹		₹
प्रारंभिक स्टॉक	14,800	किराये का भुगतान किया	4,500
क्रय	65,700	प्रशासनिक व्यय	650

बाह्य वापसी	1,700	कारखाना व्यय	7,200
मजदूरी	12,500	अंतिम स्टॉक	28,400
भाड़ा	2,400		
सीमा शुल्क	3,200		

17. जय भगवान एंड संस की लेखा पुस्तकों से 31 मार्च, 2014 को ली गई मदों से व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता बनाने के लिए रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए।

	₹		₹
प्रारंभिक स्टॉक	16,000	किराया	3,600
क्रय	76,000	कार्यालयी व्यय	1,600
मशीन	28,000	भाड़ा	1,200
देनदार	21,600	विक्रय वापसियाँ	5,400
आहरण	7,200	**जमा शेष :**	
मजदूरी	1,500	पूँजी	70,000
बैंक	12,000	लेनदार	14,000
अवक्षयण	2,800	विक्रय	1,08,000
अंतिम स्टॉक	24,000	क्रय वापसियाँ	2,600

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

16.1 I. (i) पूँजी, (ii) आगम, (iii) स्थगित आगम, (iv) पूँजी

II. (क) वित्तीय स्थिति का निर्धारण (ख) सूचना स्रोत
(ग) प्रबंधकीय निर्णय लेने में सहायक
(घ) व्यावसायिक इकाई का शोधन सूचकांक

16.2 I. (i) दो, (ii) व्यापार एवं लाभ–हानि खाता,
(iii) सकल लाभ, (iv) सफलता

II (i) शुद्ध विक्रय (ii) शुद्ध क्रय
(iii) सकल लाभ (iv) सकल हानि

16.3 (i) जमा (ii) नाम (iii) जमा (iv) नाम

16.4 I. (i) आई (ii) ई (iii) ई (iv) आई (v) ई

II. (i) असत्य, (ii) सत्य, (iii) असत्य, (iv) सत्य

टिप्पणी

16.5 I. (क) नाम (ख) जमा (ग) जमा (घ) नाम (ङ) नाम

II. (क) स्थिति विवरण

(ख) संगठन की वित्तीय स्थिति दिखाने के लिए

(ग) लेखा वर्ष की समाप्ति पर

(घ) परिसम्पतियाँ, देयताएँ

III. (क) परिचालन लागत (ख) गैर–परिचालन लागत

(ग) ₹ 503,000

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

13. सकल लभ : ₹ 25,000

14. सकल लाभ : ₹ 74,150, शुद्ध लाभ ₹ 56,750

15. सकल लाभ ₹ 21,700, शुद्ध लाभ ₹ 20,580

16. बिक्री किये माल की लागत ₹ 75,700

17. सकल लाभ ₹ 21,000, शुद्ध लाभ ₹ 13,000

क्रियाकलाप

कम से कम चार व्यावसायिक इकाइयों के तलपट एकत्रित करें तथा उनमें दी गई मदों को निम्न में वर्गीकृत करें :

(क) आगम व्यय (ख) आगम प्राप्तियाँ

(ग) पूँजीगत व्यय (घ) पूँजीगत प्राप्तियाँ

संगठन का नाम	व्यय की मदें	आगम प्राप्तियाँ	पूँजीगत व्यय	पूँजीगत प्राप्तियाँ

17

वित्तीय विवरण - I

आप वित्तीय विवरणों का अर्थ एवं व्यावसायिक संगठनों के लिए इनको तैयार करने की आवश्यकता का अध्ययन कर चुके हैं। आप इन विवरणों के प्रारूप एवं इनमें लिखी जाने वाली महत्त्वपूर्ण मदों के सम्बन्ध में जान चुके हैं। अब आप इन विवरणों को तैयार करना सीखना चाहेंगे। आप जानते हैं कि इन विवरणों को तैयार करने के लिए तलपट सूची को आधार माना जाता है। प्रत्येक व्यावसायिक संगठन वित्तीय विवरण अर्थात व्यापार एवं लाभ हानि खाता तथा स्थिति विवरण तैयार करता है।

इस पाठ में आप इन विवरणों को तैयार करना सीखेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के पढ़ने के पश्चात आप :

- व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता बना सकेंगे;
- प्रारूप के अनुसार स्थिति विवरण को समझ सकेंगे;
- स्थिति विवरण के क्रमबद्धीकरण को समझ सकेंगे;
- परिसम्पत्तियों एवं देयताओं का वर्गीकरण कर सकेंगे; एवं
- स्थिति विवरण तैयार कर सकेंगे।

17.1 व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता तैयार करना

आप व्यापार खाता एवं लाभ-हानि खाते का अर्थ एवं इनके प्रारूप के सम्बन्ध में जान चुके हैं। आप यह भी सीख चुके हैं कि प्रासंगिक खाता बही की शेष मदों को व्यापार खाता एवं लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरण के लिए रोजनामचा में प्रविष्टि कैसे करेंगे। अब आप इन विवरणों को तैयार करने के लिये उठाए जाने वाले विभिन्न कदमों का अध्ययन करेंगे।

व्यापार खाता बनाते समय उठाये जाने वाले कदम

(क) नाम पक्ष

(i) सर्वप्रथम हम प्रारम्भिक स्टाक की राशि लिखेंगे (यदि फर्म नई है तो कोई प्रारम्भिक स्टॉक नहीं होगा)

(ii) अब हम क्रय राशि को लिखेंगे। इसमें से क्रय वापसी अथवा बाह्य वापसी को घटा देंगे। क्रय नकद, उधार अथवा दोनों हो सकते हैं।

(iii) इसके पश्चात् हम प्रत्यक्ष व्यय जैसे कि आंतरिक भाड़ा, मजदूरी, बिजली आदि को लिखेंगे।

(ख) जमा पक्ष

(i) पहले हम विक्रय राशि को लिखेंगे जिसमें से विक्रय वापसी अथवा आंतरिक वापसी को घटा देंगे। इससे विक्रय की शुद्ध राशि ज्ञात हो जायेगी विक्रय भी नकद, उधार अथवा दोनों हो सकता है।

(ii) अन्तिम स्टाक अगली मद होगी।

(ग) सकल लाभ/सकल हानि का निर्धारण

अंत में व्यापार खाते के दोनों ओर के अन्तर की गणना करके इस खाते को बंद किया जाता है। यदि जमा पक्ष नाम पक्ष से अधिक है तो अन्तर को सकल लाभ के रूप में व्यापार खाते के नाम में लिखा जायेगा और यदि नाम पक्ष जमा पक्ष से अधिक है तो अन्तर की राशि को सकल हानि कहेंगे तथा यह व्यापार खाते के जमा पक्ष में लिखी जायेगी।

नाम स्तम्भ का योग < जमा स्तम्भ का योग

⇒ सकल लाभ

जमा स्तम्भ का योग < नाम स्तम्भ का योग

⇒ सकल हानि

लाभ हानि खाता बनाते समय उठाये जाने वाले कदम

(क) नाम पक्ष

(i) सकल हानि को, यदि कोई है तो व्यापार खाते से हस्तान्तरण कर पहली मद के रूप में लिखा जायेगा।

(ii) इसके पश्चात आगम व्यय एवं हानियों की सभी मदें लिखी जाती हैं। यह मदें वेतन, किराया दिया, अवक्षयण आदि हो सकती है।

टिप्पणी

(ख) जमा पक्ष

(i) सकल लाभ, व्यापार खाते से हस्तान्तरित पहली मद होगी।

(ii) इसके पश्चात् आगम आय और अधिलाभ की मदें लिखी जाएगी। यह निवेश पर ब्याज, प्राप्त बट्टा, प्राप्त कमीशन आदि हो सकती हैं।

(ग) शुद्ध लाभ/शुद्ध हानि का निर्धारण

अगला कदम शेष निकालना होगा। यदि जमा पक्ष नाम पक्ष से अधिक है तो अन्तर की राशि को शुद्ध लाभ के रूप में लिखा जायेगा। यदि नाम पक्ष जमा पक्ष से अधिक है तो अन्तर शुद्ध हानि होगी।

यह राशि पूँजी खाते में हस्तान्तरित कर दी जायेगी।

नाम पक्ष का योग < जमा पक्ष का योग

$\Rightarrow$ शुद्ध लाभ

जमा पक्ष का योग < नाम पक्ष का योग

$\Rightarrow$ शुद्ध हानि

उदाहरण 1

मै. नन्दलाल एण्ड ब्रदर्स के सम्बन्ध में वर्ष समाप्ति 31 मार्च 2014 की निम्न सूचना से वर्ष समाप्ति 31 मार्च 2014 के लिए व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता बनाइए।

	₹		₹
स्टाक (1.4.2013)	5,800	विक्रय	72,000
क्रय-नकद	42,000	आंतरिक वापसी	2,000
क्रय-उधार	18,000	निवेश पर ब्याज	1,500
आंतरिक भाड़ा	1,800	प्राप्त बट्टा	1,200
मजदूरी	4,500	अन्तिम स्टॉक	7,200
बिक्री पर भाड़ा	800		
टेलीफोन व्यय	1,600		
बिजली व्यय	1,200		
कार्यालय किराये का भुगतान	6,000		
वेतन	8,000		
अवक्षयण	1,400		

हल :

मै. नन्दलाल एण्ड ब्रदर्स की पुस्तकें

व्यापार खाता

31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम | जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
स्टॉक (1.4.2013)	5,800	विक्रय 72,000	
क्रय :		**घटा :** आंतरिक वापसी 2,000	70,000
नकद 42,000		अन्तिम स्टॉक (31.3.2014)	7,200
उधार 18,000	60,000		
भाड़ा आंतरिक	1,800		
मजदूरी	4,500		
सकल लाभ (लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित)	5,100		
	77,200		77,200

लाभ हानि खाता

31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम | जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
बिक्री पर भाड़ा	800	**सकल लाभ-व्यापार खाता**	
टेलीफोन व्यय	1,600	खाता से हस्तान्तरण	5,100
बिजली व्यय	1,200	निवेश पर ब्याज	1,500
कार्यालय किराया	6,000	छूट प्राप्त हुआ	1,200
वेतन	8,000	शुद्ध हानि-पूँजी खाता	
अवक्षयण	1,400	में हस्तान्तरित	11,200
	19,000		19,000

उदाहरण 2

वर्ष समाप्ति 31, मार्च 2014 के लिए निम्न शेष राशियों से रमन ईरानी के लिए व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता बनाइए :

टिप्पणी

	₹		₹
प्रारम्भिक स्टॉक (1.4.2013)	14,600	व्यापार व्यय	1,450
क्रय	68,700	बट्टा दिया	1,250
विक्रय	85,300	बट्टा प्राप्त	800
वापसी (बाह्य)	2,200	प्राप्त विपत्र	4,500
भाड़ा आन्तरिक	2,100	देनदार	16,800
पूँजी	50,000	अन्तिम स्टॉक (31.3.2014)	28,700
आहरण	12,000		
बीमा	1,600		
विज्ञापन	2,400		
विक्रयकर्ताओं का वेतन	5,200		

हल

रमन इरानी की पुस्तकें

व्यापार खाता

31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम जमा

विवरण		*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
प्रारम्भिक स्टॉक		14,600	विक्रय	85,300
क्रय	68,700		अन्तिम स्टॉक	28,700
घटा : वापसी बाह्य	2,200	66,500		
भाड़ा आंतरिक		2,100		
सकल लाभ–लाभ हानि खाते में हस्तन्तिरित		30,800		
		1,14,000		1,14,000

लाभ-हानि खाता

31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
बीमा	1,600	सकल लाभ-व्यापार खाता	
विज्ञापन	2,400	से हस्तान्तरित	30,800

विक्रयकर्त्ताओं का वेतन	5,200	प्राप्त बट्टा	800
व्यापार व्यय	1,450		
बट्टा दिया	1,250		
शुद्ध लाभ-पूँजी खाता में हस्तान्तरित	19,700		
	31,600		31,600

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 17.1

नीचे दी गई मदों के आगे खाते का नाम (व्यापार खाता, लाभ हानि खाता) तथा पक्ष (नाम, जमा) लिखें जिनमें इनको लिखना है:

i. अन्तिम स्टॉक ....

ii. भाड़ा बाहय ....

iii. निवेश पर ब्याज ....

iv. सीमा शुल्क ....

v. ईंधन एवं बिजली ....

vi. बिक्री ....

vii. वेतन ....

viii. किरायेदार से किराया ....

17.2 स्थिति विवरण

व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता के अतिरिक्त स्थिति विवरण एक अन्य वित्तीय विवरण है जिसे प्रत्येक व्यवसायी बनाता है। स्थिति विवरण वह विवरण है जो एक व्यावसायिक संगठन की एक निश्चित तिथि को वित्तीय स्थिति को दर्शाता है। यह तिथि साधारणतया लेखा अवधि की अन्तिम तिथि होती है। किसी व्यावसायिक इकाई की वित्तीय स्थिति व्यवसाय के संसाधनों के विरूद्ध उसके दावों की राशि है। यह संसाधन है रोकड़, माल का, फर्नीचर, मशीनें आदि। दावों में स्वामी तथा बाहरी व्यक्ति जैसे कि लेनदार, बैंकर आदि के दावे है। अतः हम कह सकते हैं कि स्थिति विवरण एक ऐसा विवरण है जो किसी एक तिथि को व्यवसाय के स्वामित्व की परिसम्पत्तियों एवं उसके द्वारा देय देनदारियों को दर्शाता है। इसके दो पक्ष होते हैं:

(i) परिसम्पत्तियां पक्ष एवं

(ii) देयतायें पक्ष

टिप्पणी

परिसम्पत्ति पक्ष की ओर स्थाई एवं चालू सम्पत्तियों की सूची होती है। देयता पक्ष की ओर पूँजी, दीर्घ अवधि एवं लधु अवधि की देयताओं की सूची होती है।

आवश्यकता

1. स्थिति विवरण किसी व्यावसायिक इकाई की एक विशेष समय बिन्दु पर उसकी सत्य वित्तीय स्थिति को मापने के लिए बनाया जाता है।
2. व्यावसायिक इकाई के स्वामित्व में क्या है तथा इसकी क्या देनदारी है का यह व्यवस्थित रूप प्रस्तुत करता है।
3. स्थिति विवरण व्यवसाय की एक नजर में वित्तीय स्थिति को दिखाता है।
4. लेनदार, वित्त प्रदाता विशेष रूप से एक व्यावसयिक इकाई के स्थिति विवरण मं रूचि रखते हैं जिससे कि वह निर्णय ले सकें कि उन्हें इस संगठन से लेन देन करना चाहिए अथवा नहीं।

सम्पत्ति एवं देयताओं का वर्गीकरण

सभी सम्पत्तियों को निम्न श्रेणियों में वगीकृत किया जा सकता है :

1. चालू सम्पत्तियां
2. तरल सम्पत्तियां
3. गैर–तरल सम्पत्तियां
4. मूर्त सम्पत्तियां
5. अमूर्त सम्पत्तियां

सभी देयताओं को निम्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

1. चालू सम्पत्तियां
2. गैर चालू सम्पत्तियां

परिसंपत्तियों और दायित्वों का क्रमबद्धीकरण (Marshalling of assets and liabilities)

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है स्थिति विवरण के दो पक्ष होते हैं परिसम्पत्तियां पक्ष जिसमें व्यवसाय की परिसम्पत्तियों की विभिन्न मदें दी होती है एवं देयता पक्ष जिसमें स्वामी एवं बाहर के पक्षों की देनदारी अथवा दावे दिये होते हैं।

परिसम्पत्तियाँ व्यवसाय के वित्तीय संसाधन होते हैं तथा इन्हें मोटे तौर पर चालू परिसम्पत्तियों एवं स्थाई परिसम्पत्तियों में बांटा जा सकता है। देयता व्यवसाय की परिसम्पत्तियों के विरूद्ध दावे होते हैं। देयताएँ दो प्रकार की होती हैं स्वामी की देनदारी अथवा पूँजी एवं बाहर के लोगों की देनदारी जैसे कि लेनदार, देय विपत्र बैंक ऋण आदि।

एकल स्वामित्व व्यवसाय अथवा साझेदारी फर्म के लिए स्थिति विवरण का कोई प्रारूप निश्चित नहीं है जिसमें इसको तैयार किया जाय। वैसे साधारणतया परिसम्पत्तियों एवं देनदारियों को एक विशेष क्रम में लिखा जाता है। इससे एकरूपता बनी रहती है। जिससे निर्णय लेने के लिए तुलनात्मक विश्लेषण सुगम हो जाता है। स्थिति विवरण को नीचे दिये किसी भी क्रम में बनाया जा सकता है :

टिप्पणी

(क) तरलता क्रम (ख) स्थिरता क्रम

(क) तरलता क्रम (Liquidity Order)

तरलता का अर्थ है परिसम्पत्तियों को रोकड़ में परिवर्तित करना। सभी परिसम्पत्तियां एक समान सरलता एवं सुविधा पूर्वक रोकड़ में परिवर्तित नहीं की जा सकती। परिसम्पतियों को उनकी तरलता के आधार पर रखा जाता है। सर्वाधिक तरल परिसम्पत्तियों को प्रथम स्थान पर लिखा जाता है। उसके पश्चात् उससे कम तरल और यह क्रम चलता रहता है। इसी प्रकार से देयताओं को भी इसी क्रम में लिखा जाता है। लघु अवधि देनदारियों को पहले लिखा जाता है उसके पश्चात् दीर्घ अवधि देनदारियां और अन्त में पूँजी को लिखा जाता है।

तरलता क्रम में तैयार स्थिति विवरण का एक नमूना नीचे दिया गया है

मै. .... का स्थिति विवरण

.... को समाप्त वर्ष के लिए

दायित्व		*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
बैंक अधिविकर्ष		xxxx	हस्तस्थ रोकड़	xxxx
अदत्त व्यय		xxxx	बैंक में रोकड़	xxxx
देय विपत्र		xxxx	पूर्वदत्त व्यय	xxxx
विविध लेनदार		xxxx	निवेश (लघु अवधि)	xxxx
ऋण		xxxx	प्राप्त विपत्र	xxxx
पूँजी	xxxx		विविध देनदार	xxxx
जमा : शुद्ध लाभ	xxxx		अन्तिम स्टॉक	xxxx
घटा : आहरण	xxxx	xxxx	निवेश	xxxx
			फर्नीचर	xxxx
			सयन्त्र एवं मशीन	xxxx
			भूमि एवं भवन	xxxx
			ख्याति	xxxx
		xxxx		xxxx

(लघु अवधीय निवेश विपणन योग्य प्रतिभूति होती हैं, यह चालू परिसम्पत्तियों का भाग होती हैं।

टिप्पणी

(ख) स्थिरता क्रम (Permanency Order)

स्थिरता क्रम का पालन करने पर वह परिसम्पत्तियां जिन का स्थाई रूप से उपयोग किया जाना है अर्थात जिनका लम्बी अवधि तक उपयोग किया जाना है तथा वह पुनः बिक्री के लिए नहीं है, इनको पहले लिखा जाता है। उदाहरण के लिए भूमि एवं भवन, संयन्त्र एवं मशीनरी, फर्नीचर आदि को पहले लिखा जायेगा। जो परिसम्पत्ति सर्वाधिक तरल है जैसे कि हस्तस्थ रोकड़ उसे सब से अन्त में लिखा जाएगा। इसी प्रकार से देयताओं का क्रम बदल दिया जाता है। पूँजी को पहले उसके पश्चात दीर्घ अवधि दायित्व और अन्त में लघु अवधि दायित्व एवं प्रावधान को लिखा जाता है

स्थिरता क्रम में बनाई जाने वाली स्थिति विवरण का नमूना नीचे दिया गया है:

मै. .... का स्थिति विवरण

.... को समाप्त वर्ष के लिए

देयताएँ		राशि (₹)	परिसम्पत्तियां	राशि (₹)
पूँजी	xxxx		ख्याति	xxxx
जमा : शुद्ध लाभ	xxxx		भूमि एवं भवन	xxxx
घटा : आहरण	xxxx	xxxx	संयन्त्र एवं मशीनरी	xxxx
ऋण		xxxx	फर्नीचर	xxxx
विविध देनदार		xxxx	निवेश	xxxx
देय विपत्र		xxxx	अन्तिम स्टॉक	xxxx
अदत्त व्यय		xxxx	विविध देनदार	xxxx
बैंक अधिविकर्ष		xxxx	प्राप्य विपत्र	xxxx
			निवेश (लघु अवधि)	xxxx
			पूर्वदत्त व्यय	xxxx
			बैंक शेष	xxxx
			हस्तस्थ रोकड़	xxxx
		xxxx		xxxx

(संयुक्त पूँजी कम्पनियों का स्थिति विवरण कम्पनी अधिनियम, 1956 की अनुसूचि VI के अनुसार तैयार किया जाता है)

उदाहरण 3

नीचे दिये शेषों की सहायता से मै. भरत एण्ड ब्रदर्स का 31 दिसम्बर, 2014 को स्थिति विवरण तैयार कीजिए : (क) तरलता क्रम के अनुसार एवं (ख) स्थिरता क्रम के अनुसार

टिप्पणी

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
पूँजी	50,000	विविध देनदार	24,000
बैंक से ऋण	20,000	देय विपत्र	8,000
हस्तस्थ रोकड़	2,500	आहरण	6,000
बैंक में रोकड़	12,800	भवन	25,000
अन्तिम स्टॉक	24,700	फर्नीचर	4,500
विविध लेनदार	15,000	निवेश	15,000
		शुद्ध लाभ	21,500

हल :

(क) तरलता क्रम

मै. भारत एण्ड ब्रदर्स का स्थिति विवरण
31, दिसम्बर, 2014 को

दायित्व		राशि (₹)	परिसम्पत्तियां	राशि (₹)
देयविपत्र		8,000	रोकड़ हस्तस्थ	2,500
विविध लेनदार		15,000	बैंक में रोकड़	12,800
बैंक से ऋण		20,000	विविध देनदार	24,000
पूँजी	50,000		अन्तिम स्टॉक	24,700
जमा : शुद्धलाभ	21,500		निवेश	15,000
	71,500		भवन	25,000
घटा : आहरण	6,000	65,500	फर्नीचर	4,500
		1,08,500		1,08,500

(ख) स्थिरता क्रम

मै. भरत एण्ड ब्रदर्स का स्थिति विवरण
31 दिसम्बर, 2014 को

देयताएँ		राशि (₹)	परिसम्पत्तियां	राशि (₹)
पूँजी	50,000		भवन	25,000
जमा : शुद्ध लाभ	21,500		फर्नीचर	4,500
घटा : आहरण	6,000	65,500	निवेश	15,000
बैंक से ऋण		20,000	अंतिम स्टॉक	15,000
विविध लेनदार		15,000	विविध देनदार	24,000
देय विपत्र		8,000	बैंक में रोकड़	12,800
			हस्तस्थ रोकड़	2,500
		1,08,500		1,08,500

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 17.2

I. निम्न परिसम्पत्तियों को (क) तरलता क्रम एवं (ख) स्थिरता क्रम में लिखें

i. अन्तिम स्टॉक ii. फर्नीचर iii. हस्तस्थ रोकड़ iv. निवेश

v. प्राप्य विपत्र vi. ख्याति vii. भवन viii. देनदार

II. देयता की निम्नलिखित मदों को (क) तरलता क्रम (ख) स्थिरता क्रम में लिखिए

i. देय विपत्र ii. विविध लेनदार iii. बंधक ऋण

iv. अदत्त व्यय v. पूँजी

17.3 परिसम्पत्तियों एवं देयताओं का वर्गीकरण

परिसम्पत्तियाँ एवं देयताएं कई प्रकार की होती हैं। इनको इस प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

परिसम्पत्तियां

परिसम्पत्तियों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है :

(क) **स्थाई सम्पत्तियाँ (Fixed Assets) :** यह सम्पत्तियां स्थाई अर्थात लम्बी अवधि के प्रयोग के लिए खरीदी जाती हैं तथा यह व्यवसाय को धन कमाने में सहायता करती हैं। इस प्रकार की परिसम्पत्तियों के उदाहरण हैं भवन, मशीनरी मोटर वाहन आदि। यह परिसम्पत्तियां व्यवसाय की सामान्य प्रक्रिया में बिक्री के लिए नहीं होती हैं लेकिन यदि इनके प्रयोग की आवश्यकता नहीं है तो इन्हें बेचा जा सकता है।

(ख) **चालू सम्पत्तियाँ (Current Assets) :** यह वह परिसम्पत्तियां है जिन्हें व्यवसाय द्वारा बिक्री के उद्देश्य अथवा उन्हें रोकड़ में परिवर्त्तन के लिए प्राप्त किया जाता है। इनसे वसूली सामान्यतः एक वर्ष के अन्दर हो जाती है। इस प्रकार की सम्पत्तियों के उदाहरण हैं हस्तस्थ रोकड़, बैंक रोकड़, प्राप्य विपत्र, देनदार, स्टॉक आदि।

(ग) **मूर्त्त सम्पत्तियाँ (Tangible Assets) :** यह वह सम्पत्तियां हैं, जिन्हें देखा जा सके छूआ जा सके तथा जिनका कुछ आकार हो। भवन, मशीन, माल आदि इसके उदाहरण हैं।

(घ) **अमूर्त्त संपत्तियाँ (Intangible Assets) :** यह वह संपत्तियां है जिनको न देखा जा सके न छूआ जा सके तथा जिनका कोई आकार न हो। इनके उदाहरण हैं पेटेन्ट, व्यापारिक चिन्ह, ख्याति इत्यादि।

(ङ) **तरल संपत्तियाँ (Liquid Assets) :** यह वह सम्पत्तियां है जो या तो रोकड़ हैं अथवा जिन्हें शीघ्रता से रोकड़ में परिवर्तित किया जा सके। उदाहरण के लिए रोकड़, स्टॉक, बेचने योग्य प्रतिभूतियाँ इत्यादि।

(च) क्षयी संपत्तियां (Wasting Assets) : यह वह सम्पत्तियां है जिनका मूल्य प्रयोग के फलस्वरूप कम होता रहता है। खान, खदान (Quarries) इस वर्ग में आती हैं।

(छ) अवास्तविक सम्पत्तियां (Fictitious Assets) : यह वास्तविक सम्पत्तियां नहीं है। यह वह व्यय एवं हानि की मदें हैं जिन्हें पूरी तरह से अपलिखित कर समाप्त नहीं किया गया है। इसके उदाहरण हैं प्रारम्भिक व्यय, अभिगोपन कमीशन आदि।

देयताएं (Liabilities)

देयताओं का वर्गीकरण नीचे दिया गया है :

(क) दीर्घकालीन देयताएं (Long Term Liability) : यह वह देयताएं हैं जिनका भुगतान चालू लेखांकन वर्ष में देय नहीं होता। सामान्यतः इनके माध्यम से जो कोष जुटाया जाता है उनका उपयोग स्थाई सम्पत्तियों के क्रय के लिए किया जाता है। इस प्रकार की देयताओं के उदाहरण हैं : बंधक पर लिया गया ऋण, वित्तीय संस्थाओं से लिया गया ऋण।

(ख) चालू देयताएं (Current Liability) : यह वह देयताएं हैं जिनका भुगतान चालू लेखांकन वर्ष में देय होता है। यह बैंक अधिविकर्ष, लेनदार, देय विपत्र आदि हैं।

(ग) स्वामी के कोष (Propritor Fund) : जो राशि स्वामी अथवा स्वामियों को देय होती है उसे स्वामी का कोष कहते हैं। व्यवसाय अस्तित्व की अवधारणा के अनुसार यह व्यवसाय के दायित्व हैं। पूँजी के अतिरिक्त इसमें अवितरित लाभ एवं संचय सम्मिलित है। इसमें से स्वामी द्वारा आहरण की गई राशि को घटा दिया जाता है।

पाठगत प्रश्न 17.3

I. निम्न मदों के सामने परिसम्पत्ति के प्रकार लिखें :

(i) ख्याति (ii) प्राप्य विपत्र (iii) प्रारम्भिक व्यय

(iv) खानें (v) फर्नीचर

II. निम्न मदों के सामने देयताओं के प्रकार लिखें :

(i) बंधक ऋण

(ii) लेनदार

(iii) अदत्त व्यय

(iv) पूँजी

टिप्पणी

17.4 स्थिति विवरण तैयार करना

स्थिति विवरण के दो पक्ष होते हैं परिसम्पत्तियां एवं देयताएँ। परिसम्पतियों की ओर हम सभी प्रकार की संपत्तियों को लिखते हैं, जैसे कि रोकड़, प्राप्य विपत्र, स्टॉक, भवन आदि।

देयताओं की ओर सभी दायित्व लिखे जाते हैं। यह दीर्घ अवधि एवं चालू दायित्व दोनों होते हैं। जैसे कि देय विपत्र, व्यापारिक लेनदार, बैंक ऋण आदि। इसके पश्चात हम स्वामी की पूँजी को लिखते हैं। इसमें शुद्ध लाभ को जोड़ दिया जाता है। यदि शुद्ध हानि है तो इसे पूँजी में से घटा दिया जाता है। पूँजी में आहरण की राशि को भी घटा दिया जाता हैं

अन्त में दोनों ओर का योग किया जाता है तथा यह योग बराबर होने चाहिए।

उदाहरण 4

मै. विक्रम ब्रदर्स के नीचे दिये तलपट की सहायता से 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष के लिए व्यापार एवं लाभ-हानि खाता एवं उसी तिथि को स्थिति विवरण बनाइए।

विवरण	*नाम शेष (₹)*	*विवरण*	*जमा शेष (₹)*
हस्तस्थ रोकड़	500	पूँजी	70,000
मोटरकार	25,000	बट्टा प्राप्त	2,000
आहरण	48,000	विक्रय	2,30,000
विधिक व्यय	1,500	लेनदार	46,000
संयन्त्र एवं मशीन	60,000	निवेश पर ब्याज	5,200
निवेश	40,000	क्रय वापसी	3,800
प्रारम्भिक स्टाक	35,000	देय विपत्र	34,000
विक्रय वापसी	2,500		
वेतन	12,000		
बट्टा दिया	600		
आंतरिक भाड़ा	1,800		
मजदूरी	21,000		
डाक व्यय	400		
देनदार	60,000		
ब्याज	1,500		
बीमा प्रीमियम	1,200		
क्रय	80,000		
	3,91,000		3,91,000

31.3.2014 को अन्तिम स्टॉक ₹ 28,000 था।

टिप्पणी

हल :

व्यापार खाता
31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम | जमा

विवरण		*राशि (₹)*	*विवरण*		*राशि (₹)*
प्रारम्भिक स्टाक		35,000	विक्रय	2,30,000	
क्रय	80,000		**घटा:** विक्रय वापसी	2,500	2,27,500
घटा : क्रय वापसी	3,800	76,200	अन्तिम स्टॉक		28,000
मजदूरी		21,000			
भाड़ा		1,800			
सकल लाभ लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित		1,21,500			
		2,55,500			2,55,500

लाभ-हानि खाता
31, मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम | जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
वेतन	12,000	सकल लाभ-व्यापार खाते से हस्तान्तरित	1,21,500
बीमा प्रीमियम	1,200	प्राप्त बट्टा	2,000
बट्टा दिया	600	निवेश पर ब्याज	5,200
डाक व्यय	400		
विधिक व्यय	1,500		
शुद्ध लाभ–पूँजी खाते में हस्तान्तरित	1,500 1,11,500		
	1,28,700		1,28,700

स्थिति विवरण
31 मार्च, 2014 को

नाम | जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
देय विपत्र	34,000	हस्तस्थ रोकड़	500
लेनदार	46,000	देनदार	60,000

पूँजी	70,000		अन्तिम स्टॉक	28,000
जमा : शुद्ध लाभ	1,11,500		निवेश	40,000
	1,81,500		मोटरकार	25,000
घटा : आहरण	48,000	1,33,500	संयन्त्र एवं मशीन	60,000
		2,13,500		2,13,500

टिप्पणी

उदाहरण 5

जैसमीन एन्टरप्राइजिस की लेखा पुस्तकों से 31 मार्च, 2014 को तैयार तलपट नीचे दिया गया है। दिये गये इस तलपट की सूचना के आधार पर वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 के लिए व्यापार खाता एवं लाभ–हानि खाता तैयार कीजिए। इस तिथि को स्थिति विवरण भी बनाइए।

विवरण	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
स्टॉक 1. 4. 2013	18,500	
क्रय एवं विक्रय	78,500	1,54,200
आन्तरिक वापसी एवं बाह्य वापसी	2,200	2,500
देनदार एवं लेनदार	16,500	18,000
प्राप्य विपत्र एवं देयविपत्र	14,000	21,000
कमीशन भुगतान किया	2,000	
अंकेक्षण फीस	1,800	
भवन	65,000	
फर्नीचर	12,000	
वेतन	14,000	
टेलीफोन व्यय	4,200	
बीमा	2,100	
बट्टा दिया	1,000	
चुंगी	1,200	
मजदूरी	16,000	
भाड़ा आन्तरिक	2,400	
डूबत ऋण	600	
अवक्षयण	4,200	
बैंक ऋण		32,000
हस्तस्थ रोकड़ एवं बैंक में रोकड़	25,000	
पूँजी		1,00,000
आहरण	16,500	

मशीन	30,000	
	3,27,700	3,27,700

अन्तिम स्टॉक 31.3.2014 को ₹ 19,600 था।

हल

व्यापार खाता

31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम जमा

विवरण		*राशि (₹)*	*विवरण*		*राशि (₹)*
स्टॉक 1.4.2005		18,500	विक्रय	1,54,200	
क्रय	78,500		***घटा :*** वापसी आन्तरिक	2,200	1,52,000
घटा : वापसी बाह्य	2,500	76,000	अन्तिम स्टॉक		19,600
मजदूरी		16,000			
भाड़ा आन्तरिक		2,400			
चुंगी		1,200			
सकल लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित		57,500			
		1,71,600			1,71,600

लाभ हानि खाता

31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
वेतन	14,000	**सकल लाभ-व्यापार** खाते से हस्तान्तरित	57,500
टेलीफोन व्यय	4,200		
बीमा प्रीमियम	2,100		
डूबत ऋण	600		
अवक्षयण	4,200		
अंकेक्षण फीस	1,800		
बट्टा दिया	1,000		
कमीशन का भुगतान किया	2,000		
शुद्ध लाभ पूँजी खाते में हस्तांतरित किया	27,600		
	57,500		57,500

टिप्पणी

स्थिति विवरण
31 मार्च, 2014 को

नाम | जमा

देयताएं		राशि (₹)	परिसंपत्तियां	राशि (₹)
देय विपत्र		21,000	हस्तस्थ एवं बैंक रोकड़	25,000
विविध लेनदार		18,000	प्राप्य विपत्र	14,000
बैंक ऋण		32,000	विविध देनदार	16,500
पूँजी	1,00,000		अन्तिम स्टॉक	19,600
जमा : शुद्ध लाभ	27,600		मशीन	30,000
	1,27,600		भवन	65,000
घटा : आहरण	16,500	1,11,100	फर्नीचर	12,000
		1,82,100		1,82,100

उदाहरण 6

31 मार्च 2014 को हरि की पुस्तकों से निम्न तलपट बनाया गया। जिससे व्यापार खाता एवं लाभ–हानि खाता तथा स्थिति विवरण तैयार कीजिए :

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
आरम्भिक स्टाक	9,600	संयंत्र की मरम्मत	160
मजदूरी एवं वेतन	320	हस्तस्थ रोकड़ एवं बैंक	200
क्रय पर कमीशन	200	देनदार	4,000
भाड़ा	300	आयकर	550
क्रय घटा वापसी	11,850	आहरण	650
विक्रय घटा वापसी	24,900	पूँजी	5,000
व्यापारिक व्यय	20	देय बिल	500
प्राप्य बिल	600	ऋण	900
किराया	200	क्रय पर कटौती	400
संयन्त्र	2,000	लेनदार	2,330
अप्राप्य ऋण	500		

अतिरिक्त सूचना– अन्तिम स्टॉक ₹ 3,500 था।

टिप्पणी

हल

व्यापार एवं लाभ-हानि खाता
वर्ष समाप्ति 31 मार्च 2014 के लिए

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
आरम्भिक स्टाक	9,600	विक्रय घटा विक्रय वापसी	24,900
क्रय घटा क्रय वापसी	11,850	अन्तिम स्टाक	3,500
मजदूरी एवं वेतन	3,200		
क्रय पर कमीशन	200		
भाड़ा	300		
सकल लाभ आ.ले.	3,250		
	28,400		28,400
व्यापारिक व्यय	20	सकल लाभ आ.ले.	3,250
किराया	200	क्रय पर कटौती	400
अप्राप्य ऋण	500		
संयन्त्र की मरम्मत	160		
शुद्ध लाभ – पूँजी खाते में हस्तान्तरित	2,770		
	3,650		3,650

हरी की स्थिति विवरण
31 मार्च 2014 को

देयताएं		*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियाँ*	*राशि (₹)*
पूँजी :			संयन्त्र	2,000
प्रारम्भिक शेष	5,000		अन्तिम स्टाक	3,500
जमा : शुद्ध लाभ	2,770		देनदार	4,000
	7,770		बिल प्राप्य	600
घटा : आयकर	550		हस्तस्थ रोकड़ एवं	
घटा : आहरण	650	6,570	बैंक में रोकड़	200
ऋण		900		
देय बिल		500		
लेनदार		2,330		
		10,300		10,300

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 17.4

उचित शब्द/शब्दों को खाली स्थानों में लिखिए :

i. जिस राशि से व्यापार खाता का जमा पक्ष उसके नाम पक्ष से अधिक होता है उसे ... . के रूप में लिखते हैं।

ii. जिस राशि से लाभ–हानि खाते का नाम पक्ष जमा पक्ष से अधिक होता है उसे .... के रूप में लिखते हैं।

iii. स्थिति विवरण के दोनों ओर के जोड़ .... होने चाहिए।

iv. बैंक ऋण स्थिति विवरण के .... की ओर दिखाया जाता है।

आपने क्या सीखा

- व्यापार खाता बनाने के लिए हम इसके नाम की ओर प्रारम्भिक स्टॉक, शुद्ध क्रय एवं प्रत्यक्ष व्यय लिखते हैं। इसके जमा की ओर शुद्ध विक्रय एवं अन्तिम स्टॉक लिखते हैं। इसके दोनों ओर के जोड़ों का अन्तर निकाला जाता है जो कि सकल लाभ अथवा सकल हानि हो सकते हैं, जिसे लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।
- आगम व्यय एवं हानियों की सभी मदों को लाभ-हानि खाते के नाम की ओर लिखा जाता है तथा इसके जमा की ओर आगम प्राप्तियां एवं अधिलाभ की मदें लिखी जाती हैं। फिर दोनों ओर के योग का अन्तर निकाला जाता है जो कि शुद्ध लाभ अथवा शुद्ध हानि हो सकता है।
- स्थिति विवरण वह विवरण है जिसमें लेखा वर्ष की अंतिम तिथि को व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को दिखाया जाता है।
- स्थिति विवरण व्यवसाय के स्वामित्व को क्या देय है तथा इसने कितना दूसरों का देना है इसका व्यवस्थित प्रस्तुतिकरण है।
- स्थिति विवरण के दो पक्ष होते हैं: परिसम्पत्तियां एवं देयताएं
- परिसम्पत्तियों को (1) तरलता क्रम अथवा (2) स्थिरता क्रम में लिख जा सकता है।
- परिसम्पत्तियों को, स्थाई संपत्तियां, चालू संपत्तियां, मूर्त सम्पत्तियां अमूर्त सम्पत्तियां, तरल संपत्तियां, क्षयी संपत्तियां एवं अवास्तविक संपत्तियां के वर्गों में बांटा जा सकता है।
- देयताएं दीर्घ अवधि, चालू देयताएं एवं स्वामी कोष हो सकती हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. व्यापार खाता बनाते समय उठाए जाने वाले कदमों के विषय में बताइए।
2. स्थिति विवरण शब्द को समझाइए। स्थिति विवरण को बनाने के उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।
3. परिसम्पत्तियों को तरलता क्रम एवं स्थिरता क्रम में दिखाया जा सकता है समझाइए।
4. निम्न प्रकार की परिसंपत्तियों का दो–दो उदाहरण देकर वर्णन कीजिए।

   (क) अमूर्त सम्पत्तियां (ख) अवास्तविक संपत्तियां

   (ग) स्थाई संपत्तियां (घ) चालू संपत्तियां
5. स्वामी के कोष क्या होते हैं?
6. पी. मुखर्जी की लेखा पुस्तकों से ली गई निम्न सूचना के आधार पर 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष के लिए व्यापार खाता बनाइए।

	₹		₹
प्रारम्भिक स्टॉक	6,500	रोकड़	4,500
क्रय	45,000	कार्यालय व्यय	3,200
विक्रय	72,000	कार्यालय किराया	6,800
वापसी आन्तरिक	1,500		
वापसी बाह्य	500		
क्रय पर भाड़ा	1,200		
मजदूरी	4,800		
ईंधन एवं बिजली	3,200		

31 मार्च 2014 को अन्तिम स्टॉक ₹ 8,600 था।

7. रश्मी की निम्न सूचना से 31, मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए लाभ हानि खाता तैयार कीजिए।

	₹		₹
सकल लाभ	64,800	प्राप्त बट्टा	600
डूबत ऋण	1,500	कमीशन प्राप्त हुआ	2,100
अवक्षयण	2,500	भाड़ा बाह्य	1,600
कार्यालय किराया	4,800	पूर्वदत्त बीमा	600
बीमा	3,200	वेतन	6,400
टेलीफोन व्यय	1,700	स्टेशनरी	700
ऋण पर ब्याज	2,400	फर्नीचर	6,000
भवन	50,000		

31 मार्च 2014 को अन्तिम स्टॉक ₹ 20,000 था।

टिप्पणी

8. मै. कृष्णामूर्ति गारमैंट्स के 31, मार्च 2014 को निम्न तलपट से 31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता बनाइए तथा इस तिथि को स्थिति विवरण बनाइए।

मै. कृष्णामूर्ति गारमेंट्स

तलपट

31 मार्च, 2014 को

विवरण	*नाम शेष* ₹	*जमा शेष* ₹
हस्तस्थ रोकड़	2,000	
बैंक अधिविकर्ष		35,000
स्टॉक 1.4.2013	32,000	
क्रय		80,000
भाड़ा आन्तरिक	4,000	
सीमा शुल्क	5,500	
बिजली	6,500	
मशीन	40,000	
फर्नीचर	20,000	
विक्रय		1,65,000
देय विपत्र		18,000
देनदार	28,000	
लेनदार		22,000
वेतन	6,500	
विक्रयकर्त्ता का कमीशन	7,800	
गोदाम का किराया	7,200	
बीमा	2,400	
भूमि व भवन	75,000	
विक्रय पर भाड़ा	3,600	
विज्ञापन	4,500	
पूँजी		1,00,000
आहरण	15,000	
	3,40,000	3,40,000

अन्तिक स्टॉक 31 मार्च 2014 को ₹ 38,000 था।

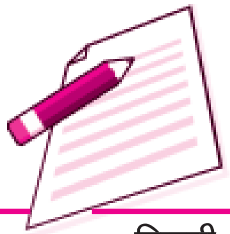

9. राकेश फर्नीचर बनाने का व्यवसाय करता है। 31 मार्च 2014 के निम्न शेषों की सहायता से व्यापार खाता एवं लाभ–हानि खाता तथा स्थिति विवरण तैयार कीजिए।

	₹		₹
पूँजी	6,000	पॉलिसिंग	500
आहरण	1,000	छूट एवं कर	40
विक्रय	10,000	प्राप्य बिल	300
कच्चा माल (क्रय)	2,000	बीमा	150
बंधक ऋण (जमा)	1,000	भाड़ा	10
मशीनरी	1,500	सामान्य व्यय	200
भूमि एवं भवन	2,000	स्टाक (1.4.2013)	2,000
लेनदार	500	बैंक में रोकड़	1,250
मजदूरी	5,000	हस्तस्थ रोकड़	50
देनदार	1,500		

31 मार्च 2014 को रोकड़ ₹ 1,500

10. 31 मार्च 2014 को हरीश जलाल की पुस्तकों से निम्न शेष लिए गए।

	₹		₹
पूँजी	24,500	ऋण	7,880
आहरण	2,000	विक्रय	65,360
सामान्य व्यय	2,500	क्रय	47,000
भवन	11,000	मोटर कार	2,000
मशीनरी	9,340	संचय कोष (जमा)	900
स्टाक	16,200	कमीशन (जमा)	1,320
पावर	2,240	कार व्यय	1,800
कर एवं बीमा	1,315	देय बिल	3,850
मजदूरी	7,200	रोकड़	80
देनदार	6,280	बैंक अधिविकर्ष	3,300
लेनदार	2,500	चैरिटी	105
अप्राप्य ऋण	550		

स्टॉक का 31 मार्च 2014 को मूल्य ₹ 2,350 था।

31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए व्यापार एवं लाभ–हानि खाता बनाइए तथा इसी स्थिति को स्थिति विवरण भी बनाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

17.1

(i) व्यापार खाता	जमा
(ii) लाभ हानि खाता	नाम
(iii) लाभ हानि खाता	जमा
(iv) व्यापार खाता	नाम
(v) व्यापार खाता	नाम
(vi) व्यापार खाता	जमा
(vii) लाभ हानि खाता	नाम
(viii) लाभ हानि खाता	जमा

17.2 I.

तरलता क्रम	स्थिरता क्रम
हस्तस्थ रोकड़	ख्याति
प्राप्य विपत्र	फर्नीचर
विविध देनदार	भवन
अन्तिम स्टॉक	निवेश
निवेश	अन्तिम स्टॉक
भवन	विविध देनदार
फर्नीचर	प्राप्य विपत्र
ख्याति	हस्तस्थ रोकड़

II.

तरलता क्रम	स्थिरता क्रम
अदत्त व्यय	पूँजी
देय विपत्र	बंधक ऋण
लेनदार	लेनदार
बंधक ऋण	देय विपत्र
पूँजी	अदत्त व्यय

17.3 I. (i) अमूर्त परिसंपतियां (ii) चालू परिसंपतियां
(iii) अवास्तविक परिसंपतियां (iv) क्षयी परिसंपतियां
(v) स्थाई परिसंपतियां

II. (i) दीर्घकालीन देयाताएं (ii) चालू देयताएं
(iii) चालू देयताएं (iv) स्वामित्व कोष

17.4 (i) सकल लाभ (ii) शुद्ध हानि (iii) बराबर (iii) देयताएं

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

6. सकल लाभ ₹ 10,300
7. शुद्ध लाभ ₹ 42,700
8. सकल लाभ ₹ 75,000; शुद्ध लाभ ₹ 44,000; स्थिति विवरण का योग ₹ 2,03,000
9. सकल लाभ ₹ 1,790; शुद्ध लाभ ₹ 1,600; स्थिति विवरण का योग ₹ 8,100
10. सकल लाभ ₹ 10,220; शुद्ध लाभ ₹ 11,270; स्थिति विवरण का योग ₹ 52,200

क्रियाकलाप

1. अपने क्षेत्र की, अपने मित्र के अविभावकों की एवं अपने संबन्धियों की व्यावसायिक इकाईयों पर जाइए तथा उन संपत्तियों के सम्बन्ध में सूचना एकत्रित कीजिए जो व्यवसाय की प्रकृति के कारण सामान्य नहीं हैं। इन्हें संबंधित वर्गों में विभाजित कीजिए

इकाई का नाम	*व्यवसाय की प्रकृति*	*संपत्ति का नाम*	*संपत्ति की श्रेणी*
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

2. आपके पिता, मित्र के पिता अथवा सगे सम्बन्धी द्वारा चलाए जा रहे व्यवसाय के स्थिति विवरण का विश्लेषण कीजिए तथा संपत्ति एवं देयताओं की क्रमबद्धता (Marshalling) की जांच कीजिए। यदि यह क्रम में नहीं हैं तो इन्हें तरलता अथवा स्थाई क्रम में लिखें। यदि यह तरलता क्रम में है तो इन्हें स्थाई क्रम में लिखे अथवा इसके विपरीत क्रम में लिखें।

18

वित्तीय विवरण - II

आप सीख चुके हैं कि आय विवरण अर्थात व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा स्थिति विवरण, (तुलन पत्र) दो वित्तीय विवरण हैं जिन्हें हर व्यावसायिक इकाई एक अवधि की समाप्ति पर बनाता है। आय विवरण शुद्ध लाभ अथवा शुद्ध हानि जो भी हो, को दर्शाता है जबकि स्थिति विवरण विशेष तिथि को व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को दर्शाता है। ये विवरण तलपट तथा अन्य सूचना के आधर पर बनाए जाते है। ऐसा भी हो सकता है कि कुछ आय एवं व्यय की ऐसी मदें हैं जो उस अवधि से सम्बन्ध नहीं रखती जिसके लिए तलपट को बनाया गया है या फिर दूसरी मदें जो उपार्जित हो चुकी है लेकिन जिनका लेखा जोखा नहीं किया गया है इसलिए उन्हें तलपट में दर्शाया नहीं गया हैं। इन दोनों ही प्रकार की आय एवं व्यय का पूरी तरह से लेखा होना आवश्यक है तभी उपयुक्त दोनों विवरण व्यवसाय की सत्य एवं उचित स्थिति को दिखा पाएंगे। इन्हें समायोजन कहते हैं। इस पाठ में हम कुछ समायोजनों का लेखांकन करना सीखेंगे तथा इन समायोजनों को वित्तीय विवरणों में समाविष्ट करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- लेखा समायोजन की आवश्यकता को पहचान सकेंगे;
- अन्तिम स्टॉक, अदत्त एवं पूर्वदत्त व्यय, अर्जित आय एवं आय की अग्रिम प्राप्त आय को समझा सकेंगे;
- पूँजी एवं आहरण पर ब्याज, अवक्षयण के सम्बन्धों में समायोजनों एवं अप्राप्य ऋण तथा संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान को समझा सकेंगे;
- व्यापार खाता, एवं लाभ-हानि खाता तथा स्थिति विवरणों में समायोजनों को समाविष्ट कर सकेंगे।

18.1 लेखा समायोजनों की आवश्यकता

आप पहले ही समझ चुके हैं कि प्रत्येक व्यवसायिक इकाई व्यापार एवं लाभ हानि खाता तथा स्थिति विवरण, यह दो वित्तीय विवरण है जिन्हें यह एक लेखा अवधि के अन्त में, जो सामान्यतः एक वर्ष है, बनाते हैं। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि वह आय एवं व्यय की मदें जो उस लेखा अवधि से सम्बन्ध नहीं रखती उन्हें सम्मिलित नहीं करना चाहिए। यदि इनमें से कुछ मदों को वित्तीय विवरणों में सम्मिलित कर लिया गया है इन्हें आवश्यक समायोजन प्रविष्टि के द्वारा हटा देना चाहिए। इसी प्रकार से कुछ मदें है जो छूट गई है लेकिन जिनको खातों में दिखाना आवश्यक है। इनकी भी समायोजन प्रविष्टि की जाएगी। सही लाभ अथवा हानि की गणना के लिए तथा व्यवसाय की सत्य एवं सही स्थिति दर्शाने के लिए यह आवश्यक है। उदाहरण के लिए माना एक फर्म अपने खाते प्रति वर्ष 31 मार्च को बंद करती है। माना इसने मार्च के महीने का दुकान के किराए का भुगतान नहीं किया है यह मद तलपट में नहीं दिखाई गई होगी। अतः इसका समायोजन आवश्यक है क्योंकि इसका सम्बन्ध उस वर्ष से है जिस वर्ष के खाते बनाए जा रहे हैं। इसी प्रकार से माना 30 जून तक का वार्षिक बीमा प्रीमियम का भुगतान कर दिया गया है। इसका अर्थ हुआ कि तीन महीने का भुगतान अग्रिम कर दिया गया है। यह राशि तलपट में दिखाई गई बीमे की राशि में सम्मिलित है। अग्रिम भुगतान राशि को इसमें से हटाना है। सम्मिलित करने अथवा हटाने की यह प्रक्रिया समायोजन कहलाती है। खाता बहियों में वित्तीय विवरण तैयार करते समय सत्य एवं सही स्थिति ज्ञात करने के लिए इनका समायोजन आवश्यक है।

पाठगत प्रश्न 18.1

उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. व्यापार एवं लाभ हानि खाता .... अथवा .... को दर्शाता है।

ii. व्यवसाय की .... एवं .... को दिखाने के लिए समायोजन आवश्यक है।

iii. आय एवं व्यय की वह मदें जो लेखा अवधि से सम्बन्धित नहीं हैं को .... ।

iv. आय एवं व्यय की वे मदें जो लेखा अवधि से संबंधित है लेकिन छूट गई है का .... चाहिए।

18.2 समायोजन एवं उनका समावेशन

समायोजन की संख्या एवं उनकी प्रकृति अलग अलग संगठन की अलग अलग होती हैं। यह संगठन की गतिविधियों की मात्रा एवं प्रकृति पर निर्भर करती है। वैसे सभी प्रकार के संगठन

में कुछ समायोजन एक जैसे हैं। वैसे भी समायोजन करते समय आपकों द्विअंकन प्रणाली के सामान्य सिद्धान्त का पालन करना होगा अर्थात राशि को एक खाते के नाम में तथा दूसरे के जमा में लिखना होगा। अतः वित्तीय विवरणों में समायोजन की मदों को दो स्थानों पर दिखाया जायेगा एक नाम को तथा दूसरी जमा को दर्शाएगी।

आइए अब समायोजन की कुछ मदों एवं वित्तीय विवरणों में उनके लेखा जोखा का वर्णन करें। यह समायोजन की मदें निम्न हैं:

1. अन्तिम स्टॉक
2. अदत्त व्यय
3. पूर्वदत्त व्यय
4. उपार्जित आय
5. आय की अग्रिम प्राप्ति
6. पूँजी पर ब्याज
7. आहरण पर ब्याज
8. अवक्षयण
9. अतिरिक्त अप्राप्य ऋण
10. अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान
11. देनदारों को छूट के लिए प्रावधान
12. प्रबन्धक का कमीशन
13. असामान्य हानि
14. स्वामी द्वारा माल का आहरण
15. वस्तुओं का मुफ्त नमूना वितरण

आइए इन समायोजनों को एक एक कर समझें:

1. अन्तिम स्टॉक

अन्तिम स्टॉक से अभिप्राय वर्ष के अन्त में बिना बिके हुए माल के स्टॉक से है। सामान्यतः यह तलपट में नहीं दर्शाया जाता इसीलिए इसका वित्तीय विवरणों में समावेशन कराया जाता है। यह व्यापार खाता के जमा की ओर तथा स्थिति विवरण में सम्पत्ति की ओर दिखाया जाता है।

इसकी समायोजन प्रविष्टि इस प्रकार से होगी:

अन्तिम स्टॉक खाता   नाम
    व्यापार खाता से
(अन्तिम स्टॉक का व्यापार खाते में हस्तांन्तरण)

वित्तीय विवरणों पर इस समायोजन प्रविष्टि का प्रभाव इस प्रकार से होगा

व्यापार खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
		अन्तिम स्टॉक	

स्थिति विवरण

देयताएं	राशि (₹)	सम्पतियों	राशि (₹)
		अन्तिम स्टॉक	

यदि अन्तिम स्टॉक का लेखा किया जा चुका है तो यह तलपट का भाग बन जायेगा इसलिए व्यापार खाते में इसका समायोजन करने की आवश्यकता नहीं है। समायोजित अन्तिम स्टॉक स्थिति विवरण के सम्पत्ति की ओर दिखाया जायेगा।

2. अदत्त व्यय *(Outstanding Expenses)*

जिन खर्चों का सम्बन्ध वर्त्तमान लेखा वर्ष से है लेकिन जिनका भुगतान नहीं किया गया है इन्हें अदत्त व्यय कहते हैं। माना कि खाते प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को बन्द किये जाते हैं तथा दिसम्बर का वेतन देय है लेकिन उसका भुगतान नहीं किया गया है। यह अदत्त वेतन का उदाहरण है इसी प्रकार से अन्य मदें भी होती हैं जैसे कि अदत्त, किराया, अदत्त मजदूरी आदि। अदत्त वेतन की समायोजन प्रविष्टि इस प्रकार की जायेगी।

वेतन खाता नाम
अदत्त वेतन खाता से
(दिसम्बर मास का किराया अदत्त है)

वित्तीय विवरणों में इसका लेखा इस प्रकार से होगा

लाभ-हानि खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
वेतन *जमा :* अदत्त वेतन			

स्थिति विवरण

देयताएं	राशि (₹)	सम्पत्तियां	राशि (₹)
अदत्त वेतन			

टिप्पणी

अदत्त व्यय की राशि को उसकी भुगतान की गई राशि में जोड़ दिया जाएगा जिसे आवश्यकतानुसार व्यापार खाता अथवा लाभ-हानि खाता में दिखाया जायेगा। क्योंकि यह एक देयता की मद है इसलिए इसे 'देयताएं' की ओर लिखा जाएगा।

3. पूर्वदत्त व्यय (Prepaid Expenses)

कभी कभी किसी भुगतान किये गये व्यय के एक भाग का सम्बन्ध अगले लेखा वर्ष से हो सकता है। ऐसे व्यय को पूर्वदत्त व्यय अथवा व्यय का अग्रिम भुगतान कहते हैं। उदाहरण के लिए बीमा प्रीमियम की राशि जिसका भुगतान वर्त्तमान वर्ष में किया गया है, वर्ष समाप्ति के लिए हो सकती है, जिसकी तिथि अगले वर्ष में पड़ रही है। बीमा प्रीमियम की राशि का वह भाग जो अगले लेखा वर्ष से सम्बन्धित है, प्रीमियम का अग्रिम भुगतान कहलाता है इसे भुगतान की गई राशि में से घटा दिया जाता है तथा इसे परिसम्पत्ति के रूप में दिखाया जाता हैं इसी प्रकार की अन्य मदें हैं पूर्वदत्त किराया, पूर्वदत्त टैक्स आदि।

पूर्वदत्त बीमा प्रीमियम की समायोजन प्रविष्टियां

पूर्वदत्त बीमा प्रीमीयम खाता नाम
बीमा प्रीमियम खाता से
(बीमा प्रीमियम राशि का अग्रिम भुगतान)

वित्तीय विवरणों में इसका लेखा इस प्रकार से किया जाता है :

लाभ-हानि खाता
वर्ष की समाप्त के लिये ....

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
बीमा प्रीमीयम **घटा :** पूर्वदत्त बीमा प्रीमियम			

स्थिति विवरण
...............को

देयताएं	राशि (₹)	परिसम्पत्तियां	राशि (₹)
		पूर्वदत्त बीमा	

4. उपार्जित आय (प्राप्त लेकिन आय प्राप्त नहीं हुआ) (Accrued Income)

उपार्जित आय का अर्थ है आय जिसको अर्जित तो कर लिया है लेकिन लेखा वर्ष की समाप्ति

तक प्राप्त नहीं हुई। उदाहरण के लिए प्रतिभूतियों पर ब्याज अथवा शेयरों पर लाभांश जो देय है, लेकिन जिनकी प्राप्ति की सम्भावना अगले वित्तीय वर्ष में किसी तिथि को है। इस प्रकार की आय तलपट में नहीं दिखाई गई है लेकिन इसका लेखा इसी वर्ष में होना आवश्यक है क्योंकि इस प्रकार की आय अर्जित हो चुकी है।

इस लेनदेन की समायोजन प्रविष्ट : माना कि प्राप्य किराया उपार्जित है लेकिन अभी प्राप्त नहीं हुआ है।

प्राप्य किराया (उपार्जित) खाता नाम
किराया प्राप्त से
(किराया देय लेकिन प्राप्त नहीं हुआ)

वित्तीय विवरणों में इसकी प्रविष्टि इस प्रकार होगी

लाभ हानि खाता
वर्ष को समाप्त के लिये............

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
		किराया प्राप्त *जमा :* किराया उपार्जित	

स्थिति विवरण

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
		किराया उपार्जित	

5. अनुपार्जित आय/अग्रिम में प्राप्त आय (Unearned Income)

कभी कभी कोई आय वास्तव में देय होने से पहले प्राप्त हो जाती है। ऐसी आय को अनुपार्जित आय या अग्रिम से प्राप्त आय कहते हैं। चूँकि ऐसी आय चालू वर्ष से सम्बन्धित नहीं होती इसे लाभ हानि खाते में सम्बन्धित आय के शीर्ष में से घटा देना चाहिए। ऐसी आय फर्म के लिए देनदारी होती है। इसलिए स्थिति विवरण में इसे देयताएं की ओर दिखाया जाता है। इसका उदाहरण है अगले लेखा वर्ष के लिए जनवरी, फरवरी मास का किराया प्राप्त हुआ। 31 दिसम्बर को समाप्त हुए लेखा वर्ष के लिए।

इसकी समायोजन प्रविष्टि इस प्रकार से होगी :

किराया प्राप्ति खाता नाम
अग्रिम किराया प्राप्त खाता से
(किराया अग्रिम प्राप्त हुआ)

टिप्पणी

वित्तीय विवरणों में लेखा

लाभ हानि खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
		किराया प्राप्त हुआ *घटा :* किराया अग्रिम प्राप्त	

स्थिति विवरण

.... को

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
अग्रिम किराया प्राप्त			

पाठगत प्रश्न 18.2

उचित शब्द भर कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

i. व्यय जिनका सम्बन्ध वर्तमान लेखावर्ष से है लेकिन जिसका अभी भुगतान नहीं किया गया है .... कहलाता है।

ii. भुगतान खर्च का वह भाग जिसका सम्बन्ध अगले लेखा वर्ष से है .... कहलाता है।

iii. आय अर्जित कर ली गई है लेकिन वर्ष के अन्त तक प्राप्त नहीं की जा सकी है .... कहलाती है।

iv. आय जो देय होने से पहले ही प्राप्त हो चुकी है .... कहलाती है।

18.3 अन्य समायोजन

6. पूँजी पर ब्याज

व्यवसाय के अस्तित्व की अवधारणा के अनुसार स्वामी की पूँजी व्यवसाय के लिये देनदारी है। जैसे ऋणों पर ब्याज दिया जाता है उसी प्रकार से पूँजी पर भी ब्याज दिया जा सकता है। यदि यह देना है तो समायोजन प्रविष्टि इस प्रकार से की जायेगी :

पूँजी पर ब्याज खाता नाम
  पूँजी खाता से
(पूँजी पर ब्याज दिया गया)

टिप्पणी

वित्तीय विवरणों में इसे इस प्रकार दिखाया जायेगा

लाभ हानि खाता

नाम   जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
पूँजी पर ब्याज			

स्थिति विवरण

.... को

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
पूँजी *जमा :* पूँजी पर ब्याज			

7. आहरण पर ब्याज

व्यवसाय के स्वामी ने घर खर्च के लिए व्यवसाय में से पैसा निकाला इस पर भी ब्याज लगाया जा सकता है। इसकी रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी।

पूँजी खाता   नाम
        आहरण पर ब्याज खाता से
(आहरण पर ब्याज लगाया)

वित्तीय विवरणों में इसका लेखा इस प्रकार होगा

लाभ हानि खाता

.... को समाप्त वर्ष के लिये

नाम   जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
		आहरण पर ब्याज	

स्थिति विवरण

नाम   जमा

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
पूँजी घटा आहरण पर ब्याज			

8. अवक्षयण-ह्रास (Depreciation)

संयन्त्र एवं मशीन, फर्नीचर एवं फिक्सचर, भूमि एवं भवन, मोटरवाहन आदि स्थाई सम्पत्तियों के मूल्यों में घिसावट प्रचलन के बाहर होने या फिर अन्य किसी कारण में प्रतिवर्ष कमी आती रहती है।

स्थाई सम्पत्तियों का उपयोग क्योंकि आय अर्जन के लिए किया जाता है, इसलिए स्थाई सम्पत्ति के मूल्य में आने वाली कमी अन्य खर्चों के समान एक खर्च है। इसे अवक्षयण कहते हैं। इसे लाभ हानि खाते में खर्च के रूप में लिखा जाता है। इस प्रकार की सम्पत्तियों को स्थिति विवरण में अवक्षयण की राशि घटा कर घटे मूल्य पर दिखाई जाती है।

अवक्षयण के लिए रोजनामचा में समायोजन प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

अवक्षयण खाता   नाम
        परिसम्पत्ति खाता से
(.............. पर अवक्षयण लगाया)

वित्तीय विवरणों में इसका लेखा इस प्रकार होगा

लाभ हानि खाता

नाम   जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
अवक्षयण : संयन्त्र एवं मशीन, मोटर वाहन आदि पर			

स्थिति विवरण

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*		*राशि (₹)*
		संयन्त्र एवं मशीन	....	
		घटा : अवक्षयण	....	....
		मोटर वाहन	....	
		घटा : अवक्षयण	....	....

नोट : यदि खाते बन्द करने से पहले ही अवक्षयण की गणना कर ली गई है तो यह तलपट के 'नाम' स्तम्भ में लिखी जायेगी। ऐसे में इसे लाभ हानि खाता के नाम में लिखा जायेगा तथा स्थिति विवरण में आगे समायोजन की आवश्यकता नहीं होगी।

टिप्पणी

9. अतिरिक्त अप्राप्य ऋण (Further Bad Debts)

जब माल को उधार बेचा जाता है तो कुछ देनदार देय राशि के एक भाग का ही भुगतान करते हैं या फिर बिल्कुल ही भुगतान नहीं करते। यदि इस राशि की वसूली सम्भव नहीं है तो इसे अप्राप्य ऋण कहा जायेगा तथा यह फर्म की हानि होगी। इसे लाभ–हानि खाते के नाम में दिखाया जायेगा। लेकिन अप्राप्य ऋण की एक ऐसी राशि हो सकती है जिसका लेखा लेखपुस्तकों में नहीं किया गया था और इसलिये यह तलपट में नहीं दिखाया जा सका। लेकिन इसका पता वित्तीय विवरणों के बनाने से पूर्व लग गया। इसे अतिरिक्त अप्राप्य ऋण कहते हैं।

इसकी समायोजन प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

अप्राप्य ऋण खाता नाम
देनदारों से
(अप्राप्य ऋण का लेखा किया गया)

लाभ–हानि खाता एवं स्थिति विवरण में इसका लेखा इस प्रकार से होगा :

लाभ हानि खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
अप्राप्य ऋण *जमा :* अतिरिक्त अप्राप्य ऋण			

स्थिति विवरण

.... को

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
		देनदार *घटा :* अतिरिक्त अप्राप्य ऋण	

10. अप्राप्य ऋण एवं संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान

किसी एक वर्ष के देनदार अगले वर्ष में अप्राप्य हो सकते हैं। इसका अर्थ हुआ कि अप्राप्य ऋण के कारण हानि को उस वर्ष में व्यय के रूप में लिखा जायेगा जिसमें यह हानि हुई है न कि उस वर्ष में जिससे इसका सम्बन्ध है। उचित लेखा तभी माना जायेगा जबकि अगले वर्ष में संभावित अप्राप्य ऋण की राशि की हानि की पूर्ति के लिए उचित राशि वर्त्तमान वर्ष में एक ओर रख दी गई है। अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान करने से सम्बन्धित्

टिप्पणी

निर्णय वर्ष के अन्त में लिया जायेगा इसलिए यह एक समायोजन की मद है। इसे अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान कहा जाता है।

इसकी समायोजन प्रविष्टि इस प्रकार से होगी।

लाभ हानि खाता नाम
संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान खाता से
(संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान किया गया)

लाभ हानि खाता एवं स्थिति विवरण में इसका लेखा इस प्रकार से होगा

लाभ हानि खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
अप्राप्य ऋण ***जमा :*** संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान			

स्थिति विवरण

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
		देनदार ***घटा :*** संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	

माना देनदारों पर इस प्रकार का प्रावधान 5% की दर से किया गया। अब यदि अतिरिक्त अप्राप्य ऋण है तो अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान की गणना लेनदारों पर अतिरिक्त अप्राप्य ऋण की राशि को घटा कर की जायेगी।

व्यवसायी को पिछले कई वर्षों का अनुभव होगा कि उधार बिक्री के कारण उत्पन्न लेनदारी पर एक निश्चित दर से प्रतिवर्ष अप्राप्य हो जायेगा इसलिए संदिग्ध ऋण के लिए देनदारों पर एक निश्चित दर माना 5% से प्रावधान किया जायेगा। यह प्रतिशत् बदल जायेगा यदि परिस्थितियों में परिवर्त्तन आ गया है। उदाहरण के लिए यह प्रतिशत् कम हो जायेगा यदि व्यवसायी वस्तुओं का उधार विक्रय सोच विचार कर करने लगा है।

अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के लिए देनदारों पर एक निश्चित दर से प्रतिवर्ष प्रावधान किया जाता है। पिछले वर्ष के शेष को इस वर्ष में हस्तान्तरित कर दिया जायेगा। इसे पुराना अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण कहेंगे। इस वर्ष के अप्राप्य ऋण अथवा/एवं अतिरिक्त अप्राप्य ऋण को इस प्रावधान में समायोजित कर दिया जायेगा तथा और अधिक प्रावधान किया जायेगा। इसे अप्राप्य ऋण के लिए नया प्रावधान कहा जा सकता है।

लाभ हानि खाते में इसे इस प्रकार से दिखाया जायेगा।

लाभ हानि खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
अप्राप्य ऋण *जमा :* अतिरिक्त अप्राप्य ऋण *जमा :* अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान (नया) *घटा :* अप्राप्य ऋण एवं संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान (पुराना)			

यदि पिछले वर्ष से लाया गया अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के प्रावधान की शेष राशि, इस वर्ष के अप्राप्य ऋण, अतिरिक्त अप्राप्य ऋण एवं अप्राप्य ऋण के नये प्रावधान तीनों राशियों की कुल राशि से अधिक है तो आधिक्य राशि को लाभ हानि खाता के जमा में दिखाया जायेगा।

अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण की प्रावधान राशि देयता की मद होती है लेकिन मान्य पद्धति है कि इसे स्थिति विवरण की परिसम्पत्तियों की ओर पुस्तक ऋण/देनदार में से घटा कर दिखाया जाता है।

इसे निम्न उदाहरण से और अच्छी प्रकार से समझाया जा सकता है।

31 दिसम्बर, 2013 को एक एकाकी व्यापारी के तलपट में निम्न मदें दी गई हैं।

विवरण	नाम शेष (₹)	जमा शेष (₹)
देनदार	24,600	
अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान		1,000
अप्राप्य ऋण	700	

अतिरिक्त सूचना

अतिरिक्त अप्राप्य ऋण ₹ 600 है। देनदारों पर 5% से अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान करना है।

उपर्युक्त मदों को लाभ हानि खातें में दिखाइए तथा वित्तीय विवरणों में आवश्यक समायोजन कीजिए।

टिप्पणी

लाभ हानि खाता
31 दिसम्बर, 2013 को समाप्ति वर्ष के लिये

नाम जमा

विवरण		राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
अप्राप्य ऋण	700			
जमा : अतिरिक्त अप्राप्य ऋण	600			
जमा : संदिग्ध ऋण के लिए नया प्रावधान	1,200			
	2,500			
घटा : संदिग्ध ऋण का पुराना प्रावधान	1,000	1,500		

स्थिति विवरण
31 दिसम्बर, 2013 को

देयताएं	राशि (₹)	परिसम्पत्तियां		राशि (₹)
		कुल देनदार	24,600	
		घटा : अतिरिक्त अप्राप्य ऋण	600	
			24,000	
		घटा : संदिग्ध ऋण के लिए नया प्रावधान	1,200	22,800

18.4 वित्तीय वक्तव्यों की तैयारी में समायोजन

11. देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान

वर्ष के अन्त में अदत्त देनदार अगले वर्ष में भुगतान करते हैं यदि वह देय तिथि तक भुगतान करते हैं तो उन्हें नकद छूट प्राप्त होगी। अब क्योंकि देनदारी वर्ष में देय हुई है, छूट को इसी वर्ष का व्यय माना जाएगा। अतः देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान किया जाएगा।

इसकी प्रक्रिया अप्राप्य ऋणों के लिए प्रावधान की प्रक्रिया के समान है। छूट की संभावित राशि को लाभ एवं हानि खाते के नाम में लिखा जाएगा और छूट खाता के लिए प्रावधान खाते के जमा में लिखा जाएगा। स्थिति विवरण में पुस्तक ऋण (देनदार) से इस राशि को घटा दिया जाएगा तथा इसे अगले वर्ष में ले जाया जाएगा। वर्तमान देनदारों को अगले वर्ष में दी

गई छूट को, छूट के लिए प्रावधान खाता के नाम में लिखा जाएगा न कि लाभ हानि खाते में। नाम में लिखने में प्रावधान खाता शेष कम हो जाएगा तथा आवश्यक राशि बनाने के लिए लाभ हानि खाता के नाम में तथा प्रावधान खाता के जमा में लिखा जाएगा जैसा कि अप्राप्य ऋण खाता के साथ किया जाता है।

एक महत्वपूर्ण बिन्दु ध्यान रखने योग्य है कि छूट अप्राप्य ऋणों पर नहीं दी जाती। इसीलिए छूट का प्रावधान केवल अच्छे ऋणों के लिए ही किया जाता है। दूसरे शब्दों में छूट पर प्रावधान की गणना विविध देनदारों में से अप्राप्य ऋण एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान को घटा कर आई राशि पर की जाती है। माना कि विविध देनदार ₹ 1,00,000 है। संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान करना है 5% तथा छूट के लिए प्रावधान करना है 2.5%। इसलिए पहले हमें संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान करनी होगी जो इस प्रकार है। 1,00,000 x 5 = 5,000 शेष राशि है ₹ 95,000। अब छूट के लिए प्रावधान की गणना की जाएगी, जो इस प्रकार से है 95,000 x 2.5% = ₹ 2,375।

लेखांकरन व्यवहार

(i) छूट प्रदान करने पर

छूट प्रदत्त खाता	नाम
देनदार खाता से	
(देनदारों को छूट प्रदान की)	

(ii) छूट की राशि का लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरण

लाभ–हानि खाता	नाम
छूट प्रदत्त खाता से	
(प्रदत्त छूट को लाभ–हानि खाता में हस्तान्तरण)	

(iii) यदि लेखा पुस्तकों में पहले से ही प्रावधान दिया गया है तो प्रदत्त छूट को लाभ–हानि खाते के स्थान पर देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाएगा। प्रविष्टि इस प्रकार से होगी–

देनदारों पर छूटों के लिए प्रावधान खाता	नाम
प्रदत्त छूट खाता से	
(छूट को देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान खाते में हस्तान्तरण)	

(iv) देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान करना

लाभ–हानि खाता	नाम
देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान खाता से	
(छूट के लिए प्रावधान खाता के शेष को लाभ–हानि खाता में लिखना)	

टिप्पणी

उदाहरण 1

31 दिसम्बर 2012 को एक फर्म के विविध देनदार ₹ 4,00,000 थे। उसी तिथि को विविध देनदारों पर 2% से छूट के लिए प्रावधान किया गया। 2013 में प्रदत्त वास्तविक छूट ₹ 400 थी। 31 दिसम्बर 2013 को देनदार ₹ 3,00,000 थे। देनदारों पर 2% से छूट के लिए प्रावधान का निर्णय लिया गया। रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए एवं दोनों वर्षों के लिए छूट खाता एवं छूट के लिए प्रावधान खाता बनाइए।

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खाता पृ.सं.*	*नाम ₹*	*जमा ₹*
2012 दिस. 31	लाभ हानि खाता नाम देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान खाता से (देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान)		8,000	8,000
2013 दिस. 31	छूट प्रदत्त खाता नाम विविध देनदार खाता से (भुगतान प्राप्ति पर छूट प्रदान की)		4,000	4,000
दिस. 31	देनदारों पर छूट का प्रावधान खाता नाम प्रदत्त छूट खाता से (छूट प्रावधान खाते में हस्तान्तरित की)		4,000	4,000
दिस. 31	लाभ–हानि खाता नाम देनदारों पर छूट का प्रावधान से (छूट का प्रावधान किया गया)		2,000	2,000

देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान

नाम जमा

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*₹*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*₹*
2012 दिस.31	शेष आ.ले.		8,000	2012 दिस.31	लाभ–हानि खाता		8,000
			8,000				8,000

2013				2013			
दिस. 31	छूट प्रदत्त खाता		4,000	जन. 1	शेष आ.ला.		8,000
दिस. 31	शेष आ.ले.		6,000	दिस. 31	लाभहानि खाता		2,000
			10,000				10,000
				2014			
				जन. 1	शेष आ.ला.		6,000

देनदार पर छूट के लिए प्रावधान खाता

नाम जमा

तिथि	*विवरण*	₹	*तिथि*	*विवरण*	₹
2013			2013		
दिस. 31	विविध देनदार खाता	4,000	दिस. 31	छूट के लिए प्रावधान खाता	4,000
		4,000			4,000

12. मैनेजर का कमीशन

कभी–कभी मैनेजर को लाभ पर कमीशन देय होता है, जिसकी गणना सामान्यतः लाभ पर निश्चित प्रतिशत से की जाती है। माना कि कमीशन जो कि 5% है को बिना ध्यान में रखे ₹ 80,000 है तो कमीशन होगा ₹ 4,000 लाभ घटकर रह जाएगा ₹ 76,000। कमीशन की ₹ 4,000 की राशि का अभी भुगतान करना है तो इसे अदत्त व्यय माना जाएगा। प्रविष्टि होगीः

लाभ–हानि खाता नाम
अदत्त कमीशन खाता से

अदत्त कमीशन चालू देयता है तथा इसे स्थिति विवरण में दिखाया जाएगा।

कभी–कभी कमीशन के पश्चात बचे लाभ पर कमीयान की गणना की जाती है। यदि कमीशन की दर 5% है तथा कमीशन के पश्चात लाभ ₹ 100 है। तब कमीशन से पहले का लाभ होगा ₹ 105। इसका अर्थ हुआ कि कमीशन से पूर्व के लाभ ₹ 105 में से ₹ 5 कमीशन होगा। कमीशन की गणना का फार्मूला इस प्रकार है–

$$\frac{\text{कमीशन प्रतिशत}}{100 + \text{कमीशन प्रतिशत}} \times \text{कमीशन लगाने से पूर्व शुद्ध लाभ}$$

यदि कमीशन पूर्व लाभ ₹ 8,00,000 है और प्रबन्धक को 5% से कमीशन मिलता है तो कमीशन राशि होगी –

$$\frac{8,00,000 \times 5}{105} = ₹\ 3,80,950$$

उदाहरण 2

एक फर्म का कमीशन से पूर्व शुद्ध लाभ ₹ 1,05,000 है। फर्म के प्रबन्धक को शुद्ध लाभ का 5% कमीशन मिलना है। निम्न विकल्पों में प्रबन्ध का कमीशन की गणना कीजिए :

I. यदि प्रबन्धक को कमीशन लगाने से पूर्व शुद्ध लाभ पर कमीशन मिलना है।

II. यदि प्रबन्धक को कमीशन इस कमीशन के लगाने के पश्चात के शुद्ध लाभ पर मिलता है।

31 मार्च 2013 को समाप्त वर्ष के अन्त में खातों इसके व्यवहार को दर्शाइए।

हल :

स्थिति I

कमीशन लगाने से पूर्व शुद्ध लाभ पर कमीशन

$$\text{कमीशन} = \frac{\text{कमीशन प्रतिशत}}{100} \times \text{कमीशन लगाने से पूर्व शुद्ध लाभ}$$

$$\frac{1,05,000 \times 5}{100} = ₹\ 5,250$$

लाभ-हानि खाता

31 मार्च 2013 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम | जमा

विवरण	₹	विवरण	₹
प्रबंधक का कमीशन	5,250		

स्थिति विवरण

31 मार्च 2013 को

देयताएं	₹	सम्पत्ति	₹
चालू देयताएं प्रबन्धक का अदत्त कमीशन	5,250		

स्थिति II

कमीशन के पश्चात के शुद्ध लाभ पर कमीशन

$$\text{कमीशन} = \frac{\text{कमीशन प्रतिशत}}{100 + \text{कमीशन प्रतिशत}} \times \text{कमीशन लगाने से पूर्व शुद्ध लाभ}$$

$$\frac{1,05,000 \times 5}{105} = ₹\ 5,000$$

लाभ-हानि खाता

31 मार्च 2013 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम जमा

विवरण	₹	*विवरण*	₹
प्रबन्धक का कमीशन	5,000		

स्थिति विवरण

31 मार्च 2013 को

देयताएं	₹	*सम्पत्तियां*	₹
चालू देयताएं प्रबन्धक का कमीशन अदत्त	5,000		

पाठगत प्रश्न 18.3

I. निम्नलिखित के लिये सही शब्द दीजिए :

i. देनदारों द्वारा देय राशि के विरूद्ध प्रावधान।

ii. घिसावट के कारण स्थाई सम्पत्तियों के मूल्य में कमी।

iii. लेनदारी जिसकी वसूली संभव नहीं है।

iv. वर्ष के अन्त में बिकने से रह गया माल का स्टॉक।

II. निम्न समायोजनों के लिए रोजनामचा प्रविष्टियों को पूरा कीजिए:

i. पूँजी पर ब्याज दिया

पूँजी पर ब्याज खाता नाम

.... खाता से

ii. अदत्त मजदूरी

मजदूरी खाता नाम

. ... खाता से

iii. बीमा की किश्त छः महीने की अग्रिम

पूर्वदत्त बीमा खाता नाम

.... खाता से

iv. कमीशन अभी अर्जित नहीं किया परन्तु प्राप्त हो गया

कमीशन खाता नाम

.... खाता से

III. बताइए निम्न कथन सत्य हैं अथवा असत्य

i. देनदारों पर कटौती के लिए प्रावधान लाभ–हानि खाते के जमा में दिखाया जाता है।

ii. देनदारों पर कटौती के लिए प्रावधान को व्यवसाय की देनदारों में से घटाया जाता है।

iii. देनदारों पर कटौती के लिए प्रावधान व्यवसाय की आय है।

iv. देनदारों पर कटौती के लिए प्रावधान कम्पनी की सम्पत्ति है।

v. यदि कम्पनी के देनदार ₹ 10,000 है तथा कम्पनी उन पर 10% का कटौती के लिए प्रावधान कर रही है, तब कुल प्रावधान ₹ 1,000 होगा।

IV. उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

i. प्रबन्धक के कमीशन को लाभ–हानि खाते के .... की ओर दिखाया जाता है।

ii. प्रबन्धक के कमीशन को स्थिति विवरण की .... ओर दर्शाया जाता है।

iii. आग, भूकम्प अथवा दुर्घटना से होने वाली हानियां कहलाती है .... हानियां।

उदाहरण 3

एम. बी. गारमैटस के 31 दिसम्बर, 2013 के तलपट से वर्ष समाप्ति 31 दिसम्बर, 2013 के लिये व्यापार खाता एवं लाभ–हानि खाता तैयार कीजिए तथा इसी तिथि को स्थिति विवरण भी बनाइए:

खाते का नाम	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
पूँजी		80,000
हस्तस्थ रोकड़	570	
बैंक में रोकड़	5,600	
क्रय	43,200	

विक्रय		78,000
मजदूरी	10,400	
बिजली	4,730	
आन्तरिक भाड़ा	2,040	
बाह्य भाड़ा	3,200	
स्टाक (1.1.2013)	5,660	
भूमि एवं भवन	40,000	
मशीन	20,000	
वेतन	4,000	
बीमा	600	
विविध देनदार	28,000	
विविध लेनदार		10,000
	1,68,000	1,68,000

निम्न समायोजनों का लेखा करना है:

1. 31.12.2013 को स्टॉक ₹ 10,000 रुपये था।
2. मशीन पर अवक्षयण 10% वार्षिक, भूमि एवं भवन पर अवक्षयण 2% वार्षिक
3. दिसम्बर के लिए अदत्त वेतन ₹ 1,200 रुपये था।
4. बीमा प्रीमियम की राशि का भुगतान वर्ष समाप्ति 30 जून 2014 तक किया गया।

समायोजन के लिए रोजनामचा में प्रविष्टि कीजिए तथा व्यापार खाता एवं लाभ हानि तथा स्थिति विवरण तैयार कीजिए।

हल:

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खाता पृ.सं.	नाम ₹	जमा ₹
2013 दिस. 31	अन्तिम स्टॉक खाता नाम व्यापार खाता से (अन्तिम स्टॉक का व्यापार खाता में हस्तान्तरण)		10,000	 10,000
दिस. 31	अवक्षयण खाता नाम मशीन खाता से भूमि एवं भवन खाता से (मशीन पर 10% वार्षिक से एवं भूमि तथा भवन पर 2% वार्षिक से अवक्षयण लगाया गया)		2,800	 2,000 800

टिप्पणी

दिस. 31	वेतन खाता नाम अदत्त वेतन खाता से (दिसम्बर 2013 के लिए वेतन देय लेकिन भुगतान नहीं किया।)		1,200	1,200
दिस. 31	पूर्वदत्त बीमा खाता नाम बीमा खाता से (पूर्वदत्त बीमा का भुगतान का लेखा किया गया)		300	300

व्यापार खाता

31 दिसम्बर, 2013 को समाप्त वर्ष के लिये

नाम जमा

विवरण	₹	*विवरण*	₹
स्टॉक	5,660	विक्रय	78,000
क्रेता	43,200	अन्तिम स्टॉक	10,000
मजदूरी	10,400		
बिजली	4,730		
आंतरिक भाड़ा	2,040		
सकल लाभ लाभ हानि खाता में हस्तान्तरित	21,970		
	88,000		88,000

लाभ हानि खाता

31 दिसम्बर 2013 को समाप्त वर्ष के लिये

नाम जमा

विवरण		₹	*विवरण*	₹
बाह्य भाड़ा		3,200	सकल : लाभ, व्यापार खाता से हस्तान्तरित	21,970
वेतन	4,000			
जमा : अदत्त वेतन	1,200	5,200		
बीमा	600			
घटा : पूर्वदत्त व्यय	300	300		
अवक्षयण :				
मशीन पर	2,000			
भूमि एवं भवन पर	800	2,800		

टिप्पणी

शुद्ध लाभ पूँजी खाते में हस्तान्तरित	10,470		
	21,970		21,970

स्थिति विवरण

31 दिसम्बर, 2014 को

देयताएं		₹	*परिसम्पत्तियां*		₹
अदत्त वेतन		1,200	हस्तस्थ रोकड़		570
विविध लेनदार		10,000	बैंक में रोकड़		5,600
पूँजी	80,000		विविध देनदार		28,000
जमा : शुद्ध लाभ	10,470	90,470	अन्तिम स्टॉक		10,000
			पूर्वदत्त बीमा		300
			भूमि एवं भवन	40,000	
			घटा : अवक्षयण	800	392,00
			मशीन	20,000	
			घटा : अवक्षयण	2,000	18,000
		1,01,670			1,01,670

उदाहरण 4

मुस्तफा एण्ड कंपनी के नीचे दिये तलपट से वर्ष समाप्ति 31 दिसम्बर 2013 के लिए व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता तैयार कीजिए तथा उसी तिथि को स्थिति विवरण बनाइए। रोजनामचे में समायोजन प्रविष्टि भी कीजिए।

खाते का नाम	*नाम शेष राशि (₹)*	*खाते का नाम*	*जमा शेष राशि (₹)*
भूमि एवं भवन	60,000	पूँजी	50,000
संयन्त्र एवं मशीन	40,000	कुल लेनदार	10,000
प्राप्य प्रपत्र	8,000	बिक्री	1,20,000
स्टॉक (1.1.2013)	40,000	संदिग्ध ऋण के लिए संचय	4,500
क्रय	51,000	ऋण (12% वार्षिक)	10,000
मजदूरी	20,000	कमीशन प्राप्त हुआ	2,000
कोयला, गैस एवं कोक	5,800		
वेतन	5,000		
किराया	2,800		

टिप्पणी

बैंक में रोकड़	25,000		
विविध देनदार	45,000		
मरम्मत	1,800		
अप्राप्य ऋण	5,500		
विक्रय वापसी	2,000		
फर्नीचर एवं फिक्सचर	4,000		
ऋण पर ब्याज	600		
	3,16,500		3,16,500

समायोजन :

1. अन्तिम स्टॉक ₹ 30,000 था।
2. संयन्त्र एवं मशीन पर अवक्षयण 5% तथा फर्नीचर एवं फिक्सचर पर 10% की दर से लगाया गया।
3. अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए 5% का प्रावधान करना है।
4. अदत्त मजदूरी ₹ 1,000, किराया ₹ 500 तथा ऋण पर ब्याज ₹ 600 लगाना है।
5. उपार्जित कमीशन ₹ 1,000 है।

हल :

रोजनामचा (समायोजन प्रविष्टियां)

तिथि	विवरण	खाता पृ.सं.	नाम ₹	जमा ₹
2013 दिस. 31	अन्तिम स्टॉक नाम व्यापार खाता से (अन्तिम स्टॉक की खतौनी)		30,000	30,000
	अवक्षयण खाता नाम संयन्त्र एवं मशीन से फर्नीचर एवं फिक्सचर से (संयन्त्र एवं मशीन पर 5% अवक्षयण और फर्नीचर पर 10% अवक्षयण)		2,400	2,000 400
	लाभ हानि खाता नाम संदिग्ध ऋण के लिए संचय से (संदिग्ध ऋण के लिए संचय किया गया)		2,250	2,250

	मजदूरी खाता नाम किराया खाता नाम अदत्त व्यय खाता से (अदत्त व्यय के लिए प्रावधान)		1,000 500	 1,500
	कमीशन नाम उपार्जित कमीशन प्राप्त खाता से (...)		1,000	 1,000
	ऋण पर ब्याज खाता नाम ऋण पर अदत्त ब्याज खाता से (ऋण पर ब्याज देय लेकिन भुगतान नहीं किया)		600	 600

मै. मुस्तफा एण्ड कं. व्यापार एवं लाभ हानि खाता
31 दिसम्बर, 2013 को समाप्त वर्ष के लिये

नाम जमा

विवरण		₹	*विवरण*		₹
प्रारम्भिक स्टॉक		40,000	विक्रय	1,20,000	
क्रय		51,000	***घटा :*** विक्रय		
मजदूरी	20,000		वापसी	2,000	1,18,000
जमा : अदत्त मजदूरी	1,000	21,000	अन्तिम स्टॉक		30,000
कोयला, गैस एवं कोक		5,800			
सकल लाभ आ/ले		30,200			
		1,48,000			1,48,000
वेतन		5,000	सकल लाभ आ/ला		30,200
किराया	2,800		कमीशन प्राप्त किया	2,000	
जमा : अदत्तराशि	500	3,300	***जमा :*** उपार्जित		
मरम्मत		1,800	कमीशन	1,000	3000
डूबत ऋण	5,500				
जमा : नया प्रावधान	2,250				
	7,750				
घटा : पुराना प्रावधान	4,500	3,250			
ऋण पर ब्याज	600				
जमा : अदत्त ब्याज	600	1,200			
अवक्षयण :					
संयन्त्र एवं मशीन	2,000				
फर्नीचर एवं फिक्सचर	400	2,400			

टिप्पणी

शुद्ध लाभ-पूँजी खाते में हस्तान्तरित	16,250		
	33,200		33,200

मै. मुस्तफा एण्ड कं.
स्थिति विवरण
31.12.2013 को

देयताएं		₹	*परिसम्पत्तियां*		₹
विभिन्न लेनदार		30,000	बैंक में रोकड़		25,000
ऋण		10,000	प्राप्य विपत्र		8,000
अदत्त ब्याज		600	विभिन्न लेनदार	45,000	
अदत्त व्यय :			***घटा :*** संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	2,250	42,750
मजदूरी		1,000	अन्तिम स्टॉक		30,000
किराया		500	फर्नीचर एवं फिक्सचर	4,000	
पूँजी	1,50,000		***घटा :*** अवक्षयण	400	3,600
जमा : शुद्धलाभ	16,250	1,66,250	संयन्त्र एवं मशीन	40,000	
			घटा : अवक्षयण	2,000	38,000
			भूमि एवं भवन		60,000
			उपार्जित कमीशन		1,000
		2,08,350			2,08,350

उदाहरण 5

31 मार्च 2013 को समाप्त वर्ष के निम्न शेष तथा अतिरिक्त सूचना से कनोहल एंड संस के लिए व्यापार खाता एवं लाभ–हानि खाता बनाइए :

	₹		₹
पूँजी	80,000	बीमा	600
क्रय	82,000	वेतन	12,500
विक्रय	1,10,000	अप्राप्य ऋण	200
बाह्य वापसी	1,000	क्रय पर भाड़ा	1,500
भवन	45,000	कमीशन (जमा)	1,500
प्रारम्भिक स्टाक	15,000	हस्तस्थ रोकड़	5,000
देनदार	20,100	बैंक में रोकड़	25,000
लेनदार	28,000	विक्रय कर भुगतान किया	5,000

फर्नीचर	7,000	विक्रय कर एकत्रित किया	3,500
मजदूरी	1,800	निवेश पर ब्याज	500
किराया	5,100		

टिप्पणी

अतिरिक्त सूचना :

i. अन्तिम स्टॉक का मूल्य था ₹ 20,000

ii. भवन पर 5% एवं फर्नीचर पर 10% अवक्षयण लगाना है।

iii. अदत्त वेतन ₹ 1,000

iv. बीमा पूर्वदत्त ₹ 50

v. कमीशन उपार्जित ₹ 300

vi. प्रबन्धक को 5% से कमीशन देना है जो इस कमीशन के लगाने के पश्चात के शुद्ध लाभ पर होगा।

हल :

व्यापार एवं लाभ-हानि खाता

31 दिसम्बर 2013 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम | जमा

विवरण		₹	विवरण		₹
प्रारम्भिक स्टॉक		15,000	विक्रय		1,10,000
क्रय	82,000		अन्तिम स्टॉक		20,000
घटा : बाह्य वापसी	1,000	81,000			
मजदूरी		1,800			
क्रय पर भाड़ा		200			
सकल लाभ आ.ले.		32,000			
		1,30,000			1,30,000
किराया		5,100	सकल लाभ आ.ला.		32,000
बीमा	600		निवेश पर ब्याज		500
घटा : पूर्वदत्त बीमा	50	550	कमीशन	1,500	
वेतन	12,500		उपार्जित कमीशन	300	1,800
जमा : अदत्त	1,000	13,500			
अप्राप्य ऋण		200			
अवक्षयण :					
भवन	2,250				
फर्नीचर	700	2,950			
प्रबन्धक के कमीशन					

टिप्पणी

पूर्व लाभ $\frac{12,000\times5}{105}$	571		
प्रबन्धक के कमीशन के पश्चात शुद्ध लाभ	11,429		
	34,300		34,300

स्थिति विवरण

31 दिसम्बर 2013 को

देयताएं		₹	*परिसम्पत्तियां*		₹
लेनदार		28,000	हस्तस्थ रोकड़		5,000
अदत्त वेतन		1,000	बैंक में रोकड़		25,000
प्रबन्धक का कमीशन		571	अन्तिम स्टॉक		20,000
पूँजी	80,000		देनदार		20,100
जमा : शुद्ध लाभ	11,429	91,429	पूर्वदत्त कर भुगतान किया (विक्रय कर – विक्रय कर एकत्रित)		1,500
			उपार्जित कमीशन		300
			पूर्वदत्त बीमा		50
			भवन	45,000	
			घटा : अवक्षण	2,250	24,750
			फर्नीचर	7,000	
			घटा : अवक्षयण	700	6,300
		1,21,000			1,21,000

$$\text{प्रबंधक का कमीशन} = \frac{\text{कमीशन प्रतिशत}}{100 + \text{कमीशन प्रतिशत}} \text{ x कमीशन लगाने से पूर्व शुद्ध लाभ}$$

$$\frac{12,000 \text{ x } 5}{100 + 5}$$

$$\frac{12,000 \text{ x } 5}{105} = ₹\ 571$$

13. असमान्य हानियां

यह हानियां, अग्नि, भूकम्प अथवा दुर्घटना के कारण होती हैं। इनके कारण फर्म की कुछ स्थाई सम्पतियां नष्ट हो जाती है। ऐसे में सम्पत्ति खाते के जमा में तथा लाभ–हानि खाते के नाम में लिखा जाता है। यह नाम दो अथवा तीन वर्ष में बांट दिया जाता है।

स्टॉक भी आग अथवा अन्य कारणों से नष्ट हो सकता है अथवा क्षतिग्रस्त हो सकता है। स्वभाविक है कि इसके कारण स्टॉक का मूल्य कम हो जाएगा। इससे शुद्ध सकल लाभ एवं शुद्ध लाभ कम हो जाएगा। अधिक अच्छा रहेगा कि सकल लाभ का निर्धारण यह मानकर किया जाए कि इस प्रकार की हानि नहीं हुई है। इससे फर्म के व्यापारिक परिचालन का भली भांति आकंलन हो सकेगा।

स्टॉक की हानि के प्रभाव करने के लिए व्यापार खाता के जमा में अग्नि से नष्ट वस्तुओं की लागत को लिखा जाएगा। यदि नष्ट हुए माल की बीमा नहीं कराया गया है, नष्ट हुई वस्तुओं का लागत मूल्य को लाभ–हानि खाते के नाम में लिखा जाएगा। यदि वस्तुओं बीमित हैं तो बीमा कम्पनी द्वारा स्वीकृत दावे की राशि को घटा दिया जाएगा और शेष राशि को लाभ एवं हानि खाते के नाम में लिखा जाएगा। समायोजित प्रविष्टि इस प्रकार से हैं :

i. दुर्घटना से स्टॉक की हानि
खाता अथवा अग्नि से हानि खाता नाम (कुल असामान्य हानि)
व्यापार खाता से

ii. बीमा दावा खाता अथवा बीमा कम्पनी नाम (बीमा दावा राशि)
लाभ हानि खाता नाम (हानि जो पूरी न की जाएगी)
स्टॉक का दुर्घटना से हानि से (कुल सामान्य हानि)

बीमा कम्पनी खाता को स्थिति विवरण में सम्पत्ति के रूप में दिखाया जाएगा

नोट : यदि स्टॉक का बीमा नहीं कराया गया है तो निम्न प्रविष्टि की जाएगी

लाभ–हानि खाता नाम कुल असमान्य हानि
व्यापार खाता से

उदाहरण 6

31 दिसम्बर 2013 को ₹ 4,00,000 मूल्य के स्टॉक आग से नष्ट हो गया। स्टॉक का बीमा कराया गया था, बीमा कम्पनी ने केवल ₹ 3,00,000 का दावा स्वीकार किया। आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए एवं अन्तिम खातों में इसके व्यवहार को दर्शाइए।

हल

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम ₹*	*जमा ₹*
2013 दिस. 31	अग्नि से हानि नाम व्यापार खाता से (स्टाक की अग्नि से हानि)		4,00,000	 4,00,000

टिप्पणी

मार्च 31	बीमा कम्पनी नाम		3,00,000	
	लाभ–हानि खाता नाम		1,00,000	
	अग्नि से हानि			4,00,000
	(बीमा कम्पनी ने कुछ दावा स्वीकार किया)			

व्यापार खाता

वर्ष समाप्त 31 दिसम्बर 2013 के लिए

नाम जमा

विवरण	₹	*विवरण*	₹
		अग्नि के कारण हानि	4,00,000

लाभ-हानि खाता

वर्ष समाप्त 31 दिसम्बर 2013 के लिए

विवरण		₹	*विवरण*	₹
अग्नि के कारण हानि	4,00,000			
घटा : बीमा दावा	3,00,000	1,00,000		

स्थिति विवरण

31 दिसम्बर 2013 को

देयताएं	₹	*परिसम्पत्तियां*	₹
		चालू सम्पत्तियां	
		बीमा कंपनी से प्राप्त दावा	3,00,000

उदाहरण 7

श्री घनश्याम के नीचे दिए गये खाता शेष से 31 मार्च 2013 को समाप्त वर्ष के लिए व्यापार खाता एवं लाभ–हानि खाता तथा उसी तिथि को आवश्यक समायोजन कर स्थिति विवरण तैयार कीजिए।

विवरण	₹	*विवरण*	₹
व्यापार व्यय	8,000	क्रय	8,20,000
भाड़ा एवं शुल्क	20,000	स्टॉक (1.4.2012)	1,50,000
बाह्य भाड़ा	5,000	संयन्त्र एवं	
विविध देनदार	2,06,000	मशीनरी (1.4.2012)	2,00,000
फर्नीचर फिक्सचर	50,000	संयन्त्र एवं मशीनरी	

टिप्पणी

आन्तरिक वापसी	20,000	नया क्रय (1.4.2012)	50,000
प्रिंटिग एवं स्टेशनरी	4,000	आहरण	60,000
किराया, शुल्क एवं कर	46,000	पूँजी	8,00,000
विविध लेनदार	1,00,000	संदिग्ध ऋणों के	
विक्रय	12,00,000	लिए प्रावधान	8,000
वापसी बाह्य	10,000	परिसर से किराया	16,000
पोस्टेज एवं टेलीग्राम	8,000	बीमा व्यय	7,000
		वेतन एवं मजदूरी	2,13,000
		हस्तस्थ रोकड़	62,000
		बैंक में रोकड़	2,05,000

समायोजन :

i. 31 मार्च 2013 को स्टॉक ₹ 1,40,000 था।

ii. ₹ 600 अप्राप्य ऋण के अपलिखित करें।

iii. संदिग्ध ऋणों के लिए 5% की दर से प्रावधान करना है।

iv. फर्नीचर, फिक्सचर पर 5% वार्षिक तथा संयन्त्र एवं मशीनरी पर 20% वार्षिक से अवक्षण लगाना है।

v. बीमा का अग्रिम भुगतान ₹ 1,000

vi. गोदाम में आग लग गई जिससे ₹ 50,000 के मूल्य का स्टॉक नष्ट हो गया। इसका बीमा कराया गया तथा बीमा कम्पनी ने पूरा दावा स्वीकार किया।

हल :

व्यापार एवं लाभ-हानि खाता

वर्ष समाप्त 31 मार्च 2013 के लिए

नाम | जमा

विवरण		₹	विवरण		₹
प्रारम्भिक स्टॉक		1,50,000	विक्रय	12,00,000	
क्रय	8,20,000		अन्तः वापसी	20,000	11,80,000
बाह्य वापसी	10,000	8,10,000	अग्नि के कारण स्टॉक		
भाड़ा एवं शुल्क		20,000	की हानि		50,000
सकल लाभ आ.ले.		3,90,000	अन्तिम स्टॉक		1,40,000
		13,70,000			13,70,000

टिप्पणी

व्यापार व्यय		8,000	सकल लाभ आ.ले.	3,90,000
भाड़ा बाह्य		5,000	परिसर से किराया	16,000
फर्नीचर फिक्सचर पर अवक्षयण	2,500			
संयन्त्र एवं मशीनरी पर अवक्षयण	40,000			
	5,000	47,500		
प्रिंटिग एवं स्टेशनरी		4,000		
किराया, शुल्क एवं कर		46,000		
बीमा	7,000			
घटा : पूर्वदत्तर	1,000	6,000		
वेतन एवं मजदूरी		2,13,000		
पोस्टेज एवं टेलीग्राम		8,000		
संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	10,000			
अतिरिक्त अप्राप्य ऋण	6,000			
	16,000			
घटा : संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	8,000	8,000		
शुद्ध लाभ पूंजी खाते में हस्तान्तरण		60,500		
		4,06,000		4,06,000

स्थिति विवरण

31 मार्च 2013 को

देयताएँ	₹	***सम्पत्तियाँ***	₹
चालू देयताएँ :		चालू सम्पत्तियाँ :	
विविध लेनदार	1,00,000	हस्तस्थ रोकड़	62,000

पूँजी :			बैंक में रोकड़		2,05,000
प्रारम्भिक शेष	8,00,000		विविध देनदार	2,06,000	
जमा : शुद्ध लाभ	60,500		**घटा :** अतिरिक्त		
	8,60,500		अप्राप्य ऋण	6,000	
घटा : आहरण	60,000	8,06,500		2,00,000	
			घटा : अप्राप्य ऋणों के लिए		
			प्रावधान	10,000	1,90,000
			अन्तिम स्टॉक		1,40,000
			बीमा दावा		50,000
			पूर्वदत्त बीमा		1,000
			स्थाई सम्पत्तियां		
			फर्नीचर एवं फिक्चर	50,000	
			घटा : अवक्षण	2,500	47,500
			संयन्त्र एवं		
			मशीनरी	2,50,000	
			घटा : अवक्षयण	45,000	2,05,000
		9,00,500			9,00,500

टिप्पणी

14. स्वामी द्वारा वस्तुओं का आहरण

जब व्यवसाय स्वामी व्यवसाय से कुछ वस्तुएं अथवा रोकड़ अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिए निकालता है, इसे आहरण करते हैं।

अब यदि आप पाते हैं कि इसका पुस्तकों में अभिलेखन नहीं किया गया है तो आपको इसे अन्तिम खातों में लाने के लिए समायोजन करना होगा। व्यवसाय स्वामी द्वारा वस्तुओं के इस आहरण का अन्तिम खातों में व्यवहार इस प्रकार से होगा–

i. व्यापार खाते के नाम पक्ष में क्रय में से इसे घटा दें।

ii. स्थिति विवरण के देयता पक्ष में या तो पूँजी में से घटा दिया जाएगा अथवा आहरण में जमा कर दिया जाएगा।

आहरण का लेखा व्यवहार

I. नकद आहरण

i. आहरण खाता — नाम
  रोकड़ खाता/बैंक खाता से
  (निजी उपयोग के लिए नकद आहरण)

टिप्पणी

ii. पूँजी खाता   नाम
    आहरण खाता से
(आहरण का हस्तान्तरण)

II. स्वामी द्वारा माल का आहरण

i. आहरण खाता   नाम
    क्रय खाता से
(निजी उपयोग हेतु माल का आहरण)

ii. पूँजी खाता   नाम
    आहरण खाता से
(आहरण का हस्तान्तरण)

III. व्यवसाय की रोकड़ में से एकल स्वामी द्वारा आयकर का भुगतान

i. आयकर खाता   नाम
    रोकड़/बैंक खाता से
(आयकर का भुगतान किया)

ii. आहरण खाता   नाम
    आयकर खाता से
(आहरण का हस्तान्तरण)

15. वस्तुओं का मुफ्त वितरण

विक्रय संवर्धन के लिए कुछ वस्तुओं का मुफ्त नमूने के रूप में वितरण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए ₹ 10,000 मूल्य का माल मुफ्त नमूने के रूप में वितरित किया गया। यह व्यवसाय के लिए विज्ञापन होगा, दूसरी ओर स्टॉक इतनी राशि से कम हो जाएगा। इसकी लेखा पुस्तकों में प्रविष्टि निम्न होगी :

विज्ञापन खाता   नाम
    क्रय खाता से
(वस्तुओं का मुफ्त नमूने के रूप में वितरण)

इस प्रविष्टि का दोहरा प्रभाव इस प्रकार से होगा :

i. इसको व्यापार खाते के जमा में लिखेंगे या फिर क्रय खाते में से घटा लेंगे।

ii. इसे लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष के विज्ञापन व्यय के रूप में दिखाएंगे।

उदाहरण 8

निम्न तलपट में 31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए व्यापार खाता एवं लाभ–हानि खाता बनाइए तथा इसी तिथि को स्थिति विवरण बनाइए।

नाम शेष	₹	जमा शेष	₹
वेतन	10,600	विक्रय	66,420
प्राप्य बिल	6,000	पूँजी	50,000
निवेश	40,000	संदिग्ध ऋणों के	
फर्नीचर	12,000	लिए प्रावधान	2,500
आरम्भिक स्टॉक	4,500	10% ऋण (1.10.2013)	10,000
क्रय	30,000	छूट प्राप्त हुई	400
विविध देनदार	20,000	विविध लेनदार	9,300
ऋण पर ब्याज	400	देय विपत्र	5,000
बीमा प्रीमियम	900	अदत्त वेतन	500
मजदूरी	4,600	अप्राप्य ऋण वसूल हुए	200
किराया	1,520	निवेश पर ब्याज	2,000
अप्राप्य ऋण	1,200	व्यापारिक कमीशन	7,000
बाह्य भाड़ा	600		
बैंक में रोकड़	10,000		
फर्नीचर पर अवक्षयण	2,500		
उपार्जित कमीशन	1,000		
विज्ञापन	7,500		
	1,53,320		1,53,320

समायोजन :

i. अन्तिम स्टाक ₹ 6,000

ii. 1,000 मूल्य की वस्तुओं का मुफ्त नमूने के रूप में वितरण किया गया और ₹ 500 की वस्तुएं व्यवसाय स्वामी निजी उपयोग के लिए ले गया।

iii. ₹ 2,000 के उधार विक्रय का विक्रय बही में अभिलेखन नहीं किया गया।

iv. अन्तिम स्टाक में ₹ 1,000 मूल्य की वस्तुएं सम्मलित हैं, जिन्हें विक्रय किया और विक्रय के रूप में अभिलेखन भी किया लेकिन ग्राहक को सुपुर्दगी नहीं की गई।

v. संदिग्ध ऋणों के लिए 5% का प्रावधान करें।

vi. विज्ञापन व्यय का केवल 1/3 भाग ही अपलिखित करना है।

हल :

व्यापार एवं लाभ-हानि खाता
31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम जमा

विवरण		₹	विवरण		₹
प्रारम्भिक स्टॉक		4,500	विक्रय	66,420	
क्रय	30,000		जमा : उधार विक्रय	2,000	68,450
घटा : वस्तुओं का मुफ्त विवरण	1,000		अन्तिम स्टॉक	6,000	
	29,000		घटा : विक्रय की गई वस्तुएं जिनकी सुपुर्दगी नहीं की गई	1,000	5,000
घटा : वस्तुओं का आहरण	500	28,500			
मजदूरी		4,600			
सकल लाभ आ.ले.		35,820			
		73,420			73,420
वेतन		10,600	सकल लाभ आ.ला.		35,820
ऋण पर ब्याज	400		अप्राप्य ऋणों के पुराना प्रावधान	2,500	
जमा: अदत्त ब्याज	100	500	घटा: अप्राप्य ऋण	1,200	
बीमा प्रीमियम		900		1,300	
किराया		1,520	घटा: नया प्रावधान	1,100	200
भाड़ा बाह्य		600	कर छूट प्राप्त हुई		400
फर्नीचर पर अवक्षयण		2,500	अप्राप्य ऋण वसूल हुए		200
विज्ञापन		2,500	निवेश पर ब्याज		2,000
मुफ्त नमूने		1,000	व्यापारिक कमीशन		7,000
शुद्ध लाभ– पूँजी खाते में हस्तान्तरित		25,500			
		45,620			45,620

स्थिति विवरण
31 मार्च 2013 को

देयताएं		₹	परिसम्पत्तियां	₹
पूँजी	50,000		बिल प्राप्य	6,000
जमा : शुद्ध लाभ	25,500		निवेश	40,000
	75,500		फर्नीचर	12,000

टिप्पणी

घटा : आहरण 500	75,000	देनदार 20,000	
10% ऋण	10,000	***जमा :*** उधार विक्रय	
ऋण पर अदत्त ब्याज	100	जिनका अभिलेखन	
लेनदार	9,300	नहीं किया गया 2,000	
देय विपत्र	5,000	22,000	
वेतन अदत्त	500	***घटा :*** नया प्रावधान 1,100	20,900
		कमीशन उपार्जित	1,000
		अन्तिम स्टॉक	5,000
		बैंक	10,000
		विज्ञापन व्यय अवलिखित	5,000
	99,900		99,900

समायोजन प्रविष्टियों का संक्षिप्त स्वरूप

समायोजन	*समायोजन प्रविष्टि*	*व्यापार तथा लाभ व हानि खाते में व्यवहार*	*स्थिति विवरण में व्यवहार*
1. अन्तिम स्टॉक	अन्तिम स्टॉक खाता नाम व्यापार खाता से	व्यापार खाते के जमा पक्ष में	परिसम्पत्ति के पक्ष दर्शायेंगे
2. अदत्त व्यय	व्यय खाता नाम अदत्त व्यय खाता से	नाम पक्ष में संबन्धित व्यय में जोड़ेगे	दायित्व पक्ष में दर्शाएंगे
3. पूर्वदत्त व्यय	पूर्वदत्त व्यय खाता नाम व्यय खाता से	नाम पक्ष में संबंधित व्यय में से घटाएंगे	परिसंपत्ति पक्ष में दर्शाएंगे
4. उपार्जित आय	उपार्जित आय खाता नाम आय खाता से	जमा पक्ष में संबंधित आय में जोड़ेगे	परिसंपत्ति पक्ष में दर्शाएंगे
5. अग्रिम प्राप्त आय	आय खाता नाम अग्रिम प्राप्त खाता से	जमा पक्ष में संबंधित आय में से घटाएंगे	दायित्व पक्ष में दर्शाएंगे
6. पूँजी पर ब्याज	पूँजी पर ब्याज खाता नाम पूँजी खाता से	नाम पक्ष में दिखाएंगे	पूँजी में जोड़कर दिखाएंगे
7. आहरण पर ब्याज	पूँजी खाता नाम आहरण पर ब्याज खाता से	जमा पक्ष में दिखाएंगे	देनदारों में से घटाकर दर्शायेगे
8. अवक्षयण	अवक्षयण खाता नाम परिसम्पत्ति खाता से	नाम पक्ष में दर्शाएंगे	परिसंपत्ति के मूल्य में से घटाकर दर्शायेगे
9. अतिरिक्त अप्राप्य ऋण	अप्राप्य ऋण खाता नाम लाभ बही खाता से	नाम पक्ष में दर्शाएंगे	देनदारों में से घटाएंगे

10. संदिग्ध ऋणों के लिये प्रावधान	लाभ-हानि खाता नाम अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिये प्रावधान खाता से	नाम पक्ष में दर्शाएंगे	देनदारों में से घटा कर दर्शायेंगे
11. देनदारों को छूट के लिये प्रावधान	लाभ-हानि खाता नाम देनदारों को छूट हेतु प्रावधान खाता से	लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष में दर्शाएंगे	देनदारों में से घटाकर
12. प्रबन्धक का कमीशन	लाभ-हानि खाता नाम प्रबन्धक कमीशन से	लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष में दर्शाएंग	देयता पक्ष में
13. असामान्य हानि	लाभ-हानि खाता नाम असामान्य हानि से	लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष में दर्शाएंग	संबंधित परिसंपत्ति में से घटाकर
14. स्वामी द्वारा माल का आहरण	आहरण खाता नाम क्रय खाते से	क्रय में से घटाकर	पूँजी में से घटाकर
15. वस्तुओं का मुफ्त नमूना वितरण	विज्ञापन खाता नाम क्रय खाते से	क्रय में से घटाकर	स्कंध में से घटाकर

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 18.4

बताइए कि निम्नलिखित कथन सही अथवा गलत हैं :

i. स्वामी ने व्यवसाय के कुछ रोकड़ तथा माल आहरण के रूप में निकाले।

ii. यदि स्वामी माल का आहरण करता है तो इसे क्रय में से घटाया जाएगा।

iii. आहरण एक सम्पत्ति है।

iv. माल का सैंपल के रूप में मुफ्त वितरण व्यवसाय के लिए विज्ञापन है।

v. माल के सैंपल के रूप में मुफ्त वितरण को व्यापारिक खाते के नाम की तरफ लिखा जाता है।

आपने क्या सीखा

- समायोजन का लेखा करना आवश्यक है क्योंकि तभी आय विवरण एवं स्थिति विवरण सही लाभ/हानि तथा वित्तीय स्थिति दिखा पायेंगे।
- आय एवं व्यय की कुछ मदें ऐसी हो सकती है जो उस लेखा वर्ष से सम्बन्धित नहीं है जिस वर्ष के वित्तीय विवरण तैयार किये जा रहे हैं। इन्हें सम्मिलित नहीं करना है। इन्हें पूर्वदत्त मदें कहते हैं।
- आय एवं व्यय की कुछ मदें हो सकती है जो लेखा करने से रह गई हैं तथा जिनका लेखा किया जाना है इन्हें अदत्त व्यय अथवा उपार्जित आय कहते हैं।
- अन्य महत्त्वपूर्ण समायोजन जिन्हें किया जाना है वह है अन्तिम स्टॉक स्थाई सम्पत्तियों पर अवक्षयण, पूँजी पर ब्याज एवं आहरण पर ब्याज।

- अतिरिक्त अप्राप्य ऋण तथा देनदारों पर अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान भी हो सकता है।
- अतिरिक्त अप्राप्य ऋण वह ऋण है जिनकी वसूली सम्भव नहीं है तथा यह उन अप्राप्य ऋणों के अतिरिक्त है जो तलपट में दिखाए जा चुके हैं।
- अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान–देनदारों से भविष्य में प्राप्य उन भुगतानों के लिये किया जाता है जिनकी वसूली की कोई सम्भावना नहीं दिखाई देती। इनका प्रावधान पुराने अनुभव के आधार पर किया जाता है।
- देनदारों पर छूट के प्रावधान की प्रक्रिया, संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान के समान है। छूट पर संभावित राशि को लाभ–हानि खाते के नाम में लिखा जाता है तथा इसे स्थिति विवरण में देनदारों में घटा दिया जाता है।
- यदि मैनेजर को कमीशन पूर्व लाभ पर कमीशन दिया जाना है तो सूत्र होगा :

$$\text{शुद्ध लाभ} \times \frac{\text{कमीशन का प्रतिशत}}{100}$$

- यदि मैनेजर को कमीशन लाभ में कमीशन को घटा कर आई राशि पर दिया जाना है तो सूत्र होगा :

$$\text{शुद्ध लाभ} \times \frac{\text{कमीशन का प्रतिशत}}{(100 + \text{कमीशन का प्रतिशत})}$$

- असामान्य हानि का कारण है आग लगना, भूकम्प अथवा दुर्घटना। यह फर्म की स्थाई सम्पत्तियों को नष्ट कर सकती हैं। ऐसा होने पर सम्पत्ति खाते को व्यापार खाते के जमा में तथा लाभ–हानि खाते के नाम में लिखेंगे।
- व्यवसाय स्वामी द्वारा वस्तुओं का आहरण को व्यापार खाते के नाम में क्रय खाते से घटाया जाता है तथा स्थिति विवरण में पूँजी खाते में से घटाया जाता है।
- वस्तुओं के मुफ्त नमूने के रूप में बांटने पर उनको क्रय में से घटाया जाता है और लाभ–हानि खाते के नाम में विज्ञापन के रूप में दर्शाया जाता है।

पाठान्त प्रश्न

1. निम्न प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर दीजिए:

   (क) समायोजन क्यों किये जाते हैं?

   (ख) अदत्त व्यय देयताएं क्यों मानी जाती है?

   (ग) उपार्जित आय एवं अनुपार्जित आय में क्या अन्तर है?

2. निम्न समायोजनों की रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।
   i. अदत्त मजदूरी
   ii. फर्नीचर पर अवक्षयण
   iii. निवेश पर उपार्जित ब्याज जिसका भुगतान प्राप्त नहीं हुआ है
   iv. बीमा प्रीमियम का अग्रिम भुगतान
3. संदिग्ध ऋण के लिए संचय की व्यवस्था क्यों की जाती है?
4. मै. वी.बी. फर्टीलाइजर के तलपट से 31 दिसम्बर 2013 को समाप्त वर्ष के लिए ब्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता तैयार कीजिए तथा इसी तिथि को स्थिति विवरण बनाइए। समायोजनों की रोजनामचा प्रविष्टि भी कीजिए।

विवरण	नाम शेष ₹	विवरण	जमा शेष ₹
स्टॉक (1.1.2013)	13,800	पूँजी	65,000
क्रय	52,000	देय विपत्र	18,000
मजदूरी	4,000	विक्रय	74,400
आंतरिक वापसी	2,400	वापसी बाह्य	1,500
भूमि एवं भवन	40,000	बट्टा	450
संयन्त्र एवं मशीन	24,500	लेनदार	6,500
प्राप्य विपत्र	12,000	ब्याज	600
देनदार	5,500	अप्राप्य ऋण के लिए प्रावधान	250
हस्तस्थ रोकड़ एवं बैंक में रोकड़	8,750	ऋण	8,000
किराया (कार्यालय)	2,200	कमीशन	700
अप्राप्य ऋण	400		
बीमा	1,500		
भाड़ा आगम	1,400		
ईंधन एवं बिजली	2,450		
फर्नीचर	4,500		
	1,75,400		1,75,400

समायोजन :

i. 31.12.2013 को स्टॉक ₹ 25,000 था।
ii. फर्नीचर पर 10% से एवं संयन्त्र तथा मशीन पर 20% से अवक्षयण लगाएं।
iii. प्रावधान करें; अदत्त मजदूरी के लिए ₹ 650 एवं अदत्त किराया ₹ 200 पूर्वदत्त बीमा ₹ 300 है।

iv. अतिरिक्त अप्राप्य ऋण ₹ 100, देनदारों पर अप्राप्य ऋण एवं संदिग्ध ऋण के लिये 5% का प्रावधान करें।

v. पूँजी पर 6% से ब्याज देना है।

5. 1 अप्रैल 2013 को अप्राप्य ऋण संचय खाता का शेष ₹ 3,200 खाता बही के अनुसार अप्राप्य ऋण का शेष ₹ 2,100 था। देनदार ₹ 7,000 थे। खाता बही को बंद करने के बाद यह पाया गया कि डूबत ऋण ₹ 800 थे। देनदारों पर 6% की दर से संदिग्ध ऋण का प्रावधान किये जाने का निर्णय लिया गया।

रोजनामचे में प्रविष्टि कीजिए तथा इन मदों को लाभ हानि खाता तथा स्थिति विवरण में दिखाइए।

6. प्रणया के तलपट से 31 दिसम्बर, 2014 को व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता तैयार कीजिए तथा इसी तिथि को समायोजन के पश्चात् स्थिति विवरण बनाइए। समायोजनों के लिए रोजनामचा में प्रविष्टि भी कीजिए।

तलपट

31.12.2014 को

खाते का नाम	*नाम शेष (₹)*	*जमा शेष (₹)*
प्रणया का पूँजी खाता		1,00,000
आहरण	24,000	
संयन्त्र एवं मशीन	45,000	
स्टाक (1 जनवरी, 2014)	15,000	
क्रय	85,000	
वापसी आंतरिक	5,000	
विविध देनदार	24,600	
भाड़ा एवं शुल्क	2,000	
भाड़ा बाह्य	1,600	
किराया, शुल्क एवं कर	3,800	
विविध लेनदार	—	22,000
डाक व्यय एवं कुरीयर व्यय	1,800	—
विक्रय	—	1,35,000
अप्राप्य ऋण के लिये प्रावधान	—	600
बट्टा	—	800
बीमा प्रीमियम	900	
मजदूरी	23,000	

हस्तस्थ रोकड़	6,200	
बैंक में रोकड़	20,500	
	2,58,400	2,58,400

समायोजन :

i. 31 दिसम्बर 2014 को स्टॉक ₹ 24,000 था।

ii. ₹ 600 डूबत ऋण के लिए अपलिखित कीजिए।

iii. विविध देनदारों पर 5% से संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान करना है।

iv. संयन्त्र एवं मशीन पर 20% से अवक्षयण लगाना है। 1 जुलाई 2014 को ₹1,500 की मशीन का क्रय किया गया।

v. अदत्त मजदूरी ₹ 1500 तथा पूर्वदत्त बीमा ₹ 250 है

7. चिन्मय अग्रवाल की लेखा पुस्तकों से 31 मार्च, 2014 को निम्न शेष लिये गये।

विवरण	₹	विवरण	₹
चिन्मय की पूँजी	60,000	स्टॉक (1.4.2013)	44,200
फर्नीचर एवं फिक्सचर	5,000	देनदार	36,000
बैंक अधिविकर्ष	8,400	किराया प्राप्त	2,000
लेनदार	27,600	क्रय	2,20,000
व्यापार परिसर	50,000	विक्रय	3,00,000
बट्टा (नाम)	3,200	विक्रय वापसी	4,000
कर एवं बीमा	4,000	देय विपत्र	10,000
वेतन	20,000		
कमीशन (जमा)	2,000		
भाड़ा आन्तरिक	3,600		
डूबत ऋण	1,600		
मोटर वाहन	14,400		
निवेश	4,000		

निम्न समायोजन करने हैं :

(i) 31 मार्च, 2014 को स्टॉक ₹ 35,000 था।

(ii) अवक्षयण लगाना है:

व्यवसाय परिसर ₹ 800

फर्नीचर एवं फिक्सचर ₹ 500

मोटर वाहन 10% वार्षिक।

(iii) बैंक अधिविकर्ष पर ब्याज ₹ 150 था।

(iv) पूँजी पर ब्याज 6% वार्षिक था।

(v) लेनदारों पर संदिग्ध ऋणों के लिये 5% का प्रावधान करें।

(vi) ₹ 500 बीमा के अगले वर्ष ले जाने हैं।

31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष के लिए व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता बनाइए तथा इसी तिथि को स्थिति विवरण तैयार कीजिए।

टिप्पणी

8. निम्न समायोजनों के लिए रोजनामचा में प्रविष्टि कीजिए:

   i. वर्ष में ₹ 12,000 के कुल प्राप्त कमीशन का 1/3 भाग अगले वर्ष के लिए है।

   ii. ₹ 8,000 का बीमा प्रीमियम का भुगतान वर्ष समाप्ति 30 जून के लिए किया गया है। खाते प्रति वर्ष 31 मार्च को बन्द किये जाते हैं।

   iii. वर्ष में आहरण पर ब्याज ₹ 450 लगाया गया।

9. उदाहरण देकर निम्न समायोजनों को समझाइए :

   i. देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान

   ii. मैनेजर का कमीशन

10. असामान्य हानि का क्या अर्थ है? उदाहरण देकर इसके लेखांकन को समझाइए।

11. व्यवसाय स्वामी द्वारा वस्तुओं के आहरण तथा वस्तुओं के मुफ्त नमूना वितरण के लेखांकन को समझाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

18.1 (i) लाभ, हानि (ii) लाभ अथवा हानि, वित्तीय स्थिति
(iii) सम्मिलित नहीं करना है (iv) लेखा करना है

18.2 (i) अदत्त व्यय (ii) पूर्वदत्त व्यय
(iii) उपार्जित आय (iv) अग्रिम प्राप्त आय

18.3 I. (i) डूबत एवं संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान
(ii) ह्रास/अवक्षयण (iii) डूबत ऋण (iv) अंतिम स्टॉक

II. (i) पूँजी खाता से (ii) अदत्त मजदूरी खाता से
(iii) बीमा प्रीमियम से (iv) कमीशन की अग्रिम प्राप्ति से

III. (i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) असत्य (v) सत्य

IV. (i) नाम (ii) देयता

टिप्पणी

18.4 (i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य (v) असत्य

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

4. सकल लाभ ₹ 24,200, शुद्ध लाभ ₹ 12,580, स्थिति विवरण का योग ₹ 1,14,830

6. सकल लाभ ₹ 27,500, शुद्ध लाभ ₹ 10,400, स्थिति विवरण का योग ₹ 1,09,900

7. सकल लाभ ₹ 63,200, शुद्ध लाभ ₹ 30,610, स्थिति विवरण का कुल योग ₹ 1,40,360

क्रियाकलाप

कम से कम चार व्यावसायिक इकाइयों के वित्तीय विवरणों का विश्लेषण करें तथा स्थाई सम्पत्तियों पर वे अवक्षयण किस दर से लगा रहे हैं तथा संदिग्ध ऋणों के लिए वह प्रावधान किस दर से कर रहे हैं इसको लिखें तथा उनमें पाये जाने वाले अन्तर के कारणों का पता लगाएं।

क्र.सं.	*व्यावसायिक फर्म का नाम*	*अवक्षयण की दर*	*अन्तर के कारण*

19

अलाभकारी संगठन - एक परिचय

आप अपने क्षेत्र के जनरल स्टोर से रोजाना प्रयोग में आने वाली वस्तुओं का क्रय करते हैं। आप कपड़े की दुकान से कपड़ा खरीदते हैं या सिनेमा हाल पर सिनेमा देखने जाते हैं। यह सभी व्यावसायिक संगठन है जो वस्तुओं एवं सेवाओं के क्रय–विक्रय में लगे हैं। इनका उद्देश्य लाभ कमाना है। आप किसी विद्यालय में तो पढ़े होंगे। आप अस्पताल भी जाते हैं। आप अपने क्षेत्र के खेलकूद क्लब के सदस्य हो सकते हैं। यह वह संगठन हैं जिनकी स्थापना लाभ अर्जित करने के लिए नहीं बल्कि अपने सदस्यों एवं जन साधारण को सेवाएँ प्रदान करने के लिये की गई है। आप लाभ कमाने वाले संगठनों के वित्तीय विवरण तैयार करना सीख चुके हैं। अपने कार्यों को करते हुए यह संगठन भी वित्तीय लेनदेन करते हैं। यह भी एक अवधि विशेष की अपनी क्रियाओं के परिणाम जानना चाहते हैं इसके लिए यह भी वित्तीय विवरण बनाते हैं। इस पाठ में आप इन संगठनों (अर्थात अलाभकारी संगठन जैसे की खेल कूद क्लब, साहित्यिक समिति आदि) की लेखा प्रणाली का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- अलाभकारी संगठनों के अर्थ एवं विशेषताओं को बता सकेंगे;
- प्राप्ति एवं भुगतान खाते का अर्थ एवं इसको बनाने की आवश्यकता को बता सकेंगे;
- प्राप्ति एवं भुगतान खाते की मदों की पहचान कर सकेंगे एवं प्रारूप के अनुसार प्राप्ति एवं भुगतान खाता तैयार कर सकेंगे;
- प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा रोकड़ खाते में अन्तर कर सकेंगे।

19.1 अलाभकारी संगठन-अर्थ एवं विशेषताएं

आपने ऐसे संगठन देखे होंगे जो व्यवसायिक कार्य नहीं करते हैं। इनका उद्देश्य लाभ कमाना न होकर सेवा करना है। इन संगठनों के उदाहरण हैं विद्यालय, अस्पताल, चैरीटेबल संस्थान; कल्याण समितियां, क्लब, सार्वजनिक वाचनालय, कल्याण संगठन, खेलकूद क्लब आदि। इन्हें अलाभकारी संगठन (Not for profit organisations) कहते हैं। यह संगठन अपने सदस्यों को तथा जन साधारण को सेवाएं प्रदान करते हैं। इनकी आय का मुख्य स्रोत फीस, चंदा, दान, सहायता अनुदान राशि आदि हैं। इन संगठनों की क्रियायें में भी वित्त सम्मिलित है इसीलिए भी ये खाते बनाते हैं। यह संगठन भी एक विशेष अवधि जैसे की एक वर्ष के लिए अपनी गतिविधियों के वित्त के रूप में परिणामों का निर्धारण करने के लिए कुछ विवरण तैयार करते हैं।

अलाभकारी संगठनों की विशेषताएं

अलाभकारी संगठनों की कुछ मुख्य विशेषताएं अथवा लक्षण नीचे दिए गए हैं:–

1. इस प्रकार के संगठनों का उद्देश्य लाभ कमाना न होकर अपने सदस्य एवं समाज को सेवा प्रदान करना है।
2. इन संगठनों की आय का प्रमुख स्रोत वस्तुओं एवं सेवाओं के क्रय–विक्रय से लाभ कमाना नहीं है बल्कि प्रवेश शुल्क, चंदा, दान, सहायता अनुदान आदि है।
3. इन संगठनों का प्रबन्धन कुछ व्यक्तियों के समूह द्वारा किया जाता है जिनको सदस्य अपने लोगों में से ही चुनते हैं। इस समूह को प्रबन्ध समिति कहते है।
4. यह अपने खाते बनाते समय भी उन्हीं लेखा सिद्धान्तों एवं पद्धतियों को अपनाते हैं जिन्हें लाभ कमाने वाले संगठन जो लाभ कमाने के उद्देश्य से चलाए जाते हैं, अपनाते हैं।

अलाभकारी संगठन द्वारा साधारणतया जो वित्तीय विवरण तैयार किये जाते हैं वह है:

1. प्राप्ति एवं भुगतान खाता
2. आय एवं व्यय खाता
3. स्थिति विवरण

प्राप्ति एवं भुगतान खाता रोकड़ एवं बैंक के लेनदेनों का संक्षिप्त स्वरूप होता है जिसकी सहायता से आय एवं व्यय खाता एवं स्थिति विवरण तैयार किये जाते हैं।

आय एवं व्यय खाता लाभ-हानि खाता जैसा है। अलाभकरी संगठन साधारणतया आय एवं व्यय खाता प्राप्ति एवं भुगतान खाते से बनाया जाता हैं।

पाठगत प्रश्न 19.1

नीचे अलाभकारी संगठनों से संबन्धित कथन दिये हैं। जो इन संगठनों के प्रमुख लक्षण है उनके सामने √ का चिन्ह लगाएं तथा अन्य के सामने × का चिन्ह लगाएं।

i. इन संगठनों का प्रमुख उद्देश्य लाभ कमाना है।

ii. यह संगठन समाज की सेवा करते हैं।

iii. यह संगठन जिन लेखा सिद्धान्तों एवं पद्धतियों को अपनाते हैं वह वही है जिन्हें अन्य संगठन, जो लाभ कमाते हैं, अपनाते हैं।

टिप्पणी

19.2 प्राप्ति एवं भुगतान खाता-अर्थ एवं आवश्यकता

अन्य संगठनों की तरह अलाभकारी संगठन भी प्रतिदिन के रोकड़ नकद लेनदेनों का हिसाब रखने के लिए रोकड़ बही बनाते हैं। लेकिन वर्ष के अंत मे यह रोकड़ बही के आधार पर रोकड़ लेन देनो का संक्षिप्त विवरण तैयार करते हैं। इस संक्षिप्त विवरण को एक खाते के रूप में बनाया जाता है जिसे प्राप्ति एवं भुगतान खाता कहते हैं। सभी नकद प्राप्ति एवं भुगतानों को इसी खाते में लिखा जाता है चाहे वह वर्तमान वर्ष से संबंधित हैं अथवा अगले वर्ष से या फिर बीते वर्ष से सभी प्राप्ति एवं भुगतानों को इस खाते में लिखा जाता है चाहे वह आगम प्रकृति के हैं अथवा पूँजीगत प्रकृति के हैं। क्योंकि यह एक खाता है इसलिए इसके भी दो पक्ष होते हैं नाम पक्ष एवं जमा पक्ष। सभी प्राप्तियों को इसके नाम की ओर लिखा जाता है जबकि भुगतान इसके जमा की ओर। इस खाते के प्रारंभ में रोकड़ अथवा/एवं बैंक शेष लिखा जाता है। इस खाते का अन्तिम शेष हस्तस्थ रोकड़ एवं अथवा बैंक में रोकड़/अधिविकर्ष होता है। इस खाते में मदों को उचित शीर्षको के नीचे लिखा जाता है।

प्राप्ति एवं भुगतान खाते की प्रमुख विशेषताएं नीचे दी गई हैं :–

1. इसको वर्ष के अन्त में बनाया जाता है तथा मदें रोकड़ बही से ली जाती हैं।
2. यह विभिन्न शीर्षकों के नीचे लिखे गये रोकड़ लेनदेनों का संक्षिप्त विवरण होता है।
3. इसमें वर्ष के सभी नकद लेनदेनों का हिसाब रखा जाता है चाहे उनका सम्बन्ध किसी भी अवधि अर्थात पूर्व, वर्त्तमान अथवा आगे के वर्ष से हो।
4. इसमें दोनों आगम एवं पूँजीगत नकद लेनदेनों को लिखा जाता है।
5. अन्य किसी भी खाते की तरह इसके प्रारम्भ में प्रारम्भिक शेष लिखा जाता है तथा इसको अन्तिम शेष के साथ बन्द किया जाता है।

प्राप्ति एवं भुगतान खाता बनाने की आवश्यकता

अलाभकारी संगठनों के अधिकांश लेनदेन नकद होते हैं प्राप्ति एवं भुगतान खाता अधिकांश मदों को एक ही स्थान पर दिखाता है।

क्योंकि यह संक्षिप्त विवरण के रूप में होता है इसलिए इसमें बड़ी संख्या में मदों के सम्बन्ध में एक ही दृष्टि में पता लग जाता है। इस प्रकार से यह लेखा वर्ष की मदों के अनुसार सूचना देता है।

यह अन्तिम नकद शेष अथवा/एवं बैंक शेष को दिखाता है जिसे स्थिति विवरण में ले जाया जाता है।

प्राप्ति एवं भुगतान खाता तलपट का कार्य करता है तथा इसके आधार पर ही संगठन के लिए वित्तीय विवरण अर्थात आय व्यय खाता एवं स्थिति विवरण बनाते हैं।

बहुत छोटे अलाभकारी संगठन केवल प्राप्ति एवं भुगतान खाता ही बनाते है।

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है प्राप्ति एवं भुगतान खाता ऐसा खाता है जिसके दो पक्ष हैं : नाम पक्ष एवं जमा पक्ष। सभी प्राप्तियां नाम पक्ष की ओर हैं तथा भुगतान जमा की ओर लिखे जाते हैं। इसका एक प्रारूप होता है जो नीचे दिया गया है।

प्राप्ति एवं भुगतान खाते का प्रारूप

प्राप्ति एवं भुगतान खाता

.... को समाप्त वर्ष के लिए

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
शेष		सम्पत्तियों का क्रय	
नकद		छपाई एवं स्टेशनरी	
बैंक		मरम्मत एवं नवीनीकरण	
दान		समाचार पत्र/पत्रिकाएं	
विरासत में प्राप्त राशि		किराया एवं कर	
सदस्यता शुल्क		डाक व्यय	
प्रवेश शुल्क		निवेश	
चंदा		भाड़ा	
लॉकर किराया		मानेदय	
स्थाई सम्पत्ति का विक्रय		चौरिटी	
निवेश पर ब्याज		बीमा प्रीमियम	
विभिन्न प्राप्तियां		मैदान का रख रखाव	
पुराने पाक्षिकों की बिक्री		टेलीफोन व्यय	
		शेष :	
		रोकड़	
		बैंक	

पाठगत प्रश्न 19.2

I. नीचे अलाभकारी संगठनों की कुछ मदें दी है। इनको प्राप्ति एवं भुगतान में वर्गीकृत कीजिए :

(i) दान (ii) चैरिटी (iii) चन्दा

(iv) पुस्तकों का क्रय (v) पैतृक संपत्ति से प्राप्ति (vi) मानदेय

II. निम्न कथनों की प्राप्ति एवं भुगतान खाते की विशेषताओं एवं आवश्यकताओं के रूप में पहचान कीजिए :

(i) स्थिति विवरण बनाने के लिए अन्तिम रोकड़ अथवा/एवं बैंक शेष का उपयोग किया जाता है।

(ii) यह रोकड़ बही से ली गई मदों से बनाया जाता है।

(iii) यह आगम एवं पूँजीगत दोनों प्रकृति के नकद लेनदेनों का लेखा जोखा रखता है।

(iv) इसका उपयोग अलाभकारी संगठनों के वित्तीय विवरणों को बनाने के लिए किया जाता है।

19.3 प्राप्ति एवं भुगतान खाते की विशिष्ट मदें

1. **चंदा (Subscription) :** यह सदस्यों के द्वारा संगठन को नियमित रूप से किये जाने वाला भुगतान है। यह साधारणतया वार्षिक दिया जाता है। यह संस्था की आय के प्रमुख स्रोतों में से एक है। यह प्राप्ति एवं भुगतान खाते के नाम की ओर अर्थात प्राप्ति की ओर लिखी जाती है। वर्त्तमान वर्ष के अतिरिक्त यह पिछले वर्ष अथवा आने वाले वर्ष के लिए भी हो सकता है।

2. **प्रवेश शुल्क अथवा सदस्य बनाने का शुल्क :** जब भी किसी व्यक्ति को संगठन में सदस्य के रूप में प्रवेश दिया जाता है तो इसके लिए उससे कुछ राशि ली जाती है। इसे प्रवेश शुल्क अथवा सदस्य बनाने का शुल्क कहते हैं। यह आय की मद होती है तथा इसे प्राप्ति एवं भुगतान खाते के नाम की ओर दर्शाया जाता है।

3. **आजीवन सदस्यता शुल्क (Life Membership Fees) :** यदि किसी व्यक्ति को उसके पूरे जीवन के लिए सदस्य बनाया जाता है तो उससे विशेष फीस ली जाएगी। इसे आजीवन सदस्यता शुल्क कहते हैं। यह सदस्य से उसके जीवन काल में केवल एक बार ली जाती है। यह संगठन की पूँजीगत प्राप्ति है।

4. **बंदोबस्त निधि (Endowment Fund) :** यह वह कोष है जो संगठन को स्थाई रूप से सहायता प्रदान करता है। इसमें जमा की गई राशि पूँजीगत प्राप्ति है।

5. **दान (Donation) :** दान राशि किसी भी व्यक्ति, फर्म, कम्पनी अथवा अन्य किसी भी संगठन से उपहार स्वरूप प्राप्त होती है। यह भी प्राप्ति की एक महत्त्वपूर्ण मद है। यह दो प्रकार की हो सकती है :

   (क) विशिष्ट दान : यह वह दान है जो किसी कार्य विशेष के लिए प्राप्त किया जाता है। इसके उदाहरण हैं : लाइब्रेरी के लिए दान, भवन के लिए दान आदि।

   (ख) साधारण दान : जो दान किसी उद्देश्य विशेष के लिए नहीं लिया जाता वह साधारण दान होता है। यह दो प्रकार का हो सकता हैः–

   (i) बड़ी राशि का साधारण दान

   (ii) छोटी राशि का साधारण दान

6. **विरासत में मिली सम्पत्ति/राशि (Legacy) :** यह किसी व्यक्ति की मृत्यु पर प्राप्त वह राशि है जिसके लिए उसने संगठन के नाम अपनी वसीयत कर रखी है।

7. **समाचार पत्र/पाक्षिक/खेल के समान की बिक्री :** समाचार पत्र की रद्दी, घोषित अनुपयोगी खेल के सामान को बेच कर कुछ रकम प्राप्त की जाती है। यह आगम का एक स्रोत है। इसे प्राप्ति एवं भुगतान खाता के नाम पक्ष में दिखाया जाता है।

8. **स्थाई सम्पत्तियों का क्रय :** संगठन के लिए भवन, मशीन, फर्नीचर, पुस्तक आदि का क्रय किया जाता है। यह पूँजीगत व्यय है। इन्हें प्राप्ति एवं भुगतान खाते के जमा पक्ष में अर्थात प्राप्ति पक्ष में दिखाया जाता है।

9. **मानदेय भुगतान (Payment of Honorarium) :** यह भुगतान की एक और मद है। इसका भुगतान उन लोगों को किया जाता है जो कि संगठन के कर्मचारी नहीं हैं बल्कि संगठन के प्रबन्ध में भाग लेते हैं। इनको देय प्रतिफल मानदेय भुगतान कहताला है। जैसे कि क्लब के सचिव को मानदेय भुगतान। यह आगम प्रकृति का भुगतान है।

10. **उपभोग्य वस्तुओं का क्रय :** स्टेशनरी, खेल का सामान, दवाइयां अदि उपभोग्य वस्तुएं कहलाती हैं। अलाभकारी संगठनों द्वारा नियमित रूप से इनका भुगतान किया जाता है। इनको भुगतान की ओर दर्शाया जाता है।

इनके अतिरिक्त किराया, बीमा, कार्यालय व्यय आदि आगम व्यय है जिनका भुगतान लाभ के लिए एवं अलाभकारी संगठन दोनों ही करते हैं।

प्राप्ति एवं भुगतान खाता बनाना

प्राप्ति एवं भुगतान खाते को बनाने के निम्न चरण हैं :

- सर्वप्रथम पिछले वर्ष के नकद शेष एवं बैंक शेष को नाम पक्ष की ओर दिखाया जाता है। यदि वर्ष के प्रारम्भ मे बैंक अधिविकर्ष है तो इसे खाते के जमा पक्ष मे लिखा जायेगा।

- प्राप्ति की ओर उपयुक्त शीर्षकों के अन्तर्गत चन्दा, दान आदि को दर्शाया जाता है तथा वेतन, किराया, खेलकूद के सामान पुस्तक के क्रय आदि को भुगतान की ओर दिखाया जाता है।
- सभी राशियां रोकड़ के रूप में होती है तथा वर्ष की अवधि में जो भी प्राप्तियां अथवा भुगतान होते हैं उनके लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाता बनाया जाता है। आगम व पूँजीगत मदों में कोई अन्तर नहीं किया जाता तथा यह पिछले वर्ष से सम्बन्धित, वर्त्तमान वर्ष से स्मबन्धित अथवा आगे आने वर्ष से सम्बन्धित हो सकते हैं।

अन्त में इस खाते का शेष ज्ञात किया जाता है। इसके लिए नाम पक्ष के योग अर्थात कुल प्राप्ति में से जमा पक्ष का योग अर्थात कुल भुगतान को घटा दिया जाता है तथा शेष को आ/ला के नाम से जमा पक्ष की ओर लिख दिया जाता है।

यह नकद अथवा बैंक शेष को दर्शाता है जिसे संबन्धित संगठन के स्थिति विवरण की सम्पत्ति की ओर लिख दिया जाता है।

पाठगत प्रश्न 19.3

एक विद्यार्थी ने निम्नलिखित 'प्राप्ति एवं भुगतान खाता' तैयार किया है। कुछ मदों को इसके गलत पक्ष में लिख दिया गया है। विवरण में सुधार कीजिए।

प्राप्ति एवं भुगतान खाता

31 दिसम्बर, 2006 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
प्रारम्भिक शेष	1,800	प्रवेश शुल्क	400
मजदूरी	800	अखबारों की रद्दी बेची	200
चंदा	3,600	पुस्तकों का क्रय	2,400
		हस्तस्थ रोकड़	2,300
		टेलीफोन व्यय	600
		स्थाई जमा पर ब्याज	300
	6,200		6,200

टिप्पणी

19.4 प्राप्ति एवं भुगतान खाता एवं रोकड़ बही

आप रोकड़ बही एवं आय एवं प्राप्ति खाता के सम्बन्ध में जान चुके हैं। आपने यह भी सीखा है कि प्राप्ति एवं भुगतान खाता रोकड़ बही में दी गई मदों से बनाया जाता है, इन दोनों में अन्तर नीचे दिया गया है :

प्राप्ति एवं भुगतान खाता एवं रोकड़ बही में अन्तर

प्राप्ति एवं भुगतान खाता	रोकड़ बही
1. यह लेखांकन वर्ष के अन्त में बनाया जाता है।	यह दिन प्रतिदिन के आधार पर बनाया जाता है।
2. प्रत्येक मद केवल एक बार दर्शाई जाती है।	मदें कई कई बार अलग–अलग तिथियों, उनके घटित होने के अनुसार, दिखाई जाती हैं।
3. वित्तीय विवरणों को बनाने के लिए यह तलपट का काम करता है।	यह नकद लेनदेनों का ब्यौरा रखने का माध्यम है।
4. यह संगठन की क्रियाओं को प्रतिबिम्बित करता है।	यह दिन प्रतिदिन के लेनदेनों का व्यवस्थित लेखाजोखा मात्र है।
5. इसे केवल अलाभकारी संगठन ही तैयार करते हैं।	इसे लाभ कमाने वाले व्यावसायिक संगठन भी बनाते हैं।

उदाहरण 1

निम्न सूचना के आधार पर दिसम्बर, 2013 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाता बनाइए।

	₹		₹
प्रारंभिक शेष :			
हस्तस्थ रोकड़	1,650	पुस्तकों का क्रय	10,000
बैंक में रोकड़	18,250	खेल के सामान का क्रय	20,000
चंदा	15,000	साइकिल का क्रय	2,000
प्रवेश शुल्क	1,200	निवेश की बिक्री	25,000
दान	18,000	आजीवन सदस्यता	4,000
वेतन	16,000	किराये का भुगतान	12,000
स्टेशनरी	500	विकास बाँड का क्रय	10,000
बीमा प्रीमियम	800	अन्तिम शेष :	
पुराना फर्नीचर बेचा	1,540	हस्तस्थ रोकड़	1,510

प्रतिभूतियों पर ब्याज	3,670	बैंक में रोकड़	20,000
लॉकर का किराया	4,500		

हल

प्राप्ति एवं भुगतान खाता

31 दिसम्बर, 2013 को समाप्त वर्ष के लिए

प्राप्तियां	*राशि (₹)*	*भुगतान*	*राशि (₹)*
शेष आ/ला			
हस्तस्थ रोकड़	1,650	वेतन	16,000
बैंक में रोकड़	18,250	स्टेशनरी	500
प्रवेश शुल्क	1,200	बीमा प्रीमियम	800
दान	18,000	पुस्तकों का क्रय	10,000
पुराना फर्नीचर बेचा	1,540	खेल के सामान का क्रय	20,000
प्रतिभूतियों पर ब्याज	3,670	साइकिल का क्रय	2,000
लॉकरों का किराया	4,500	किराये का भुगतान	12,000
निवेश की बिक्री	25,000	विकास बांड का क्रय	10,000
चंदा	15,000	शेष आ/ला	
आजीवन सदस्यता शुल्क	4,000	हस्तस्थ रोकड़	1,510
		बैंक में रोकड़	20,000
	92,810		92,810

उदाहरण 2

निम्नलिखित सूचना के आधार पर वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष के लिए राइजिंग सन क्लब का प्राप्ति एवं भुगतान खाता बनाइए।

विवरण		*राशि (₹)*
हस्तस्थ रोकड़ 1.04.2013 को		9,800
बैंक में रोकड़ 1.04.2013 को		17,600
चंदा		
2012–13	7,500	
2013–14	28,600	
2014–15	6,400	42,500
प्रवेश शुल्क		4,000
आजीवन सदस्यता शुल्क		8,000

टिप्पणी

दान	35,000
पुराने बल्ले एवं गेंदों का विक्रय	2,200
प्रिटिंग एवं स्टेशनरी	2,500
बिजली खर्च	3,600
टेलीफोन खर्च	4,200
मजदूरी एवं वेतन	14,000
निवेश पर ब्याज	2,000
लाकर किराया	2,800
खेलों के सामान का क्रय	20,000
सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय	40,000
हस्तस्थ रोकड़ 31.03.2014 को	7,200
बैंक में रोकड़ 31.03.2014 को	32,400

हल :

प्राप्ति एवं भुगतान खाता

31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष के लिए

विवरण		*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
शेष आ/ला.				
हस्तस्थ रोकड़		9,800	प्रिंटिंग एवं स्टेशनरी	2,500
बैंक में रोकड़		17,600	बिजली खर्च	3,600
चंदा			टेलीफोन खर्च	4,200
2012–13	7,500		मजदूरी एवं वेतन	14,000
2013–14	28,600		खेल के सामान का क्रय	20,000
2014–15	6,400	42,500	सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय	40,000
प्रवेश शुल्क		4,000	शेष आ०/ले.	
आजीवन सदस्यता शुल्क		8,000	हस्तस्थ रोकड़	7,200
निवेश पर ब्याज		2,000	बैंक में रोकड़	32,400
लॉकर किराया		2,800		
चंदा		35,000		
पुराने बल्ले एवं गेंदों की बिक्री		2,200		
		1,23,900		1,23,900

पाठगत प्रश्न 19.4

i. एक रोकड़ बही में एक ही प्रकार की मद कई बार लिखी जा सकती है प्राप्ति एवं भुगतान खाते में कितनी बार लिखी जाती है?

ii वर्ष 2013 के लिए चंदा प्राप्त हुआ ₹ 2,000 एवं 2014 के लिए ₹ 150। वर्ष 2013 के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाते में चंदा प्राप्ति की कितनी राशि लिखी जायेगी?

iii. आजीवन सदस्यता शुल्क प्राप्ति की राशि है अथवा भुगतान की राशि?

आपने क्या सीखा

- अलाभकारी संगठन हैं खेलकूद क्लब, चैरीटेबल संस्थान, विद्यालय, कल्याण समितियां, स्वास्थ्य कल्ब, ब्लडबैंक आदि।
- इनका उद्देश्य अपने सदस्यों एवं जन–साधारण की सेवा करना है।
- रोकड़ बही की प्रविष्टियों का वर्ष का संक्षिप्त स्वरूप जब एक खाते के रूप में प्रस्तुत किया जाता है तो उसे प्राप्ति एवं भुगतान खाता कहते हैं।
- रोकड़ चाहे पूँजीगत हैं अथवा आगम, चालू वर्ष के हैं या पिछले वर्ष के या फिर अगले वर्ष के सभी का लेखांकन प्राप्ति एवं भुगतान खाते में किया जायेगा।
- प्राप्ति एवं भुगतान खाता रोकड़ बही का संक्षिप्त स्वरूप है तथा अलाभकारी संगठन के आय–व्यय खाता एवं स्थिति विवरण बनाने का आधार होता है।
- प्राप्ति की विशेष मदें है चंदा, प्रवेश शुल्क, आजीवन सदस्यता शुल्क, बन्दोबस्त निधि (Endowment fund) दान, विरासत, अखबारों की रद्दी की विक्री, सरकारी अनुदान आदि। भुगतान की विशेष मदें हैं स्थाई संपत्तियों का क्रय, उपभोग की वस्तुएं, मानदय भुगतान आदि।

पाठान्त प्रश्न

1. अलाभकारी संगठन का अर्थ बताइए एवं अलाभकारी संगठन की विभिन्न विशेषताओं को संक्षेप में समझाइए।
2. निम्न शब्दों को संक्षेप में समझाइए :

   (क) विरासत (ख) मानदेय (ग) चंदा (घ) विशिष्ट दान
3. प्राप्ति एवं भुगतान खाता का अर्थ बताइए। प्राप्ति एवं भुगतान खाता बनाने की आवश्यकता को समझाइए।

4. प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा रोकड़ बही में अन्तर कीजिए।

5. नीचे दी गई सूचनाओं से 'फ्रैंड इन नीड', एक अलाभकारी संगठन, का 31, दिसम्बर 2013 को समाप्त वर्ष का प्राप्ति एवं भुगतान खाता तैयार कीजिए।

विवरण	*राशि (₹)*
हस्तस्थ रोकड़ 1 जनवरी, 2013	4,000
प्रवेश शुल्क	1,400
दान	15,000
चंदा	15,000
बिजली व्यय	1,500
वेतन	6,500
सचिव का मानदेय पारिश्रमिक	4,500
लघु रोकड़ भुगतान	1,800
स्थाई जमा के लिए बैंक में जमा	15,000
बीमा प्रीमियम	2,100
सरकार से अनुदान	40,000
स्टेशनरी	1,200

6. होप ऑफ कोलकाता, एक ऐसा संगठन, जो विधवाओं एवं ऐडस के मरीजों के कल्याण का कार्य कर रहा है, की रोकड़ बही की मदें दी गई हैं। 31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाता बनाइए।

		राशि (₹)
एक अप्रैल 2013 को शेष		48,500
चंदा		
2012–13	8,000	
2013–14	42,000	
2014–15	5,000	55,000
दान राशि		1,20,000
अनुदान राशि		2,00,000
वसीयत संपदा		80,000
सिले सिलाए वस्त्रों की बिक्री से प्राप्ति		32,000
बेकरी वस्तुओं की बिक्री से प्राप्ति		46,000
मजदूरी एवं वेतन		12,000
बिजली व्यय		8,600
ईंधन		16,400

सामान्य व्यय	9,700
भवन का रखरखाव	6,000
बीमा प्रीमियम	4,000
लांड्री व्यय	3,200
कमरों का निर्माण	1,25,000
सरकारी बांड	2,50,000
भोजन	1,20,000
बैंक शेष	1,00,000

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

19.1 (i) × (ii) √ (iii) √

19.2 I. प्राप्तियाँ : दान चंदा, वसीयत
भुगतान : चैरिटी, पुस्तकों का क्रय, मानदेय

II. (i) आवश्यकता (ii) विशेषताएं
(iii) विशेषताएं (iv) आवश्यकता

19.3 **प्राप्ति एवं भुगतान खाता**

प्राप्तियां	*राशि (₹)*	*भुगतान*	*राशि (₹)*
प्रारम्भिक शेष	1,800	मजदूरी	800
चंदा	3,600	पुस्तकों का क्रय	2,400
प्रवेश शुल्क	400	टेलीफोन व्यय	600
समाचार पत्र की बिक्री	200	अन्तिम शेष	2,500
स्थाई जमा पर ब्याज	300		
	6,300		6,300

19.4 (i) एकबार (ii) ₹ 2,150 (iii) हाँ, प्राप्ति

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

5. अन्तिम रोकड़ शेष ₹ 15,200

6. अन्तिम रोकड़ शेष ₹ 46,600

टिप्पणी

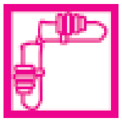

क्रियाकलाप

अपने शहर/कस्बे/क्षेत्र के किन्हीं पांच अलाभकारी संगठनों में जायें जो नीचे दी गई क्रियायों में लगे हैं :

(क) जंगल एवं जंगली जानवरों का संरक्षण,

(ख) एड्स (A.I.D.S) के प्रति जागरुकता,

(ग) लड़कियों की शिक्षा,

(घ) खेल–कूद क्लब

तथा उनके आय के प्रमुख स्रोतों के सम्बन्ध में निम्न सूचना एकत्रित करें

संगठन का नाम	*मुख्य क्रिया*	*आगम के मुख्य स्रोत*

टिप्पणी

20

वित्तीय विवरण (अलाभकारी संगठन)

आप यह जान चुके हैं कि अलाभकारी संगठन जैसा कि क्लब, अस्पताल, ब्लड बैंक, स्कूल एवं गैर सरकारी संगठन, जो लोगों में एच. आई. वी. एड्स के सम्बन्ध में जागरूकता पैदा करते हैं, भी वित्तीय लेन देन करते हैं। यह भी लेखा पुस्तकें तैयार करते हैं तथा वर्ष के अन्त में वित्तीय विवरण तैयार करते हैं। यह वित्तीय विवरण हैं प्राप्ति एवं भुगतान खाता, आय-व्यय खाता एवं स्थिति विवरण। पिछले पाठ में आप प्राप्ति एवं भुगतान खाते का अर्थ तथा इसे बनाने की आवश्यकता, इसको बनाने के लिए आवश्यक मदों के सम्बन्ध में जान चुके हैं। इस पाठ में आप अलाभकारी संगठनों के आय-व्यय खाते एवं स्थिति विवरण का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- आय एवं व्यय खाते के अर्थ एवं उसकी आवश्यकता को समझा सकेंगे;
- आय-व्यय खाते का प्रारूप तैयार कर सकेंगे;
- आय-व्यय खाते की मदों की पहचान कर सकेंगे तथा उन्हें समझा सकेंगे;
- दिये गये लेनदेनों से आय-व्यय खाता बना सकेंगे;
- आय-व्यय खाता तैयार करने में आवश्यक विभिन्न समायोजनों एवं उनके समावेशन को समझा सकेंगे;
- प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा आय-व्यय खाता में अन्तर्भेद कर सकेंगे;
- अलाभकारी संगठन का स्थिति विवरण तैयार कर सकेंगे।

टिप्पणी

20.1 आय-व्यय खाता : अर्थ, आवश्यकता एवं मदें

अर्थ

यह संगठन का वर्ष विशेष का आय एवं व्यय का सारांश होता है जिसे वर्ष के अन्त में तैयार किया जाता है। यह खाता व्यावसायिक संगठन के लाभ-हानि खाते के समान होता है। इस खाते में उस वर्ष के जिस वर्ष का आय-व्यय खाता तैयार किया जा रहा है, आगम आय एवं आगम व्यय की मदें लिखी जाती हैं। अर्थात इन मदों की पिछले वर्ष अथवा आने वाले वर्ष की राशियों को सम्मिलित नहीं किया जायेगा। इस खाते का शेष या तो अधिशेष (surplus) होता है अथवा घाटा (deficit)। यदि आय पक्ष का योग व्यय पक्ष के योग से अधिक है तो अन्तर राशि अधिशेष होती है। यदि व्यय पक्ष का योग आय पक्ष के योग से अधिक है तो यह अन्तर की राशि घाटा (deficit) होती है।

आय-व्यय खाता तैयार करने की आवश्यकता

अलाभकारी संगठन भी एक अवधि विशेष, जो कि सामानयत: एक वर्ष होती है, के अपने क्रियाकलापों का परिणाम जानना चाहेंगे। यद्यपि यह संगठन व्यापारिक क्रियायें नहीं करते हैं तथा इनका उद्देश्य भी लाभ कमाना नहीं होता तब भी वह यह जानना चाहेंगे कि उनकी कुल आय उनके कुल व्यय से अधिक है अथवा इसके विपरीत है। यह अन्तर राशि शुद्ध लाभ अथवा शुद्ध हानि नहीं कहलाती जैसा कि यह व्यवसायिक संगठनों के सम्बन्ध में कहलाती है। एक अलाभकारी संगठन का शुद्ध परिणाम अधिशेष अथवा घाटा कहलाता है। वैसे आय व्यय खाता बनाना कानूनी रूप से आवश्यक है। यह संगठन को अपने खर्चों को नियन्त्रित करने में सहायक होता है।

आय-व्यय खाते का प्रारूप नीचे दिया गया है :

.... का आय-व्यय खाता

31 मार्च .... को समाप्ति वर्ष के लिए

नाम | जमा

विवरण		*राशि (₹)*	*विवरण*		*राशि (₹)*
किराया	X		वर्ष में प्राप्त चंदा	X	
घटा : पिछले वर्ष की			*घटा :* पिछले वर्ष के प्राप्ति	X	
अदत्त राशि का भुगतान	X		*घटा :* अगले वर्ष के		
घटा : अगले वर्ष के लिए			लिए प्राप्ति	X	
की गई भुगतान राशि	X		*जमा :* चालू वर्ष के लिये		
जमा : चालू वर्ष की			अदत्त राशि	X	
अदत्त राशि	X		*जमा :* चालू वर्ष के लिये		
जमा : चालू वर्ष के लिए			पिछले वर्ष में		
पिछले वर्ष प्राप्ति	X	X	प्राप्त चंदा	X	X
वेतन		X	दान		X

समाचार पत्र व्यय	X	सहायता राशि		X
फर्नीचर की बिक्री पर हानि	X	घास की बिक्री		X
अवक्षयण	X	निवेश पर ब्याज		X
अन्य कोई भी आगम	X	मिश्रित प्राप्तियां		X
व्यय की मद	X	रद्दी का विक्रय		X
किसी उपभोग्य सामान पर				
व्यय जैसे कि स्टेशनरी	X			
अधिशेष-आय का व्यय से आधिक्य	X	आगम आय	X	
		घटा : व्यय का आय		
		से आधिक्य	X	X
	X			X

आय-व्यय की संबंधित मदें

अलाभकारी संगठनों की संबन्धित आय की मदें निम्नलिखित हैं :

1. **चंदा (Subscription) :** यह संगठन के सदस्यों द्वारा दिया गया नियतकालिक योगदान है।
2. **प्रवेश शुल्क (Entry Fees) :** यह राशि सदस्यों से उनके संगठन में प्रवेश करते समय प्राप्त की जाती है।
3. **दान (Donation) :** दान किसी व्यक्ति, फर्म, कम्पनी आदि से उपहार स्वरूप मिली राशि है। लेकिन सामान्य दान वह भी छोटी राशि तथा नियमित रूप से प्राप्त राशि ही आगम आय मानी जाती है।
4. **पुराने अखबार एवं सामग्री की बिक्री (Sale of Old Newspaper and Material) :** पुराने अखबार अथवा कबाड़ घोषित पुस्तकें, खेल का समान आदि की बिक्री को आगम आय माना जाता है।
5. **ब्याज की प्राप्ति : (Interest received)** अधिशेष कोष को बैंक में सावधि जमा खाता में जमा करा दिया जाता है अथवा अन्य कहीं उसका निवेश कर दिया जाता है। उस पर प्राप्त ब्याज की राशि आगम आय की मद होती है।
6. **सहायतार्थ अनुदान (Grant in-aid) :** स्थानीय निकाय, राज्य अथवा केन्द्रीय सरकार एवं कुछ सरकारी एजेन्सीयां अलाभकारी संगठनों को सहायतार्थ अनुदान राशि प्रदान करती है।

उपरोक्त मदों के अतिरिक्त आय की कई अन्य मदें हैं जैसे कि हॉल का किराया, घास की बिक्री, मनोरंजन से आय आदि।

आगम व्यय की मदें

कुछ महत्वपूर्ण मदें इस प्रकार हैं :

1. वेतन, मजदूरी, किराया, स्टेशनरी, डाक व्यय, टेलीफोन व्यय, बिजली का खर्च कुछ ऐसी आगम व्यय की मदें हैं जो सभी अलाभकारी संगठनों में समान हैं।
2. **मानदेय (Honorarium) :** यह वह राशि है जो उस व्यक्ति को दी जाती है जो संगठन के कार्य को देखता है लेकिन संगठन का वेतन भोगी कर्मचारी नहीं होता।

3. **अवक्षयण - ह्रास:** अवक्षयण फर्नीचर, भवन पुस्तक आदि स्थाई सम्पत्तियों पर लगाया जाता है।

4. खेलकूद प्रतियोगिताएं, मेला आदि पर व्यय।

5. **अन्य मदें :** अन्य बहुत सी मदे हैं जो संगठन की प्रकृति पर निर्भर करती हैं। उदाहरण के लिए यदि यह खेलकूद क्लब है तो मैदान के रख-रखाव का व्यय। यदि यह अस्पताल है तो दवाइयां, धुलाई पर व्यय आदि।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 20.1

I. निम्न मदों को आय एवं व्यय में वर्गीकृत कीजिए :

(क) मानदेय (ख) सहायतार्थ दान राशि (ग) पुराने अखबारों की बिक्री

(घ) चंदा (ङ) लॉकर का किराया (च) बीमा प्रीमियम

II. नीचे दिये गये यदि कथन सही है तो 'स' यदि गलत है तो 'ग' लिखें :

(i) आय का व्यय पर आधिक्य शुद्ध लाभ कहलाता है।

(ii) प्राप्ति की सभी मदों को आय व्यय खाते के आय पक्ष में तथा भुगतान की सभी मदों को आय व्यय खातें के व्यय पक्ष में लिखा जाता है।

(iii) आय व्यय खाता किसी भी अलाभकारी संगठन की वित्तीय क्रियाओं के शुद्ध परिणाम को जानने के लिए बनाया जाता है।

(iv) प्रवेश शुल्क आय की मद होती है।

(v) विशिष्ट दान आगम आय की मद होती है।

20.2 आय व्यय खाता तैयार करना

पिछले अनुभाग में आय-व्यय खातों का प्रारूप एवं इसमें लिखी जाने वाली सामान्य मदों को समझाया गया है। अब आप दी गई मदों से आय व्यय खाता बनाना सीखेंगे। यह खाता प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा अतिरिक्त सूचना से तैयार किया जाता है। आय व्यय खाते को बनाते समय निम्न प्रमुख बातों को ध्यान में रखना होता है :

(क) **व्यय पक्ष के लिए चरण :** प्राप्ति एवं भुगतान खाते के भुगतान स्तम्भ में आगम एवं पूँजीगत दोनों प्रकार की मदें दी हुई होती हैं। आगम व्यय की मद जैसे कि किराया, वेतन, टेलीफोन व्यय को आय-व्यय खाते के व्यय पक्ष में लिखा जायेगा।

यदि आवश्यक हुआ तो इन खर्चों के सम्बन्ध में समायोजन किये जायेंगे जैसे कि चालू वर्ष के अन्त में अदत्त व्यय एवं अथवा पिछले वर्ष के अन्त में अदत्त व्यय थे। पिछले वर्ष के अन्त में पूर्वदत्त व्यय एवं चालू वर्ष के अन्त में पूर्व दत्त व्ययों का भी समायोजन किया जायेगा।

(ख) आय पक्ष के चरण : प्राप्ति पक्ष में भी आगम प्राप्तियां एवं पूँजीगत प्राप्तियां दी होती हैं। आगम प्राप्तियों को आय व्यय खाते के आय स्तम्भ में लिखा जाता है। इस प्रकार की मदों के उदाहरण हैं चंदा, निवेश पर ब्याज, प्रवेश शुल्क आदि।

इन मदों में भी पिछले वर्ष में चालू वर्ष के लिए एवं वर्तमान वर्ष में आने वाले वर्ष के लिये प्राप्त राशि का समायोजन करना होगा। इसी प्रकार से चालू वर्ष के अन्त में तथा पिछले वर्ष के अन्त में अदत्त आय के लिये समायोजन किया जायेगा।

अन्य समायोजन जैसे कि अप्राप्य ऋण, अवक्षयण आदि का लेखा भी व्यय स्तम्भ में किया जायेगा।

(ग) अधिशेष अथवा घाटा (Surplus or Deficit) : अन्त में इस खाते का शेष निकाला जायेगा अर्थात दोनों स्तम्भों के योग का अन्तर ज्ञात किया जायेगा। यदि जमा पक्ष का योग नाम पक्ष के योग से अधिक है तो अन्तर राशि को नाम की ओर अधिशेष के रूप में लिखा जायेगा। और यदि नाम पक्ष का योग जमा पक्ष के योग से अधिक है तो अन्तर को खाते के जमा की ओर घाटे के रूप में लिखा जायेगा।

उदाहरण 1

नीचे दी गई सूचना के आधार पर प्रोमिसिंग स्पोर्ट्समैन्स क्लब, दिल्ली का 31 दिसम्बर, 2013 को समाप्त वर्ष का आय-व्यय खाता बनाइए।

	₹
1.1.2013 को नकद शेष	7,000
चंदा	30,000
ब्याज प्राप्त	2,500
खेलकूद का समान	24,000
मैच कोष	15,000
दान	2,000
घास का विक्रय	300
समाचार पत्र व्यय	600
निवेश का क्रय	10,000
वेतन का भुगतान	16,000
किराये के भुगतान	5,400
मिश्रित प्राप्तियां	600
टेलीफोन का खर्च	1,200
31.12.2013 को रोकड़ शेष	200

टिप्पणी

हल :

प्रोमिसिंग स्पोर्ट्समैन्स क्लब
आय-व्यय खाता
31 दिसम्बर, 2013 को समाप्त वर्ष के लिये

नाम जमा

व्यय	*राशि (₹)*	*आय*	*राशि (₹)*
वेतन	16,000	चंदा	30,000
किराया	5,400	ब्याज प्राप्त हुआ	2,500
समाचार पत्र व्यय	600	घास बेची	300
टेलीफोन व्यय	1,200	विविध प्राप्तियाँ	600
अधिशेष–व्यय से		दान	2,000
अधिक आय	12,200		
	35,400		**35,400**

उदाहरण 2

31 दिसम्बर, 2013 को सामप्त वर्ष के लिए यंगस्टर हैल्थ क्लब, झांसी के प्राप्ति-भुगतान खाते से आय–व्यय खाता बनाइए।

प्राप्ति-भुगतान खाता

प्राप्ति	*राशि (₹)*	*भुगतान*	*राशि (₹)*
प्रारंभिक शेष	2,400	किराया	3,600
चंदा	16,000	स्टेशनरी	450
प्रवेश शुल्क	200	वेतन	4,800
निवेश का विक्रय	8,000	उपकरणों का क्रय	5,500
पुरानी अलमारी का विक्रय	800	प्रतियोगिताओं पर व्यय	2,800
(पुस्तक मूल्य ₹ 1,800)		विविध व्यय	650
दान	2,500	फर्नीचर का क्रय	4,000
		अन्तिम शेष	8,100
	29,900		**29,900**

हल :

यंगस्टर्स हैल्थ क्लब

आय-व्यय खात

31 दिसम्बर, 2013 को समाप्त वर्ष के लिये

नाम जमा

व्यय	*राशि (₹)*	*आय*	*राशि (₹)*
किराया	3,600	चंदा	16,000
स्टेशनरी	450	प्रवेश शुल्क	200
वेतन	4,800	दान	2,500
प्रतियोगिताओं पर व्यय	2,800		
विविध व्यय	650		
अलमारी की बिक्री पर हानि	1,000		
अधिशेष–आय का व्यय से आधिक्य	5,400		
	18,700		**18,700**

पाठगत प्रश्न 20.2

i. आयगत व्यय की मदों को आय-व्यय खाते के किस ओर दिखाया जाता है?

ii. आय-व्यय खाते का जमा पक्ष उसके नाम पक्ष से अधिक होने पर उस राशि को क्या नाम दिया जाता है?

iii. आय-व्यय खाते में आय का पक्ष किस ओर का होता है?

iv. प्राप्ति-भुगतान खाते के किस ओर से प्रवेश शुल्क की राशि को आय-व्यय खाते के जमा में ले जाया जाता है?

20.3 आय-व्यय खाते में मदों का समायोजन

आय-व्यय खाता प्राप्ति-भुगतान खाता के आधार पर तैयार किया जाता है लेकिन कुछ ऐसी मदें होती हैं जो इस खातें में नहीं दी गई हैं। लेकिन इनका आय व्यय खाते में सम्मिलित करना आवश्यक होता है। नीचे कुछ सर्वाधिक प्रचलित समायोजन के लिए मदें दी गई है:

1. चन्दे की प्राप्ति (Subscription Received)

यह लगातार प्राप्त होने वाली आय की मद है तथा इसे प्राप्ति-भुगतान खाते के प्राप्ति की ओर दर्शाया जाता है। यह हो सकता है कि इसमें पिछले वर्ष की बकाया तथा अगले वर्ष की

टिप्पणी

पूर्वदत्त राशि सम्मलित हो। इस वर्ष की अदत्त राशि भी हो सकती है। यह इसलिए हो सकता है कि गत अवधि में कुछ सदस्यों ने चालू वर्ष के लिए अग्रिम चन्दा दे दिया हो।

आय-व्यय खाता बनाने के लिए केवल चालू वर्ष से सबंधित प्राप्त चन्दे को ही लिया जाता है। उपरोक्त कारण से प्राप्ति भुगतान खाते में दी गई चन्दे की राशि समायोजित की जाती है। आय-व्यय खाते में चन्दे की राशि के समायोजन के लिए नीचे दिया गया मार्ग अपनाया जा सकता है :

i. चालू वर्ष के लिए देय राशि

रोजनामचा प्रविष्टि :

चन्दा देय खाता नाम
चन्दा खाता से
(वर्तमान वर्ष के चन्दे की राशि देय है लेकिन प्राप्त नहीं हुई)

आय व्यय खाता में समायोजन

आय व्यय खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
		चन्दा *जमा* : इस वर्ष की देय देय राशि	

आय-व्यय खाते में यह राशि चन्दे की प्राप्त राशि में जोड़ दी जायेगी तथा स्थिति विवरण के सम्पत्ति पक्ष में दिखाई जाएगी।

ii. चन्दे की राशि पिछले वर्ष में देय लेकिन इस वर्ष में प्राप्त :

रोजनामचा प्रविष्टि

चन्दा खाता नाम
चन्दा देय खाता से
(पिछले वर्ष की देय राशि इस वर्ष प्राप्त हुई)

इस राशि को आय–व्यय खाते में चन्दे की प्राप्त राशि में से घटा दिया जायेगा।

iii. आगामी वर्ष का चन्दा इस वर्ष में प्राप्त किया :

रोजनामचा प्रविष्टि

चन्दा खाता नाम
अग्रिम प्राप्त चन्दा खाता से
(अगले वर्ष के लिए प्राप्त चन्दे की राशि)

इस राशि को चन्दे की कुल प्राप्त राशि में से घटा दिया जाता है तथा स्थिति विवरण के 'देयताएं' पक्ष में दर्शाया जाता है।

iv. पिछले वर्ष में इस वर्ष के लिए प्राप्त चन्दा

रोजनामचा प्रविष्टि

अग्रिम प्राप्त चन्दा खाता नाम
चन्दा खाता से
(पिछले वर्ष में इस वर्ष के लिए प्राप्त चन्दा)

इस राशि को आय-व्यय खाते में चन्दा प्राप्त राशि में जोड़ दिया जायेगा।

उदाहरण 3

	₹
वर्ष 2013 में प्राप्त चन्दा	15,000
31 दिसम्बर 2013 को चन्दे की अदत्त राशि	1,500
वर्ष 2012 में वर्ष 2013 के लिए चन्दे की देय राशि प्राप्त	800
वर्ष 2013 में वर्ष 2012 के लिए चन्दे की देय राशि प्राप्त	400
वर्ष 2013 में वर्ष 2014 के लिए प्राप्त चन्दे की राशि	600

31 दिसम्बर, 2013 को समाप्त वर्ष के लिये आय-व्यय खाते में दर्शाने के लिए चन्दे की राशि की गणना कीजिए।

हल :

वर्ष 2013 में प्राप्त चन्दा	15,000	
जमा : इस वर्ष की देय राशि	1,500	
जमा : 2013 के लिए 2012 में प्राप्त राशि	800	17,300
घटा : 2012 के लिए प्राप्त राशि	400	
घटा : 2014 के लिए प्राप्त अग्रिम	600	1,000
वर्ष 2013 के आय–व्यय खाते में		16,300

दिखाई जाने वाली चन्दे की राशि

चन्दा खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
चन्दा देय खाता 2012	400	रोकड़	15,000
चन्दा अग्रिम प्राप्त खाता 2014	600	चन्दा देय खाता	1,500
आय–व्यय खाता	16,300	अग्रिम प्राप्त चन्दा खाता (2012)	800
	17,300		17,300

टिप्पणी

2. किराए का भुगतान

किराए का भुगतान एक व्यय की राशि है। किराए में भी कुछ समायोजन किये जाते हैं। वर्ष में किराये के भुगतान की राशि में जो समायोजन किये जाते हैं वह इस प्रकार है :

(i) चालू वर्ष के लिए देय किराया।

(ii) अगले वर्ष के लिए चालू वर्ष में किराए का अग्रिम भुगतान।

(iii) गत वर्ष में किराए की देय राशि का चालू वर्ष में भुगतान किया गया।

(iv) चालू वर्ष से सम्बन्धित किराया गत वर्ष में भुगतान किया।

उपरोक्त के सम्बन्ध में रोजनामचा प्रविष्टियां इस प्रकार की जायेंगी :

(i) किराया खाता नाम
      किराया देय खाता से
   (किराया देय लेकिन अभी भुगतान नहीं हुआ)

(ii) किराये का अग्रिम भुगतान खाता नाम
      बैंक खाता से
   (अगले वर्ष के लिए किराए का अग्रिम भुगतान)

(iii) किराया देय खाता नाम
      बैंक खाता से
   (पिछले वर्ष के देय किराये का भुगतान किया)

(iv) किराया खाता नाम
      अग्रिम किराया खाता से
   (पिछले वर्ष किराए के अग्रिम भुगतान का किराया खाते में हस्तान्तरण)

आय-व्यय खाते में वर्तमान वर्ष के लिए दिखाई जाने वाली किराये की राशि की गणना

चालू वर्ष में किराये का भुगतान			√
जमा :	पिछले वर्ष में किराये का चालू वर्ष के लिए अग्रिम भुगतान	+	√
जमा :	चालू वर्ष में किराया देय लेकिन भुगतान नहीं	+	√
घटा :	चालू वर्ष में पिछले वर्ष के अदत्त किराए का भुगतान	–	√
घटा :	चालू वर्ष में किराए का अगले वर्ष के लिए अग्रिम भुगतान	–	√
चन्दे की राशि जिसे आय-व्यय खाते के नाम में लिखा जाना है			x x x x

टिप्पणी

उदाहरण 4

एक क्लब ने वर्ष 2013 में ₹ 20,000 का भुगतान किया। ₹ 2,000 के किराये का अभी भुगतान देय था। वर्ष 2012 में ₹ 1,500 का भुगतान वर्ष 2006 के खाते में किया गया। वर्ष 2013 के आय–व्यय खाते में लिखी जाने वाली राशि की गणना कीजिए।

हल

	₹
2013 में किराये का भुगतान	20,000
जमा 2013 का अदत्त किराया	2,000
जमा 2012 में 2013 के लिए अग्रिम भुगतान	1,500
आय–व्यय खाते में 2013 के लिए किराया व्यय दिखाया	23,500

परिसम्पत्ति पर अवक्षयण

अवक्षयण एक गैर-रोकड़ मद है। इसे हर स्थाई स्मपत्ति जैसे कि भूमि, भवन, फर्नीचर, पुस्तकें आदि पर पूर्व निर्धारित विधि से प्रति वर्ष लगाया जाता है। अवक्षयण की राशि को आय–व्यय खाते के 'व्यय' पक्ष में दिखाया जाता है तथा उसे सम्बन्धित सम्पत्ति में से स्थिति विवरण के सम्पत्ति पक्ष में दिखाते समय, घटा दिया जाता है।

इसकी रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

1. अवक्षयण खाता नाम
   परिसम्पत्ति खाता से

2. आय–व्यय खाता नाम
   अवक्षयण खाता से

उदाहरण 5

नीचे हैल्प एंड सोसाइटी ऑफ इन्डिया का वर्ष समाप्ति 31 दिसम्बर, 2013 को प्राप्ति एवं भुगतान खाता दिया गया है :

प्राप्ति एवं भुगतान खाता

नाम जमा

प्राप्ति	राशि (₹)	भुगतान	राशि (₹)
शेष आ/ला	8,400	वेतन	12,000
चन्दा	7,800	किराया	6,000

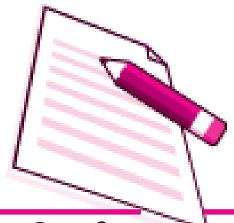

टिप्पणी

प्रवेश शुल्क	600	वैन का क्रय	28,000
सरकारी सहायता	30,000	वैन का खर्चा	6,400
भवन कोष के लिये दान	25,000	धुलाई खर्चा	5,200
प्राप्त किया ब्याज	2,400	दवाइयां एवं संबंधित व्यय	9,600
		प्रचार व्यय	4,000
		शेष आ/ले	3,000
	74,200		74,200

अतिरिक्त सूचना

1. अदत्त चन्दा ₹ 1,500 था।
2. ब्याज देय लेकिन प्राप्त नहीं हुआ ₹ 600।
3. अदत्त वेतन ₹ 1,200 है।
4. मोटर वैन पर 20% की दर से अवक्षयण लगाया गया।

आय–व्यय खाता बनाइए।

हल :

हैल्प एंड सोसाइटी आफ इन्डिया

आय-व्यय खाता

31 दिसम्बर, 2013 को समाप्त वर्ष के लिये

नाम जमा

विवरण		*राशि (₹)*	*विवरण*		*राशि (₹)*
वेतन	12,000		चन्दा	7,800	
जमा: अदत्त राशि	1,200	13,200	*जमा:* अदत्त चन्दा	1,500	9,300
किराया		6,000	प्रवेश शुल्क		600
मोटर वैन का खर्चा		6,400	सरकारी सहायता		30,000
धुलाई खर्चा		5,200	ब्याज	2,400	
दवाएं एवं सम्बन्धित व्यय		9,600	*जमा* अर्जित ब्याज	600	3,000
प्रचार व्यय		4,000	घाटा-व्यय का		7,100
मोटर वैन पर अवक्षयण		5,600	आय से अधिक्य		
		50,000			50,000

प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा आय-व्यय खाता के सम्बन्ध में विस्तार से जान लेने पर अब हम दोनों में अन्तर कर सकते हैं। इनमें अन्तर नीचे दिये गये हैं।

प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा आय-व्यय में अन्तर

अन्तर का आधार	*प्राप्ति एवं भुगतान खाता*	*आय-व्यय खाता*
1. प्रकृति	यह रोकड़ बही का संक्षिप्त स्वरूप होता है	यह आगम प्राप्ति एवं आगम व्यय का संक्षिप्त स्वरूप होता है
2. पक्ष	इस खाते का नाम पक्ष प्राप्ति तथा जमा पक्ष भुगतान दर्शाते हैं	इस खाते का नाम पक्ष व्यय या हानि तथा जमा पक्ष आय व लाभ दर्शाता है।
3. प्रारम्भिक शेष	इसे रोकड़ अथवा बैंक रोकड़ शेष से प्रारम्भ किया जाता है	इसमें आरम्भ में कोई शेष नहीं होता
4. अन्तिम शेष	इस खाते का अन्तिम शेष रोकड़ हस्तस्थ अथवा बैंक में रोकड़ दर्शाता है।	इस खाते का अन्तिम शेष आय व्यय पर अधिक्य अथवा व्यय का आय पर आधिक्य दर्शाता है।
5. पूँजीगत एवं आगम मदें	इसमें दोनों पूँजीगत एवं आगम मदों का अभिलेखन किया जाता है	इसमें केवल आगम मदों का ही अभिलेखन किया जाता है।
6. समायोजन	इसे तैयार करते समय समायोजनों को ध्यान में न रखा जाता	इसे तैयार करते समय समायोजनों को ध्यान में रखना आवश्यक है।
7. अन्तिम शेष का हस्तांतरण	इस खाते के अन्तिम शेष का अगली अवधि के प्राप्ति भुगतान खाते में हस्तान्तरण किया जाता है।	इस खाते का अंतिम शेष स्थिति विवरण में पूँजी कोष में हस्तान्तरित किया जाता है

पाठगत प्रश्न 1क

i. एक क्लब अपने 500 सदस्यों से प्रतिवर्ष ₹ 100 प्रति सदस्य चन्दा एकत्रित करता है।

(क) इसे चालू वर्ष के लिए पिछले वर्ष ₹ 1,500 प्राप्त हुए, 20 सदस्यों ने चालू वर्ष के लिए देय राशि का भुगतान नहीं किया। चंदे की प्राप्त राशि की गणना कीजिए।

(ख) ₹ 11,000 किराये के चालू वर्ष में भुगतान किये तथा ₹ 20,000 का अभी भुगतान करना शेष है। पिछले वर्ष अदत्त राशि ₹ 9,000 थी। चालू वर्ष के लिए किराये की राशि की गणना कीजिए।

टिप्पणी

ii. (क) प्राप्ति एवं भुगतान खाते का अन्तिम शेष अगले वर्ष के इसी खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। आय-व्यय खाते का शेष कहाँ हस्तान्तरित किया जाता है?

(ख) आय-व्यय खाता आगम प्राप्ति एवं आगम व्यय का सारांश होता है प्राप्ति एवं भुगतान खाता किस का सारांश होता है?

(ग) प्राप्ति एवं भुगतान खाते का अन्तिम शेष हस्तस्थ रोकड़, बैंक शेष दर्शाता है; आय-व्यय खाता क्या दर्शाता है?

(घ) आय-व्यय खाता किसी प्रारम्भिक शेष से प्रारम्भ नहीं होता। प्राप्ति एवं भुगतान खाता किस प्रारम्भिक शेष से प्रारम्भ होता है ?

20.4 स्थिति विवरण बनाना

अलाभकारी संगठन भी वर्ष के अन्त में स्थिति विवरण तैयार करते हैं। अलाभकारी संगठन का स्थिति विवरण, लाभ के संगठन के स्थिति विवरण से भिन्न नहीं है। इसके दो पक्ष होते हैं। (क) परिसम्पत्ति एवं (ख) देयताएं। इसकी केवल पूँजीगत मदें ही होती हैं अर्थात परिसम्पत्तियां, देयताएं एवं पूँजी–कोष।

एक अलाभकारी संगठन द्वारा स्थिति विवरण तैयार करने का उद्देश्य लेखावर्ष की अन्तिम तिथि को वित्तीय स्थायित्व, मजबूती एवं सुद्ढ़ता को दर्शाना है।

स्थिति विवरण का नमूना नीचे दिया गया है :

.... का स्थिति विवरण
31 दिसम्बर, ... को

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
अदत्त किराया		हस्तस्थ रोकड़	
अदत्त वेतन		बैंक में रोकड़	
पेशगी प्राप्त चंदा		स्थाई जमा	
भवन कोष		अदत्त चंदा	
पूँजीकोष/सामान्य कोष		खेलकूद का सामान	
जमा : आजीवन सदस्यता शुल्क		पुस्तकें	
		फर्नीचर	
जमा : अधिशेष		भवन	
घटा : घाटा			

अलाभकारी संगठनों का आय-व्यय खाता एवं स्थिति विवरण उनके प्राप्ति एवं भुगतान खाते तथा अतिरिक्त सूचना की सहायता से तैयार किये जाते हैं। एक अलाभकारी संगठन के स्थिति विवरण को बनाते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा जाता है :

1. पिछले वर्ष के स्थिति विवरण में दर्शाई गई परिसम्पत्तियों का चालू वर्ष में यदि कोई विक्रय अथवा क्रय किया गया है तथा सम्पत्ति विशेष पर अवक्षयण लगाया गया है तो उसका समायोजन किया जायेगा। चालू वर्ष के स्थिति विवरण में केवल समायोजित राशि ही दिखाई जायेगी।
2. यदि वर्ष के दौरान कोई नई सम्पत्ति खरीदी गई है तो यह प्राप्ति एवं भुगतान खाते के भुगतान पक्ष में लिखी गई होगी जहां से इसे स्थिति विवरण में ले जाया जाएगा।
3. यदि कोई ऋण लिया गया है तो यह प्राप्ति एवं भुगतान खाते के नाम में लिखा जायेगा तथा इसका भुगतान उसके जमा की ओर दिखाया जायेगा। दोनों के अन्तर की राशि को स्थिति विवरण के देयता में दिखाई जायेगी। इसी प्रकार से यदि कोई अग्रिम भुगतान किया गया है अथवा किसी व्यक्ति ने कोई राशि लौटाई है तो स्थिति विवरण में परिसम्मत्ति की ओर इसकी शुद्ध राशि लिखी जायेगी।
4. व्यय एवं/अथवा आय के सम्बन्ध में यदि कोई समायोजन है जैसे कि अदत्त राशि अथवा पूर्वदत्त राशि तो इसे स्थिति विवरण में दिखाया जायेगा।
5. पिछले वर्ष के स्थिति विवरण में यदि कोई देयता की मद है तो इसे इसके शुद्ध मूल्य पर अर्थात इसमें से भुगतान कर दी गई राशि को घटा कर दिखाया जायेगा।
6. विशिष्ट प्राप्तियां, जैसे कि भवन आदि के लिये दान को आय नहीं माना जायेगा। इसे स्थिति विवरण मे 'देयताएं' पक्ष में विशिष्ट उद्देश्य हेतु कोष में दिखाया जायेगा।
7. पूँजी कोष/सामान्य कोष जिसे पिछले स्थिति विवरण से लिया गया है को वर्त्तमान वर्ष के अधिशेष अथवा घाटे की राशि के समायोजन के पश्चात दिखाया जायेगा।

स्थिति विवरण बनाते समय एक महत्वपूर्ण बात ध्यान में रखने योग्य है कि किसी अलाभकारी संगठन के चालू वर्ष के आय–व्यय खाते एवं स्थिति विवरण को बनाने से पूर्व पिछले वर्ष से लाये गये पूँजी कोष/सामान्य कोष को ध्यान में रखा जायेगा। इसके साथ ही पिछले वर्ष से देयताएं एवं परिसम्पत्तियों की अन्य लाई गई मदों में समायोजन किए जाते हैं। इस के लिए पिछले वर्ष के स्थिति विवरण को दी गई सूचना के आधार पर तैयार किया जायेगा। इसे प्रारम्भिक स्थिति विवरण कहते हैं।

स्थिति विवरण निम्न उदाहरण से इस प्रकार बनाया जाएगा।

उदाहरण 6

जंगलों के संरक्षण के लिए कार्य कर रही गैर सरकारी संगठन 'ऑल ग्रीन एवर ग्रीन' के सम्बन्ध में 31 दिसम्बर 2013 को सूचना नीचे दी गई है ;

टिप्पणी

विवरण	राशि (₹)
हस्तस्थ रोकड़	1,400
बैंक में रोकड़	21,800
पुस्तकें	78,000
फर्नीचर	16,000
कम्प्यूटर	24,000
अदत्त चंदा	2,600
बैंक में स्थाई जमा	1,00,000
वर्ष 2014 के लिये प्राप्त चंदा	3,800
अदत्त किराया	4,000
प्रचार कोष	35,000
भवन कोष	80,000

इस तिथि को स्थिति विवरण तैयार करें।

हल :

'ऑल ग्रीन एवर ग्रीन' का स्थिति विवरण
31 दिसम्बर, 2013 को

देयताएं	राशि (₹)	परिसम्पत्तियां	राशि (₹)
अग्रिम प्राप्त चंदा	3,800	हस्तस्थ रोकड़	1,400
अदत्त किराया	4,000	बैंक में रोकड़	21,800
प्रचार कोष	35,000	अदत्त चंदा	2,600
भवन कोष	80,000	पुस्तकें	78,000
पूँजी कोष/सामान्य कोष (शेष राशि)	21,000	फर्नीचर	16,000
		कम्प्यूटर	24,000
		बैंक में स्थाई जमा	1,00,000
	2,43,800		2,43,800

पाठगत प्रश्न 20.4

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

i. सम्पत्ति की मदों को स्थिति विवरणों में दिखाने से पूर्व उनमें क्या समायोजन किये जाते है?

ii. प्राप्ति एवं भुगतान खाते के प्राप्ति की ओर की ऋण की राशि को स्थिति विवरण के किस ओर दिखाया जायेगा?

iii. पिछले वर्ष को स्थिति विवरण से ली गई पूँजी कोष की मद में कौन सी मदों का समायोजन किया जायेगा?

iv. पिछले वर्ष के स्थिति विवरण से ली गई देयता को वर्तमान वर्ष के स्थिति विवरण में किस मूल्य पर दिखाया जायेगा?

आपने क्या सीखा

- आय व्यय खाता लाभ-हानि खाते के समान होता है। आय-व्यय खाता एक अलाभकारी संगठन का किसी एक वर्ष का आय एवं व्यय का सारांश होता है।
- आय-व्यय खाता किसी अलाभकारी संगठन के वित्तीय क्रियाकलापों के शुद्ध परिणाम को जानने के लिए तैयार किया जाता है जो कि 'अधिशेष' अथवा 'घाटा' हो सकता है।
- व्यय की महत्वपूर्ण मदे आगम व्यय की मदें होती हैं जैसे कि वेतन, पोस्टेज, स्टेशनरी, मानदेय, अवक्षयण आदि। आय की प्रमुख मदें हैं चन्दा, प्रवेश शुल्क आदि।
- अधिशेष अथवा घाटे का निर्धारण करने से पहले सभी समायोजनों का समावेश कर लिया जाता है जैसे कि अदत्त, पूर्वदत्त आदि।
- प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा आय-व्यय खाते में प्रकृति, पक्ष, प्रारम्भिक शेष, अन्तिम शेष, पूँजी एवं आगम मदों का समायोजन तथा अन्तिम शेष का हस्तान्तरण के आधार पर अन्तर किया जा सकता है।
- प्रत्येक अलाभकारी संगठन वर्ष के अन्त में स्थिति विवरण तैयार करता है। इसके भी देयताएं एवं परिसम्पत्ति पक्ष होते हैं। प्रारम्भिक स्थिति विवरण की चालू वर्ष के स्थिति विवरण को तैयार करने के लिए आवश्यकता होती है।

पाठान्त प्रश्न

1. आय-व्यय खाता किसे कहते हैं?
2. आय-व्यय खाता बनाने के उद्देश्यों को समझाइए।
3. एक अलाभकारी संगठन के आय–व्यय खाते की विभिन्न मदों को सूचीबद्ध कीजिए।
4. आय-व्यय खाता बनाने के विभिन्न चरणों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
5. प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा आय–व्यय खाते में निम्न के आधार पर अन्तर्भेद कीजिए:

   i. प्रकृति   ii. समायोजन

   iv. पक्ष   iii. अन्तिम शेष का हस्तान्तरण

6. निम्न सूचना से प्राप्ति एवं भुगतान खाता तैयार कीजिए :

	₹
हस्तस्थ रोकड़ 1.1.2013 को	3,600
बैंक में रोकड़ 1.1.2013 को	10,000
चंदा	6,000
प्रवेश शुल्क	1,000
मजदूरों को मजदूरी का भुगतान	800
क्लर्कों को वेतन का भुगतान	3,000
बिजली	1,500
परिवहन व्यय	600
सचिव को मान देय	1,200
छपाई एवं स्टेशनरी	500
बैंक में सावधि जमा	10,000

7. निम्न सूचना में से कितनी राशि की आय व्यय खाते में खतौनी करेंगे?

	₹
2013 में प्राप्त चंदा	10,000
2012 में अदत्त चंदा	2,000
2012 में 2013 के लिए प्राप्त चंदा	400
2013 में 2014 के लिये प्राप्त चंदा	600
2013 के लिए अदत्त चंदा	1,000

8. आप निम्नलिखित को आय–व्यय खाते में किस प्रकार दिखाएंगे?

	₹
(i) चालू वर्ष में किराये का भुगतान	6,000
(ii) चालू वर्ष में अदत्त किराया	800
(iii) पिछले वर्ष में चालू वर्ष के लिए किराए का भुगतान	600
(iv) पिछले वर्ष का अदत्त किराये का चालू वर्ष में भुगतान	2,000
(v) चालू वर्ष में अगले वर्ष के लिए पेशगी भुगतान	1,600

9. प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा दी गई सूचना से श्रेय व्ल्यू स्टार क्लब का आय–व्यय खाता तथा स्थिति विवरण तैयार कीजिए :

प्राप्ति एवं भुगतान खाता

31 दिसम्बर 2013 को समाप्ति वर्ष के लिये

प्राप्ति	राशि (₹)	भुगतान	राशि (₹)
शेष आ/ला	1,500	बिजली	1,500
चन्दा		सामान्य व्यय	1,250
2012	500	सचिव को मानदेय	1,250
2013	8,000	पुस्तकें	2,250
2014	450	समाचार पत्र	500
समाचार पत्रों की बिक्री	250	फर्नीचर (क्रय किया)	1,000
पुराने फर्नीचर की बिक्री	200	बैंक में सावधि जमा	4,000
(पुस्तक मूल्य ₹ 300)		(5% प्रतिवर्ष से 1.1.2013 को)	
हॉल का किराया प्राप्त किया	1,750	शेष आ/ले	2,400
मनोरंजन से लाभ	1,500		
	14,150		14,150

अतिरिक्त सूचना :

(i) क्लब के 160 सदस्य हैं। प्रत्येक सदस्य ₹ 100 वार्षिक चंदे का भुगतान करता है।

(ii) 31.12.12012 को अदत्त चन्दा ₹ 1,350 है।

(iii) 31.12.2013 को अदत्त सामन्य व्यय ₹ 50 है।

(iv) 1.1.2013 को क्लब के पास ₹ 40,000 का भवन ₹ 2,000 का फर्नीचर तथा ₹ 6,000 की पुस्तकें थीं।

10. निम्न को आप आय-व्यय खाते में किस प्रकार से दिखाएंगे?

(i) वर्तमान वर्ष में किराए का भुगतान किया ₹ 1,000

(ii) वर्तमान वर्ष में अदत्त किराया ₹ 200

(iii) पिछले वर्ष में वर्तमान वर्ष के लिए किराए भुगतान ₹ 300

(iv) पिछले वर्ष किराया देय का वर्तमान वर्ष में भुगतान ₹ 500

(v) वर्तमान वर्ष में अगले वर्ष के लिए किराए का अग्रिम भुगतान ₹ 400

11. प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा दी गई अन्य सूचना से स्पोटर्स क्लव का आय-व्यय खाता एवं स्थिति विवरण तैयार कीजिए।

प्राप्ति एवं भुगतान खाता
वर्ष समाप्ति 31 दिसम्बर, 2013 के लिए

प्राप्ति		राशि (₹)	भुगतान	राशि (₹)
शेष आ. ला.		5,100	खेल के समान का क्रय	5,000
चंदा			बिजली व्यय	1,500
2012	800		सामान्य व्यय	2,250
2013	3,000		सचिव को सम्मान राशि	3,250
2014	1,250	5,050	पुस्तकें	4,250
रद्दी की बिक्री		250	समाचार पत्र	600
आजीवन सदस्यता शुल्क		6,000	फर्नीचर (क्रय)	4,000
पुराने फर्नीचर की बिक्री		400	बैंक में सावधि जमा	10,000
(बिक्री मूल्य ₹ 600)			(30.6.2013 को 8%)	
हाल का किराय प्राप्त		2,750	शेष आ. ले.	2,200
सरकारी सहायता		10,000		
मनोरंजन से आय		3,500		
		33,050		33,050

अतिरिक्त सूचना

(i) क्लब के 100 सदस्य हैं तथा प्रत्येक सदस्य ₹ 100 चन्दा देता है।

(ii) 31.12.2013 को अदत्त सामान्य व्यय ₹ 250 है।

(iii) 1.1.2013 को क्लव के पास भवन ₹ 10,000 मूल्य फर्नीचर ₹ 12,000 मूल्य और पुस्तकें ₹ 6,000 के मूल्य की थीं।

(iv) 1.1.2013 को खेल का समान ₹ 2,400 का था। फर्नीचर पर 5% से अवक्षयण लगाना है। वर्ष के अन्त में खेल का समान ₹ 3,600 का था।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

20.1 I. **आय :** सहायतार्थ अनुदान राशि, पुराने समाचार पत्रों की बिक्री, चंदा, लॉकर का किराया

व्यय : मानदेय, बीमा प्रीमियम

II. (i) (ग) (ii) (ग) (iii) (स) (iv) (स) (v) (ग)

20.2 (i) व्यय (नाम) (ii) अधिशेष (iii) जमा (iv) प्राप्तियां

20.3 i. (क) ₹ 46,500 (ख) ₹ 22,000

ii. (क) स्थिति विवरण. (ख) रोकड़ अथवा रोकड़/बैक

(ग) आधिशेष/घाटा (घ) रोकड़ अथवा रोकड़/बैक

20.4 (i) चालू वर्ष में विक्रय/क्रय तथा अवक्षयण

(ii) देयता पक्ष

(iii) अधिशेष/घाटे के लिए

(iv) शुद्ध मूल्य पर अर्थात् इसमें से इसके लिए दी गई राशि को घटा

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

6. अन्तिम हस्तस्थ रोकड़ ₹ 3,000
7. चंदा ₹ 8,800
8. किराया जिसकी खतौनी की जानी है ₹ 3,800
9. अधिशेष ₹ 15,050; पूंजी कोष (प्रारम्भिक) ₹ 50,850; स्थिति विवरण का योग ₹64,400
10. किराया ₹ 600
11. अधिशेष ₹ 14,250; पूँजी कोष (प्रारम्भिक) ₹ 36,300; स्थिति विवरण का कुल योग ₹58,050

21

एक अंकन प्रणाली-इकहरा लेखन प्रणाली

हम लेखांकन की दोहरा लेखा प्रणाली के बारे में काफी कुछ पढ़ चुके हैं। इस प्रणाली के अनुसार एक लेनदेन के दोनों पक्षों का अभिलेखन किया जाता है। लेनदेनों के अभिलेखन की एक अन्य प्रणाली, जिसे इकहरा लेखा प्रणाली कहते हैं, भी अस्तित्व में है, जिसके अन्तर्गत एक लेनदेन के दोनों पक्षों को अभिलेखित नहीं किया जाता। इकहरा लेखा प्रणाली में दोहरा लेखा प्रणाली की भाँति स्पष्ट नियम नहीं होते, यहाँ तक कि रखी जाने वाली बहियाँ भी तय नहीं होती। इस प्रणाली में सामान्यतः रोकड़ बही तथा व्यक्तिगत खाते बनाए जाते हैं, वास्तविक तथा नाम–मात्र के खाते नहीं। इस प्रणाली में लेनदेनों के दोनों पक्षों का अभिलेखन नहीं किया जाता, इसलिए इस प्रणाली को 'अपूर्ण अभिलेखों से खाते' के नाम से जाना जाता है। कुछ विशिष्ट घटनाओं जैसे आग लगना, बाढ़, भूकंप आदि के कारण कई बार वे खाते भी अपूर्ण हो जाते हैं, जो दोहरा प्रणाली से रखे गए थे।

जो लेखांकन अभिलेख 'दोहरा लेखा प्रणाली' के अनुसार नहीं रखे जाते, उन्हें 'अपूर्ण अभिलखों से खाते' अथवा लेखांकन की इकहरा लेखा प्रणाली के नाम से जाना जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- एक अंकन प्रणाली का अर्थ बता सकेंगे;
- एक अंकन प्रणाली/अपूर्ण अभिलेखों से खाते की उपयोगिता एवं सीमाओं का वर्णन कर सकेंगे;
- स्थिति विवरण प्रणाली से लाभ/हानि का निर्धारण कर सकेंगे;
- कुल देनदार, कुल लेनदार, प्राप्य बिल खाता एवं रोकड़ बही की गायब राशियों का निर्धारण कर सकेंगे;

- आरम्भिक स्थिति विवरण बनाकर प्रारम्भिक पूँजी का निर्धारण कर सकेंगे; एवं
- अन्तिम खाते बना सकेंगे।

21.1 परिभाषा

कोहलर ने इकहरा लेखा प्रणाली को इस प्रकार परिभाषित किया है, ''पुस्त पालन की एक ऐसी प्रणाली जिसमें केवल रोकड़ तथा व्यक्तिगत खातों के अभिलेख रखे जाते हैं, यह सदैव अपूर्ण दोहरा लेखा है जो परिस्थितियों के साथ–साथ परिवर्तित होता है।'' कई बार इकहरा लेखा प्रणाली को गलती से यह समझा जाता है कि इस प्रणाली के अन्तर्गत बहियों में लेनदेन केवल एक पक्ष को ही अभिलेखित किया जाता है। यह सत्य नहीं है। वास्तविकता यह है कि इस प्रणाली में कुछ विशिष्ट लेनदेनों के दोनों पक्षों को अभिलेखित किया जाता है, कुछ अन्यों के केवल एक पक्ष का अभिलेखन किया जाता है तथा कुछ लेनदेनों की अवहेलना कर दी जाती है।

विशेषताएँ

इकहरा लेखा प्रणाली की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

i. **उपयुक्तता :** यह प्रणाली लघु व्यवसायों, जैसे एकल स्वामित्व अथवा साझेदारी फर्म, के लिए उपयुक्त है। कानूनी प्रावधानों के कारण सीमित कंपनियाँ अपनी लेखा पुस्तकों को इस प्रणाली से नहीं रख सकती।

ii. **रोकड़ बही बनाना :** इस प्रणाली में सामान्यतः एक रोकड़ बही बनाई जाती है, जिसमें व्यवसाय के साथ–साथ निजी लेनदेनों का मिश्रण रहता है।

iii. **व्यक्तिगत खाते बनाना :** इस प्रणाली में सामान्यतः केवल व्यक्तिगत खाते बनाए जाते हैं तथा वास्तविक व नाम मात्र के खातों की अवहेलना की जाती है।

iv. **एकरूपता नहीं :** यह प्रणाली फर्म–दर–फर्म भिन्न हो सकती है, क्योंकि सभी उपक्रमों द्वारा एक जैसे सिद्धान्तों का पालन नहीं किया जाता।

v. **मूल प्रमाणकों की आवश्यकता :** आवश्यक सूचनाएँ एकत्र करने हेतु इस प्रणाली में हमें सामान्यतः मूल प्रमाणकों पर निर्भर रहना पड़ता है।

vi. **अन्तिम खाते बनाना :** नाम मात्र तथा वास्तविक खातों की अनुपस्थिति में अंतिम खाते सरलता से नहीं बनाए जा सकते। यह तभी संभव है, जब उपलब्ध सूचनाओं को दोहरा लेखा प्रणाली में परिवर्तित कर दिया जाए। तभी व्यापार एवं लाभ–हानि बनाया जा सकता है।

अपूर्ण अभिलेखों से सभी संपत्तियों एवं सभी देयताओं की धनराशि भी परिकलित की जाती है परंतु ये अनुमानों पर आधारित होती हैं। यही कारण है कि इस प्रणाली में लेखांकन अवधि के अंत में संपत्तियों तथा देयताओं का एक विवरण बनाया जाता है, जिसे स्थिति–विवरण की बजाय तुलन–पत्र कहा जाता है।

21.2 इकहरा लेखा प्रणाली के उपयोग

इकहरा लेखा प्रणाली के उपयोग निम्नलिखित हैं–

i. **सरल विधि :** इकहरा लेखा प्रणाली व्यवसाय लेनदेनों के अभिलेखन की काफी सरल विधि है।

ii. **कम खर्चीली :** पुस्तपालन की दोहरा लेखा प्रणाली की तुलना में यह कम खर्चीली है।

iii. **लघु इकाइयों हेतु उपयुकत :** यह मुख्य रूप से उन लघु व्यवसाय इकाइयों हेतु उपयुक्त है, जिनमें सीमित संख्या में लेनदेन होते हैं तथा बहुत कम संपत्तियाँ तथा देयताएँ होती है।

iv. **पुस्त पालन के सिद्धान्तों के ज्ञान की आवश्यकता नहीं :** इकहरा लेखा प्रणाली में लेखा पुस्तकें सरलता से बनाई जा सकती हैं, क्योंकि इन्हें बनाने हेतु पुस्त पालन के सिद्धान्तों के ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती।

v. **लाभ अथवा हानि ज्ञात करना सरल :** लाभ अथवा हानि का पता लगाना काफी सरल होता है। लाभ अथवा हानि का पता लगाने हेतु स्वामी को लेखांकन अवधि के अंत में व्यवसाय की वित्तीय स्थिति की तुलना प्रारंभ की वित्तीय स्थिति से करनी होती है।

इकहरा लेखा प्रणाली की सीमाएँ

इकहरा लेखा प्रणाली अपूर्ण तथा अपर्याप्त सूचनाएँ उपलब्ध कराती है। अतः इसकी निम्नलिखित सीमाएं हैं :

i. **अंकगणितीय शुद्धता सिद्ध नहीं की जा सकती :** तलपट नहीं बनाया जा सकता तथा इसलिए लेखा पुस्तकों की अंकगणितीय शुद्धता को सिद्ध करना अथवा जाँचा नहीं जा सकता। त्रुटियों, गबन एवं कपट के होने की संभावनाएँ अधिक होती हैं।

ii. **संपत्तियों पर नियंत्रण नहीं :** संपत्तियों के दुरूपयोग को रोकने हेतु पूर्ण नियंत्रण करना काफी कठिन होता है, क्योंकि संपत्तियों के खाते नहीं रखे जाते।

iii. **सही लाभ का पता नहीं लगाया जा सकता :** व्यापार एवं लाभ–हानि खाता नहीं बनाया जा सकता और इसलिए लेखांकन अवधि के दौरान अर्जित किए गए यही लाभ अथवा वहन की गई हानि का पता नहीं चलता।

iv. **व्यवसाय की वित्तीय स्थिति का पता नहीं चलता :** तुलन–पत्र, जिसे इकहरा लेखा प्रणाली में अवस्था विवरण कहा जाता है, एक असंतोषजनक विधि से बनाई जाती है। संपत्तियाँ एवं देयताएँ अभिलेखों से उपलब्ध नहीं कराई जाती बल्कि भौतिक निरीक्षण द्वारा लिखी जाती हैं तथा अनुमान आधारित होती हैं। अतः किसी एक विशिष्ट तिथि को व्यवसाय की सच्ची वित्तीय स्थिति जानने के लिए तुलन–पत्र नहीं बनाया जा सकता। परिणाम स्वरूप, कुल शुद्ध संपत्तियों की सही स्थिति का पता नहीं लग पाता।

v. **आन्तरिक जाँच नहीं :** आन्तरिक जाँच संभव न होने के कारण इस विधि में त्रुटियों एवं गबनों के लिए पर्याप्त स्थान रहता है तथा इनका पता लगाना भी काफी कठिन होता है।

vi. **व्यवसाय के मूल्य का पता लगाना कठिन :** अभिलेखों के अपर्याप्त होने के कारण व्यवसाय विशेष रूप से ख्याति, का मूल्यांकन करना कठिन होता है।

vii. **नियोजन एवं नियंत्रण हेतु अपर्याप्त :** लेखांकन अभिलेखों द्वारा दी गई लेखांकन सूचना प्रबन्धकीय नियोजन एवं नियंत्रण हेतु अपर्याप्त होती है।

viii. **अपूर्ण एवं अवैज्ञानिक प्रणाली :** यह प्रणाली अपूर्ण एवं अवैज्ञानिक है, क्योंकि इसमें लेनदेनों के दोनों पहलुओं को अभिलेखित नहीं किया जाता तथा उनके अभिलेखन हेतु निर्धारित नियमों का पालन नहीं किया जाता।

ix. **तुलनात्मक अध्ययन कठिन है :** इस प्रणाली का एक मुख्य दोष है कि व्यवसाय के लेनदेनों की अपूर्ण सूचना के कारण चालू वर्ष की स्थिति की तुलना गत वर्ष से नहीं की जा सकती।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 21.1

I. उपयुक्त शब्द/शब्दों से रिक्त स्थान भरिए :

i. एक स्थिति विवरण में व्यवसाय की केवल .... परिसम्पत्तियाँ तथा देयताओं को भौतिक आधार पर रखा जाता है।

ii. इकहरा लेखा प्रणाली, व्यवसाय लेनदेनों के अभिलेखन की काफी .... विधि है।

iii. पुस्तपालन की दोहरा प्रणाली की तुलना में इकहरा लेखा प्रणाली .... खर्चीली है।

II. बताइए कि निम्नलिखित कथन सत्य है अथवा सत्य :

i. अपूर्ण अभिलेखों से तैयार किया गया अवस्था विवरण संतोषजनक सूचना उपलब्ध करता है।

ii. अपूर्ण अभिलेखे तैयार करना एक वैज्ञानिक प्रणाली है।

iii. इकहरा लेखा प्रणाली में तुलनात्मक अध्ययन करना कठिन होता है।

21.3 अपूर्ण अभिलेखों से लाभ ज्ञात करना

हम जानते हैं कि किसी भी व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है। इसीलिए प्रत्येक व्यवसाय का स्वामी एक निश्चित अवधि के बाद, सामान्यतः एक वर्ष के अंत

टिप्पणी

में, यह जानना चाहता है कि उसने कितना लाभ कमाया अथवा कितनी हानि उठाई। वास्तव में लाभ अथवा हानि का पता लगाना तब और भी अनिवार्य हो जाता है, जब व्यवसाय एक साझेदारी फर्म के रूप में चलाया जाता है, क्योंकि तब प्रत्येक लेखांकन अवधि के अंत में साझेदारों द्वारा लाभ बाँटा जाता है। अब प्रश्न यह उठता है कि जब लेखांकन अभिलेखे अपूर्ण हों तो लाभ कैसे ज्ञात किया जाए। कारण यह है कि तलपट की अनुपस्थिति में लाभ–हानि खाता नहीं बनाया जा सकता। ऐसी स्थिति में व्यवसाय के लाभ को ज्ञात करने हेतु दो विधियाँ प्रयोग की जाती हैं, जो निम्न हैं:

(1) शुद्ध मूल्य विधि अथवा अवस्था विवरण विधि

(2) परिवर्तन विधि

शुद्ध मूल्य विधि अथवा अवस्था विवरण विधि

अपूर्ण अभिलेखों से लाभ ज्ञात करने हेतु यह आवश्यक है कि वर्ष के प्रारंभ तथा अंत के अवस्था विवरण बना लिए जाएँ, यदि पहले से न बने हों।

तुलन–पत्र की भाँति अवस्था विवरण के दो पक्ष होते हैं– दायाँ पक्ष संपत्तियों हेतु तथा बायाँ पक्ष देयताओं हेतु। विवरण बनाने हेतु विभिन्न स्रोतों से सूचना एकत्र करनी होती है। संपत्तियों के बारे में सूचना, रोकड़ बही तथा व्यक्तिगत खातों आदि से उपलब्ध होगी। अंतिम रहतिए का मूल्य ज्ञात करने हेतु स्कंध पत्रिका बनाई जाएगी तथा हस्तस्थ स्कंध का मूल्यांकन, लागत मूल्य अथवा बाजार मूल्य जो भी कम हो, के आधार पर किया जाएगा। यदि व्यापारी के पास कोई अन्य संपत्तियाँ, जैसे फर्नीचर, मशीनरी आदि है, तो उनका मूल्य ज्ञात करके संपत्तियों में सम्मिलित किया जाएगा। बाहरी व्यक्तियों/फर्मों को देय धनराशियों की पूर्ण जानकारी व्यवसाय के पास होनी चाहिए। संपत्तियों एवं देयताओं के योगों का अंतर, पूँजी होगी।

पूँजी = कुल संपत्तियाँ – देयताएँ

लाभ जानने हेतु, यदि आवश्यक हो तो वर्ष के प्रारंभ का अवस्था विवरण बनाकर वर्ष के प्रारंभ की पूँजी भी ज्ञात करनी होती है। यदि वर्ष के अंत की पूँजी, प्रारंभ की पूँजी से अधिक होती है तो हम कह सकते हैं कि लाभ हुआ है। दूसरी स्थिति में यदि वर्ष के प्रारंभ की पूँजी, वर्ष के अंत की पूँजी से अधिक थी तो अवश्य हानि हुई है। यद्यपि लाभ ज्ञात करने हेतु दो समायोजनों को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए।

i. **लगाई गई अतिरिक्त पूँजी हेतु समायोजन :** यदि स्वामी ने वर्ष के दौरान कुछ अतिरिक्त पूँजी लगाई है तो उसे वर्ष के अंत की पूँजी में से घटा देना चाहिए (क्योंकि यह वृद्धि लाभ के कारण नहीं बल्कि अतिरिक्त पूँजी लगाने के कारण है)।

ii. **आहरण हेतु समायोजन :** स्वामी के आहरण को वर्ष के अंत की पूँजी में जोड़ देना चाहिए, क्योंकि यदि आहरण न किया जाता तो वर्ष के अंत में पूँजी अधिक होती।

सूत्र : लाभ ज्ञात करने हेतु सूत्र निम्न है :

लाभ = वर्ष के अंत की पूँजी + आहरण – वर्ष के प्रारंभ की पूँजी – लगाई गई अतिरिक्त पूँजी

टिप्पणी

उपरोक्त सूत्र को लाभ अथवा हानि के विवरण के रूप में निम्न प्रकार दर्शाया जा सकता है :

लाभ अथवा हानि का विवरण
वर्ष समाप्ति .... हेतु

विवरण	₹
वर्ष के अंत में पूँजी	....
जमा : वर्ष के दौरान आहरण	....
घटा : वर्ष के प्रारंभ में पूँजी	....
वर्ष के अंत में समायोजित पूँजी	....
वर्ष के दौरान लगाई गई अतिरिक्त पूँजी	....
वर्ष का लाभ/हानि	....

अब उपरोक्त वर्णित कार्यविधि को निम्न रूप में सारांशित किया जा सकता है :

i. पहले, वर्ष के प्रारंभ की पूँजी परिकलित करने हेतु वर्ष के प्रारंभ का आवस्था विवरण बनाइए।

   एक अवस्था विवरण सभी संपत्तियों एवं देयताओं का विवरण है। दोनों पक्षों की धनराशियों के योग को पूँजी के रूप में लिया जाता है।

ii. उसके बाद, वर्ष के अंत की पूँजी परिकलित करने हेतु वर्ष के अंत का अवस्था विवरण बनाइए।

iii. वर्ष के अंत की समायोजित पूँजी में से वर्ष के प्रारंभ की पूँजी घटाइए। यह अंतर या तो लाभ होगा अथवा हानि।

iv. वर्ष के अंत की पूँजी को, आहरण जोड़कर तथा वर्ष के दौरान लगाई गई अतिरिक्त पूँजी घटाकर, समायोजित कीजिए।

निम्नलिखित उदाहरणों को देखिए तथा अध्ययन कीजिए कि अवस्था विवरण बनाकर किस प्रकार प्रारंभिक तथा अंतिम पूँजी ज्ञात की जाती है और उसके बाद अतिरिक्त पूँजी तथा आहरण के आवश्यक समायोजन करके किस प्रकार लाभ ज्ञात किया जाता है।

उदाहरण 1

राम अपनी पुस्तकों को इकहरा लेखा पद्धति के अनुसार बनाता है। वह आपको निम्नलिखित सूचनायें प्रदान करता है :

टिप्पणी

	₹
1 अप्रैल 2013 को पूँजी	60,800
1 अप्रैल 2014 को पूँजी	67,600
अप्रैल 2013 से मार्च 2014 तक आहरण	19,200
1 अगस्त 2013 को पूँजी लगायी	8,000

आप उपरोक्त सूचनाओं के आधार पर राम के लाभ व हानि की गणना कीजिए।

हल :

लाभ या हानि का विवरण

(31 मार्च 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए)

विवरण	*धनराशि (₹)*
1 अप्रैल 2014 को पूँजी	67,600
जमा : आहरण (1 अप्रैल 2013 से मार्च 2014 तक)	19,200
	86,800
घटा : 1 अगस्त 2013 को लगायी गयी अतिरिक्त पूँजी	8,000
	78,800
घटा : 1 अप्रैल 2013 को पूँजी	60,800
वर्ष का लाभ	18,000

उदाहरण 2

रानी अपनी पुस्तकें इकहरा लेखा पद्धति के अनुसार बनाती है। 31 मार्च 2014 को समाप्ति होने वाले वर्ष के लिए वह आपको निम्नलिखित सूचनायें उपलब्ध कराती है।

	₹
31 मार्च 2014 को पूँजी	18,700
1 अप्रैल 2013 को पूँजी	19,200
वर्ष के दौरान अपने निजी व्यय के लिए निकाले	8,420

रानी ने वर्ष के दौरान ₹ 2,000 के विनियोग 2% आहरण प्रीमियम पर बेच दिए तथा उक्त धन को व्यवसाय में लगा दिया।

उपरोत सूचनाओं के आधार पर आपको रानी का लाभ या हानि का विवरण बनाना है।

हल :

लाभ अथवा हानि का विवरण
(31 मार्च 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए)

विवरण	*धनराशि (₹)*
वर्ष के अन्त में पूँजी	18,700
जमा : वर्ष में किया आहरण	8,420
	27,120
घटा : वर्ष के दौरान लगायी अतिरिक्त पूँजी	2,040
वर्ष के अन्त में समायोजित पूँजी	25,080
घटा : प्रारम्भिक पूँजी	19,200
वर्ष का शुद्ध लाभ	5,880

$\left(2{,}000 \times \frac{102}{100}\right)$

उदाहरण 3

अरविन्द अपनी पुस्तकें इकहरा लेखा पद्धति के अनुसार रखते है। उनकी वित्तीय स्थिति 31.03.2013 और 31.03.2014 को निम्नलिखित हैं :

	31.3.2013 ₹	*31.03.2014* ₹
रोकड़	2,000	1,800
विविध देनदार	78,000	90,000
रहतिया	68,000	64,000
प्लांट एवं मशीनरी	1,20,000	1,60,000
विविध लेनदार	30,000	29,800
देय विपत्र	––	10,000

वर्ष 2013-14 के अन्तर्गत उन्होंने व्यवसाय में ₹ 20,000 अतिरिक्त पूँजी के रूप में निवेश किया। उन्होंने प्रति माह ₹ 6,000 अपने निजी व्यय के लिए निकाले। 31 मार्च 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए लाभ की गणना कीजिए।

हल :

स्थिति विवरण
(31 मार्च 2013 को)

दायित्व	₹	*सम्पत्ति*	₹
विविध लेनदार	30,000	रोकड़	2,000

टिप्पणी

पूँजी	2,38,000	विविध देनदार	78,000
		रहतिया	68,000
		प्लांट एवं मशीनरी	1,20,000
	2,68,000		2,68,000

स्थिति विवरण
31 मार्च 2014 को

दायित्व	₹	*सम्पति*	₹
विवधि लेनदार	29,800	रोकड़	1,800
देय विपत्र	10,000	विविध देनदार	90,000
पूँजी	2,76,000	रहतिया	64,000
		प्लांट एवं मशीनरी	1,60,000
	3,15,800		3,15.800

लाभ अथवा हानि का विवरण
(31 मार्च 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए)

विवरण	₹
पूँजी 31 मार्च 2014 को	2,76,000
जमा : आहरण वर्ष 2013-14 में (6000 x 12)	72,000
	3,48,000
घटा : अतिरिक्त पूँजी लगायी समायोजित पूँजी (31.3.2014)	20,000
31 मार्च 2014 को समायोजित पूँजी	3,28,000
घटा : प्रारम्भिक पूँजी	2,38,000
2013-14 में लाभ	90,000

उदाहरण 4

एम.एस. धोनी, एक व्यापारी अपने खाते इकहरा पद्धति के अनुसार तैयार करता है। वह आपको निम्नलिखित सूचनाएं उपलब्ध कराता है :

	मार्च 31, 2013 ₹	*मार्च 31, 2014* ₹
बैंक में रोकड़	4,500	3,000
रोकड़ हाथ में	300	4,000
रहतिया	40,000	45,000

देनदार	12,000	20,000
कार्यालय उपकरण	5,000	5,000
विविध लेनदार	30,000	20,000
फर्नीचर	4,000	4,000

वर्ष के दौरान उन्होंने ₹ 6,000 अतिरिक्त पूँजी लगायी और ₹ 4,000 का आहरण किया। फर्नीचर पर 10% तथा कार्यालय उपकरण पर 5% ह्रास लगाइये।

लाभ तथा हानि का एक विवरण 31 मार्च 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए बनाइये। 31 मार्च 2014 को स्थिति विवरण बनाइए।

टिप्पणी

हल :

लाभ अथवा हानि विवरण

(31 मार्च 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए)

विवरण		*धनराशि (₹)*
31 मार्च 2014 को पूँजी (ह्रास के समायोजन से पूर्व)		30,000
जमा : आहरण		4,000
		65,000
घटा : वर्ष के दौरान पूँजी लगायी समायोजित पूँजी		6,000
		59,000
घटा : प्रारम्भिक पूँजी समायोजन से पूर्व लाभ		35,800
		23,200
घटा : कार्यालय फर्नीचर का ह्रास	400	
उपकरण का ह्रास	250	650
शुद्ध लाभ		22,550

स्थिति विवरण

(31 मार्च 2013 को)

देयताएं	*₹*	*सम्पत्ति*	*₹*
विभिन्न लेनदार	30,000	हस्तस्थ रोकड़	4,500
पूँजी	35,800	बैंक में रोकड़	300
		अन्तिम स्टॉक	40,000
		देनदार	12,000
		कार्यालयी उपकरण	5,000
		फर्नीचर	4,000
	65,800		65,800

टिप्पणी

स्थिति विवरण
31 मार्च 2014

देयताएँ	₹	*सम्पत्तियाँ*	₹
विभिन्न लेनदार	20,000	हस्तरोकड़	3,000
पूँजी	61,000	बैंक में रोकड़	4,000
		स्टॉक	45,000
		देनदार	20,000
		कार्यालय उपकरण	5,000
		फर्नीचर	4,000
	81,000		81,000

स्थिति विवरण (संशोधित)
31.3.2014 को

देयताएँ		₹	*सम्पत्ति*		₹
विभिन्न लेनदार		20,000	बैंक में रोकड़		3,000
पूँजी (आरम्भिक)	35,800		रोकड़ हाथ में		4,000
(+) पूँजी लगायी	6,000		रहतिया		45,000
लाभ	22,550		देनदार		20,000
(–) आहरण	4,000	60,350	कार्यालय उपकरण	5,000	
			(–) ह्रास	250	4,750
			फर्नीचर	4,000	
			(–) ह्रास	400	3,600
		80,350			80,350

पाठगत प्रश्न 21.2

बताइए कि निम्नलिखित सत्य हैं अथवा असत्य

i. पूँजी = कुल संपत्तियाँ + देयताएँ

ii. कुल संपत्तियाँ = पूँजी + देयताएँ

iii. लाभ = (अंत में पूँजी + आहरण – लगाई गई अतिरिक्त पूँजी – प्रारंभ में पूँजी)

21.4 रूपान्तरण विधि

अपूर्ण अभिलेखों से अंतिम खातों को तैयार करना

व्यवसाय के परिणाम अर्थात लाभों को जानने हेतु आप शुद्ध मूल्य विधि के बारे में पढ़ चुके हैं। परंतु इस विधि में अपूर्ण अभिलेखों से निश्चित महत्वपूर्ण सूचनाएँ (जैसे विक्रय, क्रय तथा प्रचालन व्यय) उपलब्ध नहीं होती। रूपांतरण विधि का अर्थ है लेखों को अपूर्ण अभिलखें से पूर्ण अभिलेखों में रूपांतरित करना।

रूपांतरण में शामिल चरण निम्नलिखित हैं :

i. अपूर्ण सूचनाओं/रकमों (जैसे रोकड़ अथवा बैंक का प्रारंभिक एवं अंतिम शेष, नकद क्रय/नकद विक्रय, आहरण आदि) को ज्ञात करने हेतु रोकड़ एवं बैंक सारांश बनाइए। (यदि पहले से उचित रूप में नहीं बना है।)

ii. अपूर्ण सूचनाओं (जैसे प्रारंभिक/अंतिम शेष, उधार विक्रय, देनदारों से प्राप्त रोकड़, प्राप्य विपत्र प्राप्त) को ज्ञात करने हेतु कुल देनदार खाता बनाइए।

iii. अपूर्ण सूचनाओं (जैसे, प्रारंभिक/अंतिम शेष, प्राप्य विपत्र प्राप्त, प्राप्य विपत्र संग्रहित, प्राप्य विपत्र बेचानित) को ज्ञात करने हेतु प्राप्त विपत्र खाता बनाइए।

iv. अपूर्ण सूचनाओं (जैसे प्रारंभिक/अंतिम लेनदार, उधार क्रय, देय विपत्र स्वीकृत, प्राप्य विपत्र बेचानित, लेनदारों को किए गए भुगतान) को ज्ञात करने हेतु कुल लेनदार खाता बनाइए।

v. अपूर्ण सूचनाओं (जैसे प्रारंभिक/अंतिम शेष, देय विपत्र स्वीकृत, देय विपत्र भुगतानित) को ज्ञात करने हेतु देय विपत्र खाता बनाइए।

vi. प्रारंभ में पूँजी का पता लगाने हेतु प्रारंभ का अवस्था विवरण बनाइए।

vii. अब प्रश्न, में दी गई विभिन्न सूचनाओं तथा उपरोक्त परिकलनों से व्यापार एवं लाभ–हानि खाता तथा तुलन–पत्र बनाइए। अंकगणितीय शुद्धता की जाँच करने हेतु, वित्तीय विवरणों को बनाने से पूर्व तलपट भी बना लेना चाहिए।

गायब राशियों को पता लगाने हेतु संकेत

गायब राशि	*संकेत*
1. शुद्ध उधार विक्रय	क) कुल देनदार खाता बनाइए ख) कुल विक्रय – नकद विक्रय – विक्रय वापसी
2. नकद विक्रय	क) रोकड़ एवं बैंक खाता सारांश ख) कुल विक्रय – शुद्ध उधार विक्रय
3. शुद्ध विक्रय	क) नकद विक्रय + उधार विक्रय – विक्रय वापसी ख) बेचे गए माल की लागत + सकल लाभ

टिप्पणी

4.	बेचे गए माल की लागत	क)	प्रारंभिक स्कंध + शुद्ध विक्रय + प्रत्यक्ष व्यय – अंतिम स्कंध
		ख)	शुद्ध विक्रय – सकल लाभ
5.	सकल लाभ	क)	शुद्ध विक्रय – बेचे गए माल की लागत
		ख)	
6.	नकद क्रय	क)	रोकड़ एवं बैंक खाता सारांश बनाइए
		ख)	कुल क्रय – कुल उधार क्रय
7.	शुद्ध उधार क्रय	क)	कुल लेनदार खाता बनाइए
		ख)	कुल क्रय – नकद क्रय – क्रय वापसी
8.	शुद्ध क्रय	क)	नकद क्रय + उधार क्रय – क्रय वापसी
		ख)	बेचे गए माल की लागत + अंतिम स्कंध – प्रारंभिक स्कंध
9.	लेनदारों को भुगतान	क)	कुल लेनदार खाता
		ख)	रोकड़ एवं बैंक खाता सारांश
10.	देनदारों से संग्रहण	क)	कुल देनदार खाता
		ख)	रोकड़ एवं बैंक खाता सारांश

पाठगत प्रश्न 21.3

बताइए कि निम्न समीकरण सत्य हैं अथवा असत्य

i. शुद्ध उधार विक्रय = कुल विक्रय + नकद विक्रय – विक्रय वापसी

ii. शुद्ध विक्रय = बेचे गए माल की लागत + सकल लाभ

iii. शुद्ध क्रय = बेचे गए माल की लागत + अंतिम स्कंध – प्रारंभिक स्कंध

iv. सकल लाभ = शुद्ध विक्रय – बेचे गए माल की लागत

21.5 गायब संख्या की गणना

अन्तिम खाते बनाने के लिए पर्याप्त सूचनाएं सीधे अपूर्ण खातों से नहीं मिल पाती हैं। दूसरे शब्दों में कुछ संख्या खातों से गायब होती है। इसी कारण उन संख्याओं को ज्ञात करने हेतु हमें कुछ खाते बनाने पड़ते हैं।

उनमें से कुछ महत्वपूर्ण यहाँ पर बताये जा रहे हैं :

टिप्पणी

i. **कुल क्रय को ज्ञात करना :** कुल क्रय उधार क्रय तथा नकद क्रय का योग होता है। यदि नकद क्रय प्रश्न में नहीं दी गयी है तो इसके लिए रोकड़ खाता बनाना होगा और रोकड़ खाते का शेष नकद क्रय होगा। उधार क्रय की गणना के निम्न खाते बनाये जाते हैं : (क) कुल लेनदार खाता; अथवा (ख) कुल देनदार खाता तथा देय वपत्र खाता।

(क) कुल लेनदार खाता : उधार क्रय को गणना करने के लिए कुल लेनदार खाता इस प्रकार बनाना चाहिए : सर्वप्रथम दी हुई सूचनायें लेनदार खाते में लिखनी चाहिए जैसे सबसे पहले आप प्रारम्भिक शेष लेनदार खाते के क्रेडिट पक्ष में लिखेंगे, रोकड़ का भुगतान डेबिट पक्ष में, यदि कोई छूट है तो डेबिट पक्ष में तथा अन्तिम शेष भी डेबिट पक्ष में। यदि विपत्र का निर्गमन किया गया है तो वह भी डेबिट पक्ष में दिखाया जाएगा। दोनों पक्षों का योग करने के उपरान्त डेबिट का योग अधिक होगा तथा क्रेडिट पक्ष में इस अन्तर को उधार क्रय के नाम से दिखायेंगे।

कुल लेनदार खाते का नमूना निम्नलिखित है :

कुल लेनदार खाता

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
रोकड़/बैंक	....	शेष आगे लाये	....
प्राप्त छूट	....	देय विपत्र (अनादरित	
देय विपत्र	....	देय विपत्र)	....
क्रय वापसी	....	कुल देनदार खाता	
शेष आगे ले गये	....	(पृष्ठांकित प्राप्य विपत्र	
		अनादरित)	....
		उधार क्रय (शेष राशि)	....
	....		....

उदाहरण 5

निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर कुल क्रय की गणना कीजिए :

	₹
नकद	1,700
1 जनवरी 2013 को लेनदार	800
लेनदारों को नकद भुगतान	3,100
क्रय वापसी	100
31 दिसम्बर 2013 को लेनदार	1,340

हल :

कुल लेनदार खाता

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
रोकड़/बैंक	3,100	शेष आगे ले गये	800
क्रय वापसी	100	उधार क्रय	3,740
शेष आगे लाये	1,340		
	4,540		4,540

कुल क्रय = नकद क्रय + उधार क्रय

= 1,700 + 3,740 = 5,440

(ख) स्वीकृत देय विपत्र की गणना : कुल लेनदार खाते की भाँति एक देय विपत्र खाता बनाया जाता है। सर्वप्रथम सभी ज्ञात सूचनायें (जैसे देय विपत्र का आरम्भिक व अन्तिम शेष तथा वर्ष के अन्तर्गत भुगतान हुए देय विपत्र) लिखी जाती हैं और उसके बाद अज्ञात सूचनायें निकाली जाती हैं–

देय विपत्र खाता

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
रोकड़/बैंक	....	शेष आगे लाये	....
लेनदार	....	कुल देनदार खाता	
शेष आगे ले गये	....	(स्वीकार किए देय विपत्र)	....
	....		....

उदाहरण 6

निम्न सूचनाओं के आधार पर कुल क्रय ज्ञात कीजिए :

	₹
देय विपत्र का आरम्भिक शेष	15,000
लेनदार का आरम्भिक शेष	18,000
देय विपत्र का अन्तिम शेष	21,000
लेनदार विपत्र का अन्तिम शेष	12,000
वर्ष के दौरान लेनदारों का भुगतान	90,600
वर्ष के दौरान देय विपत्र का भुगतान	26,700
क्रय वापसी	3,600
नकद क्रय	77,400

टिप्पणी

हल :

देय विपत्र खाता

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
रोकड़/बैंक खाता	26,700	शेष आगे ले गये	15,000
शेष आगे लाये	21,000	लेनदार (शेष राशि)	32,700
	47,700		47,700

कुल लेनदार खाता

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
रोकड़/बैंक खाता	90,600	शेष आगे लाये	18,000
क्रय वापसी	3,600	क्रय खाता	1,20,900
देय विपत्र	32,700		
शेष आगे ले गये	12,000		
	1,38,900		1,38,900

कुल क्रय = नकद क्रय + उधार क्रय

= 77,400 + 1,20,900

= 1,98,300

ii. **कुल विक्रय की गणना :** कुल विक्रय नकद विक्रय तथा उधार विक्रय का योग होता है। नकद विक्रय रोकड़ बही से प्राप्त हो जाती है। उधार विक्रय ज्ञात करने के लिए निम्न खाते बनाये जाते हैं : (क) कुल देनदार खाता अथवा (ख) कुल देनदार तथा प्राप्य विपत्र खाता।

(क) कुल देनदार खाता : उधार विक्रय देनदार खाता बनाकर ज्ञात कर ली जाती है। सर्वप्रथम ज्ञात सूचनायें लिखी जाती हैं जैसे आरम्भिक देनदार डेबिट की ओर, प्राप्त रोकड़ क्रेडिट की ओर देय छूट, अशोध्य ऋण तथा अन्तिम देनदार क्रेडिट की ओर लिख देते हैं। अन्त में दोनों साईड का योग कर लेते हैं अन्तर उधार विक्रय कहलाता है।

कुल देनदार खाता

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
शेष आगे लाये	....	रोकड़/बैंक	....
प्राप्य विपत्र (आनादरण)	....	देय छूट	....
उधार विक्रय	....	विक्रय वापसी	....

		अशोध्य ऋण	....
		प्राप्य विपत्र	....
		शेष आगे ले गये	....
	....		....

टिप्पणी

उदाहरण 7

निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर वर्ष के दौरान हुई कुल विक्रय ज्ञात कीजिए:

	₹
1 जनवरी 2013 को देनदार	40,800
देनदारों से प्राप्त रोकड़	1,21,600
विक्रय वापसी	10,800
अशोध्य वापसी	4,800
31 दिसम्बर 2013 को देनदार	55,200
नकद विक्रय	1,13,600

हल :

कुल देनदार खाता

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
शेष आगे लाये	40,800	रोकड़/बैंक	1,21,600
उधार विक्रय (शेष राशि)	1,51,600	विक्रय वापसी	10,800
		अशोध्य ऋण	4,800
		शेष आगे ले गये	55,200
	1,92,400		1,92,400

कुल विक्रय = नकद विक्रय + उधार विक्रय
= 1,13,600 + 1,51,600
= 2,65,200

(ख) ग्राहकों से प्राप्त प्राप्य विपत्र की गणन : कुल देनदार खाते की भाँति ही प्राप्य विपत्र खाता बनाया जाता है। सभी ज्ञात सूचनाये (जैसे आरम्भिक व अनितम शेष, तथा वर्ष के दौरान भुगतान किये गए विपत्र, अनादरित विपत्र, नवीकृत विपत्र आदि) पहले खाते में लिखी जाती है उसके पश्चात् अन्तिम शेष निकाला जाता है।

प्राप्य विपत्र खाते का नमूना निम्नलिखित हैं :

टिप्पणी

प्राप्य विपत्र खाता

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
शेष आगे लाये	....	रोकड़/बैंक	....
कुल देनदार खाता	....	बैंक (अनादरित विपत्र)	....
		बैंक की छूट	....
		कुल देनदार खाता (अनादरित विपत्र)	....
		कुल लेनदार (विपत्र का बेचान)	....
		शेष आगे ले गये	....
	....		....

उदाहरण 8

निम्नलिखित से कुल विक्रय ज्ञात कीजिए :

	₹
आरम्भिक प्राप्य विपत्र	1,560
आरम्भिक देनदार	6,160
वर्ष के दौरान भुनाये गये विपत्र	4,180
देनदारों से प्राप्त रोकड़	14,000
अशोध्य ऋण अपलिखित किया	560
विक्रय वापसी	1,740
प्राप्य विपत्र (अनादरित)	360
अन्तिम प्राप्य विपत्र	1,200
अन्तिम देनदार	5,100
नकद विक्रय	8,180

हल :

कुल देनदार खाता

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
शेष आगे ले गये	6,160	रोकड़/बैंक	14,000
प्राप्य विपत्र (अनादरित)	360	अशोध्य ऋण	560
विक्रय (शेष धनराशि)	19,060	विक्रय वापसी	1,740
		प्राप्य विपत्र	4,180
		शेष आगे लाये	5,100
	25,580		25,580

टिप्पणी

कुल विक्रय	=	नकद विक्रय	+	उधार विक्रय
	=	8,180	+	19,060
	=	27,240		

प्राप्य विपत्र खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
शेष आगे लाये	1,560	नकद बैंक	4,180
देनदार	4,180	देनदार (अनादरित विपत्र)	360
		शेष आगे ले गये	1,200
	5,740		5,740

iii. विविध देनदारों या विविध लेनदारों के शेष ज्ञात करना : यदि उधार विक्रय और उधार क्रय दिए हुए हों, तो कुल देनदार खाता या कुल लेनदार खाता बनाकर देनदारों या लेनदारों के आरम्भिक या अन्तिम शेष ज्ञात किए जा सकते हैं।

उदाहरण 9

निम्नलिखित शेषों के आधार पर कुल देनदार खाता और कुल लेनदार खाता बनाइए तथा उधार विक्रय और उधार क्रय ज्ञात कीजिए–

	₹
देनदार 1 जनवरी को	5,000
लेनदार 1 जनवरी को	4,000
देनदार 31 दिसम्बर को	4,000
लेनदार 31 दिसम्बर को	6,000
वर्ष में प्राप्य विपत्र प्राप्त किए	10,000
वर्ष में देय विपत्र निर्गत किए	8,000
ग्राहकों से रोकड़ प्राप्त की	30,000
ग्राहकों को रोकड़ वापस की	500
लेनदारों को भुगतान	20,700
लेनदारों से छूट प्राप्त की	270
देनदारों को छूट दी	150

टिप्पणी

अशोध्य ऋण अपलिखित किए	1,200
अशोध्य ऋण प्राप्य	300
लेनदारों को प्राप्य विपत्र बेचान किए	4,000
ग्राहकों द्वारा दिए गए प्राप्य विपत्र अनादरित हुए	1,000
बेचान विपत्र अनादरित हुए	500
भुनाये विपत्र अनादरित हुए	700
विक्रय वापसी	600
क्रय वापसी	200

हल

कुल देनदार खाता

नाम खाता

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
शेष आगे लाये	5,000	रोकड़/बैंक	30,000
उधार विक्रय (शेष धनराशि)	38,250	छूट	150
रोकड़ वापसी	500	अशोध्य ऋण	1,200
प्राप्य विपत्र (अनादरित)	1,000	विक्रय वापसी	600
लेनदार	500	प्राप्य विपत्र	10,000
बैंक (भुनायें गए अनादरित विपत्र)	700	शेष आगे ले गये	4,000
	45,950		45,950

कुल लेनदार खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
रोकड़/बैंक	20,700	शेष आगे लाये	4,000
छूट	270	उधार क्रय (शेष राशि)	34,670
प्राप्य विपत्र (बेचान)	4,000	देनदार (बेचान विपत्र अनादरित)	500
क्रय वापसी	200		
देय वापसी	8,000		
शेष आगे ले गये	6,000		
	39,170		39,170

टिप्पणी

iv. **प्राप्य विपत्र और देय विपत्र के शेष निकालना :** यदि प्राप्य विपत्र और देय विपत्र के आरम्भिक व अन्तिम शेष नहीं दिए गये हों तो अज्ञात धनराशि प्राप्य विपत्र खाता या देय विपत्र खाता बनाकर ज्ञात की जा सकती हैं।

उदाहरण 10

निम्नलिखित विवरण से प्राप्य विपत्र खाते का अन्तिम शेष तथा देय विपत्र खाते का आरम्भिक शेष ज्ञात कीजिए –

	₹
प्राप्य विपत्र का आरम्भिक शेष	11,000
देय विपत्र का अन्तिम शेष	8,000
देय विपत्र निर्गमित	35,000
भुनाये गये प्राप्त विपत्र	46,000
प्राप्य विपत्र प्राप्त किए	49,000
देय विपत्र का भुगतान किया	36,000
अनादरित प्राप्य विपत्र	1,000

हल :

प्राप्य विपत्र खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
शेष आगे लाये	11,000	रोकड़/बैंक	46,000
विविध देनदार	49,000	विविध देनदार	1,000
		शेष आगे ले गये	13,000
	60,000		60,000

देय विपत्र खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
रोकड़/बैंक	36,000	शेष आगे ले लाये	9,000
शेष आगे ले गये	8,000	विविध लेनदार	35,000
	44,000		44,000

उदाहरण 11

अशोक उचित लेखा पुस्तकें नहीं रखता है। निम्नलिखित विवरणों से वर्ष समाप्ति 31 दिसम्बर 2014 हेतु व्यापार एवं लाभ–हानि खाता बनाइए तथा उसी तिथि को तुलन–पत्र बनाइए।

	31 दिसंबर, 2013 ₹	31 दिसंबर, 2014 ₹
देनदार	9,000	12,500
स्कंध	4,900	6,600
फर्नीचर	500	750
लेनदार	3,000	2,250

अन्य लेनदेनों का विश्लेषण इस प्रकार है :

	₹
देनदारों से संग्रहित रोकड़	30,400
लेनदारों को भुगतानित रोकड़	22,000
वेतन	600
किराया	750
कार्यालय व्यय	1,500
आहरण	1,000
लगाई गई अतिरिक्त पूँजी	750
नकद विक्रय	2,500
नकद क्रय	350
छूट प्राप्त	150
छूट दी गई	500
वापसी अन्तर्वाह	400
डूबत ऋण	100

वर्ष के प्रारंभ में उसे पास ₹ 2,500 रोकड़ शेष था।

हल :

व्यापार एवं लाभ-हानि खाता
वर्ष समाप्ति 31 दिसंबर 2014 हेतु

नाम   जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
प्रारंभिक स्कंध	4,900	विक्रय :	
क्रय :		नकद 750	
नकद 2,500		उधार (नोट 3) 34,650	
उधार (नोट 4) 22,000		35,400	
घटा : वापसी 400	24,100	*घटा :* वापसी 500	34,900
सकल लाभ आ. ले.	12,500	अंतिम स्कंध	6,600
	41,500		41,500
वेतन	6,000	सकल लाभ	12,500
किराया	750	छूट प्राप्त	350
कार्यालय व्यय	900		
छूट दी गई	150		
डूबत ऋण	100		
शुद्ध लाभ, पूँजी खाते में हस्तांतरित	4,950		
	12,850		12,850

स्थिति विवरण
31 दिसंबर 2014 को

देयताएँ	राशि (₹)	संपत्तियाँ	राशि (₹)
लेनदार	2,250	रोकड़	1,000
फर्नीचर हेतु लेनदार (750–500)	250	देनदार	12,500
1.1.2014 को पूँजी 13,900		स्कंध	6,600
(नोट 1)		फर्नीचर	750
जमा : पूँजी लगाई 1,000			
शुद्ध लाभ 4,950			
19,850			
घटा : आहरण 1,500	18,350		
	20,850		20,850

टिप्पणी

परिकलन नोट्स

स्थिति विवरण
31 दिसम्बर 2013 को

देयताएँ	राशि (₹)	संपत्तियाँ	राशि (₹)
लेनदार	3,000	रोकड़ एवं बैंक शेष	2,500
पूँजी (बकाया राशि)	13,900	देनदार	9,000
		स्कंध	4,900
		फर्नीचर	500
	16,900		16,900

रोकड़ बही

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
शेष आ.ला.	2,500	विविध लेनदार	22,000
विविध देनदार	30,400	वेतन	6,000
पूँजी	1,000	किराया	750
नकद विक्रय	750	कार्यालय व्यय	900
		आहरण	1,500
		क्रय	2,500
		शेष आ. ले.	1,000
	34,650		34,650

कुल देनदार खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
शेष आ. ला.	9,000	रोकड़/बैंक	30,400
उधार विक्रय (संतोलन राशि)	34,650	छूट दी गई	150
		वापसी अन्तर्वाह	500
		डूबत ऋण	100
		शेष आ. ले.	12,500
	43,650		43,650

कुल लेनदार खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
रोकड़/बैंक	22,000	शेष आ. ला.	3,000
छूट प्राप्त	350	उधार क्रय (संतोलन राशि)	22,000
वापसी बहिर्वाह	400		
शेष आ. ले.	2,250		
	25,000		25,000

आपने क्या सीखा

- इकहरा लेखा प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें लेखांकन अभिलेखों को पुस्त पालन की दोहरा लेखा प्रणाली के अनुसार नहीं रखा जाता।
- इस प्रणाली में सामान्यतः व्यक्तिगत खाते रखे जाते हैं तथा वास्तविक एवं नाम–मात्र के खातों को रखने से बचा जाता है।
- अवस्था विवरण सभी संपत्तियों एवं देयताओं का एक विवरण है। दोनों पक्षों की राशियों के बीच का अंतर पूँजी के रूप में लिया जाता है।
- अपूर्ण अभिलेखों से लाभ ज्ञात करने हेतु दो विधियों का प्रयोग किया जाता है, जो निम्न हैं : (i) शुद्ध मूल्य विधि या अवस्था विवरण विधि (ii) रूपांतरण विधि
- अवस्था विवरण विधि में प्रारंभिक तथा अंतिम पूँजी ज्ञात करने हेतु वर्ष के प्रारंभ तथा अंत के अवस्था विवरण बनाए जाते हैं। वर्ष के दौरान अर्जित किए गए लाभ को ज्ञात करने हेतु लगाई गई अतिरिक्त पूँजी तथा आहरण के संबंध में पूँजी को समायोजित किया जाता है।
- रूपांतरण विधि में अपूर्ण अभिलेखों को दोहरा लेखा प्रणाली में रूपांतरित किया जाता है तथा लाभ ज्ञात किया जाता है।

पाठान्त प्रश्न

1. इकहरा लेखा प्रणाली को परिभाषित कीजिए तथा इसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. ऐसी किन्हीं तीन परिस्थितियों की सूची बनाइए जिनमें प्रस्तुत किए गए अभिलेख अपूर्ण होते हैं।

टिप्पणी

3. अवस्था विवरण विधि में लाभ कैसे परिकलित किया जाता है?

4. इकहरा लेखा प्रणाली से आपका क्या अभिप्राय है? इकहरा लेखा प्रणाली के उपयोगों को समझाइए।

5. ऐसी लेखा पुस्तकें जो दोहरा लेखा प्रणाली में नहीं रखी गई हैं उन्हें इस प्रणाली में रूपांतरित करने हेतु क्या कदम उठाने होंगे?

6. अरविन्द अपने व्यवसाय के उचित अभिलेख नहीं रखता है। वह आपको निम्न सूचनाएँ प्रदान करता है :

	₹
प्रारंभिक पूँजी	2,00,000
अंतिम पूँजी	2,50,000
वर्ष के दौरान आहरण	60,000
वर्ष के दौरान लगाई गई अतिरिक्त पूँजी	75,000

वर्ष का लाभ अथवा हानि परिकलित कीजिए।

7. एक दुकानदार द्वारा आपको निम्न सूचनाएँ प्रदान की गई हैं :

	1 अप्रैल 2013	*31 मार्च 2014*
	₹	₹
रोकड़	6,000	7,000
विविध देनदार	68,000	64,000
स्कंध	59,000	87,000
फर्नीचर	15,000	13,500
विविध लेनदार	20,000	18,000
देय विपत्र	15,000	11,000

वर्ष के दौरान अपने घरेलू उद्देश्यों हेतु दुकानदार ने ₹ 2,500 प्रति माह आहरित किए। उसने 1 अक्टूबर 2013 को अपने एक मित्र से ₹ 20,000 9% की दर से उधार भी लिए। उसने अभी तक कोई ब्याज नहीं दिया। देनदारों पर 5% की दर से संदिग्ध ऋणों हेतु प्रावधान करना है।

अवधि के दौरान उसके द्वारा अर्जित लाभ अथवा हानि ज्ञात कीजिए।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

21.1 I. (i) अनुमानित (ii) सरल (iii) कम

II. (i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

21.2 (i) असत्य (ii) सत्य (iii) सत्य

21.3 (i) सत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) सत्य

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

6. लाभ ₹ 35,000

7. लाभ ₹ 35,400

टिप्पणी

22

साझेदारी - एक परिचय

आप एकल स्वामित्व व्यवसाय तथा इसके खातों को तैयार करने के सम्बन्ध में सीख चुके हैं। जब व्यवसाय का विस्तार होता है तो एक व्यक्ति के लिए इस विस्तार किए गये व्यवसाय के लिए पूँजी की व्यवस्था करना तथा इसका प्रबन्ध करना इसकी क्षमता से बाहर हो जाता है। इसलिए उसके प्रयत्न एवं पूँजी की दूसरे लोगों के प्रयत्न एवं पूँजी के साथ मिला लेने की आवश्यकता होती है। इससे संगठन के साझेदारी स्वरूप का उदय होता है।

व्यवसायिक लेन देनों का प्रारम्भिक प्रविष्टि की लेखा पुस्तकों में अभिलेखन उनकी खाता बही में खतौनी करना एवं वित्तीय विवरण तैयार करना एकल स्वामित्व एवं साझेदारी फर्म से भिन्न नहीं होता है। लेकिन कुछ ऐसे मामले हैं जिनका संबन्ध केवल साझेदारी फर्म से होता है तथा उनका लेखांकन अलग से किया जाता है। यह मामले हैं फर्म के लाभों का विनियोजन, विभिन्न अवसरों पर ख्याति का लेखांकना इत्यादि। इस पाठ में साझेदारी फर्मों से संबन्धित इन्हीं समस्याओं पर ध्यान दिया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप

- साझेदारी का अर्थ और विशेषताएं बता सकेंगे;
- साझेदारी संलेख का अर्थ समझा समझ सकेंगें;
- साझेदारी संलेख न होने की दशा में साझेदारी से संबंधित विशिष्ट विषयों के लेखे के विषय बता सकेंगे;
- पूँजी खाता का अर्थ बता सकेंगे एवं इनको तैयार कर सकेंगे;
- स्थायी पूँजी एवं परिवर्तनशील पूँजी खातों में अन्तर कर सकेंगे;

- पूँजी पर ब्याज एवं आहरण पर ब्याज की गणना कर सकेंगे;
- लाभ हानि विनियोजन खाते का अर्थ व उद्देश्य बता सकेंगे और इसको तैयार कर सकेंगे।
- लाभ की गारंटी हेतु समायोजन कर पाएँगे; एवं
- तुलन पत्र बनाने के बाद पाई गई अशुद्धियों हेतु समायोजन कर पाएँगे।

22.1 साझेदारी एवं साझेदारी संलेख

साझेदारी व्यवसायिक संगठन का वह स्वरूप है जिसमें दो या अधिक व्यक्ति मिल कर व्यापार आरम्भ करते है और चलाते हैं। वे लाभ और हानि का विभाजन आपसी समझौते के अनुसार करते हैं।

भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 के अनुसार,

साझेदारी, व्यक्तियों के बीच आपसी सम्बन्ध को कहते हैं जिन्होंने किसी व्यापार से होने वाले लाभ को बांटने का समझौता किया है जिसे वे सभी मिलकर चलाते हैं या कोई एक उन सब की ओर से चलाता है।

उदाहरण के लिए, आपके एक मित्र ने राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान से बारहवीं कक्षा पास की और वह व्यापार का आरंभ करना चाहता है। उसने आप से इस कार्य को करने के लिए संपर्क किया। वह आपसे कुछ राशि एवं व्यापारिक गतिविधि में सहयोग चाहता है यदि आप दोनों मिलकर कार्य करते हैं तो यह साझेदारी का गठन होगा।

साझेदारी की विशेषताएँ निम्न हैं :

- **समझौता :** साझेदारी का गठन समझौते द्वारा होता है। यह मौखिक या लिखित हो सकता है। यह उन व्यक्तियों के बीच सम्बन्धों को परिभाषित करता है जो व्यवसाय को चलाने के लिए सहमत हुये हैं। इसमें लाभ विभाजन एवं प्रत्येक साझेदार द्वारा विनियोजित पूँजी के सम्बन्ध में लिखा जाता है। लिखित समझौते को साझेदारी संलेख कहते हैं।
- **व्यक्तियों की संख्या :** साझेदारी के गठन के लिए कम से कम दो व्यक्ति होने चाहिए। साझेदारी फर्म में साझेदारों की अधिकतम संख्या बैंकिंग कारोबार के लिए दस एवं अन्य कारोबार के लिए बीस हो सकती है
- **व्यापार :** साझेदारी का गठन किसी व्यवसाय को लाभ कमाने के उद्देश्य से चलाने के लिये किया जाता है। व्यवसाय कानून सम्मत होना चाहिए। अतः यदि दो या अधिक व्यक्ति गैर कानूनी कार्य करने के लिये सहमत होते हैं तो यह साझेदारी नहीं कही जायेगी।

- **लाभ विभाजन :** साझेदार लाभों का विभाजन निश्चित अनुपात में करने के लिए सहमत होते हैं हानि की स्थिति में सभी साझेदार इसको उसी निश्चित लाभ विभाजन अनुपात में वहन करेंगे।
- **परस्पर एजेन्सी :** प्रत्येक साझेदार अन्य साझेदारों का ऐजेन्ट होता है। प्रत्येक साझेदार फर्म एवं अन्य सभी साझेदारों को अपने कार्यों से अनुबंधित कर देता है। प्रत्येक साझेदार अन्य साझेदारों के कार्यों के लिए उत्तरदायी होगा।
- **असीमित दायित्व :** नाबालिक को छोड़कर शेष सभी साझेदारों का दायित्व असीमित होता है। उनकी निजी सम्पत्ति भी उनके दायित्व के लिए उत्तरदायी होती है। यदि फर्म की सम्पत्ति फर्म के ऋणों का भुगतान करने के लिये पर्याप्त नहीं है तो साझेदारों की निजी सम्पत्ति लेनदारों के दावों को चुकता करने के लिए उपयोग की जायेगी।
- **प्रबन्ध :** सभी साझेदारों को व्यवसाय में प्रबन्ध कार्य करने का अधिकार है। अतः वे चाहे तो प्रबन्ध कार्य किसी एक या अधिक साझेदारों को करने के लिए अधिकृत कर सकते हैं।
- **हितो/अंशों का हस्तान्तरण :** कोई भी साझेदार अपने अंशों/हितों का हस्तांतरण अन्य साझेदारों की अनुमति के बिना अपने परिवार या अन्य व्यक्तियों को नहीं कर सकता।

महत्वपूर्ण शब्द

- **साझेदारी संलेख :** समझौता साझेदारी के गठन का आधार है। समझौते का लिखित होना साझेदारी फर्म का आधार विलेख है। इसमें व्यवसाय के संचालन से सम्बन्धी शर्तों का उल्लेख होता है। इसमें साझेदारों के मध्य सम्बन्धों को लिखा जाता है इसे साझेदारी संलेख कहते हैं।

  प्रत्येक फर्म अपना साझेदारी संलेख बना सकती है, जिसमें साझेदारों के अधिकार, कर्त्तव्य और दायित्व का विस्तृत वर्णन किया जाता है। इससे साझेदारों के बीच व्यवसाय के संचालन से सम्बन्धित मतभेदों को दूर करने में सहायता मिलती है।

- **साझेदारी संलेख में लिखी बातें :** साझेदारी संलेख में समान्यतः निम्न बातों का उल्लेख होता है :

  (i) साझेदारी फर्म का नाम तथा पता

  (ii) व्यवसाय की प्रकृति तथा उद्देश्य

  (iii) प्रत्येक साझेदार का नाम एवं पता

टिप्पणी

(iv) लाभ विभाजन का अनुपात

(v) प्रत्येक साझेदार द्वारा विनियोजित पूँजी

(vi) पूँजी पर ब्याज की दर, यदि देना है

(vii) साझेदारों को वेतन, यदि देना है

(viii) साझेदार द्वारा फर्म को दिये गये ऋण व अग्रिम पर ब्याज की दर

(ix) साझेदारों द्वारा आहरण एवं उस पर ब्याज की दर यदि कोई है

(x) साझेदारी के पुर्नगठन जैसे कि प्रवेश पर, सेवानिवृति पर, साझेदार की मृत्यु पर परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन एवं ख्याति के मूल्यांकन की विधि

(xi) पंच निर्णय द्वारा मतभेदों का निपटारा

(xii) साझेदार के अवकाश ग्रहण या मृत्यु पर खातों का निपटारा

(xiii) वे परिस्थितियां जिनमें साझेदारी का समापन किया जा सकता है

(xiv) फर्म के समापन पर खातों का निपटान।

- **साझेदारी संलेख के न होने पर :** साझेदारी संलेख में साझेदारों के अधिकार कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्वों के सम्बन्ध में नियम एवं शर्तों को लिखा जाता है। साझेदारी संलेख की अनुपस्थिति में कुछ विषयों पर विवाद हो सकता है जैसे कि लाभ का विभाजन अनुपात, पूँजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज, ऋण पर ब्याज एवं साझेदारों को वेतन। ऐसी स्थिति में साझेदारी अधिनियम में दी गई व्यवस्था लागू होगी :

(i) लाभ का विभाजन : साझेदार बराबर लाभ के अधिकारी होंगे।

(ii) पूँजी पर ब्याज : पूँजी पर ब्याज नहीं दिया जायेगा।

(iii) आहरण पर ब्याज : साझेदारों के आहरण पर ब्याज नहीं लगाया जायेगा।

(iv) साझेदारों द्वारा ऋण पर ब्याज : साझेदारों द्वारा फर्म को दिये गये ऋण पर 6% वार्षिक की दर से ब्याज दिया जायेगा।

(v) साझेदार को वेतन व कमीशन : किसी भी साझेदार को व्यवसाय का प्रबन्ध करने के लिए कोई वेतन व कमीशन नहीं दिया जायेगा।

पाठगत प्रश्न 22.1

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त शब्द/शब्दों से कीजिए :

(i) साझेदारी का गठन करने के लिए कम से कम .... व्यक्तियों का होना आवश्यक है।

(ii) साझेदारी का गठन .... द्वारा होता है।

(iii) साझेदारी के लिये समझौता .... या .... हो सकता है।

(iv) साझेदारी में लिखित समझौते को .... कहा जाता है।

(v) प्रत्येक साझेदार का दायित्व .... होता है।

II. आशा और राहुल एक फर्म में साझेदार हैं यदि यहाँ पर कोई साझेदारी संलेख नहीं है तो आप निम्न का निपटारा कैसे करेंगे। अपने उत्तर हाँ या न में दीजिए :

(i) आशा ₹ 3,000 प्रति माह वेतन चाहती है। क्या वह वेतन की माँग कर सकती है?

(ii) राहुल ने फर्म को अग्रिम ऋण दिया हुआ है वह 6% वार्षिक की दर से ब्याज की मांग करता है। क्या यह उसे मिलना चाहिये?

(iii) आशा और राहुल ने ₹ 50,000 प्रत्येक ने पूँजी के लिये अभिदान किया है, राहुल, आशा से अधिक लाभ की मांग करता है। क्या यह उसे मिलना चाहिये?

(iv) आशा ने फर्म के लिये अनुबंध प्राप्त किया। वह अनुबंध की राशि का 2% कमीशन की मांग करती है। क्या उसे इस प्रकार का कमीशन मिलना चाहिये?

(v) राहुल प्रत्येक माह ₹ 500 निजी प्रयोग के लिये निकालता है। आशा राहुल के आहरण पर ब्याज लगाना चाहती है। क्या यह लिया जाये?

22.2 पूँजी खाता : अर्थ एवं बनाना

साझेदार अपने भाग की पूँजी का व्यापर में अभिदान करते हैं। इसका लेखा संबन्धित खातों में किया जाता है जिसे पूँजी खाता कहते हैं। मान लीजिए दो साझेदार हैं अ और ब तो यहाँ पर अ का पूँजी खाता एवं ब का पूँजी खाता होगा। इन खातों को दो प्रकार से रखा जा सकता है।

टिप्पणी

(अ) स्थिर पूँजी खाता

अतिरिक्त पूँजी लागाये जाने पर या चालू वर्ष के दौरान स्थायी आहरण को छोड़कर स्थिर पूँजी खाते में, पूँजी खाते का अंतिम शेष इसके आरम्भिक शेष के समान होगा। पूँजी खातों से संबंधित मदें जैसे कि पूँजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज एवं लाभ का भाग आदि का लेखा पूँजी खाते में किया जाता है। इस स्थिति में प्रत्येक साझेदार के लिए इन मदों का लेखा करने के लिए एक अलग खाता खोला जाता है। यह खाता चालू खाते के नाम से जाना जाता है। चालू खाता नाम एवं जमा शेष दिखा सकता है। स्थायी पूँजी खाता एवं चालू पूँजी खाते का प्रारूप निम्न है :

साझेदार का पूँजी खाता

नाम जमा

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (₹)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (₹)*
	बैंक (पूँजी का स्थायी आहरण)		xxx		शेष आ/ला. (पूँजी अभिदान का आरम्भिक शेष)		xxx
	शेष आ/ले (अंतिम शेष)		xxx		बैंक (अतिरिक्त पूँजी लगाई)		xxx
			xxx				xxx

साझेदार का चालू खाता

नाम जमा

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (₹)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (₹)*
	शेष आ/ला. (नाम आरंभिक शेष की)		xxx		शेष आ/ला. (जमा आरम्भिक शेष)		xxx
	आहरण खाता		xxx		वेतन		xxx
	आहरण पर ब्याज खाता		xxx		पूँजी पर ब्याज		xxx
	लाभ हानि विनियोजन (हानि में भाग के लिए)		xxx		लाभ हानि विनियोजन (हानि में भाग के लिए)		xxx
	शेष आ/ले (जमा अंतिम की स्थिति में)				शेष आ/ले (जमा अंतिम की स्थिति में)		
			xxx				xxx

(ब) परिवर्तनशील पूँजी खाता

जब पूँजी राशि के अतिरिक्त पूँजी खाते से संबन्धित अन्य मदों जैसे कि पूँजी पर ब्याज, आहरण, शुद्ध लाभ एवं शुद्ध हानि आदि को इस खाते में लिखा जाता है जिसके लिए प्रत्येक साझेदार के लिए अलग पूँजी खाता तैयार किया जाता है इसे परिवर्तनशील पूँजी खाता कहते हैं। इस स्थिति में इन समायोजनों लेखा करने के लिए एक अलग खाते की आवश्यकता नहीं है।

किसी भी सूचना की अनुपस्थिति में, पूँजी खातों को इस विधि से तैयार किया जायेगा।

साझेदार का पूँजी खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)
	शेष आ/ला. (नाम आरंभिक शेष की स्थिति में)		xxx		शेष आ/ला. (जमा आरंभिक शेष की स्थिति में)		xxx
	आहरण		xxx		बैंक (अतिरिक्त पूँजी लाई गई)		xxx
	आहरण पर ब्याज		xxx				
	लाभ हानि विनियोजन (हानि के भाग से)		xxx		वेतन खाता		xxx
					लाभ हानि विनियोजन (हानि के भाग से)		xxx
	शेष आ/ले (अंतिम जमा शेष की स्थिति में)		xxx		शेष आ/ले (अंतिम नाम शेष की स्थिति में)		xxx
			xxx				xxx

उदाहरण 1

रोहन एवं मोनिका एक फर्म में साझेदार हैं। 31 दिसम्बर 2013 को निम्न सूचनाएँ उपलब्ध कराई गई :

	रोहन (₹)	मोनिका (₹)
पूँजी (1.01.2013 को)	40,000	30,000
आहरण	3,000	2,000
पूँजी पर ब्याज	2,000	1,500
आहरण पर ब्याज	360	180
लाभ का भाग	5,000	4,000

टिप्पणी

प्रत्येक साझेदार के लिए पूँजी खाता तैयार करें यदि पूँजी (अ) स्थायी (ब) परिवर्तनशील हो।

हल

(अ) स्थायी पूँजी खाता

पूँजी खाता

नाम ... जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	रोहन (₹)	मोनिका (₹)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	रोहन (₹)	मोनिका (₹)
2013									
दिस. 31	शेष आ/ले		40,000	30,000		शेष आ/ला.		40,000	30,000
			40,000	30,000				40,000	30,000
						शेष आ/ला.		40,000	30,000

चालू खाता

नाम ... जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	रोहन (₹)	मोनिका (₹)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	रोहन (₹)	मोनिका (₹)
2013									
दिस. 31	आहरण		3,000	2,000		पूँजी पर ब्याज		2,000	1,500
	आहरण पर ब्याज		360	180		लाभ हानि			
	शेष आ/ले		3,640	3,320		विनियोजन खाता		5,000	4,000
	(अंतिम शेष)								
			7,000	5,500				7,000	5,500
						शेष आ/ला.		3,640	3.320
						(प्रारंभिक शेष)			

(ब) परिवर्तनशील पूँजी खाता

पूँजी खाता

नाम ... जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	रोहन (₹)	मोनिका (₹)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	रोहन (₹)	मोनिका (₹)
2013					2013				
दिस. 31	आहरण		3,000	2,000	जन.1	शेष आ/ला.		40,000	30,000
						(प्रारंभिक शेष)			
	आहरण पर ब्याज		360	180	दिस.31	पूँजी पर ब्याज		2,000	1,500
	शेष आ/ले		43,640	33,320		लाभ हानि			
	(अंतिम शेष)					विनियोजन		5,000	4,000
			47,000	35,500				47,000	35,500
					2014				
					जन.1	शेष आ/ला.		43,640	33,320

स्थायी एवं परिवर्तनशील पूँजी खातों में अंतर

स्थायी एवं परिवर्तनशील पूँजी खातों के बीच अंतर के मुख्य बिन्दु निम्न हैः

स्थायी पूँजी एवं परिवर्तनशील पूँजी खातों के बीच अंतर

क्र. सं.	अंतर का आधार	स्थायी पूँजी खाता	परिवर्तनशील पूँजी खाता
1.	खातों की संख्या	प्रत्येक साझेदार के लिए दो अलग खाते रखे जाते हैं जैसे कि पूँजी खाता एवं चालू खाता	प्रत्येक साझेदार के लिए एक खाता रखा जाता है जैसे कि पूँजी खाता।
2.	समायोजन	सभी समायोजनों का लेखा चालू खाते में किया जाता है। पूंजी खाते में नहीं किया जाता।	समायोजनों का लेखा सीधे पूँजी खाते में किया जाता है कोई चालू खाता नहीं खोला जाता।
3.	स्थायी शेष	पूँजी खातों का शेष विशेष परिस्थितियों को छोड़कर नहीं बदलता।	पूँजी खातों का शेष अवधि दर अवधि परिवर्तनशील होता है।
4.	शेष	पूँजी खाता प्रत्येक स्थिति में केवल जमा शेष दर्शायेगा।	अवधि के अंत में पूँजी खाता नाम या जमा शेष दर्शा सकता है।

पाठगत प्रश्न 22.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त शब्द/शब्दों से कीजिए।

i. स्थायी पूँजी खाता हमेशा केवल .... शेष दिखाता है।

ii. .... पूँजी खाता नाम या जमा शेष दिखा सकता है।

iii. यदि पूँजी .... होती है तब प्रत्येक साझेदार के लिये दो खाते रखे जाते हैं।

iv. पूँजी पर ब्याज को चालू खाते के .... पक्ष में दिखाया जाता है।

v. आहरण पर ब्याज को चालू खाते के .... पक्ष में दिखाया जाता है।

टिप्पणी

22.3 पूँजी पर ब्याज एवं आहरण पर ब्याज का लेखाकरण

पूँजी पर ब्याज

अब हम पूँजी पर ब्याज की गणना के संबंध में पढ़ेंगे। जैसा कि आप जानते हैं पूँजी पर ब्याज तब ही दिया जाता है जब साझेदारी संलेख में इसका प्रावधान हो। यदि इसका प्रावधान है तो ब्याज की दर का निर्धारण साझेदारों द्वारा किया जाता है। पूँजी पर ब्याज साझेदारों के पूँजी खातों के आरम्भिक शेष पर लगाया जायेगा। जब अतिरिक्त पूँजी लाई जाती है या कुछ पूँजी का स्थायी आहरण किया जाता है तब ब्याज की गणना विशेष अवधि के दौरान व्यापार में प्रयोग की गई राशि पर की जायेगी। ब्याज को व्यय माना जायेगा। इसको फर्म के लाभों में से लिया जायेगा। इसकी निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जायेगी।

पूँजी पर ब्याज के लिए

पूँजी पर ब्याज खाता	नाम
साझेदार का पूँजी खाता से (व्यक्तिगत)	
(पूँजी पर ब्याज पूँजी खाते में जमा करने पर)	

ब्याज की गणना प्रत्यक्ष में की जायेगी अर्थात साधारण ब्याज की गणना मूल राशि को लेकर अवधि एवं ब्याज की दर के अनुसार की जायेगी। विकल्प के तौर पर ब्याज की गणना गुणनफल विधि (Product method) द्वारा भी की जा सकती है जैसे कि मूल राशि को माह के गुणनफल में बदल कर जो कि उन माह की संख्या पर निर्भर करता है जितने महीने मूल राशि व्यापार में प्रयोग की गई है। ब्याज की गणना माह के ब्याज की दर को लेकर की जायेगी। निम्न उदाहरण में दोनों विधियों द्वारा ब्याज की गणन की गई है :

उदाहरण 2

जनवरी 1, 2013 को शिल्पा और संजू क्रमशः ₹ 1,00,000 एवं ₹ 1,60,000 की पूँजी के साथ साझेदार हैं। शिल्पा जुलाई 1, 2013 को ₹ 30,000 एवं अक्टूबर 31, 2013 को ₹ 20,000 की अतिरिक्त पूँजी लाई। 2013 को समाप्त वर्ष के लिए पूँजी पर ब्याज की गणना करें। ब्याज की दर 9% वार्षिक है।

हल

पूँजी पर ब्याज (शिल्पा)

₹ 1,00,000 पर 12 महीने के लिए 9% की दर से = $1,00,000 \times 9/100 \times 12/12$

= ₹ 9,000

₹ 30,000 पर 6 महीने के लिए 9% की दर से = 30,000 × 9/100 × 6/12
= ₹ 1,350

₹ 20,000 पर 2 महीने के लिए 9% की दर से = 20,000 × 9/100 × 2/12
= ₹ 300

शिल्पा की पूँजी पर कुल ब्याज = ₹ 9,000 + ₹ 1350 + ₹ 300
= ₹ 10,650

गुणनफल विधि (Product method) द्वारा

राशि (₹)	माह	गुणनफल
100000	12	12,00,000
30000	6	1,80,000
20000	2	40,000
कुल गुणनफल		14,20,000

पूँजी पर ब्याज $14,20,000\times\frac{9}{100}\times\frac{1}{12}$ = ₹ 10,650

पूँजी पर ब्याज (संजू)

₹ 1,60,000 पर 12 महीने के लिए 9% की दर से = 1,60,000 × 9/100 × 12/12
= ₹ 14,400

गुणनफल विधि द्वारा = 1,60,000 × 12 = 19,20,000

= $\frac{19,20,000\times 9}{12\times 100}$ = ₹ 14,400

आहरण पर ब्याज (Interest on Drawing)

जब साझेदार घरेलू प्रयोग के लिए रोकड़ फर्म से निकलता है तब इस प्रकार रोकड़ निकालने को आहरण कहा जाता है। यदि साझेदारी संलेख में आहरण पर ब्याज लगाने का प्रावधान है तो फर्म साझेदार से आहरण पर ब्याज ले सकती है। आहरण पर ब्याज फर्म के लिए अधिलाभ है इसकी गणना निर्धारित दर से की जाती है आहरण पर ब्याज की राशि को लाभ हानि समायोजन खाते में जमा और साझेदार के पूँजी खाते/चालू खाते में (व्यक्तिगत) नाम किया जायेगा। रोजनामचा प्रविष्ट निम्न प्रकार होगी :

साझेदार का पूँजी/चालू खाता नाम
आहरण पर ब्याज खाता से
(साझेदार के पूँजी खाते में आहरण पर ब्याज लगाने पर)

टिप्पणी

आहरण पर ब्याज की गणना

आहरण पर ब्याज की गणना की दो विधियाँ है :

- साधारण औसत विधि
- गुणनफल विधि

1. साधारण औसत विधि

एक निश्चित राशि का आहरण प्रत्येक माह/अर्द्ध वार्षिक/वार्षिक किया जा सकता है। ब्याज की गणना उस अवधि के लिए की जायेगी जितने समय राशि का प्रयोग साझेदार द्वारा निजी उद्देश्य के लिए किया गया है। ब्याज की राशि की गणना करने की विभिन्न परिस्थितियाँ नीचे दिखाई गई हैं :

I. जब निश्चित राशि को समान समय अंतराल में निकाला जाता है

एक निश्चित राशि को साझेदार द्वारा समान समय अंतराल में निकाला जाता है जैसे कि प्रत्येक माह, प्रत्येक तिमाही। इस स्थिति में कुल समय अवधि की गणना, राशि के माह के आरम्भ माह के मध्य या माह के अंत में निकालने पर निर्भर करती है।

उदाहरण के लिए मनीषा ने दिसम्बर 31, 2013 को समाप्त वर्ष में हर माह निजी उपयोग के लिए ₹ 1,000 प्रति माह निकाला ब्याज 12% वार्षिक दर से लगाया जायेगा। विभिन्न स्थितियों में औसत अवधि व आहरण पर ब्याज की गणना इस प्रकार होगी:

(अ) जब राशि को अवधि के आरम्भ में निकाला जाता है

आहरण की तिथि	निकाली गई राशि	अवधि (माह में)
1 जनवरी 2013	1,000	12
1 फरवरी 2013	1,000	11
1 मार्च 2013	1,000	10
1 अप्रैल 2013	1,000	9
1 मई 2013	1,000	8
1 जून 2013	1,000	7
1 जुलाई 2013	1,000	6
1 अगस्त 2013	1,000	5
1 सितम्बर 2013	1,000	4
1 अक्टूबर 2013	1,000	3
1 नवम्बर 2013	1,000	2
1 दिसम्बर 2013	1,000	1
कुल	12,000	78 माह

जब राशि को माह के आरम्भ में निकाला जाता है औसत अवधि की गणना इस प्रकार होगी

औसत अवधि	=	महीने का योग/12
	=	78 महीने/12
	=	6½ महीने
आहरण पर ब्याज	=	$12{,}000 \times \frac{12}{100} \times \frac{11}{2} \times \frac{1}{12}$
	=	₹ 780

(ब) जब राशि अवधि के अंत में निकाली जाती है

आहरण की तिथि	निकाली गई राशि	अवधि (माह में)
31 जनवरी 2013	1,000	11
28 फरवरी 2013	1,000	10
31 मार्च 2013	1,000	9
30 अप्रैल 2013	1,000	8
31 मई 2013	1,000	7
30 जून 2013	1,000	6
31 जुलाई 2013	1,000	5
31 अगस्त 2013	1,000	4
30 सितम्बर 2013	1,000	3
31 अक्टूबर 2013	1,000	2
30 नवम्बर 2013	1,000	1
31 दिसम्बर 2013	1,000	0
	12,000	66 माह

जब राशि को माह के अंत में निकाला जाता है औसत अवधि की गणना इस प्रकार की जाएगी :

औसत अवधि	=	महीने का योग/12
	=	66 महीने/12
	=	5½ महीने
आहरण पर ब्याज	=	$12{,}000 \times \frac{12}{100} \times \frac{11}{2} \times \frac{1}{12}$
	=	₹ 660

टिप्पणी

(स) जब राशि को माह के मध्य में निकाल जाता है

आहरण की तिथि	निकाली गई राशि	अवधि (माह में)
15 जनवरी 2013	1,000	11.5
14 फरवरी 2013	1,000	10.5
15 मार्च 2013	1,000	9.5
15 अप्रैल 2013	1,000	8.5
15 मई 2013	1,000	7.5
15 जून 2013	1,000	6.5
15 जुलाई 2013	1,000	5.5
15 अगस्त 2013	1,000	4.5
15 सितम्वर 2013	1,000	3.5
15 अक्टूवर 2013	1,000	2.5
15 नवम्वर 2013	1,000	1.5
15 दिसम्वर 2013	1,000	0.5
	12,000	72 माह

जब राशि को माह के मध्य में निकाला जाता है औसत अवधि की गणना इस प्रकार की जायेगी

औसत अवधि = महीने का योग/12

= 72 महीने/12

= 6 महीने

आहरण पर ब्याज = $12{,}000 \times \frac{12}{100} \times \frac{6}{12}$

= ₹ 720

(द) निश्चित राशि को समान समय अंतराल में निकालने पर

यदि साझेदार द्वारा राशि को प्रत्येक तिमाही के आरम्भ में निकाला जाता है। वर्ष के दौरान निकाली गई कुल राशि पर ब्याज की गणना 7½ महीनों के लिए की जायेगी।

उदाहरण 3

सन्नी एवं हिमांशु एक फर्म में साझेदार है लाभ का विभाजन समान अनुपात में करते हैं। वित्तीय वर्ष 2013 के दौरान प्रत्येक तिमाही के आरम्भ में सन्नी ने ₹ 20,000 निकाले। यदि आहरण पर 8% वार्षिक दर से ब्याज लगया जाता है वर्ष के अंत में लगाई जाने वाली ब्याज की राशि की गणना करें।

हल

आहरण पर ब्याज की गणना को दिखाती तालिका

तिथि	राशि (₹)	समय अवधि	ब्याज (₹)
जनवरी 1, 2013	20,000	12 माह	$20{,}000 \times \frac{8}{100} \times \frac{12}{12}$ = ₹ 1,600
अप्रैल 1, 2013	20,000	9 माह	$20{,}000 \times \frac{8}{100} \times \frac{9}{12}$ = ₹ 1,200
जुलाई 1, 2013	20,000	6 माह	$20{,}000 \times \frac{8}{100} \times \frac{6}{12}$ = ₹ 800
अक्टूबर 1, 2013	20,000	3 माह	$20{,}000 \times \frac{8}{100} \times \frac{3}{12}$ = ₹ 400
योग	80,000		₹ 4,000

विकल्प के तौर पर लेखा वर्ष के दौरान निकाली गई कुल राशि पर भी ब्याज की गणना की जा सकती है जो कि इस स्थिति में ₹ 80,000 है 7½ माह के लिए

$$\frac{(12+9+6+3)}{4} = 7\frac{1}{2} = \frac{15}{2}$$

अतः

आहरण पर ब्याज = निकाली गई कुल राशि × दर × $7\frac{1}{2} \times \frac{1}{12}$

$$= 80{,}000 \times \frac{8}{100} \times \frac{15}{2} \times \frac{1}{12} = ₹\ 4{,}000$$

(ई) जब निश्चित राशि को प्रत्येक तिमाही के अंत में निकाला जाता है

जब राशि को प्रत्येक तिमाही के अंत में निकाला जाता है तब ब्याज की राशि की गणना कुल आहरण पर 4½ माह के लिये की जायेगी। पिछले उदाहरण में यदि राशि को प्रत्येक तिमाही के अंत में निकाला जाता है औसत अवधि के लिये ब्याज की गणना 4½ माह के लिये की जायेगी। ब्याज की गणना निम्न प्रकार होगी :

आहरण पर ब्याज की गणना को दिखाती तालिका

तिथि	राशि (₹)	समय अवधि	ब्याज (₹)
मार्च 31	20,000	9 माह	$20{,}000 \times \frac{8}{100} \times \frac{9}{12}$ = ₹ 1,200

टिप्पणी

जून 30	20,000	6 माह	$20{,}000\times\frac{8}{100}\times\frac{6}{12}$ = ₹ 800
सितम्बर 30	20,000	3 माह	$20{,}000\times\frac{8}{100}\times\frac{3}{12}$ = ₹ 400
दिसम्बर 31	20,000	0 माह	₹ 0
योग	**80,000**	**18 माह**	**₹ 2,400**

विकल्प के तौर पर ₹ 80,000 पर ब्याज की गणना 4½ माह की अवधि के लिये की जायेगी

$$\frac{(9+6+3+0)}{4}=4\frac{1}{2}=\frac{9}{2}$$

आहरण पर ब्याज = ₹ $80{,}000\times\frac{8}{100}\times\frac{9}{2}\times\frac{1}{12}$ = ₹ 2,400

गुणनफल विधि (Product Method)

जब विभिन्न राशि को विभिन्न समय अंतराल में निकाला जाता है, गुणनफल विधि के अंतर्गत प्रत्येक आहरण के लिये, निकाली गई राशि को वित्तीय वर्ष के दौरान शेष अवधि से गुणा किया जायेगा। अवधि की गणना निकाली गई राशि की तिथि से लेखांकन वर्ष के अंतिम दिन तक होगी। गणना किये गये गुणनफल का योग करके एवं निर्धारित दर से 1 माह का ब्याज गुणनफल के योग पर लगाया जायेगा। ब्याज की गणना को आगे उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है।

आहरण पर ब्याज की गणना को दिखाती तालिका

तिथि	*राशि (₹)*	*समय अवधि*	*गुणनफल (₹)*
जनवरी 1, 2013	20,000	12 माह	2,40,000
अप्रैल 1, 2013	20,000	9 माह	1,80,000
जुलाई 1, 2013	20,000	6 माह	1,20,000
अक्टूबर 1, 2013	20,000	3 माह	60,000
योग	**80,000**		**6,00,000**

आहरण पर ब्याज = गुणनफल का योग × ब्याज दर × 1/12
= ₹ 6,00,000 × 8/100 × 1/12
= ₹ 4,000

पाठगत प्रश्न 22.3

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त शब्द/शब्दों से कीजिए :

i. पूँजी पर ब्याज को साझेदारों के पूँजी खाते के .... किया जाता है।

ii. आहरण पर ब्याज को साझेदारों के पूँजी खाते के .... में लिखा जाता है।

iii. साझेदारों के पूँजी खातों के .... पर ब्याज लगाया जाता है।

iv. जब राशि को प्रत्येक माह के आरम्भ में निकाला जाता है, ब्याज लगाने की औसत अवधि .... होगी।

v. जब गुणनफल विधि का प्रयोग किया जाता है, तब ब्याज की गण्ना .... के लिये की जायेगी।

II. रीमा एवं अनीश अप्रैल 2013 को क्रमशः ₹ 50,000 एवं ₹ 80,000 की पूँजी से साझेदार हैं रीमा ने 1 जनवरी 2014 को ₹ 50,000 की अतिरिक्त पूँजी लगाई। मार्च 31, 2014 को 10% वार्षिक की दर से पूँजी पर ब्याज की गणना करें।

III. आशू ने वर्ष अवधि के प्रत्येक माह के अंत में ₹ 2,000 व्यवसाय से निकाले। आहरण पर ब्याज की गणना 10% वार्षिक की दर से करें।

22.4 लाभ-हानि विनियोजन खाता : अर्थ एवं बनाना

लाभ-हानि विनियोजन खाता फर्म के लाभ-हानि खाते का विस्तार रूप है। फर्म के लाभ को साझेदारों में उनके लाभ हानि अनुपात में बांट दिया जाता है। लेकिन उनके आबंटन से पूर्व इनमें समायोजन किये जाने की आवश्यकता होती है। इस खाते में सभी समायोजन किये जाते हैं, जैसे कि साझेदार का वेतन, साझेदार का कमीशन, पूँजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज आदि। यह समायोजन आबंटन हेतु लाभ की राशि को कम कर देता है। इस समायोजित लाभ को साझेदारों में उनके लाभ-हानि अनुपात में बांट दिया जाता है। इसे तैयार करने के लिये सर्वप्रथम लाभ-हानि खाते के शेष को इस खाते में हस्तांतरित किया जाता है। लाभ-हानि विनियोजन खाते को बनाने के लिए की जाने वाली रोजनामचा प्रविष्टियां नीचे दी गई है :

1. लाभ हानि खाते का शेष लाभ हानि विनियोजन खाते में हस्तांतरित करने पर

(अ) शुद्ध लाभ की स्थिति में

लाभ-हानि खाता   नाम

    लाभ-हानि विनियोजन खाता से

(शुद्ध लाभ को लाभ-हानि विनियोजन खाते में हस्तांतरित करने पर)

(ब) शुद्ध हानि की स्थिति में

लाभ-हानि विनियोजन खाता नाम

लाभ-हानि खाते से

(शुद्ध हानि का लाभ-हानि विनियोजन खाते में हस्तांतरण)

2. पूँजी पर ब्याज के लिये

पूँजी पर ब्याज को हस्तांतरित करने के लिए

लाभ-हानि विनियोजन खाता नाम

पूँजी पर ब्याज खाता से

(पूँजी पर ब्याज को लाभ-हानि विनियोजन खाते में हस्तांतरित करने पर)

3. आहरण पर ब्याज लगाने के लिए

आहरण पर ब्याज का हस्तांतरण करने के लिए

आहरण पर ब्याज खाता नाम

लाभ-हानि विनियोजन खाता से

(आहरण पर ब्याज को लाभ-हानि विनियोजन खाते में हस्तांतरित करने पर)

4. साझेदार को वेतन के लिये

लाभ-हानि विनियोजन खाता नाम

वेतन खाता से

(वेतन को लाभ-हानि समायोजन खाते में हस्तांतरित करने पर)

5. साझेदार को कमीशन के लिए

कमीशन को हस्तांतरित करने के लिए

लाभ-हानि विनियोजन खाता नाम

कमीशन खाता से

(कमीशन को लाभ-हानि समायोजन खाते में हस्तांतरित करने पर)

6. शेष को सामान्य संचय में हस्तांतरण करने के लिए

लाभ हानि विनियोजन खाता नाम

सामान्य संचय खाता से

(शेष का सामान्य संचय खाते में हस्तांतरण)

7. विनियोजन पर लाभ एवं हानि के भाग के लिये

(क) यदि लाभ हो

लाभ हानि विनियोजन खाता नाम

साझेदारों का पूँजी/चालू खाता से

(शेष का सामान्य संचय में हस्तांतरण)

टिप्पणी

(ब) यदि हानि हो

साझेदारों का पूँजी/चालू खाता नाम

लाभ हानि विनियोजन खाता से

(हानि का पूँजी/चालू खाते में हस्तांतरण)

लाभ हानि विनियोजन खाते का प्रारूप निम्न प्रकार होगा

लाभ हानि विनियोजन खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
लाभ हानि खाता (यदि हानि हो)	xxx	लाभ हानि खाता (यदि लाभ हो)	xxx
साझेदारी की पूँजी पर ब्याज खाता	xxx	आहरण पर ब्याज	xxx
साझेदारों का वेतन खाता	xxx	साझेदारों के पूँजी खाते (हानि का विभाजन)	xxx
साझेदारों का कमीशन खाता	xxx		
साझेदारों द्वारा ऋण पर ब्याज खाता	xxx		
साझेदारों के पूँजी खाते (लाभों का विभाजन)	xxx		
	xxx		**xxx**

उदाहरण 4

मोनिका एवं कृष्णा क्रमशः ₹ 80,000 एवं ₹ 1,00,000 की पूँजी के साथ साझेदार हैं। वे निम्न शर्तों पर सहमत हुये :

(अ) लाभ का एक समान विभाजन होगा।

(ब) पूँजी पर 9% वार्षिक की दर से ब्याज दिया जायेगा।

(स) आहरण पर 6% वार्षिक की दर से ब्याज लगाया जायेगा।

(द) कृष्णा को 600 रु. प्रतिमाह वेतन दिया जायेगा

(च) वर्ष के दौरान मोनिका ने ₹ 8,000 एवं कृष्णा ने ₹ 6,000 निकाले।

दिसम्बर 31, 2013 को समाप्त वर्ष में लाभ ₹ 56,000 हुआ। आप लाभ हानि विनियोजन खाता तैयार करे।

हल

कार्यकारी टिप्पणी

पूँजी पर ब्याज :

मोनिका = ₹ 80,000 × 9/100
= ₹ 7,200

कृष्णा = ₹ 1,00,000 × 9/100
= ₹ 9,000

आहरण पर ब्याज :

मोनिका द्वारा आहरण = ₹ 8,000

ब्याज = ₹ 8,000 × 6/100
= ₹ 480

कृष्णा द्वारा आहरण = ₹ 6,000

ब्याज = ₹ 6,000 × 6/100
= ₹ 360

लाभ हानि विनियोजन खाता

नाम जमा

विवरण		*राशि (₹)*	*विवरण*		*राशि (₹)*
पूँजी खातों पर ब्याज :			लाभ व हानि		56,000
मोनिका	7,200		आहरण पर ब्याज		
कृष्णा	9,000	16,200	मोनिका	480	
कृष्णा को वेतन		7,200	कृष्णा	360	840
लाभ का साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरण :					
मोनिका	16,720				
कृष्णा	16,720	33,440			
		56,840			**56,840**

पाठगत प्रश्न 22.4

i. उन मदों की सूची बनाइये जो कि सामन्यता लाभ-हानि विनियोजन खाते के नाम पक्ष में दर्शायी जाती है।

ii. यदि लाभ-हानि खाते का नाम शेष है लाभ हानि विनियोजन खाते में राशि का हस्तांतरण करने के लिए क्या लेखा प्रविष्टि की जायेगी?

iii. जब आहरण पर ब्याज को लाभ हानि विनियोजन खाते में हस्तांतरित किया जाता है, तब बहियों में क्या रोजनामचा प्रविष्टि की जायेगा?

22.5 लाभ की गारन्टी

कभी–कभी एक साझेदार फर्म में प्रवेश करता है। वह व्यवसाय में न्यूनतम लाभ की गारन्टी चाहता है। ऐसी गारन्टी बाहरी साझेदार को भी दी जा सकती है। ऐसी गारन्टी प्रवेश पाने वाले साझेदार को इस प्रकार दी जा सकती है।

a) सभी पुराने साझेदारों की सहमति अनुपात में, या

b) कुछ पुराने साझेदारों के या किसी एक पुराने साझेदार के

जब सभी साझेदार, एक साझेदार को न्यूनतम लाभ की गारन्टी देंगे, तब हमें निम्न दो राशियों की गणना अलग से करेंगे।

1) गारन्टी साझेदार के लाभ का हिस्सा उसे लाभ विभाजन अनुपात में

2) गारन्टी साझेदार की न्यूनतम लाभ की गारन्टी की राशि

उपर्युक्त दोनों में से जो भी अधिक हो, वह ही उस साझेदार को दिया जाता है। लाभ का शेष (कुल लाभ में से गारन्टी वाले साझेदार को दिया जाने वाला लाभ को घटाकर) शेष साझेदारों को उन के लाभ अनुपात में बाँट दिया जाता है।

जब नए साझेदार का लाभ अनुपात गारन्टी राशि से अधिक हो तो लाभ की गारन्टी राशि के बजाय उसको लाभ का वास्तविक हिस्सा दिया जाएगा।

उदाहरण 5 (फर्म के द्वारा एक साझेदार को न्यूनतम लाभ की गारन्टी देना)

X और Y का लाभ अनुपात 2 : 1 है और 1 अप्रैल, 2009 से वे Z को लाभ मे 1/10 हिस्से के साथ न्यूनतम गारन्टी ₹ 16,000 के साथ प्रवेश करता है। X और Y पहले की तरह लाभ में हिस्सा रखते हैं। 31 मार्च, 2011 वर्ष के अंत में लाभ की राशि ₹ 10,00,000 थी लाभ–हानि समायोजन खाता तैयार कीजिए।

टिप्पणी

हल :

लाभ-हानि समायोजन खाता

31 मार्च, 2011

नाम | जमा

विवरण		*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
साझेदारों की पूँजी			लाभ–हानि खाता से वर्ष का लाभ	10,00,000
X	5,60,000			
Y	2,80,000			
Z	1,60,000	10,00,000		
		10,00,000		10,00,000

नोट : Z को निम्न में से अधिक प्राप्त होगा

(i) लाभ का हिस्सा उससके लाभ विभाजन अनुपात में

₹ 10,00,000 का भाग

$$₹\ 10{,}00{,}000 \times \frac{1}{10} = ₹\ 1{,}00{,}000$$

(ii) न्यूनतम लाभ की गारन्टी ₹ 1,60,000

इस प्रकार ₹ 10,00,000 में से ₹ 1,60,000 (जो अधिक है) Z को पहले दिया जाएगा तथा शेष ₹ 84,000 का (₹ 10,00,000 – ₹ 1,60,000) X और Y में उनके लाभ अनुपात 2 : 1 में बाँट दिया जाएगा।

प्रभाव

X को ₹ 56,00,000 मिलेंगे (₹ 8,40,000 का 2/3 भाग) : Y को ₹ 2,80,000 (₹ 8,40,000 का 1/3 भाग) और Z को ₹ 1,60,000 (न्यूनतम लाभ) मिलेंगे।

जब साझेदारों में (एक कुछ स्थिति में एक से अधिक साझेदार) न्यूनतम लाभ की गारन्टी होती है। समायोजन साझेदारों के पूंजी अनुपात में होगा

निम्नलिखित तथ्यों का अनुसार करें–

1. साझेदारों के बीच में लाभ उनके लाभ विभाजन अनुपात में बाँटे।
2. यदि गारन्टी साझेदार का लाभ का हिस्सा कम रह जाता है, तब अन्तर की राशि को साझेदारों के वास्तविक हिस्से में से घटाकर, गारन्टी साझेदार के हिस्से में जोड़ दिया जाएगा।

यदि दो या अधिक साझेदार गारन्टी देते हैं, तब जितना कम है (कमी) उसे उन साझेदारों की सहमति अनुपात में या उनके लाभ अनुपात में जैसी सहमति हो।

उदहारण 6 (एक साझेदार के द्वारा लाभ की गारन्टी)

A, B और C एक फर्म में साझेदार है। उनका लाभ विभाजन 5 : 3 : 2 है। जैसा कि C को ₹ 50,000 तक की प्रत्येक वर्ष न्यूनतम लाभ की गारन्टी दी गई। यदि कोई भी कमी रह जाने पर B इसे पूरा करेगा। दो वित्तीय वर्षो के अन्त का लाभ निम्न 31 मार्च 2010 और 2011 को ₹ 2,00,000 और ₹ 3,00,000 थे।

दो वर्षों का लाभ–हानि समायोजन खाते तैयार कीजिए।

हल :

लाभ-हानि समायोजन खाते
31 मार्च 2010 के वित्तीय वर्ष का

नाम जमा

विवरण		*राशि*	*विवरण*	*राशि*
लाभ हस्तांतरण का			लाभ–हानि खाते से (शुद्ध लाभ)	2,00,000
A की पूँजी खाता (5/10)		1,00,000		
B का पूँजी खाता (3/10)	60,000			
– C का हस्तांतरण	10,000	50,000		
C का पूँजी खाता (2/10)	40,000			
+ B से हस्तांरण	10,000	50,000		
		2,00,000		2,00,000

लाभ-हानि समायोजन खाता
31 मार्च 2011 वित्तीय वर्ष के अन्त में

नाम जमा

विवरण	*राशि*	*विवरण*	*राशि*
लाभ हस्तांतरण का		लाभ–हानि खाते से (शुद्ध लाभ)	3,00,000
A की पूँजी खात से (5/10)	1,50,000		
B का पूँजी खाता से (3/10)	90,000		
C का पूँजी खाता से (2/10)	60,000		
	3,00,000		3,00,000

नोट : C का हिस्सा न्यूनतम गारन्टी लाभ से अधिक है, इसलिए किसी भी समायोजन की आवश्यकता नहीं है।

टिप्पणी

उदाहरण 7 न्यूनतम लाभ की गारन्टी (फर्म के एक साझेदार से दूसरे साझेदार के लिए)

P, Q और R ने 1 अप्रैल 2010 को एक साझेदारी में 5 : 3 : 2 के अनुपात में अपना लाभ–हानि अनुपात के लिए प्रवेश किया। 'P' 'R' के लाभ के हिस्से की गारन्टी देता है। पूँजी पर ब्याज @ 5% प्रतिवर्ष लगाने के पश्चात उसे किसी भी वर्ष ₹ 30,000 से कम लाभ नहीं दिया जाएगा।

पूँजी निम्न है : A – ₹ 3,20,000; B – ₹ 2,00,000 और C – ₹ 1,60,000। 31 मार्च 2011 के वित्तीय वर्ष के अन्त में लाभ ₹ 1,59,000 था (पूँजी पर ब्याज लगाने से पूर्व)। वित्तीय वर्ष 31 मार्च 2011 के अंत में लाभ–हानि समायोजन खाता तैयार कीजिए।

हल

लाभ-हानि समायोजन खाता
(31 मार्च, 2011 के वित्तीय वर्ष के अंत में)

नाम | जमा

विवरण		राशि	विवरण	राशि
पूँजी पर ब्याज खाते का			लाभ–हानि खाते से (शुद्ध लाभ)	1,59,000
P	16,000			
Q	10,000			
R	8,000	34,000		
शेष नीचे लाए		1,25,000		
		1,59,000		1,59,000
लाभ का हिस्सा			शेष नीचे ले गए	1,25,000
P : 1,25,000 का 5/10	62,500			
– गारन्टी का समायोजन	5,000	57,500		
Q : 1,25,000 का 2/10		37,500		
R : 1,25,000 का 2/10	25,000			
+ गारन्टी का समायोजन	5,000	30,000		
		1,25,000		1,25,000

उदाहरण 8

M और N का लाभ विभाजन अनुपात 3 : 2 का था। फर्म में 'O' उनका मैनेजर जो ₹ 24,000 वेतन लेता था और शुद्ध लाभ का 5% कमीशन वेतन और कमीशन काटने के पश्चात है। उन्होंने उसे 1 अप्रैल 2010 को साझेदारी में 1/8 लाभ के लिए प्रवेश देते है।

31 मार्च 2011 वर्ष के अंत में लाभ ₹ 4,44,000 था। लाभ–हानि समायोजन खाता तैयार कीजिए।

टिप्पणी

हल :

लाभ-हानि समायोजन खाता
31 मार्च 2011 वित्तीय वर्ष के अन्त का

नाम | जमा

विवरण		राशि	विवरण	राशि
लाभ का हस्तांतरण				
M का पूंजी खाते का	2,40,000			
घटाए : O का हस्तांतरण	−4,600	2,35,400		
N का पूंजी खाते का	1,60,000			
घटाए : O में हस्तांतरण	6,900	1,53,100		
O का पूंजी खाते का	44,000			
जोड़ : A से	4,600			
B से	6,900	55,500		
		4,44,000		4,44,000

कार्यरत नोट :

1. वर्ष का लाभ = 4,44,000

   'O' साझेदार का अनुपात (1/8 x 4,44,000) = 55,500

   घटाए : 'O' को वेतन दिया = 24,000

   कमीशन $\frac{5}{105}$ (₹ 4,44,000 − ₹ 24,000) = 20,000

   44,000

   कमी = 11,500

   कमी को M और N को 2 : 3 से लेना है।

   M सहन करेगा = $11{,}500 \times \frac{2}{5} = 4{,}600$

   N सहन करेगा = $11{,}500 \times \frac{3}{5} = 6{,}900$

2. M और N को लाभ होगा (₹ 4,44,000 − O का अनुपात ₹ 44,000)

   = ₹ 4,00,000

   M का अनुपात = ₹ $4{,}00{,}000 \times \frac{2}{5}$ = ₹ 2,40,000 − कमी का अनुपात

   N का अनुपात = ₹ $4{,}00{,}000 \times \frac{3}{5}$ = ₹ 1,60,000 − कमी का अनुपात

टिप्पणी

उदाहरण 9 (साझेदार के द्वारा न्यूनतम लाभ की गारन्टी फर्म को और फर्म के द्वारा साझेदार न्यूनतम लाभ की गारन्टी)

साझेदार के द्वारा न्यूनतम लाभ की गारन्टी फर्म को और चार्टड एकाउन्टेन्ट A, B और C एक साझेदारी में उनके लाभ–हानि अनुपात 3 : 2 : 1 होगा। जिसमें निम्नलिखित समायोजनाएं है।

i) C का हिस्सा ₹ 3,00,000 प्रतिवर्ष से कम की लाभ गारन्टी होगी।

ii) B गारन्टी देता है। पांच सालों के दौरान सकल औसत फीस उसके द्वारा कमाई इस व्यवसाय में लाएगा (औसत ₹ 5,00,000 होगी)।

साझेदारी के पहले पांच वर्षों का लाभ (31 मार्च 2011 वर्ष के अन्त में) ₹ 15,00,000 है। फर्म में B की समल फीस ₹ 3,20,000 है।

इससे लाभ–हानि समायोजन खाता तैयार करना है। (उपर्युक्त प्रभाव के पश्चात)

हल

लाभ-हानि समायोजन खाता

31 मार्च 2011 वर्ष के अंत में

नाम जमा

विवरण		राशि	विवरण	राशि
लाभ का हस्तांतरण			लाभ–हानि खाते से (शुद्ध लाभ)	15,00,000
A का पूंजी खाते का	8,40,000		B के पूंजी खाते से	1,80,000
घटाएं : C की कमी का हस्तातंरण	12,000	8,28,000		
B के पूंजी खाते का	5,60,000			
घटाएं : C की कमी का हस्तांतरण	8,000	5,52,000		
C के पूंजी खाते का	2,80,000			
+ A से	12,000			
B से	8,000	3,00,000		
		16,80,000		16,80,000

रफ कार्य

1. साझेदारी के पहले वर्ष का लाभ — 15,00,000

जोड़ : B के द्वारा गारन्टी फीस और वास्तविक फीस का अन्तर (₹ 5,00,000 – ₹ 3,20,000) — 1,80,000

16,80,000

फर्म की सकल फीस का कार्यक्रम

A का अनुपात $= ₹\ 16{,}80{,}000 \times \frac{3}{6} = ₹\ 8{,}40{,}000$

B का अनुपात $= ₹\ 16{,}80{,}000 \times \frac{2}{6} = ₹\ 5{,}60{,}000$

C का अनुपात $= ₹\ 16{,}80{,}000 \times \frac{1}{6} = ₹\ 2{,}80{,}000$

2. C की न्यूनतम गारन्टी ₹ 3,00,000 है। कमी की राशि ₹ 20,000 को A और B 3 : 2 के अनुपात में सहन करेंगे।

   A का लाभ अनुपात = ₹ 8,40,000 – ₹ 12,000 = ₹ 8,28,000

   B का लाभ अनुपात = ₹ 5,60,000 – ₹ 8,000 = ₹ 5,52,000

   C का लाभ अनुपात = ₹ 2,80,000 + ₹ 12,000 (A) + ₹ 8,000 (B) = ₹ 3,00,000

इस संदर्भ में, एक साझेदार को न्यूनतम लाभ की गारन्टी, एक फर्म द्वारा और साझेदारों द्वारा भी दी जाती है। पहले गारन्टी फर्म देती है। उसके बाद साझेदारों के प्रभावित हुए लाभों की गारन्टी देते हो यह निम्न उदाहरण से स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण 10 (फर्म और साझेदारों द्वारा गारन्टी देना)

P, Q, R और S साझेदारी का लाभ–हानी अनुपात 4 : 3 : 2 : 1 है। उनकी पूंजी 1 अप्रैल 2012 को क्रमशः ₹ 3,00,000; ₹ 2,50,000; ₹ 1,50,000 और ₹ 1,00,000 है।

फर्म ने S को लाभ अनुपात पूंजी पर ब्याज को छोड़कर ₹ 2,50,000 से कम नहीं की गारन्टी देता है। R का लाभ अनुपात पूंजी पर ब्याज और वेतन को जोड़कर ₹ 2,60,000 से कम नहीं की गारन्टी P देता है। 31 मार्च 2012 का वर्ष का लाभ ₹ 9,00,000 पूंजी पर ब्याज @ 10% और R का वेतन @ ₹ 10,000 मासिक देने से पहले था।

लाभ–हानि समायोजन खाता लाभों को बाँटने के बाद का बनाओ।

हल

लाभ-हानि समायोजन खाता

31 मार्च 2014 के वित्तिय वर्ष के अंत में

नाम | जमा

विवरण		*राशि*	*विवरण*	*राशि*
पूंजी पर ब्याज			लाभ–हानि खाते से (लाभ)	9,00,000
P (₹ 3,00,000 x 10/100)	30,000			
Q (₹ 2,50,000 x 10/100)	25,000			
R (₹ 1,50,000 x 10/100)	15,000			
S (₹ 1,00,000 x 10/100)	10,000	80,000		

लाभ का अनुपात				
(₹ 9,00,000 – ₹ 80,000				
– ₹ 1,20,000 = ₹ 7,00,000)				
P 4/10 x 7,00,000	2,80,000			
– कमी फर्म के द्वारा सहन				
(1,80,000 x 4/9)	80,000			
R के द्वारा सहन कमी	25,000	1,75,000		
Q ₹ 7,00,000 x 3/10	2,10,000			
– कमी सहन (फर्म)	60,000	1,50,000		
R ₹ 7,00,000 x 2/10	1,40,000			
– कमी (फर्म)				
(1,80,000 x 2/9)	40,000			
	1,00,000			
+ P से कमी को पूरा किया	25,000	1,25,000		
S ₹ 7,00,000 x 1/10	70.000			
+ कमी को पूरा किया				
(P, Q और R)	1,80,000	2,50,000		
		9,00,000		9,00,000

टिप्पणी

कार्यरत नोट :

1. फर्म की कमी की गणना

S का लाभ अनुपात पूंजी पर ब्याज को छोड़कर	
फर्म ने गारन्टी दी	2,50,000
घटाए : S का लाभ अनुपात (₹ 7,00,000 x 1/10)	70,000
	1,80,000

2. P और R से पूर्ति की कमी की गणना

R का लाभ अनुपात (₹ 7,00,000 x 2/10)		1,40,000
घटाए : फर्म की कमी में R का अनुपात (₹ 1,80,000 x 2/9)		40,000
		1,00,000
जोड़ : पूंजी पर ब्याज	15,000	
वेतन	1,20,000	1,35,000
		2,35,000
P से कमी की पूर्ति		25,000
R का अनुपात पूंजी पर ब्याज और वेतन को जोड़कर और P द्वारा गारन्टी पर		2,60,000

टिप्पणी

पूर्व समायोजनाऐं (पूंजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज, वेतन और लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन)

कभी–कभी वित्तीय वर्ष के अन्त में साझेदारों के खाते बन्द करने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि खातों में कुछ गलतियाँ या भूलचूक हो गई। इस परिस्थिति में पुराने खातों में बदलाव करने के बजाय अगले साल की आर्थिक चिट्ठा में समायोजन प्रविष्टि से अशुद्धि और भूलचूक जैसी गलती का सुधार हो जाता है। प्रायः निम्न प्रकार की प्रविष्टि बनाई जाती है।

i. पूंजी पर और आहरण पर ब्याज में भूलचूक।

ii. साझेदारों के मध्य गलत अनुपात में लाभ विभाजन।

iii. जिस साझेदार के पुरानी तिथि से प्रभावी लाभ विभाजन अनुपात में बदलाव।

iv. किसी साझेदार को वेतन या कमीशन में भूलचूक।

उदाहरण 11

P, Q और R लाभ–हानि अनुपात 3 : 2 : 1 में साझेदार है। अन्तिम खाते बनाने के पश्चात वह ज्ञात हुआ कि आहरण पर ब्याज लगाना भूल गए। साझेदारों के आहरण पर ब्याज P – ₹ 500, Q – ₹ 360 और R – ₹ 200 था। आवश्यक समायोजना के लिए जर्नल प्रविष्टि दीजिए।

हल

P के आहरण पर ब्याज	=	₹ 500
Q के आहरण पर ब्याज	=	₹ 360
R के आहरण पर ब्याज	=	₹ 200
साझेदारों से आहरण पर कुल ब्याज	=	₹ 1060

₹ 1060 के राशि फर्म की आय है। लेकिन इसे पहले वर्ष लाभ–हानि खाते के क्रेडिट से रिकार्ड नहीं था। अतः पहले वर्ष का लाभ अब बढ़ जाएगा। अतः यह लाभ ₹ 1060 साझेदारों में उनके लाभ–हानि अनुपात 3 : 2 : 1 में विभाजित हो जाएगा। जो कि P – ₹ 265, Q – ₹ 177 और R – ₹ 88 की राशि होगी।

द्वारा समायोजन

		P	*Q*	*R*	*कुल*
आहरण पर ब्याज	नाम	500	360	200	1060
₹ 1,060 का विभाजन	जमा	530	354	176	1060
अंतर		30 जमा	6 नाम	24 नाम	

टिप्पणी

अतः समायोजित प्रविष्टि होगी

जर्नल प्रविष्टि

तिथि	विवरण		जमा राशि	नाम राशि
	P का पूंजी खाता	नाम	6	
	Q का पूंजी खता	नाम	24	
	R के पूंजी खाते से			30
	(पहले वर्ष के खातों में आहरण पर ब्याज से प्रविष्टि जो भूल गए)			

उदहारण 12

A, B और C साझेदार अपना लाभ–हानि अनुपात 3 : 2 : 1 है। अन्तिम खाते बनाने के पश्चात यह ज्ञात हुआ कि आहरण पर @ 5% ब्याज नहीं लगाया। साझेदारों के आहरण निम्न थे। A – ₹ 75,000; B – ₹ 60,000 आवश्यक समायोजित जर्नल प्रविष्टि कीजिए।

हल

आहरण पर ब्याज की गणना : क्योंकि आहरण की तिथि नहीं दी गई, ब्याज 6 माह का निकाला जाएगा।

A : ₹ 75,000 पर 5% (6 माह)	=	₹ 1,875
B : ₹ 63,000 पर 5% (6 माह)	=	₹ 1,575
C : ₹ 60,000 पर 5% (6 माह)	=	₹ 1,500
		₹ 4,950

समायोजना

		A	B	C	कुल
आहरण पर ब्याज	नाम	1,875	1,575	1,500	4,950
₹ 4,950 का विभाजन (3 : 2 : 1)	जमा	2,475	1,650	825	4,950
		600 जमा	75 जमा	675 नाम	

अतः समायोजित प्रविष्टि होगी

जर्नल प्रविष्टि

तिथि	विवरण		जमा राशि	नाम राशि
	C का पूंजी खाता	नाम	675	
	A का पूंजी खता से			600
	B के पूंजी खाते से			75
	(आहरण पर ब्याज में भल का समायोजन)			

उदाहरण 13

M और N एक फर्म में 3 : 2 के अनुपात में साझेदार है। उनकी स्थायी पूंजी ₹ 2,00,000 और ₹ 3,00,000 है। साझेदारी संविदा के अनुसार निम्न हैं–

i. पूंजी पर ब्याज @ 10% प्रतिवर्ष

ii. आहरण पर ब्याज @ 12% प्रतिवर्ष

31.3.2014 के वित्तीय वर्ष के अंत में, M प्रत्येक माह के अंत में ₹ 1,000 का आहरण करता है और N प्रत्येक माह के शुरू में ₹ 2,000 का आहरण करता है। M के आहरण पर ब्याज की गणना नहीं की गई।

M के आहरण पर ब्याज की गणना करो तथा इसके लिए समायोजित जर्नल प्रविष्टि कीजिए।

हल

M के आहरण पर ब्याज की गणना।

वर्ष में कुल आहरण = ₹ 1,00 x 12 = 12,000

जब माह के अंत में समान राशि का आहरण किया जाता है तो ब्याज की गणना $5\frac{1}{2}$ माह के औसत अवधि से होगी।

$$\text{आहरण पर ब्याज} = 12{,}000 \times \frac{12}{100} \times \frac{5.5}{12} = ₹\ 660$$

समायोजन

		M	*N*	*कुल*
आहरण पर ब्याज	नाम	660	--	660
₹ 660 का विभाजन (3 : 2)	जमा	396	264	660
अन्तर		264 नाम	264 जमा	

समायोजन प्रविष्टि

तिथि	*विवरण*	*जमा राशि*	*नाम राशि*
	M का चालू खाता जमा	264	
	N का पूंजी खाते से		264
	(आहरण पर ब्याज के भूल का समायोजन)		

टिप्पणी

उदाहरण 14

X, Y और Z जिनका लाभ–हानि विभाजन अनुपात 5 : 4 : 3 है। उनकी पूंजी 1 अप्रैल 2013 को ₹ 5,00,000; ₹ 4,00,000 और ₹ 2,00,000 थी। 31 मार्च 2014 को अन्तिम खाते तैयार करने के पश्चात यह पाया गया कि साझेदारी सहमति के अनुसार पूंजी पर ब्याज @ 10% प्रतिवर्ष। Y का वार्षिक वेतन ₹ 60,000 और Z का वेतन ₹ 70,000 था, दिए बिना ही लाभ वितरित कर दिया गया। सभी साझेदारी अगले वर्ष के शुरूआत में समायोजित प्रविष्टि करने के लिए सहमत हो गए। ब्याज आर्थिक चिट्ठे में बदलाव करने की अपेक्षा/जर्नल प्रविष्टि कीजिए यदि पूंजी स्थायी नहीं हो तो।

हल

समायोजन

	X	Y	Z	कुल
पूंजी पर ब्याज @ 10% प्रतिवर्ष	50,000	40,000	20,000	1,10,000
वेतन	--	60,000	70,000	1,30,000
भुगतान वाली कुल राशि जमा	50,000	1,00,000	90,000	2,40,000
₹ 2,40,00 की फर्म हानि का विभाजन 5 : 4 : 3 में नाम	1,00,000	80,000	60,000	2,40,000
	50,000 नाम	20,000 जमा	30,000 जमा	--

जर्नल प्रविष्टि
31 मार्च 2014

तिथि	*विवरण*	*जमा राशि*	*नाम राशि*
मार्च 31	X का पूंजी खाता जमा	50,000	
	Y का पूंजी खाते का		20,000
	Z के पूंजी खाते का		30,000
	(पूंजी पर ब्याज और वेतन समायोजित प्रविष्टि की भूल)		

उदाहरण 15

राम और रहीम एक फर्म में 7 : 5 के अनुपात में साझेदार है। उनकी स्थायी सम्पत्ति ₹ 10,00,000 और ₹ 7,00,000 थी। साझेदारी संविदा निम्न देती है–

i. पूंजी पर ब्याज @ 12% प्रतिवर्ष

ii. राम का वार्षिक वेतन ₹ 72,000 तथा रहीम ₹ 500 प्रतिमाह का वेतन दिया जाता है।

31 मार्च 2014 का वर्ष के अंत में लाभ ₹ 5,04,000 जिसे समान अनुपात में बाँट लिया गया। समायोजित प्रविष्टि कीजिए।

हल

समायोजन

		राम	*रहीम*	*कुल*
पूंजी पर ब्याज	जमा	1,20,000	84,000	2,04,000
वेतन	जमा	72,000	60,000	1,32,000
पूंजी पर ब्याज और वेतन दर के बाद लाभ होगा ₹ 5,04,000 - ₹ 2,04,000 - ₹ 1,32,000 = ₹ 1,68,000। यह उनके लाभ–हानि अनुपात 7 : 5 होगा		98,000	70,000	1,68,000
शुद्ध राशि जो प्राप्त होनी चाहित	जमा	2,90,000	2,14,000	5,04,000
घटाए : लाभ जो समान अनुपात में बँटा	नाम	2,52,000	2,52,000	2,52,000
शुद्ध प्रभाव		38,000 जमा	38,000 नाम	

समायोजित प्रविष्टि

तिथि	*विवरण*		*जमा राशि*	*नाम राशि*
2014	रहीम का पूंजी खाता	जमा	38,000	
अप्रै. 1	राम का चालू खाता से			38,000
	(पूँजी पर ब्याज, वेतन और लाभ का गलत बंटवारे की प्रविष्टि)			

उदाहरण 16

P, Q और R एक फर्म में 2 : 3 : 5 के लाभ हानि अनुपात में साझेदार है। उनकी स्थायी पूंजी ₹ 5,00,000; ₹ 10,00,000 और ₹ 20,00,000 थी। वर्ष 2014 में पूंजी पर ब्याज @ 12% की बजाय 10% क्रेडिट कर दिया गया। आवश्यक समायोजित प्रविष्टि कीजिए।

टिप्पणी

हल

समायोजन

		P	Q	R	कुल
ब्याज का अधिक्य	नाम	10,000	20,000	40,000	70,000
अनुपात 2 : 3 : 5 में विभाजन	जमा	14,000	21,000	35,000	70,000
शुद्ध प्रभाव		4,000 जमा	1,000 जमा	5,000 नाम	

समायोजित प्रविष्टि

तिथि	*विवरण*	*जमा राशि*	*नाम राशि*
	R का चालू खाता जमा	5,000	
	P का चालू खाते से		4,000
	Q के चालू खाते से		1,000
	(ब्याज के अधिक्य का समायोजन किया)		

उदाहरण 17 (पूंजी पर ब्याज की कमी का सुधार)

अमर, अकबर और एन्थनी एक फर्म में 2 : 1 : 2 के अनुपात में साझेदार है। उनकी स्थायी सम्पत्ति ₹ 30,00,000; ₹ 10,00,000 और ₹ 20,00,000 है। वर्ष 2014 में पूंजी पर ब्याज @ 10% प्रतिवर्ष की बजाय 9% प्रतिवर्ष लगाया गया। ब्याज लगाने से पूर्व का लाभ ₹ 25,00,000 था। आवश्यक समायोजित प्रविष्टि कीजिए।

हल

समायोजन

		अमर	अकबर	एन्थनी	कुल
ब्याज की कमी	जमा	30,000	10,000	20,000	60,000
2 : 1 : 1 के अनुपात में विभाजन	नाम	24,000	12,000	24,000	60,000
शुद्ध प्रभाव		6,000 जमा	2,000 नाम	4,000 नाम	

समायोजित प्रविष्टि

31 मार्च 2014

तिथि	*विवरण*	*जमा राशि*	*नाम राशि*
	अकबर का चालू खाता जमा	2,000	

टिप्पणी

	एन्थनी का चालू खाते से	4,000	
	अमर के चालू खाते से		6,000
	(...)		

उदाहरण 18

A, B और C एक फर्म में साझेदार है। 1 अप्रैल 2013 को उनकी पूंजी ₹ 3,00,000; ₹ 1,50,000 और ₹ 1,50,000 था।

i. C को ₹ 3,00,000 प्रतिवर्ष पारिश्रमिक दिया जाता है।

ii. पूंजी पर 5% प्रतिवर्ष ब्याज दिया जाएगा

iii. लाभ को 2 : 2 : 1 के अनुपात में बांटा जाएगा।

उपर्युक्त समायोजनाओं को नजर अंदाज करते हुए 31 मार्च 2014 को वर्ष के अंत में लाभ ₹ 1,80,000 था जो कि तीनों में समान अनुपात में बांट दिया गया।

अशुद्धि का शोधन करते हुए समायोजन प्रविष्टि कीजिए। समस्त क्रियाओं को स्पष्ट दर्शाइए।

हल

समायोजन

	A	B	C	कुल
C को पारिश्रमिक जमा	--	--	30,000	30,000
पूंजी पर ब्याज जमा	15,000	7,500	7,500	30,000
पारिश्रमिक और पूंजी पर ब्याज देने के बाद का लाभ ₹ 1,80,000 - ₹ 30,000 - ₹ 30,000 = ₹ 1,20,000 यह लाभ–हानि के 2 : 2 : 1 के अनुपात में बंटेगे।	48,000	48,000	24,000	1,20,000
शुद्ध राशि की प्राप्ति जमा	63,000	55,500	61,500	1,80,000
घटाए : लाभ जो कि समान अनुपात में बांटा जा चुका	60,000	60,000	60,000	1,80,000
	3,000 जमा	4,500 नाम	1,500 जमा	

समायोजन प्रविष्टि

तिथि	*विवरण*	*जमा राशि*	*नाम राशि*
	B का पूंजी खाता जमा	4,500	
	A का पूंजी खाते का		3,000

टिप्पणी

	C के पूंजी खाते का (पारिश्रमिक पूंजी पर ब्याज और गलत लाभ का बंटवारा का समायोजन)		1,000

उदाहरण 19

X, Y और Z लाभ अनुपात 2 : 2 : 1 के अनुपात में है। Z चाहता है कि वह X और Y से समान अनुपात में है और आगे वह चाहता है कि गत तीन वर्षों के लाभ से लाभ अनुपात के बदलाव में कोई प्रभाव नहीं होता। X और Y को कोई आपत्ति नहीं है। गत तीन वर्षों के लाभ क्रमशः ₹ 60,000; ₹ 40,000 और ₹ 50,000 था। गत तीन वर्षों के लाभ से समायोजित प्रविष्टि कीजिए।

हल

समायोजन

	X	Y	Z
तीन वर्षों का कुल लाभ 60,000 + 40,000 + 50,000 = 1,50,000 यह लाभ 2 : 2 : 1 के अनुपात में विभाजित हो चुका है	60,000	60,000	80,000
यदि लाभ को समान अनुपात में बांटा गया 1,50,000 / 3 = 50,000	50,000	50,000	50,000
	10,000 नाम	10,000 नाम	30,000 जमा

उपर्युक्त सारणी से यह स्पष्ट है कि X और Y दोनों ₹ 60,000 प्राप्त करते हैं, जबकि प्रत्येक को ₹ 50,000 प्राप्त होने थे। इसलिए X और Y दोनों ₹ 10,000 प्रत्येक Z के पक्ष में त्याग करते है।

निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टि इस उद्देश्य के लिए की जाएगी

समायोजन प्रविष्टि

तिथि	*विवरण*	*जमा राशि*	*नाम राशि*
	X का पूंजी खाता जमा Y का पूंजी खाता जमा Z के पूंजी खाते का (अधिक राशि X और Y को दी गई जो कि अब सही की गई)	10,000 10,000	 20,000

उदाहरण 20

राम, मोहन और सोहन एक फर्म में साझेदार थे। 31 मार्च 2014 के वित्तीय वर्ष के अन्त में पूंजी पर ब्याज @ 10% प्रतिवर्ष लगाना भूल गए। उनके स्थायी पूंजी जिन पर ब्याज की गणना करनी थी वो निम्न हैं।

राम ₹ 10,00,000; मोहन ₹ 8,00,000; सोहन ₹ 7,00,000

आवश्यक समायोजन जर्नल प्रविष्टि कीजिए।

हल

3 वर्षों के ब्याज की गणना –

A : 10,00,000 पर 10% (तीन वर्षों का)	3,00,000
B : 8,00,000 पर 10% (तीन वर्षों का)	2,40,000
C : 7,00,000 पर 10% (तीन वर्षों का)	2,10,000
	7,50,000

समायोजन

		राम	मोहन	सोहन	कुल
पूंजी पर ब्याज	जमा	3,00,000	2,40,000	2,10,000	7,50,000
₹ 75,000 को समान अनुपात में बंटा गया।	नाम	2,50,000	2,50,000	2,50,000	7,50,000
अन्तर		50,000 जमा	10,000 नाम	40,000 नाम	

समायोजन प्रविष्टि

31 मार्च 2014

तिथि	*विवरण*	*जमा राशि*	*नाम राशि*
	मोहन का चालू खाता जमा	10,000	
	सोहन का चालू खाता जमा	40,000	
	राम के चालू खाते का		50,000
	(तीन वर्षों का सुधारात्मक पूंजी पर ब्याज में भूल का समायोजन किया गया)		

नोट : जब पूंजी स्थायी होती है तो चालू खातों में डेबिट और क्रेडिट किया जाएगा।

आपने क्या सीखा

- **साझेदारी की विशेषताएँ हैं :** (i) समझौता; (ii) व्यक्तियों की संख्या; (iii) व्यवसाय; (iv) लाभ का विभाजन; (v) असीमित दायत्वि; (vi) प्रबन्धन; (vii) सहयोग संस्था; (viii) हित का हस्तांतरण

- **साझेदारी संलेख (Partnership Deed) :** समझौते का लिखित रूप वह प्रलेख है जिसमें व्यापार को चलाने के नियम एवं शर्तों का एवं साझेदारों के बीच संबंध का उल्लेख होता है। यदि यहाँ पर कोई साझेदारी संलेख नहीं है या कुछ विषयों पर यह मौन है तब साझेदारी अधिनियम लागू होता है। ये विषय हैं : (i) लाभ का विभाजन; (ii) पूँजी पर ब्याज; (iii) आहरण पर ब्याज; (iv) साझेदारों को वेतन व कमीशन; (v) साझेदारों के ऋण पर ब्याज

- **पूँजी खाता :** व्यवसाय में साझेदार द्वारा दिया गया अभिदान पूँजी कहलता है। यह पूँजी स्थायी या परिवर्तनशील हो सकती है।

  (अ) स्थायी पूँजी खाता : प्रत्येक साझेदार के लिए दो खाते रखे जाते है जैसे कि पूँजी खाता व चालू खाता।

  (ब) परिवर्तनशील पूँजी खाता : प्रत्येक साझेदार के लिए केवल एक ही खाता रखा जाता है जैसे कि पूँजी खाता।

- **लाभ-हानि विनियोजन खाता (Profit and Loss Appropriation Account) :** इस खाते के द्वारा सभी समायोजन किये जाते है जैसे कि साझेदारों को वेतन, साझेदारों को कमीशन, पूँजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज आदि।

- **लाभ की गारन्टी :** इस संदर्भ में एक साझेदार को न्यूनतम लाभ की राशि की गारन्टी दी जाती है। यदि उसका लाभ का अनुपात कम है तो भी उसको गारंटी की राशि दी जाएगी। इस कमी की पूर्ति को या तो एक साझेदार या सभी साझेदार वहन करेंगे किसी भी अनुपात में। यदि कोई सहमति नहीं है तो बचे हुए साझेदार अपने पुराने लाभ–हानि अनुपात में देंगे। यदि वास्तविक लाभ का हिस्सा गारन्टी राशि से अधिक है, तब उसको वास्तविक हिस्सा ही दिया जाएगा।

- **पूर्व समायोजन :** यदि वार्षिक खाते बन्द करने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि कुछ अशुद्धियाँ, तो स्वीकार होती हो या कुछ भूल से हो जती है। इन सभी अशुद्धियों को सुधारात्मक समायोजन प्रविष्टि से होती है। ये प्रविष्टि आर्थिक चिट्ठा में दखल अंदाजी किए बिन की जाती है। ये प्रविष्टि गत में हुई गलती को सुधार के लिए होती है। इसलिए ये गत समायोजनाओं के नाम से जानी जाती है।

पाठान्त प्रश्न

1. साझेदारी की विशेषताओं का वर्णन करें।
2. किसी साझेदारी संलेख की अनुपस्थिति में कौन-कौन से प्रावधान लागू होंगे?
3. स्थायी और परिवर्तनशील पूँजी खातों के मध्य अंतर करे।
4. लाभ-हानि विनियोजन खाता क्यों बनाया जाता है?
5. अ और ब एक फर्म में साझेदार है जनवरी 1, 2013 को उनकी पूँजी क्रमशः ₹ 3,00,000 और ₹ 2,00,000 है। वर्ष के दौरान उनका आहरण ₹ 3,000 प्रति माह प्रत्येक का है। पूँजी पर 6% का ब्याज दिया जाता है। वर्ष का लाभ ₹ 4,00,000 है। पूँजी पर ब्याज की गणना करे जब कि पूँजी खाते स्थिर है।
6. एक्स और वाई बराबर के साझेदार हैं। वे ₹ 4,000 प्रति माह आहरण करते हैं। निम्न स्थितियों में पूँजी पर 4% वार्षिक की दर से ब्याज की गणना करें:

   (i) यदि वे प्रत्येक माह के आरंभ में आहरण करते हैं।

   (ii) यदि वे प्रत्येक माह के अंत में आहरण करते हैं।

   (iii) यदि वे प्रत्येक माह के मध्य में आहरण करते हैं।
7. नमन और असमिता जनवरी 1, 2006 को ₹ 1,00,000 प्रत्येक की पूँजी के साथ व्यापार आरम्भ करते हैं। आहरण पर ब्याज क्रमशः ₹ 200 व ₹ 100 है। इनको पूँजी पर 8% वार्षिक ब्याज दिया जाता है। नमन को ₹ 2,000 प्रति माह वेतन दिया जाता है वे ब्याज व वेतन से पहले ₹ 94,000 का लाभ अर्जित करते हैं। वे लाभ का बटवारा 2 : 1 के अनुपात में करते हैं।

   लाभ व हानि विनियोजन खाता और साझेदारों के पूँजी खाते बनाइये।
8. रोहन और भानू एक फर्म में साझेदार है। मार्च 1, 2006 को पूँजी का शेष निम्न है

विवरण	*रोहन (₹)*	*भानू (₹)*
पूँजी खाता	90,000	1,20,000
चालू खाता	8,000 (नाम)	4,000 (जमा)
आहरण	5,000	6,000

शुद्ध लाभ, पूँजी पर ब्याज और साझेदारों को वेतन देने से पहले ₹ 25,600 हैं। वे निम्न शर्तों पर सहमत हुये :

टिप्पणी

(i) लाभ व हानि को बराबर बाटा जायेगा।

(ii) पूँजी पर 6% ब्याज दिया जायेगा।

(ii) भानू को ₹ 900 प्रति माह वेतन दिया जायेगा।

लाभ हानि विनियोजन खाता और साझेदारों के पूँजी खाते बनाइये।

9. एम और आर के साझेदारी समझौते से निम्न शर्तें उपलब्ध है

(i) लाभ का विभाजन 3 : 2 के अनुपात में होगा।

(ii) एम को ₹ 500 प्रति माह वेतन दिया जायेगा।

(iii) साझेदारों के स्थिर पूँजी खातों पर 8% का ब्याज दिया जाएगा।

(iv) साझेदारों के आहरण पर 6% ब्याज लगाया जाएगा।

(v) एम और आर की स्थिर पूँजी क्रमशः ₹ 2,00,000 और ₹ 1,50,000 है उनके द्वारा क्रमशः ₹ 10,000 व ₹ 12,000 का आहरण किया गया। दिसम्बर 2006 को समाप्त वर्ष के लिये शुद्ध लाभ ₹ 62,000 है।

लाभ-हानि विनियोजन खाता तैयार कीजिए।

10. लाभ की गारन्टी से आप क्या समझते हैं। संक्षेप में वर्णन करो।

11. गत समायोजनाओं का वर्णन करो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

22.1 I. (i) दो (ii) समझौता (iii) लिखित
(iv) साझेदारी संलेख (v) असीमित

II. (i) नहीं (ii) हाँ (iii) नहीं (iv) नहीं (v) नहीं

22.2 (i) जमा (ii) चालू (iii) स्थिर (iv) जमा (v) नाम

22.3 I. (i) जमा (ii) नाम (iii) आरम्भिक शेष
(iv) 6½ माह (v) एक माह

II. पूँजी पर ब्याज रीमा ₹ 6,250 व अनीश ₹ 8,000

III. आहरण पर ₹ 1,100 ब्याज

22.4 (i) साझेदारों को वेतन, साझेदारों को कमीशन, पूँजी पर ब्याज, साझेदारों को ऋण पर ब्याज

(ii) लाभ हानि विनियोजन खाता नाम
लाभ हानि खाता से

(iii) आहरण पर ब्याज खाता नाम
लाभ हानि विनियोजन खाता से

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

5. पूँजी पर ब्याज अ ₹ 18,000 और ब ₹ 12,000
6. (i) ₹ 1,040 (ii) ₹ 880 (iii) ₹ 960
7. लाभ का विभाजन नमन ₹ 36,200 असमिता ₹ 18,100 पूँजी खातों में शेष नमन ₹ 1,56,000 और असमिता ₹ 1,20,000
8. लाभ का विभाजन रोहन ₹ 1,100 और भानू ₹ 1,100 चालू खाते में शेष रोहन ₹ 9,500 भानू ₹ 9,100
9. लाभ का विभाजन एम ₹ 17,592 और आर ₹ 11,728

टिप्पणी

क्रियाकलाप

अपनी सम्प्रेषण योग्यता का उपयोग कर किन्हीं पाँच फर्मों के साझेदारी संलेख प्राप्त कीजिए। इन संलेखों को ध्यान से पढ़िये। उन प्रावधानों की पहचान कीजिए जो एक समान नहीं है। उन बातों का भी पता लगाइए जिन्हें आप एक साझेदारी संलेख में सम्मिलित करना चाहेंगे।

	फर्म का नाम	*वह मदें जो केवल फर्म के लिए हैं*	*सम्मिलित की जाने वाली मदे*
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

उन मदों की सूची तैयार करें जिनको आप साझेदारी संलेख में सम्मिलित करने का सुझाव देगें।

1. ....

2. ....

23

साझेदार का प्रवेश

कपिल एवं कृष खिलौनों का व्यापार करने की साझेदारी फर्म चला रहे हैं। वे अपने इलाके के बहुत सफल व्यवसायी हैं। वे अपने व्यवसाय में भिन्नता के लिए इलेक्ट्रोनिक्स से चलनेवाले खिलौनों का निर्माण आरम्भ करने का निर्णय लेते हैं। इसके लिए उनको अधिक पूँजी एवं तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता है। उनका मित्र मोहित इलेक्ट्रोनिक अभियंता है। उसके पास पूँजी भी है। वे उसको प्रोत्साहित करते हैं कि वह उनकी फर्म में आ जाए। इस स्थिति में यदि वह साझेदारी फर्म में आ जाता है तो यह साझेदार के प्रवेश की स्थिति होगी। इसके परिणामस्वरूप उसे पूँजी एवं अपने भाग की ख्याति लानी होगी। इस पाठ में आप साझेदार के प्रवेश के समय ख्याति एवं अन्य समायोजन के संबंध में पढ़ेंगे। मोहित पूँजी एवं अपने भाग की ख्याति लाएगा। उसके प्रवेश पर, वर्तमान फर्म की कुछ परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों को उनके वास्तविक मूल्य में लाने के लिए कुछ परिवर्तन की आवश्यकता है। यहाँ पर उसके प्रवेश पर वित्त से सम्बन्धित कुछ अन्य विषय हो सकते हैं। इन सभी का लेखा करने की आवश्यकता है। इस पाठ में आप, साझेदार के प्रवेश के समय किए जाने वाले लेखांकन एवं समायोजनों के बारे में पढ़ेगें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात्, आप :

- साझेदार के प्रवेश का अर्थ बता सकेंगे;
- नया लाभ विभाजन अनुपात एवं त्याग अनुपात की गणना कर सकेंगे;
- ख्याति का अर्थ एवं प्रभावित करने वाले कारकों को बता सकेंगे;
- ख्याति के मूल्यांकन की विधियों का वर्णन कर सकेंगे;
- ख्याति के लेखाकरण का वर्णन कर सकेंगे;

- परिसम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन एवं दायित्वों के पुनर्निर्धारण की आवश्यकता को समझा सकेंगे;
- परिसम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन एवं दायित्वों के पुनर्निर्धारण के फलस्वरूप उत्पन्न परिवर्तनों का लेखाकरण कर सकेंगे;
- अविभाजित लाभ एवं संचयों के लेखाकरण को समझा सकेंगे;
- साझेदारों के पूंजी खातों में किए जाने वाले समायोजनों को समझा सकेंगे;
- पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते एवं पुनर्गठित फर्म का स्थिति विवरण बना सकेंगे।

23.1 साझेदार का प्रवेश

अर्थ, नया लाभ विभाजन अनुपात एवं त्याग अनुपात

अर्थ

पहले से ही अस्तित्व में साझेदारी फर्म व्यवसाय के विस्तार एवं विविधिकरण के कार्य को जब हाथ में लेती है तो उसे प्रबन्धन के लिए अतिरिक्त पूँजी की आवश्यकता होती हैं। साझेदारी फर्म के सामने एक विकल्प नए साझेदार/साझेदारों को प्रवेश देना है। जब किसी वर्तमान साझेदारी फर्म में साझेदार को प्रवेश दिया जाता है तो इसे साझेदार का प्रवेश कहते हैं।

> *भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 के अनुसार यदि कोई अन्य समझौता नहीं हुआ है तो नए साझेदार का प्रवेश सभी वर्तमान साझेदारों की अनुमति से ही दिया जा सकता है।*

नए साझेदार के प्रवेश पर, साझेदारी फर्म का पुनर्गठन नए समझौते के साथ होता है। उदाहरण के लिए, रेखा एवं नितेश साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 5 : 3 के अनुपात में करते हैं। वे अप्रैल 1, 2014 को नीतू को नए साझेदार के रूप में फर्म के लाभ में 1/4 भाग के लिए प्रवेश देते हैं। इस स्थिति में, नीतू के साझेदार के रूप में प्रवेश पर फर्म का पुनर्गठन होगा।

नए साझेदार के प्रवेश पर निम्न समायोजन आवश्यक हैं :

(i) लाभ विभाजन अनुपात का समायोजन;

(ii) ख्याति का समायोजन;

(iii) परिसम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन एवं दायित्वों के पुनर्निर्धारण के लिए समायोजन;

(iv) संचित लाभों एवं संचयों का विभाजन; एवं

(v) साझेदारों की पूँजी का समायोजन।

टिप्पणी

लाभ-विभाजन अनुपात में समायोजन

जब नया साझेदार प्रवेश लेता है तब वह अपने भाग के लाभ का अधिग्रहण वर्तमान साझेदारों से करता है। इसके परिणामस्वरूप, नई फर्म के लाभ-विभाजन अनुपात का निर्णय नए साझेदार एवं वर्तमान साझेदारों के बीच आपस में लिया जाता है। आने वाला साझेदार भविष्य में अपने लाभों का अधिग्रहण, या तो एक से या अधिक वर्तमान साझेदारों से कर सकता है। वर्तमान साझेदार अपने लाभ के भाग का त्याग नए साझेदार के पक्ष में करते हैं अतः नए लाभ–विभाजन अनुपात की गणना करना आवश्यक हो जाता है।

त्याग अनुपात

नए साझेदार के प्रवेश के समय, वर्तमान साझेदार, नए साझेदार के पक्ष में अपने कुछ भाग का समर्पण करते हैं। वह अनुपात जिसमें वह अपने लाभ के भाग का, आनेवाले साझेदार के पक्ष में त्याग करते हैं, त्याग अनुपात कहलाता है। नए साझेदार द्वारा वर्तमान साझेदार के लाभ का भाग लेने के लिए, क्षतिपूर्ति राशि का भुगतान किया जाता है, जो कि वे नए साझेदार के पक्ष में समर्पण करते हैं।

त्याग अनुपात की गणना निम्न प्रकार से की जाएगी :

त्याग अनुपात = वर्तमान अनुपात – नया अनुपात

नया लाभ-विभाजन अनुपात एवं त्याग अनुपात की गणना करने के लिए निम्न स्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं :

(i) केवल नए साझेदार का भाग दिया गया हो

इस स्थिति में, यह माना जाता है कि वर्तमान साझेदार शेष लाभ को उसी अनुपात में निरंतर विभाजित करते रहेंगे जिसमें वह नए साझेदार के प्रवेश से पहले विभाजन करते हैं अतः वर्तमान साझेदारों के नए अनुपात की गणना लाभ के शेष भाग को उनके वर्तमान अनुपात में विभाजित करके की जाएगी। त्याग अनुपात की गणना, वर्तमान अनुपात में से नए अनुपात को घटाकर की जाएगी।

उदाहरण 1

दीपक एवं विवेक साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 3 : 2 के अनुपात में करते हैं। वे लाभ में 1/5 भाग के लिए नए साझेदार आशू को प्रवेश देते हैं। नए लाभ विभाजन अनुपात एवं त्याग अनुपात की गणना करें।

हल :

नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना :

टिप्पणी

माना कुल लाभ = 1

नए साझेदार का भाग = 1/5

शेष भाग = 1 – 1/5 = 4/5

दीपक का नया भाग = 4/5 का 3/5 = 12/25

विवेक का नया भाग = 4/5 का 2/5 = 8/25

आशू का भाग = 1/5

दीपक, विवेक एवं आशू का नया लाभ विभाजन अनुपात

= 12/25 : 8/25 : 1/5 = 12/25 : 8/25 : 5/25 = 12 : 8 : 5

अतः दीपक का त्याग = 3/5 – 12/25 = 15/25 – 12/25 = 3/25

विवेक का त्याग = 2/5 – 8/25 = 10/25 – 8/25 = 2/25

त्याग अनुपात = 3 : 2

वर्तमान साझेदारों का त्याग अनुपात उनके वर्तमान अनुपात के समान है।

(ii) नया साझेदार अपने लाभ का भाग वर्तमान साझेदारों से निश्चित अनुपात में क्रय करता है

इस स्थिति में, वर्तमान साझेदारों के नए लाभ विभाजन अनुपात का निर्धारण त्याग को उनके भाग से घटाकर किया जाएगा। इसका अर्थ यह है कि आने वाला साझेदार, वर्तमान साझेदारों से निश्चित अनुपात में लाभ के कुछ भाग का क्रय करता है।

उदाहरण 2

नेहा एवं प्रतीक साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 5 : 3 के अनुपात में करते हैं। वे निशा को लाभ में 1/6 भाग के लिए नए साझेदार के रूप में प्रवेश देते हैं। वह इस भाग को 1/8 नेहा से एवं 1/24 भाग प्रतीक से लेते है। नए लाभ विभाजन अनुपात एवं त्याग अनुपात की गणना करें।

हल :

नेहा एवं प्रतीक का वर्तमान अनुपात = 5 : 3

नेहा का नया भाग = 5/8 – 1/8 = 4/8 या 12/24

प्रतीक का नया भाग = 3/8 – 1/24 = 8/24

निशा का भाग = 1/8 + 1/24 = 4/24

टिप्पणी

नेहा, प्रतीक एवं निशा का नया लाभ विभाजन अनुपात

12/24 : 8/24 : 4/24

= 12 : 8 : 4 = 3 : 2 : 1

त्याग अनुपात = 1/8 : 1/24 या 3 : 1

(iii) वर्तमान साझेदार अपने भाग का निश्चित हिस्सा नए साझेदार के पक्ष में समर्पण करते हैं

इस स्थिति में प्रत्येक साझेदार द्वारा त्याग किए गए भाग का निर्धारण किया जाता है। इसका निर्धारण वर्तमान साझेदारों के भाग में उनके त्याग अनुपात को गुणा करके किया जाता है। वर्तमान साझेदारों को त्याग किए गए भाग का उनके वर्तमान भाग में से घटा दिया जाएगा। इससे वर्तमान साझेदारों का नया भाग तय होगा। आने वाले साझेदार का भाग, वर्तमान साझेदारों द्वारा त्याग का योग होगा।

उदाहरण 3

हिम एवं राज लाभ का विभाजन 5 : 3 के अनुपात में करते हैं। जौली को साझेदार के रूप में प्रवेश दिया जाता है। हिम अपने भाग का 1/5 एवं राज अपने भाग का 1/3 जौली के पक्ष में समर्पण करता है। नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना करें।

हल :

हिम द्वारा अपने भाग का 1/5 समर्पण = 5/8 का 1/5 = 1/8

राज द्वारा अपने भाग का 1/3 समर्पण = 3/8 का 1/3 = 1/8

अतः हिम एवं राज का त्याग अनुपात 1/8 : 1/8 या समान है

हिम का नया भाग = 5/8 – 1/8 = 4/8

राज का नया भाग = 3/8 – 1/8 = 2/8

जौली का भाग = 1/8 + 1/8 = 2/8

हिम, राज एवं जौली का नया लाभ विभाजन अनुपात

= 4/8 : 2/8 : 2/8 या 4 : 2 : 2 या 2 : 1 : 1.

पाठगत प्रश्न 23.1

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्द/शब्दों से कीजिए :

(i) त्याग अनुपात की गणना वर्तमान साझेदारों के .... भाग के लाभ में से लाभ के .... भाग को घटा कर की जायेगी।

(ii) नए साझेदार के प्रवेश पर साझेदारी फर्म का .... होता है।

(iii) वह अनुपात जिसमें साझेदार अपने लाभ का समर्पण करते हैं .... कहलाता है।

(iv) वर्तमान साझेदारों के नए अनुपात की गणना, लाभ के शेष भाग को उनके .... में विभाजित कर की जाती है।

टिप्पणी

II. यदि तरुण एवं निशा साझेदार हैं तथा लाभ का विभाजन 5 : 3 के अनुपात में करते हैं उनका त्याग अनुपात क्या होगा, यदि राहुल को फर्म के लाभ में 1/8 भाग के लिए प्रवेश दिया जाता है।

23.2 ख्याति : अर्थ, ख्याति को प्रभावित करने वाले कारक एवं मूल्यांकन

ख्याति का अर्थ

कुछ समय अवधि के बाद, व्यवसायिक फर्म का ग्राहकों में अच्छा नाम एवं विश्वास उत्पन्न हो जाता है। यह व्यवसाय को नए आरम्भ किए गए व्यवसाय की तुलना में कुछ अतिरिक्त लाभ अर्जित करने में सहायता करता है। लेखांकन में इस अतिरिक्त लाभ के पूँजीकृत मूल्य को ख्याति के रूप में जाना जाता है। उदाहरण के लिए, आपकी फर्म ₹ 1,200 लाभ अर्जित करती है एवं आपकी फर्म का सम्भावित सामान्य लाभ ₹700 है। प्रत्याय की दर (Rate of return) 10% है। इस स्थिति में ख्याति का निर्धारण निम्न प्रकार होगा :

चरण 1 : अधिलाभ = वास्तविक लाभ – अपेक्षित सामान्य लाभ

$$= 1200 - 700 = 500$$

चरण 2 : ख्याति $= 500 \times \frac{100}{10} = ₹\ 5{,}000$

अन्य शब्दों में ख्याति, भविष्य में सामान्य लाभ से अधिक लाभ अर्जित करने के सम्बन्ध में फर्म की प्रतिष्ठा का मूल्य है। इसको इस प्रकार भी परिभाषित किया जा सकता है कि यह भविष्य में लाभ अर्जित करने की वर्तमान मूल्य क्षमता है। इसका अर्थ है कि एक फर्म की ख्याति केवल तभी कही जा सकती है यदि वह भविष्य में लाभ अर्जन करने की क्षमता रखती है। एक फर्म अन्य फर्मों की तरह केवल सामान्य लाभ अर्जित करती है, वह ख्याति का दावा नहीं कर सकती है।

ख्याति को प्रभावित करने वाले कारक

ख्याति को प्रभावित करने वाले कारक निम्न है :

1. **स्थिति :** यदि फर्म केन्द्रित स्थान पर है परिणामस्वरूप अच्छा विक्रय होगा, ख्याति का रुझान ऊँचा होगा।

टिप्पणी

2. **व्यवसाय की प्रकृति :** एक फर्म जो उच्च मूल्य की वस्तुओं का निर्माण करती है या स्थिर माँग रखती है, वह अधिक लाभ अर्जन करने में सक्षम है; अतः वस्तुओं की ख्याति अधिक होगी।
3. **कुशल प्रबंधन :** अच्छी तरह से फर्म का प्रबंधन अधिक लाभ अर्जित करता है; अतः ख्याति का मूल्य भी अधिक होगा।
4. **गुणवत्ता :** यदि फर्म अपनी वस्तुओं की गुणवत्ता के कारण जानी जाती है तो ख्याति का मूल्य अधिक होगा।
5. **बाजार की स्थिति :** एकाधिकार की स्थिति में अधिक लाभ अर्जित होगा जो कि अधिक ख्याति का सूचक है।
6. **विशेष लाभ :** जिन फर्मों को विशेष लाभ प्राप्त होते हैं, जैसे आयात लाइसेंस, सामग्री के वितरण का लम्बी अवधि का अनुबंध, पेटेंट्स, व्यापारिक चिह्न आदि तो उनकी ख्याति का मूल्य ऊँचा होगा।

ख्याति के मूल्यांकन की विधियाँ

सामान्यतः ख्याति के मूल्यांकन की विधि का निर्णय सभी साझेदारों के बीच साझेदारी संलेख को बनाने के दौरान लिया जाता है। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन करने की महत्वपूर्ण विधियाँ निम्न हैं :

(i) औसत लाभ विधि (Average profit method)

(ii) अधिलाभ विधि (Super profit method)

(iii) पूँजीकरण विधि (Capitalisation method)

आइए इन विधियों के बारे में पढ़ें।

1. **औसत लाभ विधि :** इस विधि के अन्तर्गत, कुछ दिए गए वर्षों के लाभों का औसत निकाला जाता है। ख्याति के मूल्य की गणना औसत लाभ के सहमत वर्षों की संख्या से क्रय करके की जाएगी। अतः ख्याति की गणना निम्न प्रकार होगी :

   ख्याति का मूल्य = औसत लाभ × क्रय वर्षों की संख्या

   उदाहरण के लिए, फर्म के 3 वर्षों का औसत लाभ ₹ 25,000 है एवं ख्याति की गणना औसत लाभ के 2 वर्षों के क्रय के लिए ऐसे में ख्याति ₹ 50,000 होगी (₹ 25,000 × 2) अतः ख्याति की गणना इस प्रकार होगी।

   ख्याति = औसत लाभ × क्रय वर्षों की संख्या

   = 25,000 × 2 = ₹ 50,000

उदाहरण 4

पिछले 5 वर्षों के एक फर्म के लाभ निम्न प्रकार से हैं : वर्ष 2001, ₹ 1,20,000 वर्ष 2002, ₹ 1,50,000 वर्ष 2003, ₹ 1,70,000 वर्ष 2004, ₹ 1,90,000 वर्ष 2005 ₹ 5,00,000 फर्म की ख्याति की गणना 5 वर्षों के औसत लाभ के 3 वर्षों के क्रय के आधार पर करें।

हल :

वर्ष	लाभ (₹)
2001	1,20,000
2002	1,50,000
2003	1,70,000
2004	1,90,000
2005	2,00,000
योग	8,30,000

औसत लाभ = कुल लाभ/वर्षों की संख्या

= ₹ 8,30,000/5 = ₹ 1,66,000

ख्याति = औसत लाभ × क्रय वर्षों की संख्या

= 1,66,000 × 3 = ₹ 4,98,000

2. **अधिलाभ विधि :** अधिलाभ, सामान्य लाभ से वास्तविक लाभ का आधिक्य है यदि एक नया व्यापार निवेशित पूँजी पर निश्चित प्रतिशत से लाभ अर्जित करता है तो यह सामान्य लाभ कहलाता है। ख्याति के मूल्य की गणना, अधिलाभ को क्रय वर्षों की संख्या से गुणा करके की जाएगी। सामान्य लाभ वह लाभ है। जो कि इसी प्रकार के अन्य व्यवसाय द्वारा अर्जित किया जाता है। सामान्य लाभ की गणना इस प्रकार की जाएगी:

सामान्य लाभ (Normal profit) : = निवेशित पूँजी × सामान्य प्रत्याय दर/100

वास्तविक लाभ (Normal profit) : यह वर्ष के दौरान अर्जित किया गया लाभ है या यह पिछले कुछ वर्षों के लाभ का औसत लिया गया है।

अधिलाभ (Super profit) = वास्तविक लाभ – सामान्य लाभ

उदाहरण के लिए एक फर्म ₹ 4,80,000 की पूँजी पर ₹ 65,000 लाभ अर्जित करती है इसी प्रकार के व्यवसाय में सामान्य प्रत्याय दर 10% है अतः सामान्य लाभ ₹ 48,000 (₹ 48,000 का 10%) होगा। वास्तविक लाभ ₹ 65,000 है। अतः

अधिलाभ = वास्तविक लाभ – सामान्य लाभ

= ₹ 65,000 – ₹ 48,000 = ₹ 17,000

यदि ख्याति के मूल्य की गणना अधिलाभ के 3 वर्षों के क्रय द्वारा की जाए। तब ख्याति ₹ 51,000 (₹ 17,000 × 3) के बराबर होगी।

भारित औसत विधि (Weighted Average Method) : यह विधि औसत लाभ विधि का परिवर्तित रूप है। इस विधि में प्रत्येक वर्ष के लाभ को एक भार दिया जाता है जैसे 1, 2, 3, 4 आदि। इसके पश्चात् प्रत्येक वर्ष के लाभ को भार से गुणा करके गुणनफल ज्ञात किया जाता है। गुणनफल के योग को कुल भार से विभाजित किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप हमें भारित औसत लाभ ज्ञात होगा। इसके पश्चात् ख्याति के मूल्य की गणना भारित औसत लाभ को क्रय वर्षों की संख्या से गुणा करके की जाएगी, अतः ख्याति की गणना इस प्रकार होगी।

$$\text{भारित औसत लाभ} = \frac{\text{लाभ के गुणनफल का योग}}{\text{कुल भार}}$$

$$\text{ख्याति का मूल्य} = \text{भारित औसत लाभ} \times \text{क्रय वर्षों की संख्या}$$

टिप्पणी : इस विधि को तब अपनाया जाता है जबकि हम वार्षिक लाभ में वृद्धि की प्रवृत्ति देखते हैं। सबसे अन्तिम वर्ष के लाभ को अधिकतम भार दिया जाता है।

उदाहरण 5

फर्म के पिछले वर्षों के लाभ निम्न प्रकार से हैं :

	लाभ (₹)
2002	80,000
2003	85,000
2004	90,000
2005	1,00,000
2006	1,10,000

2002 से 2006 तक के वर्षों के लिए प्रयोग किया गया भार 1, 2, 3, 4 और 5 है।

ख्याति के मूल्य की गणना भारित औसत लाभ के दो वर्षों की क्रय के आधार पर करें।

हल :

वर्ष	लाभ	भार	गुणनफल
2002	80,000	1	80,000
2003	85,000	2	1,70,000
2004	90,000	3	2,70,000
2005	1,00,000	4	4,00,000
2006	1,10,000	5	5,50,000
		15	14,70,000

टिप्पणी

भरित औसत लाभ = $\frac{14,70,000}{15}$ = ₹ 98,000

ख्याति = ₹ 98,000 × 2 = ₹ 1,96,000

उदाहरण 6

एक फर्म ने पिछले 4 वर्षों के दौरान निम्न शुद्ध लाभ अर्जित किया

वर्ष	*(₹)*
2003	90,000
2004	1,20,000
2005	1,60,000
2006	1,80,000

फर्म में प्रायोजित पूँजी ₹ 10,00,000 है लाभ की सामान्य दर 10% है ख्याति के मूल्य की गणना 4 वर्षों के क्रय के आधार पर करें।

हल :

4 वर्षों का कुल लाभ = ₹ 90,000 + ₹ 1,20,000 + ₹ 1,60,000 + ₹ 1,80,000

= ₹ 5,50,000

औसत वार्षिक लाभ = ₹ 5,50,000/4

= ₹ 1,37,500

सामान्य लाभ = ₹ 10,00,000 का 10% = $10,00,000 \times \frac{10}{100}$

= ₹ 1,00,000

अधिलाभ = ₹ 1,37,500 – ₹ 1,00,000

= ₹ 37,500

4 वर्षों के क्रय पर ख्याति का मूल्य = ₹ 37,500 × 4

= ₹ 1,50,000

3. **पूँजीकरण विधि (Capitalisation Method) :** इस विधि में बचायी गई पूँजी ख्याति की राशि है। सामान्यतः व्यवसायी पूँजी का विनियोग व्यवसाय की गतिविधि चलाने के लिए एवं पूँजी का उचित उपयोग करके लाभ अर्जित करता है। यदि व्यवसाय, अन्य व्यवसायों की तुलना में कम पूँजी की राशि का विनियोग करके अधिक लाभ अर्जित करता है तथा जो व्यवसाय अधिक राशि की पूँजी से इतने ही लाभ की राशि अर्जित कर रहे हैं तो बचाई गई राशि को ख्याति माना जाएगा।

टिप्पणी

इस विधि के अन्तर्गत ख्याति की गणना दो प्रकार से की जा सकती है।

i. औसत लाभ का पूँजीकरण

ii. अधिलाभ का पूँजीकरण

i. औसत लाभ का पूँजीकरण : इस विधि में, वास्तविक प्रायोजित पूँजी से औसत लाभ के पूँजी मूल्य अधिक को ख्याति का मूल्य माना जाता है।

निवेशित पूँजी की गणना करने के लिए निम्न सूत्र प्रयोग किया जाएगा।

निवेशित पूँजी = कुल परिसम्पत्तियाँ – बाह्य दायित्व

लाभों का पूँजीकरण मूल्य की गणना के लिए निम्न सूत्र प्रयोग किया जाएगा

लाभ का पूँजीकरण मूल्य = औसत लाभ × 100/सामान्य लाभ दर

ख्याति = लाभों का पूँजीकरण मूल्य – निवेशित पूँजी

उदाहरण 7

एक फर्म पिछले कुछ वर्षों के दौरान ₹ 40,000 औसत लाभ अर्जित करती है इसी प्रकार के व्यवसाय में सामान्य प्रत्याय की दर 10% है। कुल परिसम्पत्तियाँ ₹ 3,60,000 एवं बाह्य दायित्व ₹ 50,000 है। औसत लाभ का पूँजीकरण विधि की सहायता से ख्याति के मूल्य की गणना करें।

हल :

निवेशित पूँजी = कुल परिसम्पत्तियों – बाह्य दायित्व
= ₹ 3,60,000 – ₹ 50,000
= ₹ 3,10,000

औसत लाभ का पूँजीकरण मूल्य = औसत लाभ × 100/लाभ की सामान्य दर
= ₹ 40,000 × 100/10
= ₹ 4,00,000

ख्याति = पूँजीकरण मूल्य – निवेशित पूँजी
= ₹ 4,00,000 – ₹ 3,10,000
= ₹ 90,000

उदाहरण 8

एक फर्म में निवेशित पूँजी ₹ 4,60,000 है एवं इसी प्रकार के व्यवसाय में प्रत्याय की दर 12% है। फर्म पिछले 4 वर्षों में निम्न लाभ अर्जित करती है :

टिप्पणी

2003	₹ 60,000	2005	₹ 80,000
2004	₹ 70,000	2006	₹ 90,000

पूँजीकरण विधि द्वारा ख्याति के मूल्य की गणना करें।

हल :

कुल लाभ = (₹ 60,000 + ₹ 70,000 + ₹ 80,000 + ₹ 90,000)/4

औसत लाभ = ₹ 3,00,000/4
= ₹ 75,000

पूँजीकरण मूल्य = औसत लाभ × 100/12
= ₹ 75,000 × 100/12
= ₹ 6,25,000

ख्याति = पूँजीकृत मूल्य – प्रायोजित पूँजी
= ₹ 62,50,000 – ₹ 4,60,000
= ₹ 1,65,000

ii. अधिलाभों का पूँजीकरण : इस विधि में, ख्याति के मूल्य की गणना अधिलाभ विधि के आधार पर की जाती है। ख्याति अधिलाभ का पूँजीकरण मूल्य होती है। निवेशित पूँजी की गणना करने के लिए निम्न सूत्र का उपयोग किया जाएगा :

ख्याति = अधिलाभ × 100/लाभ की सामान्य दर

उदाहरण 9

एक फर्म ₹ 26,000 लाभ अर्जित करती है एवं ₹ 2,20,000 की राशि पूँजी विनियोजित है। इस प्रकार के व्यवसाय में लाभ अर्जित करने की सामान्य प्रत्याय दर 10% है। ख्याति के मूल्य की गणना अधिलाभों के पूँजीकरण विधि की सहायता से करें।

हल :

वास्तविक लाभ = ₹ 26,000

सामान्य लाभ = 2,20,000 × 10/100 = ₹ 22,000

अधिलाभ = वास्तविक लाभ–सामान्य लाभ

= ₹ 26,000 – ₹ 22,000

= ₹ 4,000

ख्याति = अधिलाभ × 100/लाभ की सामान्य दर
= 4,000 × 100/10
= ₹ 40,000

पाठगत प्रश्न 23.2

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्द/शब्दों से कीजिए :

(i) ख्याति .... परिसम्पत्ति है।

(ii) सामान्यतः ख्याति की राशि .... साझेदार द्वारा लाई जाती है।

(iii) अधिलाभ = वास्तविक लाभ – ....

(iv) .... एवं .... ख्याति की गणना करने की विधियाँ हैं।

(v) निवेशित पूँजी = कुल परिसम्पत्तियाँ – ....

II. (अ) निम्न सूचनाओं से औसत लाभ की गणना करें :

वर्ष	*लाभ (रु.)*	*हानि (रु.)*
2001	80,000	
2002	90,000	
2003	–	30,000
2004	1,10,000	

औसत लाभ = ?

(ब) उपर्युक्त 2 (अ) में ख्याति के मूल्य की गणना औसत लाभ के दो वर्ष के क्रय से करें।

23.3 ख्याति का लेखाकरण (Treatment of Goodwill)

नया साझेदार अपने भाग के लाभ को वर्तमान साझेदारों से अधिग्रहण करता है। इसके परिणामस्वरूप वर्तमान साझेदारों के भाग में कमी आती है, इसलिए वह वर्तमान साझेदारों के त्याग के लिए क्षतिपूर्ति करता है। वह रोकड़ भुगतान करके या अन्य प्रकार से क्षतिपूर्ति करता है। भुगतान उसके भाग की ख्याति के बराबर होगा।

लेखांकन मानक 10 (A S 10) के अनुसार, ख्याति का लेखा बहियों में केवल तभी किया जाएगा जब इसके बदले में कुछ राशि का भुगतान किया जाये; अतः यदि नया साझेदार ख्याति के लिये आवश्यक राशि नहीं ला रहा है तो ख्याति खाता पुस्तको में नहीं खोला जायेगा। वह अपने पूंजी के अंश के अतिरिक्त ख्याति के लिए भी भुगतान करेगा।

यदि वह ख्याति के लिए भुगतान नहीं करता है तो, ख्याति में उसके भाग की राशि के बराबर राशि उसकी पूँजी में से घटायी जायेगी। ख्याति के लिये उसके द्वारा लायी गई राशि या ख्याति की राशि, जो उसके पूँजी खाते में से घटाई गई है, को वर्तमान साझेदारों में उनके त्याग अनुपात में विभाजित किया जायेगा। नये साझेदार के प्रवेश के समय, बहियों में दर्शायी गयी ख्याति को वर्तमान साझेदारों में उनके वर्तमान अनुपात में अपलिखित किया जायेगा।

नये साझेदार के प्रवेश के समय ख्याति के लेखाकरण से सम्बन्धित विभिन्न परिस्थितियां निम्न हैं। इनका वर्णन निम्न प्रकार है :

1. जब नये साझेदार द्वारा ख्याति की राशि का भुगतान निजी रूप से किया जाता है।
2. जब नया साझेदार अपने भाग की ख्याति के लिए रोकड़ लाता है।
3. जब नया साझेदार आपने भाग की ख्याति के लिए रोकड़ नहीं लाता है।

1. नए साझेदार द्वारा ख्याति की राशि का भुगतान निजी रूप से करने पर : यदि नए साझेदार द्वारा वर्तमान साझेदारों को ख्याति की राशि का भुगतान निजी तौर पर किया जाता है, फर्म की बहियों में कोई लेखा प्रविष्टि नहीं की जाएगी।

2. नया साझेदार अपने भाग की ख्याति को रोकड़ में लाता है एवं ख्याति की राशि को व्यवसाय में ही रखा जाता है : जब नया साझेदार अपने भाग की ख्याति के लिए रोकड़ लाता है, नए साझेदार द्वारा लाई गई राशि को वर्तमान साझेदारों में त्याग अनुपात में हस्तांतरित कर दिया जाएगा। यदि वर्तमान साझेदारों के स्थिति विवरण में कोई ख्याति खाता है, तो इसको तुरन्त साझेदारों के वर्तमान अनुपात से अपलिखित किया जायेगा। रोजनामचा प्रविष्टियाँ निम्न प्रकार होंगी—

(i) फर्म की बहियों में वर्तमान ख्याति को वर्तमान लाभ अनुपात में अपलिखित करने पर :

वर्तमान साझेदारों का पूँजी खाता	नाम (प्रत्येक का व्यक्तिगत)
ख्याति खाता से	
(वर्तमान ख्याति को अपलिखित किया)	

(ii) पूँजी एवं ख्याति के लिये रोकड़ लाने पर

रोकड़/बैंक खाता	नाम
ख्याति खाता से	
नए साझेदार का पूँजी खाता से	
(पूँजी एवं ख्याति के लिए रोकड़ लाया)	

टिप्पणी

(iii) ख्याति की राशि को वर्तमान साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरित करने के लिए

ख्याति खाता नाम
    वर्तमान साझेदारों का पूँजी/चालू खाता से (व्यक्तिगत)
(ख्याति की राशि को वर्तमान साझेदारों के
पूँजी खातो में त्याग अनुपात में जमा करने पर)

उदाहरण 10

तानया एवं सुमित एक फर्म में साझेदार हैं। अपने लाभ का विभाजन 5 : 3 के अनुपात में करते हैं। वे गौरी को लाभ में 1/4 भाग के लिये नए साझेदार के रूप में प्रवेश देते हैं। गौरी अपने भाग की ख्याति के लिए ₹ 30,000 एवं पूँजी के लिए ₹ 1,20,000 लाती है। गौरी के प्रवेश के बाद फर्म की बहियो में रोजनामचा प्रविष्टियाँ करें। नया लाभ-विभाजन अनुपात 2 : 1 : 1 होगा।

हल

तानया, सुमित एवं गौरी की बहियाँ

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
1.	बैंक खाता नाम		1,50,000	
	ख्याति खाता से			30,000
	गौरी का पूँजी खाता से			1,20,000
	(गौरी द्वारा ख्याति एवं पूँजी के लिये रोकड़ लाने पर)			
	ख्याति खाता नाम		30,000	
	तानया का पूँजी खाता से			15,000
	सुमित का पूँजी खाता से			15,000
	(वर्तमान साझेदारों के पूँजी खातों में उनके लाभ विभाजन अनुपात में ख्याति का हस्तांतरण)			

कार्यकारी टिप्पणी :

त्याग अनुपात की गणना (वर्तमान अनुपात – नया अनुपात)

साझेदार	वर्तमान अनुपात	नया अनुपात	त्याग	त्याग अनुपात
तानया	5/8	2/4	5/8 – 2/4 = 1/8	तानया : सुमित
सुमित	3/8	1/4	3/8 – 1/4 = 1/8	1 : 1

ख्याति की राशि को वर्तमान साझेदारों द्वारा निकालने पर

(iv) वर्तमान साझेदारों का पूँजी/चालू खाता नाम (व्यक्तिगत)
रोकड/बैंक खाता से
(ख्याति की राशि वर्तमान साझेदारों द्वारा निकालने के लिए)

यह ध्यान देने योग्य है कि कभी-कभी साझेदार ख्याति की राशि का केवल 50% या 25% निकालते हैं। इस स्थिति में, प्रविष्टि केवल निकाली गई राशि से ही की जायेगी।

उदाहरण 11

पिछले उदाहरण में यह मान लें कि तानया एवं सुमित द्वारा ख्याति की पूर्ण राशि को निकाल लिया जाता है। फर्म की पुस्तको में रोजनामचा प्रविष्टि करें।

हल :

तनया सुमित एवं गौरी की बहियाँ

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	तान्या का पूँजी खाता नाम सुमित का पूँजी खाता नाम बैक खाता से (उनके द्वारा ख्याति की राशि निकालने पर)		15,000 15,000	 30,000

3. **नया साझेदार आपने भाग की ख्याति के लिए रोकड़ नहीं लाता :** जब फर्म की ख्याति की गणना की जाती है एवं नया साझेदार आपने भाग की ख्याति को रोकड़ में लाने के लिए असमर्थ है, ख्याति को नए साझेदार के पूँजी खाते द्वारा समायोजित किया जाएगा। इस स्थिति में नए साझेदार के पूँजी खाते को उसके भाग की ख्याति से नाम किया जाएगा एवं वर्तमान साझेदारों के पूँजी खातों को उनके त्याग अनुपात से जमा किया जाएगा। रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी।

नए साझेदार का पूँजी खाता नाम
वर्तमान साझेदारों का पूँजी खाता से (व्यक्तिगत त्याग अनुपात में)
(नए साझेदार के भाग की ख्याति को वर्तमान साझेदारों के उनके त्याग अनुपात में जमा किया गया)

टिप्पणी

फर्म की बहियो में ख्याति खाता दर्शाया गया हो एवं नया साझेदार अपने भाग की ख्याति को रोकड़ में नहीं लाता है

यदि फर्म की बहियों में ख्याति खाता दर्शाया गया है एवं नया साझेदार ख्याति की रोकड़ लाने में असमर्थ है, इस स्थिति में बहियो में विद्यमान ख्याति की राशि अपलिखित करने के लिए वर्तमान साझेदारों के पूँजी खातो को उनके वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात में नाम किया जाएगा।

उदाहरण 12

असमिता एवं साहिल साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 3 : 2 के अनुपात में करते हैं। वे चारू को भविष्य के लाभों में 1/4 भाग के लिए प्रवेश देने के लिए सहमत होते हैं। चारू पूँजी के रूप में ₹ 2,50,000 लाती है एवं अपने भाग की ख्याति को रोकड़ में लाने में असमर्थ है। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 1,80,000 किया गया। प्रवेश के समय फर्म की बहियों में ₹ 80,000 की ख्याति विद्यमान है। फर्म की बहियो में आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ करें।

हल :

असमिता, साहिल एवं चारू की बहियाँ

तिथि	विवरण		खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	बैंक खाता	नाम		2,50,000	
	चारू का पूँजी खाता से				2,50,000
	(अपनी पूँजी के चारू द्वारा रोकड़ लाने पर)				
	असमिता का पूँजी खाता	नाम		48,000	
	साहिल का पूँजी खाता	नाम		32,000	
	ख्याति खाता से				80,000
	(चारू के प्रवेश पर ख्याति को अपलिखित करने पर)				
	चारू का पूँजी खाता	नाम		36,000	
	असमिता का पूँजी खाता से				21,600
	साहिल का पूँजी खाता से				14,400
	(चारू के प्रवेश पर वर्तमान साझेदारों के पूँजी खातों को उनके त्याग अनुपात में जमा करने पर)				

टिप्पणी

कार्यकारी टिप्पणी

असमिता एवं साहिल ने चारू के पक्ष में अपने लाभ का त्याग वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात में किया जो कि 3 : 2 है अतः त्याग अनुपात 3 : 2 होगा।

ख्याति का मूल्य = ₹ 1,80,000

लाभ में चारू का भाग = 1/5

चारू का ख्याति में भाग = ₹ 1,80,000 × 1/5 = ₹ 36,000

नया साझेदार अपने भाग की ख्याति का केवल एक भाग लाता है

जब नया साझेदार अपने भाग की ख्याति की पूर्ण राशि रोकड़ में लाने में असमर्थ होता है एवं केवल एक भाग के लिए रोकड़ लाता है इस स्थिति में उसके द्वारा ख्याति की लाई गई राशि को ख्याति खाते में जमा किया जाता है। वर्तमान साझेदारों के पूँजी खातों में ख्याति के हस्तांतरण के समय, ख्याति खाते को उसके द्वारा भुगतान की गई ख्याति के साथ, नए साझेदार के पूँजी खाते को उसके अदत ख्याति के भाग को भी नाम किया जाएगा।

रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी।

बैंक खाता	नाम
ख्याति खाता से	
(नये साझेदार द्वारा ख्याति का एक भाग लाने पर)	
ख्याति खाता	नाम
नए साझेदार का पूँजी खाता	नाम
वर्तमान साझेदारों का पूँजी खाता से	(व्यक्तिगत त्याग अनुपात में)
(त्याग किए गए साझेदारों को जमा करने पर नए साझेदार की ख्याति के पूर्ण भाग से)	

उदाहरण 13

तनू एवं पुनीत साझेदार हैं लाभ का विभाजन 5 : 3 अनुपात में करते हैं। वे तरूण को लाभ में 1/6 भाग के लिए प्रवेश देते हैं जो कि वह 1/18 भाग तनू से एवं 2/18 भाग पुनीत से लेता है। तरूण अपने भाग की ख्याति के ₹ 12,000 में से ₹ 9,000 लाता है। फर्म की बहियों में कोई ख्याति खाता नहीं दर्शाया गया है। फर्म की बहियों में आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ करें।

टिप्पणी

हल :

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	बैंक खाता नाम		9,000	
	ख्याति खाता से			9,000
	(अपने भाग की ख्याति का तरूण द्वारा एक भाग लाने पर)			
	ख्याति खाता नाम		9,000	
	तरूण का पूँजी खाता नाम		3,000	
	तनू का पूँजी खाता से			4,000
	पुनीत का पूँजी खाता से			8,000
	(ख्याति को तनु एवं पुनीत के त्याग अनुपात 2 : 1 में जमा करने पर)			

पाठगत प्रश्न 23.5

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्द/शब्दों को भरकर कीजिए :

i. जब ख्याति का भुगतान निजी रूप में किया जाता है तब ....नहीं की जाती।

ii. जब नया साझेदार ख्याति की राशि लाता है, उसके द्वारा लाई गई ख्याति की राशि को ख्याति खाते में .... किया जाता है

iii. नए साझेदार द्वारा ख्याति के लिए लाई गई राशि का हस्तांतरण वर्तमान साझेदारों में .... अनुपात में किया जाएगा।

iv. नए साझेदार के प्रवेश के समय, फर्म की पुस्तकों में दिखाई गई ख्याति को .... किया जाता है।

v. यदि नया साझेदार अपने भाग को ख्याति लाने में असमर्थ है तो नये साझेदार का पूँजी खाता उसके ख्याति के भाग के लिए .... किया जाएगा।

II. 'अ' स्तम्भ की प्रविष्टि का उचित मिलान स्तम्भ में दिए गए स्थान में ठीक संख्या लिखकर करें

टिप्पणी

स्तम्भ (अ)	स्तम्भ (ब)
i. ख्याति निजी रूप में दी जाती है	(क) वर्तमान साझेदार का पूँजी खाता नाम ख्याति खाता से
ii. नया साझेदार ख्याति के लिए रोकड़ लाने में असमर्थ है	(ख) ख्याति खाता नाम वर्तमान साझेदार का पूँजी खाता से
iii. प्रवेश के समय बहियों में विद्यमान ख्याति को अपलिखित करने पर	(ग) नए साझेदार का पूँजी खाता नाम वर्तमान साझेदारों का पूँजी खाता से
iv. प्रवेश के समय, नए साझेदार द्वारा लाई गई ख्याति की राशि को वर्तमान साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरित करने के लिए।	(घ) कोई प्रविष्टि नहीं

संचय एवं संचित लाभ/हानि का लेखांकन अभिलेखन

वर्तमान साझेदारों के लाभ-हानि अनुपात में परिवर्तन की दशा में

स्थिति (i) जब संचय एवं संचित लाभ/हानि को पूंजी खातों में हस्तान्तरित किया जाना है :

लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन के समय यदि फर्म की लेखा पुस्तकों में संचय अथवा संचित लाभ/हानि हैं तो इन्हें साझेदारों के पूंजी खातों में (यदि पूंजी परिवर्तनशील है) या फिर उनके चालू खातों में (यदि पूंजी स्थाई है) उनके पुराने लाभ आबंटन अनुपात में हस्तान्तरित कर देना चाहिए। इसका कारण है कि यह संचय एवं संचित लाभ/हानि लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन से पूर्व में ही अर्जित किए जा चुके थे, इसीलिए इन पर साझेदारों का उनके पुराने लाभ आबंटन अनुपात में अधिकार है। इसके लिए निम्न प्रविष्टियाँ की जाएंगी–

i. संचय एवं संचित लाभ के हस्तान्तरण के लिए :

संचय खाता	नाम	
लाभ हानि खाता	नाम	
कर्मचारी क्षति पूर्ति संचय खाता	नाम	(वास्तविक देयता पर संचय अतिरेक)
निवेश परिवर्तन संचय खाता	नाम	(निवेशक मूल्य एवं बाजार मूल्य के अन्तर से संचय का आधिक्य)

पुराने साझेदारों के पूंजी खाते अथवा चालू खातों से (पुराने लाभ आबंटन अनुपात में)

(संचय/गैर आवंटित लाभ का साझेदारों के पूंजी खातों/चालू खातों में उनके पुराने लाभ आबंटन अनुपात में हस्तान्तरण)

ii. ***संचति हानियों के हस्तान्तरण के लिए :***

पुराने साझेदारों के पूँजी खाते अथवा चालू खाते नाम

लाभ–हानि खाता से

स्थगित आगम व्यय खाता से

(हानि/काल्पनिक सम्पतियों का साझेदारों के पूंजी खातों/ चालू खातों में हस्तांतरण)

उदाहरण 14

सीता और गीता साझेदार हैं जो लाभ–हानि का 2 : 1 में आबंटन करते हैं। अप्रैल 2013 से उन्होंने लाभ का 3 : 2 में आबंटन का निर्णय लिया। उसी तिथि को लाभ एवं हानि खाता ₹ 6,00,000 का नाम शेष दर्शा रहा है। लाभ–हानि खाता के शेष के आबंटन की आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।

हल

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
2013 अप्रैल 1	सीमा का पूँजी खाता नाम गीता का पूँजी खाता नाम लाभ हानि खाता से (लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन पर गैर आबंटित हानि का हस्तान्तरण)		4,00,000 2,00,000	 6,00,000

उदाहरण 15

क, ख और ग साझेदार हैं और 4 : 3 : 2 में लाभ का आबंटन कर रहे हैं। 1 अप्रैल 2014 से उन्होंने लाभ का आबंटन समान अनुपात में करने का निर्णय लिया। उसी

तिथि को लाभ हानि खाता ₹ 3,60,000 तथा संचय खाता ₹ 90,000 का जमा शेष दर्शा रहा है। लाभ आबंटन एवं सामान्य संचय के आबंटन की रोजनामचा प्रविष्टि का अभिलेखन कीजिए।

हल

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
2014				
अप्रैल 1	लाभ–हानि खाता नाम		3,60,000	
	सामान्य संचय नाम		90,000	
	क का पूँजी खाता से			2,00,000
	ख का पूँजी खाता से			1,50,000
	ग का पूँजी खाता से			1,00,000

उदाहरण 16

क, ख और ग जो लाभ हानि का आबंटन 3 : 2 : 1 के अनुपात में कर रहे हैं, ने निर्णय लिया कि 1 अप्रैल 2014 से उनका लाभ हानि आबंटन अनुपात 4 : 3 : 2 होगा। नीचे 31 मार्च 2014 को स्थिति विवरण निम्न दर्शा रहा है :

देयताएं	₹	*सम्पत्तियाँ*	₹
कर्मचारी क्षति पूर्ति संचय	3,00,000		

निम्न वैकल्पिक स्थितियों में लेखांकन अभिलेखन दर्शाइए :

स्थिति (i) यदि कोई अन्य सूचना नहीं है।

स्थिति (ii) यदि कर्मचारी क्षतिपूर्ति ₹ 1,20,000 का अनुमानित दावा है।

रोजनामचा

हल

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
2014				
अप्रैल 1	स्थिति (i)			
	कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय खातानाम		3,00,000	
	क का पूँजी खाता से			1,50,000
	ख का पूँजी खाता से			1,00,000

टिप्पणी

	ग का पूँजी खाता से (कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय का साझेदारों के पूँजी खातों में उनके पुराने लाभ आबंटन अनुपात में हस्तान्तरण)			50,000
	स्थिति (ii) कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय खातानाम		3,00,000	
	कर्मचारी क्षतिपूर्ति दावा प्रावधान खाता से			1,20,000
	क का पूँजी खाता से			90,000
	ख का पूँजी खाता से			60,000
	ग का पूँजी खाता से (अतिरिक्त कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय का साझेदारों के पूँजी खातों में उनके पुराने लाभ आबंटन अनुपात में हस्तान्तरण)			30,000

स्थिति (ii) जब संचय एवं संचित लाभ/हानि का पूँजी खातों में हस्तान्तरण नहीं किया जाना है अथवा भविष्य के स्थिति विवरण में यह दर्शाया जाता रहेगा।

लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन की स्थिति में यदि स्थिति विवरण संचय एवं संचित लाभ दर्शा रहा है तथा साझेदार संचय एवं संचित लाभ के आबंटन नहीं करने का निर्णय लेते हैं तो एक समायोजन प्रविष्टि आवश्यक होगा। क्योंकि वर्तमान साझेदार संचय एवं लाभों का आबंटन पुराने लाभ आबंटन अनुपात में करेंगे, इसीलिए जो साझेदार लाभ में हैं, उसे त्याग करने वाले साझेदार को संचय एवं लाभ में से उसे जो लाभ हुआ है उस अनुपात में क्षतिपूर्ति करनी चाहिए। उदाहरण के लिए माना कि P और Q जो लाभ का आबंटन 2 : 1 के अनुपात में कर रहे हैं अब लाभ का आबंटन बराबर के अनुपात में करना चाह रहे हैं, स्थिति विवरण में संचय ₹ 6,00,000 दिखाया गया है तथा साझेदार उसका वितरण करना नहीं चाह रहे हैं। ऐसी स्थिति में इस संचय का P को ₹ 4,00,000 मिलेंगे और Q को ₹ 2,00,000। लेकिन भविष्य में, लाभ अनुपात में परिवर्तन के पश्चात प्रत्येक को ₹ 3,00,000 मिलेंगे। Q को P को ₹ 1,00,000 की राशि क्षति पूर्ति के रूप में देनी चाहिए। यह राशि उसको मिले लाभ के अनुपात अर्थात $1/6$ $(1/2 - 1/3)$ है।

इस राशि का समायोजन निम्न समायोजन प्रविष्टि के द्वारा किया जाएगा।

टिप्पणी

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	Q का पूँजी खाता नाम P का पूँजी खाता से (संचय के लिए पूँजी खातों में समायोजन)		1,00,000	1,00,000

उदाहरण 17

M और N एक फर्म में साझेदार हैं और 4 : 3 के अनुपात में लाभ का बँटवारा कर रहे हैं। 31 मार्च 2014 को उनका स्थिति विवरण सामान्य संचय खाते में ₹7,00,000 दर्शा रहा है। उस तिथि को उन्होंने अपने लाभ आबंटन 5 : 3 के अनुपात में करने का निर्णय लिया। निम्न स्थितियों में फर्म की लेखा पुस्तकों में आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए :

i. जब वह सामान्य संचय को अपने पूँजी खातों में हस्तान्तरण करना चाहते हैं।

ii. जब वह सामान्य संचय का हस्तान्तरण अपने पूँजी खातों में नहीं करना चाहते बल्कि उसकी समायोजन प्रविष्टि करना चाहते हैं।

हल

विकल्प (i) जब सामान्य संचय को पूँजी खातों में हस्तान्तरित किया गया।

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
2014 मार्च 31	सामान्य संचय खाता नाम M की पूँजी खाता से N की पूँजी खाता से (फर्म के पुनर्गठन पर सामान्य संचय का साझेदारों के पूँजी खातों में हस्तान्तरण)		7,00,000	4,00,000 3,00,000

विकल्प (ii) : जब सामान्य संचय को पूँजी खातों में हस्तान्तरित नहीं किया गया।

M और N का पुराना लाभ आबंटन अनुपात 4 : 3

M और N का नया लाभ आबंटन अनुपात 5 : 3

त्याग अथवा लाभ

$$M = \frac{4}{7} - \frac{5}{8} = \frac{32 - 35}{56} = \quad \text{लाभ}$$

$$N = \frac{3}{7} - \frac{3}{8} = \frac{24 - 21}{56} = \quad \text{हानि}$$

इसलिए M की पूँजी खाते के नाम में तथा N के पूँजी खाते के जमा में (सामान्य संचय के $\frac{3}{56}$ भाग को) लिखा जाएगा।

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
	M का पूँजी खाता नाम N का पूँजी खाता से (सामान्य संचय खाता को बंद न करने की स्थिति में समायोजन)		37,500	 37,500

उदाहरण 18

X और Y एक फर्म में साझेदार थे तथा लाभ का आबंटन 3 : 1 के अनुपात में करते थे। वह 1 जनवरी 2014 से लाभ का आबंटन 2 : 1 में करने के लिए सहमत हुए। इसके लिए फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 5,00,000 किया गया। फर्म की बहियों में सामान्य संचय ₹ 4,00,000 दिखाया गया है। साझेदार न तो ख्याति को बहियों में दिखाना चाहते हैं और न ही संचय का आबंटन चाहते हैं। आपको इस परिवर्तन को एक रोजनामचा प्रविष्टि के अभिलेखन द्वारा करना है।

हल

	₹
ख्याति का मूल्य	5,00,000
सामान्य संचय	4,00,000
X एवं Y का पुराना अनुपात	3 : 1
X एवं Y का नया अनुपात	2 : 1

त्याग अथवा लाभ

$$X = \frac{3}{4} - \frac{2}{3} = \frac{9 - 8}{12} = \quad \text{(त्याग)}$$

$$Y = \frac{1}{4} - \frac{1}{3} = \frac{3-4}{12} = \frac{1}{12} \text{ (लाभ)}$$

X Y की 9,00,000 के $\frac{1}{12}$ के बराबर अर्थात 75,000 की क्षति पूर्ति करेगा।

टिप्पणी

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
2012 जन. 1	X का पूँजी खाता नाम Y का पूँजी खाता से (लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन पर ख्याति एवं संचय का समायोजन)		75,000	75,000

उदाहरण 19

P, Q और R साझेदार हैं और लाभ–हानि का आबंटन 2 : 3 : 4 में करते हैं। उन्होंने भविष्य में लाभ हानि का आबंटन 4 : 3 : 2 के अनुपात में करने का निर्णय लिया। निम्न के प्रभाव का वह बिना लेखा पुस्तकों के मूल्यों को प्रभावित किए अभिलेखन करना चाहते हैं :

	₹
सामान्य संचय	4,00,000
लाभ एवं हानि खाता	2,00,000
विज्ञापन उचन्ति खाता	1,50,000

आपको इसके लिए एक समायोजन प्रविष्टि करनी है।

हल

संचित लाभ/हानि के प्रभाव की गणना	₹
सामान्य संचय	4,00,000
जमा लाभ एवं हानि खाता	2,00,000
	6,00,000
घटा विज्ञापन उचन्त खाता	1,50,000

त्याग एवं लाभ गणना

P, Q एवं R का पुराना अनुपात $\frac{2}{3}:\frac{3}{9}:\frac{4}{9}$

P, Q एवं R का नया अनुपात $\frac{4}{9}:\frac{3}{9}:\frac{2}{9}$

त्याग अथवा लाभ

$$P = \frac{2}{9}-\frac{4}{9} = \frac{2}{9} \text{ लाभ}$$

$$Q = \frac{3}{9}-\frac{3}{9} = 0 \text{ (कोई लाभ अथवा हानि नहीं)}$$

$$R = \frac{4}{9}-\frac{2}{9} = \frac{2}{9} \text{ (त्याग)}$$

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	P का पूँजी खाता नाम R का पूँजी खाता से (सामान्य संचय, लाभ–हानि खाता शेष एवं विज्ञापन उच्चन्त खाता का लाभ–हानि अनुपात में परिवर्तन पर समायोजन)		1,00,000	 1,00,000

उदाहरण 20

A, B एवं C जो लाभ एवं हानि का आबंटन 1 : 2 : 2 के अनुपात में कर रहे हैं, ने 1 अप्रैल 2013 से भविष्य में लाभ का आबंटन बराबर अनुपात में करने का निर्णय लिया। उसी तिथि को लाभ हानि खाता ₹ 2,40,000 का जमा शेष दिखा रहा है। साझेदार ने लाभ का आबंटन नहीं करना चाहते, लेकिन एक समायोजन प्रविष्टि के माध्यम से लाभ अनुपात में परिवर्तन का अभिलेखन करना चाहते हैं। समायोजन प्रविष्टि कीजिए :

हल :

A, B एवं C का पुराना अनुपात $\frac{1}{5}:\frac{2}{5}:\frac{2}{5}$

A, B एवं C का नया अनुपात $\frac{1}{3} : \frac{1}{3} : \frac{1}{3}$

त्याग अथवा लाभ

$$A = \frac{1}{5} - \frac{1}{3} = \frac{3-5}{15} = \frac{2}{15} \text{ लाभ}$$

$$B = \frac{2}{5} - \frac{1}{3} = \frac{6-5}{15} = \frac{1}{15} \text{ त्याग}$$

$$C = \frac{2}{5} - \frac{1}{3} = \frac{6-5}{15} = \frac{1}{15} \text{ त्याग}$$

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
2013 अप्रैल 1	A का पूँजी खाता नाम B के पूँजी खाता से C के पूँजी खाता से (लाभ–हानि अनुपात में परिवर्तन पर लाभ–हानि खाता का समायोजन)		3,20,000	 1,60,000 1,60,000

23.4 वर्तमान साझेदारों के लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन हाने पर ख्याति का लेखा समाधान

लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन का अर्थ होता है कि एक साझेदार दूसरे साझेदार से लाभ के एक भाग का क्रय कर रहा है जो कि उस दूसरे साझेदार का था।

क्रय करने अथवा लाभ प्राप्त करने वाले साझेदार को त्याग करने वाले साझेदार को ख्याति का अनुपातन भाग क्षति पूर्ति के रूप में देगा। दूसरे शब्दों में लाभ प्राप्त करने वाला साझेदार त्याग करने वाले साझेदार को ख्याति का उसको प्राप्त लाभ के भाग के बराबर भुगतान करेगा। उदाहरण के लिए माना कि A और B $\frac{4}{5} : \frac{1}{5}$ के अनुपात में लाभ का आबंटन कर रहे हैं, यदि यह निर्णय लिया जाता है कि भविष्य में वह में लाभ का विभाजन करेंगे। इसका अर्थ हुआ कि A आने लाभ में से $\frac{1}{5}$ $\left(\frac{4}{5} - \frac{3}{5}\right)$ भाग को B $\frac{3}{5} : \frac{2}{5}$ को बेच रहा है। यदि फर्म के लाभ ₹ 1,00,000 वार्षिक से लाभ प्राप्त करेगा। इसकी B को फर्म की वर्तमान ख्याति की राशि का $\frac{1}{5}$ भाग

के बराबर भुगतान कर क्षतिपूर्ति करनी होगी। यदि ख्याति का मूल्य ₹ 5,00,000 है तो B को ₹ 5,00,000 का $\frac{1}{5}$ अर्थात ₹ 1,00,000 का भुगतान A को करना होगा।

इसका समायोजन समायोजन प्रविष्टि के द्वारा किया जाएगा। B के खाते के नाम में ₹ 1,00,000 तथा A के पूँजी खाते में ₹ 1,00,000 जमा में लिखा जाएगा।

उदाहरण 21

M और N एक फर्म में साझेदार थे और 3 : 2 में लाभ का बंटवारा करते थे। उन्होंने 31 मार्च 2014 से लाभ का बराबर अनुपात में आबंटन करना तय किया। इसके लिए ख्याति का मूल्य ₹ 3,00,000 आंका गया। समायोजन प्रविष्टि कीजिए –

हल

M और N का पुराना अनुपात = 3 : 2

M और N का नया अनुपात = 1 : 1

त्याग अथवा लाभ

$$M = \frac{3}{5} - \frac{1}{2} = \frac{1}{10} \text{ (त्याग)}$$

$$N = \frac{2}{5} - \frac{1}{2} = \frac{1}{10} \text{ (लाभ)}$$

अब क्योंकि M ने त्याग किया है इसलिए उसके जमा में 3,00,000 का $\frac{1}{10}$ अर्थात 30,000 लिखा जाएगा और क्योंकि N को लाभ हुआ है, उसके लिए खाते के नाम में 3,00,000 का $\frac{1}{10}$ अर्थात ₹ 30,000 लिखा जाएगा।

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
2014 मार्च 31	N का पूँजी खाता नाम M का पूँजी खाता से (लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन के कारण ख्याति का समायोजन)		30,000	 30,000

टिप्पणी

उदाहरण 22

A, B और C साझेदार हैं और लाभ का आबंटन बराबर अनुपात में कर रहे हैं। उन्होंने निर्णय लिया कि भविष्य में C का लाभ में 1/5 भाग होगा। इस परिवर्तन के दिन ख्याति का मूल्य 6,00,000 आंका गया। ख्याति के लेखा व्यवहार के लिए आवश्यक समायोजन कीजिए।

हल

A, B और C का पुराना अनुपात $\frac{1}{3}:\frac{1}{3}:\frac{1}{3}$

A, B और C का नया अनुपात $\frac{2}{5}:\frac{2}{5}:\frac{1}{5}$

त्याग अथवा लाभ

$A = \frac{1}{3} - \frac{2}{5} = \frac{5-6}{15} = \frac{1}{15}$ लाभ

$B = \frac{1}{3} - \frac{2}{5} = \frac{1}{15}$ लाभ

$C = \frac{1}{3} - \frac{1}{5} = \frac{5-3}{15} = \frac{2}{15}$ त्याग

ख्याति के लाभ अथवा हानि के भाग की गणना कुल ख्याति ₹ 6,00,000

A के भाग का लाभ $= 6{,}00{,}000 \times \frac{1}{15}$ = ₹ 40,000

B के भाग का लाभ $= 6{,}00{,}000 \times \frac{1}{15}$ = ₹ 40,000

C के भाग की हानि $= 6{,}00{,}000 \times \frac{2}{15}$ = ₹ 80,000

उदाहरण 23

P, Q और R साझेदार हैं और लाभ–हानि का 5 : 4 : 1 में बंटवारा कर रहे हैं। यह निर्णय लिया गया कि 1 जनवरी 2014 से लाभ–हानि अनुपात 9 : 6 : 5 होगा। ख्याति का मूल्यांकन 3 वर्ष के लाभ की औसत के 2 वर्ष के क्रय पर किया गया। वर्ष 2011, 2012 एवं 2013 का लाभ क्रमशः 96,000; 84,000 तथा 1,20,000 था। ख्याति का खाता खोले बगैर ख्याति के लेखा के लिए रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।

टिप्पणी

हल

$$\text{औसत लाभ} = \frac{96,000+84,000+1,20,000}{3} = 1,00,000$$

2 वर्ष के क्रय पर ख्याति का मूल्य = 1,00,000 × 2 = ₹ 2,00,000

P, Q और R का पुराना अनुपात 5 : 4 : 1

P, Q और R का नया अनुपात 9 : 6 : 5

त्याग अथवा लाभ

$$P = \frac{8}{10} - \frac{9}{20} = \frac{10-9}{20} = \frac{1}{20} \text{ त्याग}$$

$$Q = \frac{4}{5} - \frac{6}{20} = \frac{8-6}{20} = \frac{2}{20} \text{ त्याग}$$

$$R = \frac{1}{5} - \frac{5}{20} = \frac{2-5}{20} = \frac{3}{20} \text{ लाभ}$$

अब क्योंकि

P ने त्याग किया है, इसलिए उसके जमा में लिखा जाएगा :

$$2,00,000 \times \frac{1}{20} = 10,000$$

Q ने त्याग त्याग किया है उसके जमा में लिखा जाएगा :

$$2,00,000 \times \frac{2}{20} = 20,000$$

R को लाभ मिला है उसके नाम में लिखा जाएगा :

$$2,00,000 \times \frac{3}{20} = 30,000$$

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	R का पूँजी खाता नाम		30,000	
	P के पूँजी खाता से			10,000
	Q का पूँजी खाता से			20,000
	(लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन पर ख्याति का निदान)			

उदाहरण 24

A, B और C लाभ का बंटवारा 3 : 2 : 1 के अनुपात में करते थे। यह तय हुआ कि अब वह लाभ का आबंटन बराबर भाग में करेंगे। ख्याति की राशि का मूल्य 3,00,000 आंका गया। बहियों में ख्याति की राशि नहीं दिखाई गई है। ख्याति के लेखा व्यवहार के लिए समायोजन प्रविष्टि कीजिए।

हल

A, B और C का पुराना अनुपात 3 : 2 : 1

A, B और C का नया अनुपात 1 : 1 : 1

त्याग और लाभ

$$A = \frac{3}{6} - \frac{1}{3} = \frac{3-2}{6} = \frac{1}{6} \text{ त्याग}$$

$$B = \frac{2}{6} - \frac{1}{3} = \frac{2-2}{6} = 0$$

$$C = \frac{1}{6} - \frac{1}{3} = \frac{1-2}{6} = \frac{1}{6} \text{ लाभ}$$

अब क्योंकि A ने त्याग किया उसके जमा में 3,00,000 का $\frac{1}{6}$ अर्थात ₹ 50,000 लिखा जाएगा।

C को लाभ मिला है उसके खाते के नाम में 3,00,000 का $\frac{1}{6}$ अर्थात ₹ 50,000 लिखा जाएगा।

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	C का पूँजी खाता नाम A का पूँजी खाता से (लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन पर ख्याति के लिए समायोजन)		50,000	50,000

उदाहरण 25

राम और रमेश साझेदार थे और लाभ का बंटवारा 3 : 1 के अनुपात में करते थे।

उन्होंने निश्चय किया कि 1 जनवरी 2013 से वह लाभ–हानि का बंटवारा 5 : 3 के अनुपात में करेंगे। साझेदारी संलेख में प्रावधान है कि लाभ–हानि अनुपात में परिवर्तन पर ख्याति का निर्धारण निर्णय के प्रभावी वर्ष से पूर्व के दो वर्षों के कुल लाभ के बराबर होगा। वर्ष 2010, 2011 और 2012 के लाभ क्रमशः ₹ 6,00,000; ₹ 7,00,000 एवं ₹ 9,00,000 थे। उपर्युक्त व्यवस्था को प्रभावी बनाने के लिए रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।

हल

ख्याति का मूल्य = 7,00,000 + 9,00,000 = 16,00,000

त्याग अथवा लाभ की गणना

राम और रमेश का पुराना अनुपात 3 : 1

राम और रमेश का नया अनुपात 5 : 3

राम $= \frac{3}{4} - \frac{5}{6} = \frac{6-5}{8} = \frac{1}{8}$ त्याग

रमेश $= \frac{1}{4} - \frac{3}{8} = \frac{2-3}{8} = \frac{1}{8}$ लाभ

अब क्योंकि

राम ने त्याग किया है उसके जमा में 16,00,000 का $\frac{1}{8}$ जमा होगा = 2,00,000

रमेश को लाभ हुआ है उसके नाम में लिखा जाएगा 16,00,000 $\frac{1}{8}$ = 2,00,000

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
2003 जन. 1	रमेश का पूँजी खाता नाम राम का पूँजी खाता से (लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन पर ख्याति का समायोजन)		2,00,000	2,00,000

23.5 परिसम्पतियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन (Revaluation of Assets and Liabilities)

नए साझेदार के प्रवेश पर फर्म का पुर्नगठन होता है एवं इसके कारण परिसम्पतियों का पुनर्मूल्यांकन एवं दायित्वों का पुनर्निर्धारण किया जाता है। यह नए साझेदार के प्रवेश के समय फर्म की सत्य स्थिति दिखाने के लिए आवश्यक है। यदि परिसम्पतियों

का मूल्य अधिक होता है तो लाभ के कारण वर्तमान साझेदारों की पूँजी में वृद्धि होगी। इसी प्रकार परिसम्पतियों के मूल्य में कोई कमी होने पर, हानि से वर्तमान साझेदारों की पूँजी में कमी होगी। इस उद्देश्य के लिए पुनर्मूल्यांकन खाता (Revaluation account) तैयार किया जाता है। इस खाते में परिसम्पतियों के मूल्य में वृद्धि एवं दायित्वों के मूल्य में कमी को जमा किया जाएगा। परिसम्पतियों के मूल्य में कमी एवं दायित्वों के मूल्यों में वृद्धि से इस खाते को नाम किया जाएगा। इस खाते का शेष पुनर्मूल्यांकन पर लाभ या हानि दिखाएगा, जो कि वर्तमान साझेदारों के पूँजी खातों में उनके वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरित किया जाएगा। इस उद्देश्य के लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टियाँ की जाएंगी :

(i) परिसम्पतियों के मूल्य में वृद्धि के लिए

परिसम्पति खाता	नाम	(व्यक्तिगत)
पूर्नमूल्यांकन खाता से		
(परिसम्पतियों के मूल्य में वृद्धि)		

(ii) परिसम्पतियों के मूल्य में कमी के लिए

पुनर्मूल्यांकन खाता	नाम	(व्यक्तिगत)
परिसम्पति खाता से		
(परिसम्पतियों के मूल्य में कमी)		

(iii) दायित्वों के मूल्य में वृद्धि के लिए :

पुनर्मूल्यांकन खाता	नाम	(व्यक्तिगत)
दायित्व खाता से		
(दायित्वों के मूल्य में वृद्धि)		

(iv) दायित्वों के मूल्य में कमी के लिए :

दायित्व खाता	नाम
पुनर्मूल्यांकन खाता से	
(दायित्वों के मूल्य में कमी)	

(v) गैर अभिलेखित परिसम्पत्तियों के लिए

परिसम्पत्ति खाता (गैर अभिलेखित)	नाम
पुनर्मूल्यांकन खाता से	
(गैर अभिलेखित परिसम्पत्तियों का वास्तविक मूल्य से लेखा)	

(vi) गैर अभिलेखित दायित्वों के लिए

पुनर्मूल्यांकन खाता	नाम
दायित्व खाता से (गैर–अभिलेखित)	
(गैर–अभिलेखित दायित्वों का वास्तविक मूल्य पर लेखा)	

टिप्पणी

(vii) पुनर्मूल्यांकन पर लाभ को हस्तांतरित करने के लिए
पुनर्मूल्यांकन खाता नाम
वर्तमान साझेदार की पूँजी/चालू खाता से
(पुनर्मूल्यांकन पर लाभ का पूँजी खाते में वर्तमान अनुपात में हस्तांतरण)

(viii) पुनर्मूल्यांकन से हानि को हस्तातरित करने पर :
वर्तमान साझेदार का पूँजी खाता/चालू खाता नाम
पुनर्मूल्यांकन खाता से
(पुनर्मूल्यांकन पर हानि का पूँजी खातों में वर्तमान अनुपात में हस्तांतरण)

पुनर्मूल्यांकन खाते का प्रारूप निम्न है :

पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
परिसम्पत्तियाँ (कमी मूल्य से)		परिसम्पत्तियाँ (वृद्धि मूल्य से)	
दायित्व (वृद्धि मूल्य से)		दायित्व (कमी मूल्य से)	
दायित्व (गैर–अभिलेखित)		परिसम्पत्तियाँ (गैर–अभिलेखित)	
लाभ का पूँजी खाते में हस्तांतरण (व्यक्तिगत वर्तमान अनुपात में)		हानि का पूँजी खाते में हस्तांतरण (व्यक्तिगत वर्तमान अनुपात में)	

उदहारण 26

P, Q और R साझेदार हैं, जो लाभ को 3 : 3 : 2 में बांट रहे हैं। 31 मार्च 2013 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार है :

देयताएं		₹	सम्पत्तियां	₹
विविध लेनदार		2,40,000	बैंक में रोकड़	3,70,000
सामान्य संचय		3,60,000	विविध देनदार	4,40,000
पूँजी खाता :			स्टॉक	12,00,000
P	20,00,000		मशीनरी	15,90,000
Q	15,00,000		भवन	20,00,000
R	15,00,000	50,00,000		
		56,00,000		56,00,000

साझेदारों ने 1 अप्रैल 2013 से लाभ–हानि का आबंटन 4 : 3 : 2 के अनुपात में करने का निर्णय लिया इस पर सहमति हुई :

i. स्टॉक का मूल्यांकन ₹ 11,00,000 पर होगा।

ii. मशीनरी पर 10% अवक्षयण लगाया जाएगा।

iii. देनदारों पर 5% की दर से प्राप्य ऋणों के लिए प्रावधान किया जाएगा।

iv. भवन के मूल्य में 20% की वृद्धि की जाएगी।

v. लेनदारों की देनदारी ₹ 25,000 की देयता का भुगतान नहीं करना होगा।

साझेदारों में सहमति बनी कि पुस्तकों में संशोधित मूल्य दिखाए जाएंगे।

रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए। यद्यपि वे सामान्य संचय को वितरित नहीं करना चाहता। साझेदारों के पूँजी खाते बनाइए एवं संशोधित स्थिति विवरण भी बनाइए।

हल :

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	पुनर्मूल्यांकन खाता नाम स्टॉक खाता से मशीनरी खाता से संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान से (सम्पत्तियों के मूल्य में कमी तथा संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान)		2,81,000	 1,00,000 1,59,000 22,000
	भवन खाता नाम विविध लेनदार खाता नाम पूनर्मूल्यांकन खाता से (भवन के मूल्य में वृद्धि तथा लेनदारों में कमी)		4,00,000 25,000	 4,25,000
	पुनर्मूल्यांकन खाता नाम P का पूँजी खाता से Q का पूँजी खाता से R का पूँजी खाता से (पुनर्मूल्यांकन पर लाभ का साझेदारों के पूँजी खातों में हस्तान्तरण पुराने अनुपात में)		1,44,000	 54,000 54,000 36,000

टिप्पणी

	P का पूँजी खाता नाम		25,000	
	Q का पूँजी खाता से			15,000
	R का पूँजी खाता से			10,000
	(लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन पर सामान्य संचय का समायोजन)			

कार्यकारी :

(1) **पुनर्मूल्यांकन खाता**

देयताएं	₹	*सम्पत्तियां*	₹
स्टॉक खाता	1,00,000	भवन खाता	4,00,000
मशीनरी खाता	1,59,000	विविध लेनदार	25,000
संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	22,000		
पुनर्मूल्यांकन पर लाभ हस्तांतरित :			
P का पूंजी खाता 3/8	54,000		
Q का पूँजी खाता 3/8	54,000		
R का पूंजी खाता 2/5	36,000		
	4,25,000		4,25,000

(2) सामान्य संचय के लिए समायोजन

P, Q और R का पुराना अनुपात 3 : 3 : 2

P, Q और R का नया अनुपात 4 : 3 : 2

त्याग अथवा लाभ

$$P = \frac{3}{8} - \frac{4}{9} = \frac{5}{72} \text{ लाभ}$$

$$Q = \frac{3}{8} - \frac{3}{9} = \frac{3}{72} \text{ त्याग}$$

$$R = \frac{2}{8} - \frac{2}{9} = \frac{2}{72} \text{ त्याग}$$

अब क्योंकि P को लाभ हुआ है इसलिए उसके खाते के नाम के सामान्य संचय का 5/72 भाग लिखा जाएगा अर्थात $3{,}60{,}000 \times \frac{5}{72}$ = ₹ 25,000

अब क्योंकि Q ने त्याग किया है इसलिए उसके खाते के जमा में सामान्य संचय का 3/72 जमा किया जाएगा अर्थात $3,60,000 \times \frac{3}{72}$ = ₹ 15,000

अब क्योंकि R ने त्याग किया है इसलिए उसके खाते के जमा में सामान्य संचय का 2/72 भाग लिखा जाएगा अर्थात $3,60,000 \times \frac{2}{72}$ = ₹ 10,000

पूँजी खाता

विवरण	P	Q	R	विवरण	P	Q	R
Q का पूँजी खाता	15,000			शेष आ. ला.	20,00,000	15,00,000	15,00,000
R का पूँजी खाता	10,000			पूनर्मूल्यांकन खाता	54,000	54,000	36,000
शेष आ. ले.	20,44,000	15,64,000	15,36,000	P का पूँजी खाता	15,000	10,000	
	20,69,000	15,64,000	15,36,000		20,69,000	15,64,000	15,36,000

स्थिति विवरण

देयताएं		₹	सम्पत्तियां		₹
विभिन्न लेनदार		2,15,000	बैंक में शेष		3,70,000
सामान्य संचय		3,60,000	विविध लेनदार	4,40,000	
पूँजी खाता :			**घटा :** संदिग्ध ऋणों		
P	20,44,00		के लिए प्रावधान	22,000	4,18,000
Q	15,64,000		स्टॉक		11,00,000
R	15,36,000	51,44,000	मशीनरी		14,31,000
			भवन		24,00,000
		57,19,000			57,19,000

उदाहरण 27

राम, मोहन और सोहन साझेदार हैं और 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ का विभाजन कर रहे हैं। 31 दिसम्बर 2012 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार है :

देयताएं		₹	सम्पत्तियां		₹
लेनदार		8,700	रोकड़		3,000
संचय		4,200	देनदार	6,200	
लाभ–हानि खाता (लाभ)		2,100	**घटा :** संदिग्ध ऋणों		
पूँजी खाता :			के लिए प्रावधान	200	6,000
राम	30,000		स्टॉक		18,000

मोहन	30,000		फर्नीचर	3,000
सोहन	5,000	65,000	संयन्त्र	20,000
			भवन	30,000
		80,000		80,000

टिप्पणी

साझेदारों ने तय किया कि 1 जनवरी 2013 से वह 4 : 4 : 1 के अनुपात में लाभ–हानि का विभाजन करेंगे उनमें समझौता हुआ कि :

i. स्टॉक का मूल्य 28% कम होगा।

ii. संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान को ₹ 150 से बढ़ाया जाएगा।

iii. फर्नीचर पर 20% और संयन्त्र पर 15% अवक्षयण लगाया जाएगा।

iv. अदत्त वेतन ₹ 350 होगा।

v. भवन का मूल्य ₹ 35,000 होगा।

vi. ख्याति का मूल्य ₹ 4,500 होगा।

साझेदार पुस्तकों में सम्पत्तियों एवं देयताओं के परिवर्तित मूल्य का अभिलेखन नहीं करना चाहते तथा संचय एवं गैर आबंटित लाभ को यथा स्थिति में रखना चाहते हैं। उन्होंने यह भी निर्णय लिया कि ख्याति को पुस्तकों में न दिखाया जाए।

उपरोक्त को प्रभाव में लाने के लिए एक रोजनामचा प्रविष्टि बनाइए। संशोधित स्थिति विवरण भी बनाइए।

हल :

	₹	₹
स्टॉक के मूल्य में कमी के कारण हानि	3,600	
संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान के कारण हानि	150	
फर्नीचर के मूल्य में कमी के कारण हानि	600	
संयन्त्र के मूल्य में कमी के कारण हानि	3,000	
गैर अभिलेखित देयता (जैसे कि अदत्त वेतन) के कारण हानि	350	7,700
भवन के मूल्य की वृद्धि के कारण लाभ		5,000
पूनर्मूल्यांकन पर हानि		– (2,700)
संचय के लिए समायोजन		+ 4,200
लाभ एवं हानि खाता (लाभ) के लिए समायोजन		+ 2,100
ख्याति के लिए समायोजन		+ 4,500
		8,100

टिप्पणी

राम, मोहन और सोहन का पुराना अनुपात 3 : 2 : 1

राम, मोहन और सोहन का नया अनुपात 4 : 4 : 1

त्याग अथवा लाभ

राम $= \frac{3}{6} - \frac{4}{9} = \frac{1}{18}$ (त्याग) $8{,}100 \times \frac{1}{18}$ = ₹ 450 (जमा)

मोहन $= \frac{2}{6} - \frac{4}{9} = \frac{2}{18}$ (लाभ) $8{,}100 \times \frac{2}{18}$ = ₹ 900 (नाम)

सोहन $= \frac{1}{6} - \frac{1}{9} = \frac{1}{18}$ (त्याग) $8{,}100 \times \frac{1}{18}$ = ₹ 450 (जमा)

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
2013				
जन. 1	मोहन का पूँजी खाता नाम		900	
	राम का पूँजी खाता से			450
	सोहन का पूँजी खाता से			450
	(लाभ अनुपात में परिवर्तन पर सम्पत्तियों, देयताओं एवं संचय, लाभ एवं ख्याति के पुनर्मूल्यांकन के लिए समायोजन)			

उदाहरण 28

सरोज, चारू और संगीता एक फर्म में 5 : 4 : 2 के अनुपात की साझेदार हैं। 1 अप्रैल 2014 को उन्होंने लाभ का आबंटन 4 : 3 : 2 के अनुपात में करने का निर्णय किया। इस तिथि को सामान्य संचय ₹ 3,49,000 था तथा सम्पत्तियों एवं देयताओं के पुनर्मूल्यांकन पर हानि ₹ 52,000 थी। यह निर्णय लिया गया कि स्थिति विवरण में सम्पत्तियों एवं देयताओं की राशियों में परिवर्तन किए बिना समायोजन किया जाए।

एक रोजनामचा प्रविष्टि के द्वारा समायोजन कीजिए।

हल :

सामान्य संचय	3,49,000
(–) पुनर्मूल्यांकन पर हानि	52,000
लाभ की शुद्ध राशि	2,97,000

टिप्पणी

सरोज, चारू एवं संगीता का पुराना लाभ–हानि अनुपात 5 : 4 : 2

सरोज, चारू एवं संगीता का नया लाभ–हानि अनुपात 4 : 3 : 2

त्याग अथवा लाभ

सरोज $= \frac{5}{11} - \frac{4}{9} = \frac{1}{99}$ त्याग $2{,}97{,}000 \times \frac{1}{99} = 3{,}000$ (जमा)

चारू $= \frac{4}{11} - \frac{3}{9} = \frac{3}{99}$ त्याग $2{,}97{,}000 \times \frac{3}{99} = 9{,}000$ (जमा)

संगीता $= \frac{2}{11} - \frac{2}{9} = \frac{4}{99}$ (लाभ) $2{,}97{,}000 \times \frac{4}{99} = 12{,}000$ (नाम)

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
2014 अप्रैल 1	संगीता का पूँजी खाता नाम		12,000	
	सरोज का पूँजी खाता से			3,000
	चारू का पूँजी खाता से			9,000
	(लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन पर सामान्य संचय एवं सम्पत्तियों एवं देयताओं के पुनर्मूल्यांकन पर हानि के लिए समायोजन)			

उदाहरण 29

A, B और C साझेदार हैं और लाभ–हानि का विभाजन 3 : 3 : 2 के अनुपात में करते हैं। 31 मार्च 2014 को उनका स्थिति विवरण निम्न था :

देयताएं		₹	सम्पत्तियां	₹
विविध लेनदार		2,400	बैंक में रोकड़	3,700
सामान्य संचय		3,600	विभिन्न लेनदार	4,400
पूँजी खाते			स्टॉक	12,000
A	20,000		मशीनरी	15,900
B	15,000		भवन	20,000
C	15,000	50,000		
		56,000		56,000

टिप्पणी

साझेदारों ने निर्णय लिया कि 1 अप्रैल 2014 से वह लाभ और हानि का आबंटन 4 : 3 : 2 के अनुपात में करेंगे। उन्होंने यह तय किया :

i. स्टॉक का मूल्य ₹ 11,000 लगाया गया।

ii. मशीनरी पर 10% अवक्षयण लगाया गया।

iii. देनदारों पर 5% की दर से संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान करना है।

iv. भवन के मूल्य में 20% की वृद्धि की जानी है।

v. लेनदारों में सम्मिलित ₹ 250 की देयता नहीं बनती है।

साझेदारों ने तय किया कि संशोधित मूल्यों का पुस्तकों में अभिलेखन न किया जाए। वह सामान्य संचय का वितरण भी नहीं करना चाहते। आपने रोजनामचा प्रविष्टि करनी है। साझेदारों के पूँजी खाते बनाने हैं तथा स्थिति विवरण तैयार करना है।

हल :

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
2014 1 अप्रैल	A का पूँजी खाता नाम B का पूँजी खाता से C का पूँजी खाता से (लाभ–हानि अनुपात में परिवर्तन पर सम्पतियों एवं देयताओं के पूर्नमूल्यांकन तथा सामान्य संचय पर समायोजन)		350	 210 140

पूँजी खाता

विवरण	A	B	C	विवरण	A	B	C
B का पूँजी खाता	210			शेष आ. ला.	20,000	15,000	15,000
C का पूँजी खाता	140			A का पूँजी खाता	–	210	140
शेष आ. ले.	19,650	15,210	15,140				
	20,000	15,210	15,140		20,000	15,210	15,140

स्थिति विवरण
1 अप्रैल 2014 को

देयताएं	₹	सम्पत्तियां	₹
विविध लेनदार	2,400	बैंक में रोकड़	3,700

टिप्पणी

सामान्य संचय		3,600	विभिन्न देनदार	4,400
पूँजी खाता :			स्टॉक	12,000
A	19,650		मशीनरी	15,900
B	15,210		भवन	20,000
C	15,140	50,000		
		56,000		56,000

कार्यकारी टिप्पणी :

1.	स्टॉक के मूल्य में कमी के कारण हानि	1,000	
	मशीन के मूल्य में कमी के कारण हानि	1,590	
	संदिग्ध ऋणों के प्रावधान के कारण हानि	220	2,810
	भवन के मूल्य में वृद्धि के कारण लाभ	4,000	
	विविध लेनदारों में कमी के कारण लाभ	250	4,250
	पूनर्मूल्यांकन पर लाभ		1,440
	+ सामान्य संचय		3,600
			50,400

2. A, B और C का पुराना अनुपात 3 : 3 : 2

A, B और C का नया अनुपात 4 : 3 : 2

त्याग अथवा लाभ

त्याग अनुपात = पुराना भाग – नया भाग

$A = \frac{3}{8} - \frac{4}{9} = \frac{5}{72}$ लाभ $\quad 5{,}040 \times \frac{5}{72} =$ ₹ 350 नाम

$B = \frac{3}{8} - \frac{3}{9} = \frac{3}{72}$ त्याग $5{,}040 \times \frac{3}{72} =$ ₹ 210 जमा

$C = \frac{2}{8} - \frac{2}{9} = \frac{2}{72}$ त्याग $5{,}040 \times \frac{2}{72} =$ ₹ 140 जमा

उदाहरण 30

करन एवं तरूण साझेदार हैं और लाभ का विभाजन 2:1 के अनुपात में करते हैं। उनका स्थिति विवरण निम्न है :

दिसंबर 31, 2014 को करन एवं तरूण का स्थिति विवरण

दायित्व		₹	परिसम्पत्तियां	₹
लेनदार		10,000	हस्तस्थ रोकड़	7,000
देय विपत्र		7,000	देनदार	26,000
पूँजी			भवन	20,000
करन	40,000		विनियोग	15,000
तरूण	30,000	70,000	मशीनरी	13,000
			स्टॉक	6,000
		87,000		87,000

1 जनवरी 2014 को निखिल को साझेदार के रूप में प्रवेश दिया गया। परिसम्पत्तियों का पुनर्मूल्यांकन एवं दायित्वों का पुनर्निर्धारण निम्न है।

(i) देनदारों पर संदिग्ध ऋण के लिए ₹ 800 का प्रावधान किया जाएगा।

(ii) भवन एवं विनियोग में 10 प्रतिशत की वृद्धि की जाएगी।

(iii) मशीनरी पर 5 प्रतिशत ह्रास लगाया गया।

(iv) लेनदारों का अनुमान ₹ 500 अधिक लगाया गया है।

आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ करें एवं निखिल के प्रवेश से पहले पुनर्मूल्यांकन खाता बनाइए।

हल :

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	पुनर्मूल्यांकन खाता नाम संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान खाते से (संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान करने पर)		800	800
	भवन खाता नाम विनियोग खाता नाम पुनर्मूल्यांकन खाता से (भवन एवं विनियोग के मूल्य में वृद्धि)		2,000 1,500	3,500

टिप्पणी

	पुनर्मूल्यांकन खाता नाम मशीनरी खाता से (मशीनरी के मूल्य में कमी)		650	650
	लेनदार खाता नाम पुनर्मूल्यांकन खाता से (लेनदारो का मूल्य ₹ 500 से कम)		500	500

पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम जमा

विवरण		₹	विवरण	₹
संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान		800	भवन	2,000
मशीनरी		650	विनियोग	1,500
लाभ का हस्तांतरण			लेनदार	500
करन की पूँजी	1,700			
तरून की पूँजी	850	2550		
		4,000		4,000

23.6 सचयों एवं संचित लाभ व हानि का समायोजन (Adjustments of Reserves and Accumulated Profit or Losses)

नए साझेदार के प्रवेश के समय स्थिति विवरण में दिखाए गए संचित लाभ एवं संचय को वर्तमान साझेदारों के पूँजी खाते में उनके वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात में जमा किया जाएगा। यदि यहाँ पर हानि है तो उसको वर्तमान साझेदारों में वर्तमान अनुपात में नाम किया जाएगा। इस उद्देश्य के लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टियाँ की जाएंगी।

(i) अविभाजित लाभ एवं संचयों के विभाजन के लिए

संचय खाता नाम
लाभ एवं हानि खाता (लाभ) नाम
  साझेदार का पूँजी खाता से (व्यक्तिगत)
(संचय एवं लाभ हानि (लाभ) का सभी साझेदारों के पूँजी खातों में वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरण)

(ii) हानि के विभाजन के लिए :

साझेदारों का पूँजी खाता नाम (व्यक्तिगत)
  लाभ हानि खाता (हानि) से
(लाभ हानि (हानि) का साझेदारों के पूँजी खातों में वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरण)

टिप्पणी

उदाहरण 31

रोहित एवं सोनिया साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 4 : 3 के अनुपात में करते हैं। 1 अप्रैल 2014 को वे मीना को लाभ में 1/4 भाग के लिए नए साझेदार के रूप में प्रवेश देते हैं। इस तिथि को फर्म का स्थिति विवरण ₹ 70,000 सामान्य संचय एवं लाभ हानि खाते का ₹ 21,000 नाम शेष दिखाता है। आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ करें।

हल :

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	सामान्य संचय खाता नाम		70,000	
	रोहित का पूँजी खाता से			40,000
	सोनिया का पूँजी खाता से			30,000
	(सामान्य संचय का वर्तमान साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरण)			
	रोहित का पूँजी खाता नाम		12,000	
	सोनिया का पूँजी खाता नाम		9,000	
	लाभ हानि खाता से			21,000
	(संचित हानि का वर्तमान साझेदारों के पूँजी खातों में हस्तांतरण)			

उदाहरण 32

भानू एवं एकता साझेदार हैं और लाभ एवं हानि का विभाजन क्रमशः 3 : 2 के अनुपात में करते हैं। दिसंबर, 31, 2014 को उनका स्थिति विवरण निम्न है :

दिसंबर 31, 2014 को भानू एवं एकता का स्थिति विवरण

दायित्व		₹	परिसम्पत्तियां	₹
लेनदार		28,000	हस्तस्थ रोकड़	3,000
पूँजी			बैंक में रोकड़	23,000
भानू	70,000		देनदार	19,000
एकता	70,000	1,40,000	भवन	65,000
			फर्नीचर	15,000
			मशीनरी	13,000
			स्टॉक	30,000
		1,68,000		1,68,000

टिप्पणी

इस तिथि को वे दीपक को भविष्य के लाभो में 1/3 भाग के लिए निम्न शर्तो पर साझेदारी में प्रवेश देते हैं :

(i) फर्नीचर एवं स्टॉक पर 10 प्रतिशत ह्रास लगाया जाएगा।

(ii) भवन के मूल्य में ₹ 20,000 की वृद्धि होगी।

(iii) देनदारों पर संदिग्ध ऋण के लिए 5 प्रतिशत का प्रावधान किया जाएगा।

(iv) दीपक अपनी पूँजी के लिए ₹ 50,000 एवं ख्याति के लिए ₹ 30,000 लाएगा।

आवश्यक बही खाते एवं नई फर्म का स्थिति विवरण बनाइये।

हल :

पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम | जमा

विवरण		राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान		950	भवन	20,000
फर्नीचर		1,500		
स्टॉक		3,000		
लाभ का हस्तांतरण				
भानू का पूँजी खाता	8,730			
एकता का पूँजी खाता	5,820	14,550		
		20,000		20,000

पूँजी खाता

नाम | जमा

विवरण	भानू (₹)	एकता (₹)	दीपक (₹)	विवरण	भानू (₹)	एकता (₹)	दीपक (₹)
शेष आ/ले	96,730	87,820	50,000	शेष आ/ला	70,000	70,000	—
				पुनर्मूल्यांकन (लाभ)	8,730	5,820	—
				बैंक	—	—	50,000
				ख्याति	18,000	12,000	—
	96,730	87,820	50,000		96,730	87,820	50,000

टिप्पणी

दिसंबर 31, 2006 को भानू एकता एवं दीपक का स्थिति विवरण

दायित्व		(₹)	परिसम्पत्तियां		(₹)
लेनदार		28,000	हस्तस्थ रोकड़		3,000
पूँजी			बैंक में रोकड़		1,03,000
भानू	96,730		देनदार	19,000	
एकता	87,820		देनदार प्रावधान	950	18,050
दीपक	50,000	2,34,550	स्टॉक		27,000
			फर्नीचर		13,500
			मशीनरी		13,000
			भवन		85,000
		2,62,550			2,62,550

उदाहरण 33

आशू एवं पंकज साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 3 : 2 के अनुपात में करते हैं। मार्च 31, 2014 को उनका स्थिति विवरण निम्न है :

मार्च 31, 2014 को आशू एवं पंकज का स्थिति विवरण

दायित्व		(₹)	परिसम्पत्तियां	(₹)
लेनदार		38,000	हस्तस्थ रोकड़	15,000
देय विपत्र		40,000	बैंक में रोकड़	62,000
अदत वेतन		5,000	देनदार	58,000
लाभ एवं हानि		40,000	स्टॉक	85,000
पूँजी			मशीनरी	1,45,000
आशू	1,50,000		ख्याति	38,000
पंकज	1,30,000	2,80,000		
		4,03,000		4,03,000

31 मार्च, 2014 को वे गुरुदीप को साझेदारी में निम्न शर्तों पर प्रवेश देते हैं

(क) नया लाभ विभाजन अनुपात 3 : 2 : 1 होगा।

(ख) वह पूँजी में भाग के लिए ₹ 1,00,000 एवं ₹ 3,00,00 ख्याति के लिए लाएगा।

(ग) मशीनरी में 10 प्रतिशत की वृद्धि होगी

(घ) देनदारों पर संदिग्ध ऋणों के लिए 4 प्रतिशत का प्रावधान होगा।

पुनर्मूल्यांकन खाता, पूँजी खाते, बैंक खाता एवं गुरुदीप के प्रवेश के बाद नई फर्म का स्थिति विवरण तैयार करें।

टिप्पणी

हल :

पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम — जमा

विवरण		राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान		2,320	मशीनरी	14,500
लेनदार		6,000	स्टॉक	2,000
लाभ का हस्तांतरण				
आशू का पूँजी खाता	4,908			
पंकज का पूँजी खाता	3,272	8,180		
		16,500		16,500

पूँजी खाता

नाम — जमा

विवरण	आशू (₹)	पंकज (₹)	गुरुदीप (₹)	विवरण	आशू (₹)	पंकज (₹)	गुरुदीप (₹)
ख्याति	22,800	15,200	—	शेष आ/ला	1,50,000	1,30,000	—
शेष आ/ले	1,74,108	1,46,072	1,00,000	लाभ एवं हानि खाता	24,000	16,000	—
				पुनर्मूल्यांकन	4,908	3,272	—
				बैंक	—	—	1,00,000
				ख्याति	18,000	12,000	—
	1,96,908	1,61,272	1,00,000		1,96,908	1,61,272	1,00,000

मार्च 31, 2014 को आशू पंकज एवं गुरुदीप का स्थिति विवरण

दायित्व		(₹)	परिसम्पत्तियां		(₹)
लेनदार		44,000	हस्तस्थ रोकड़		15,000
देय विपत्र		40,000	बैंक में रोकड़		1,92,000
अदत वेतन		5,000	देनदार	58,000	
पूँजी			**घटा :** संदिग्ध ऋणो		
आशू	1,74,108		के लिए प्रावधान	2,320	55,680
पंकज	1,46,072		स्टॉक		87,000
गुरुदीप	1,00,000	4,20,180	मशीनरी		1,59,500
		5,09,180			5,09,180

बैंक खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
शेष आ/ला	62,000	शेष आ/ले	1,92,000
गुरुदीप का पूँजी खाता	1,00,000		
ख्याति	30,000		
	1,92,000		1,92,000

कार्यकारी टिप्पणी :

त्याग अनुपात = वर्तमान अनुपात – नया अनुपात

साझेदार	वर्तमान अनुपात	नया अनुपात	त्याग	त्याग अनुपात
आशू	3/5	3/6	$\frac{18-15}{30} = \frac{3}{30}$	
पंकज	2/5	2/6	$\frac{12-10}{30} = \frac{2}{30}$	3 : 2

उदाहरण 34

हिमानी एवं हर्ष एक फर्म में साझेदार हैं। मार्च 31, 2014 को उनका स्थिति विवरण निम्न है :

मार्च 31, 2014 को हिमानी एवं हर्षा का स्थिति विवरण

दायित्व		(₹)	परिसम्पत्तियां	(₹)
संदिग्ध ऋणों के लिये प्रावधान		3,000	रोकड़	20,000
			विविध देनदार	90,000
लेनदार		36,000	स्टॉक	45,000
देय विपत्र		15,000	मशीनरी	41,000
अदत व्यय		2,000	भवन	1,10,000
पूँजी			ख्याति	40,000
हिमानी	1,70,000			
हर्षा	1,20,000	2,90,000		
		3,46,000		3,46,000

टिप्पणी

वे अप्रैल 1, 2014 को चारू को निम्न शर्तों पर साझेदारी में प्रवेश देते हैं।

(i) चारू अपने भाग की पूँजी के लिए ₹ 90,000 लाएगी एवं ख्याति के लिए राशि लाने में असमर्थ है।

(ii) ख्याति का मूल्यांकन पिछले 4 वर्षों के औसत लाभ के 2 वर्षों के क्रय से किया जाएगा। पिछले चार वर्षों की लाभ राशि क्रमशः ₹ 20,000; ₹ 30,000; ₹ 30,000; ₹ 40,000 है।

(iii) हिमानी, हर्षा एवं चारू के बीच नया लाभ विभाजन अनुपात 3:2:1 है।

(iv) अदत व्ययों को ₹ 500 तक लाया जाएगा।

(v) संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान को 5% तक बढ़ाया जाएगा।

(vi) मशीनरी पर 10% ह्रास लगाया जाएगा एवं स्टॉक का मूल्यांकन ₹ 47,000 किया गया।

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते एवं नई फर्म का आरंभिक स्थिति विवरण तैयार करें।

हल

पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम | जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*		*राशि (₹)*
संदिग्ध ऋणों के लिये प्रावधान	1,500	अदत व्यय		1,500
मशीनरी	4,100	स्टॉक		2,000
		पुनर्मूल्यांकन पर हानि का पूँजी खाते में हस्तांतरण		
		हिमानी का पूँजी खाता	1,050	
		हर्षा का पूँजी खाता	1,050	2,100
	5,600			5,600

पूँजी खाता

नाम | जमा

विवरण	*हिमानी (₹)*	*हर्षा (₹)*	*चारू (₹)*	*विवरण*	*हिमानी (₹)*	*हर्षा (₹)*	*चारू (₹)*
ख्याति	20,000	20,000	–	शेष आ/ले	1,70,000	1,20,000	–

टिप्पणी

पुनर्मूल्यांकन	1,050	1,050		चारू की पूँजी	–	10,000	–
(हानि)				बैंक	–	–	90,000
हर्ष की पूँजी			10,000				
शेष आ/ले	1,48,950	1,08,950	80,000				
	1,70,000	1,30,000	90,000		1,70,000	1,30,000	90,000

मार्च 31, 2014 को हिमानी, हर्षा एवं चारू का स्थिति विवरण

दायित्व		*(₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*(₹)*
संदिग्ध ऋणों के लिये प्रावधान		4,500	रोकड़	70,000
			बैंक	90,000
			विविध देनदार	90,000
लेनदार		36,000	स्टॉक	47,000
देय विपत्र		15,000	मशीनरी	36,900
अदत व्यय		500	भवन	1,10,000
पूँजी				
हिमानी	1,48,950			
हर्षा	1,08,950			
चारू	80,000	2,90,000		
		3,93,900		3,93,900

कार्यकारी टिप्पणी

(i) ख्याति का मूल्यांकन

कुल लाभ = ₹ 20,000 + ₹ 30,000 + ₹ 30,000 + ₹ 40,000
= ₹ 1,20,000

औसत लाभ = ₹ 1,20,000/4 = ₹ 30,000

ख्याति = ₹ 30,000 × 2 = ₹ 60,000

ख्याति में चारू का भाग = ₹ 60,000 × 1/6 = ₹ 10,000

(ii) त्याग अनुपात = वर्तमान अनुपात – नया अनुपात

हिमानी $= \frac{3}{6} - \frac{3}{6} = 0$

हर्षा $= \frac{3}{6} - \frac{2}{6} = \frac{1}{6}$

केवल हर्षा ने अपने भाग का लाभ का त्याग किया है।

पाठगत प्रश्न 23.4

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्द/शब्दों द्वारा कीजिए :

(i) पुनर्मूल्यांकन खाते को .... के मूल्य में वृद्धि के लिए नाम किया जाता है।

(ii) पुनर्मूल्यांकन खाते को .... के मूल्य में वृद्धि के लिए जमा किया जाता है।

(iii) पुनर्मूल्यांकन खाते को .... के मूल्य में कमी के लिए जमा किया जाता है।

(iv) पुनर्मूल्यांकन खाते को .... के मूल्य में कमी के लिए नाम किया जाता है।

(v) पुनर्मूल्यांकन पर लाभ का हस्तांतरण साझेदारों के पूँजी खाते के .... में किया जाता है।

(vi) वर्तमान साझेदारों के बीच संचय का विभाजन उनके .... में किया जाएगा।

(vii) संचित हानियों को वर्तमान साझेदारों के पूँजी खातों में उनके लाभ विभाजन अनुपात में .... किया जाता है।

II. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

i. वर्तमान साझेदारों के लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन की स्थिति में संचित लाभ को उनके पूँजी खातों/चालू खातों में हस्तान्तरित कर दिया जाएगा –

(क) पुराने लाभ हानि अनुपात में (ख) बराबर

(ग) नए लाभ आबंटन अनुपात में (घ) लाभ/त्याग अनुपात में

ii. वर्तमान साझेदारों के लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन पर संचित लाभ–हानि को

(क) साझेदारों के पूँजी खातों के नाम में पुराने लाभ आबंटन अनुपात में बांटा जाएगा

(ख) साझेदारों के पूँजी खातों के जमा में उनके पुराने आबंटन अनुपात में बांटा जाएगा।

(ग) साझेदारों के पूँजी खातों के नाम में उनके नए लाभ आबंटन अनुपात में लिखा जाएगा।

(घ) साझेदारों के पूँजी खातों के नाम में उनके नए लाभ अनुपात में लिखा जाएगा।

iii. यदि A और B का लाभ अनुपात 3 : 2 है और अब वह बराबर लाभ बांटना चाहते हैं तो A का त्याग क्या है?

टिप्पणी

(क) 1/10 (ख) 1/20 (ग) 1/15 (घ) 1/5

iv. यदि A और B का लाभ आबंटन अनुपात 4 : 5 है, वह लाभ का बंटवारा बराबर करना चाहते हैं B का त्याग क्या होगा?

(क) 1/18 (ख) 1/10 (ग) 5/18 (घ) 7/18

v. यदि A और B का आबंटन अनुपात 5 : 4 है और अब वह लाभ बराबर आबंटन के लिए सहमत हैं तो B का लाभ होगा

(क) 2/9 (ख) 1/18 (ग) 1/8 (घ) 4/9

III. वर्तमान साझेदारों के लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन निम्न सम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन पर पुनर्मूल्यांकन खाते के नाम में लिखा जाएगा अथवा जमा में :

i. भवन के मूल्य में वृद्धि

ii. स्टॉक के मूल्य में वृद्धि

iii. मशीनरी के मूल्य में कमी

iv. फर्नीचर के मूल्य में कमी

IV. लिखें कि निम्न कथन सत्य हैं अथवा असत्य :

i. मशीनरी के अवक्षयण पर पुनर्मूल्यांकन खाते के नाम में लिखा जाता है।

ii. संयन्त्र के अवक्षयण के लिए पुनर्मूल्यांकन खाते के जमा में लिखा जाएगा।

iii. अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए पुनर्मूल्यांकन खाते के नाम में लिखा जाएगा।

iv. गैर अभिलेखित सम्पत्ति के मूल्य के अभिलेखन के लिए पुनर्मूल्यांकन खाते के नाम में लिखा जाएगा।

23.7 साझेदारों की पूँजी का समायोजन

कभी-कभी, साझेदार के प्रवेश के समय, साझेदार अपनी पूँजी को लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार समायोजित करने के लिए सहमत होते हैं। इस उद्देश्य के लिए, सभी वर्तमान साझेदारों के पूँजी खाते तैयार किए जाते हैं जिसमें ख्याति, सामान्य संचय, परिसम्पत्तियों का पुनर्मूल्यांकन एवं दायित्वों का पुनर्निधारण आदि सभी समायोजन किए जाते हैं। समायोजित की गई वास्तविक पूँजी का मिलान, साझेदार के प्रवेश के बाद व्यवसाय में रखी गई पूँजी की राशि से किया जाता है। समायोजित वास्तविक पूँजी, यदि अनुपातिक पूँजी से अधिक है तो उसे निकाल लिया जाएगा या चालू खाते में हस्तांतरित किया जाएगा।

साझेदार नई फर्म के लिए रखी जाने वाली पूँजी की गणना का निर्णय ले सकते हैं जो या तो नए साझेदार की पूँजी के आधार पर एवं उसके लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार या वर्तमान साझेदारों में पूँजी खातों के शेष के आधार पर होगी।

1. वर्तमान साझेदारों की पूँजी का समायोजन, नए साझेदार की पूँजी के आधार पर :

यदि नए साझेदार की पूँजी दी गई है, तो नई फर्म की संपूर्ण पूँजी का निर्धारण, नए साझेदार की पूँजी एवं उसके लाभ विभाजन अनुपात के आधार पर किया जाएगा। इसलिए अन्य साझेदारों की पूँजी का निर्धारण कुल पूँजी को उनके लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार विभाजित करके किया जाएगा।

यदि, समायोजन के पश्चात् साझेदारों की वर्तमान पूँजी उसकी नई पूँजी से अधिक है, अधिक राशि को साझेदार द्वारा निकाल लिया जाता है या उसके चालू खाते के जमा में हस्तांतरित किया जाएगा। यदि साझेदार की वर्तमान पूँजी नई पूँजी से कम है, साझेदार कमी की राशि को लाएगा या उसके चालू खाते के नाम में हस्तांतरण करेगे। इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टियाँ की जाएंगी :

(i) जब अधिक राशि को साझेदार द्वारा निकाल लिया जाता है या चालू खाते में हस्तांतरित किया जाता है।

वर्तमान साझेदार का पूँजी खाता नाम
    बैंक/साझेदार का चालू खाता से
(अधिक राशि साझेदार द्वारा निकालने पर या
चालू खाते में हस्तांतरित करने पर)

(ii) कमी की राशि लाने पर या शेष चालू खाते में हस्तांतरित करने पर

बैंक/साझेदार का चालू खाता नाम
    वर्तमान साझेदार का पूँजी खाता से
(कमी की राशि या शेष का चालू खाते में हस्तांतरण)

उदाहरण 35

आशा एवं बाबी साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 5 : 3 के अनुपात में करते हैं। उनकी पूँजी क्रमशः ₹ 80,000 एवं ₹ 70,000 है। वे नए साझेदार नितिन को प्रवेश देते हैं। आशा, बाबी और नितिन में नया लाभ विभाजन अनुपात क्रमशः 5 : 3 : 2 है। नितिन ₹ 40,000की पूँजी लाता है परिसम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन एवं दायित्वों के पुनर्निर्धारण से लाभ ₹ 6,400 है। यह सहमति हुई कि साझेदारों की पूँजी नए लाभ विभाजन अनुपात में होगी। प्रत्येक साझेदार की नई पूँजी की गणना करें।

हल :

आशा और बाबी की वास्तविक पूँजी

टिप्पणी

	आशा (₹)	बाबी (₹)
पूँजी खातों में शेष	80,000	70,000
जोड़ा पुनर्मूल्यांकन पर लाभ (5 : 3)	4,000	2,400
समायोजन के बाद पूँजी	84,000	72,400

फर्म की नई पूँजी एवं वर्तमान साझेदारों की पूँजी की गणना

फर्म में नितिन का भाग = 2/10

नितिन 2/10 भाग के लिए ₹ 40,000 लाता है।

नितिन की पूँजी के आधार पर नई फर्म की कुल पूँजी = 40,000 × 10/2

= ₹ 2,00,000

नई पूँजी में आशा का भाग = 2,00,000 × 5/10 = 1,00,000

नई पूँजी में बाबी का भाग = 2,00,000 × 3/10 = 60,000

आशा की समायोजित पूँजी का नई पूँजी से मिलान करने पर हमें ज्ञात हुआ कि आशा ₹ 16,000 लाएगी (₹ 1,00,000 – ₹ 84,000) या राशि को उसके चालू खाते के नाम में लेखा किया जाएगा।

बाबी की समायोजित पूँजी का नई पूँजी से मिलान करने पर हमें ज्ञात हुआ कि बाबी ₹ 12,400 निकालकर ले जाएगा (₹ 72,400 – ₹ 60,000) या राशि को उसके चालू खाते के जमा में लिखा जाएगा।

2. जब नए साझेदार की पूँजी की गणना नई फर्म की कुल पूँजी के अनुपात में की जाएगी।

कभी-कभी नए साझेदार की पूँजी नहीं दी गई होती। वह लाभ में अपने भाग की अनुपातिक पूँजी लाएगा। इस स्थिति में नए साझेदार की पूँजी की गणना वर्तमान साझेदारों की समायोजित पूँजी के आधार पर की जाएगी।

उदाहरण के लिए : सुमित एवं अनू का पूँजी खाता सभी समायोजनों एवं पुनर्मूल्यांकन के बाद क्रमश ₹ 90,000 एवं ₹ 60,000 शेष दर्शाते हैं। वे रोहित को लाभ में 1/4 भाग के लिए नया साझेदार बनाते हैं। रोहित की पूँजी की गणना इस प्रकार होगी।

कुल भाग	=	1
लाभ में रोहित का भाग	=	1/4
शेष भाग	=	1 – 1/4 = 3/4

टिप्पणी

3/4 भाग के लाभ के लिये सुमित एवं अनु की संयुक्त पूँजी

= ₹ 90,000 + ₹ 60,000 = ₹ 1,50,000

फर्म की कुल पूँजी = $1,50,000 \times 4/3$

= ₹ 2,00,000

1/4 भाग के लाभ के लिये रोहित की पूँजी = ₹ 2,00,000 × 1/4 = ₹ 50,000

रोहित अपनी पूँजी के लिये ₹ 50,000 लायेगा।

उदाहरण 36

मनोज एवं हेमा साझेदार हैं तथा लाभ–हानि का विभाजन 7 : 3 के अनुपात में करते हैं। मार्च 31, 2014 को इनका स्थिति विवरण निम्न है :

मार्च 31, 2014 को मनोज एवं हेमा का स्थिति विवरण

दायित्व		(₹)	परिसम्पत्तियां	(₹)
पूँजी			बैंक	12,000
मनोज	88,000		विविध देनदार	45,000
हेमा	64,000	1,52,000	प्राप्य विपत्र	30,000
विविध लेनदार		32,000	स्टॉक	35,000
देय विपत्र		38,000	विनियोग	13,000
संचय		18,000	मशीनरी	40,000
			भवन	45,000
			ख्याति	20,000
		2,40,000		2,40,000

वे तरून को साझेदारी में निम्न शर्तो पर प्रवेश देते हैं–

(i) स्टॉक का पुनर्मूल्यांकन ₹ 40,000 हुआ।

(ii) भवन, मशीनरी एवं विनियोग पर 12% ह्रास लगाया जाएगा।

(iii) पूर्वदत बीमा ₹ 1,000 है।

(iv) तरून पूँजी के लिए ₹ 40,000 एवं ₹ 12,000 ख्याति के लिए, फर्म के लाभ में 1/6 भाग के लिए लाएगा।

(v) साझेदारों की पूँजी उनके लाभ विभाजन अनुपात के अनुपातिक होगी। पूँजी में समायोजन रोकड़ द्वारा किया जाएगा।

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते, रोकड़ खाता एवं नई फर्म का स्थिति विवरण तैयार करें।

टिप्पणी

हल :

पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम जमा

विवरण	(₹)	विवरण		(₹)
भवन	5,400	स्टॉक		5,000
मशीनरी	4,800	पूर्वदत बीमा		1,000
विनियोग	1,560	हानि का हस्तांतरण		
		मनोज की पूँजी	4,032	
		हेमा की पूँजी	1,728	5,760
	11,760			11,760

पूँजी खाता

नाम जमा

विवरण	मनोज (₹)	हेमा (₹)	तरूण (₹)	विवरण	मनोज (₹)	हेमा (₹)	तरूण (₹)
ख्याति	14,000	6,000	—	शेष आ/ले	88,000	64,000	—
पुनर्मूल्यांकन	4,032	1,728	—	समान्य संचय	12,600	5,400	—
(हानि)				ख्याति	8,400	3,600	
बैंक	—	5,272	—	बैंक	—	—	40,000
शेष आ/ले	1,40,000	60,000	40,000	बैंक	49,032	—	—
	1,58,032	73,000	40,000		1,58,032	73,000	40,000

मार्च 31, 2006 को मनोज, हेमा एवं तरून का स्थिति विवरण

दायित्व		(₹)	परिसम्पत्तियां	(₹)
देय विपत्र		38,000	बैंक	1,07,760
विविध लेनदार		32,000	प्राप्य विपत्र	30,000
पूँजी खाता			विविध देनदार	45,000
मनोज	1,40,000		स्टॉक	40,000
हेमा	60,000		विनियोग	11,440
तरून	40,000	2,40,000	पूर्वदत बीमा	1,000
			मशीनरी	35,200
			भवन	39,600
		3,10,000		3,10,000

टिप्पणी

बैंक खाता

नाम | जमा

विवरण	(₹)	विवरण	(₹)
शेष आ/ला	12,000	हेमा का पूँजी खाता	5,272
मनोज का पूँजी खाता	49,032	शेष आ/ले	1,07,760
ख्याति	12,000		
तरून की पूँजी	40,000		
	1,13,032		1,13,032

कार्यकारी टिप्पणी

(अ) नये लाभ विभाजन अनुपात की गणना

कुल लाभ = 1

तरून ने लिया = 1/6

शेष भाग = 1 – 1/6

= 5/6 मनोज एवं हेमा द्वारा उनके वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात में विभाजन

मनोज का नया भाग = $5/6 \times 7/10$ = 7/12

हेमा का नया भाग = $5/6 \times 3/10$ = 3/12

मनोज, हेमा एवं तरून में नया लाभ विभाजन अनुपात = 7/12 : 3/12 : 1/6 या 7 : 3 : 2.

(ब) पूँजी का समायोजन

तरून 1/6 भाग के लिये पूँजी लाया = ₹ 40,000

फर्म की कुल पूँजी = ₹ 40,000 × 6/1 = ₹ 2,40,000

मनोज की पूँजी = ₹ 2,40,000 × 7/12 = ₹ 1,40,000

हेमा की पूँजी = ₹ 2,40,000 × 3/12 = ₹ 60,000

तरून की पूँजी = ₹ 2,40,000 × 2/12 = ₹ 40,000

पाठगत प्रश्न 21.5

तनू एवं अनू साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 3 : 2 के अनुपात में करते हैं। वे लाभ में 1/5 भाग के लिए नए साझेदार सुमित को प्रवेश देते हैं। वह अपनी पूजी के लिए ₹ 50,000 लाएगा। सभी समायोजनों के पश्चात तनू एवं अनू की पूँजी क्रमशः ₹ 95,000 एवं ₹ 90,000 है। फर्म की कुल पूँजी एवं नए साझेदार की पूँजी के आधार पर प्रत्येक साझेदार की पूँजी की गणना करें।

आपने क्या सीखा

- **साझेदार का प्रवेश – अर्थ :** जब वर्तमान साझेदारी फर्म में नए साझेदार को प्रवेश दिया जाता है वह साझेदार का प्रवेश कहलाता है।

  नए साझेदार के प्रवेश पर, निम्न समायोजन किए जाने आवश्यक है :

  (i) लाभ विभाजन अनुपात में समायोजन

  (ii) ख्याति में समायोजन

  (iii) परिसम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन एवं दायित्वों के पुर्ननिर्धारण के लिए समायोजन

  (iv) संचित लाभों एवं सचयों का विभाजन

  (v) साझेदारों की पूँजी का समायोजन

- **लाभ विभाजन अनुपात में समायोजन :** जब नया साझेदार प्रवेश करता है वह वर्तमान साझेदारों से आपने भाग के लाभ का अधिग्रहण करता है जिसके परिणामस्वरूप, नई फर्म में लाभ विभाजन अनुपात का निर्णय नए साझेदार एवं वर्तमान साझेदारों के बीच परस्पर लिया जाता है।

- **त्याग अनुपात :** नए साझेदार के प्रवेश के समय, वर्तमान साझेदार अपने भाग का कुछ हिस्सा नए साझेदार के पक्ष में समर्पण कर देते हैं। जिस अनुपात में वे अपने लाभों का समर्पण करते हैं वह त्याग अनुपात कहलाता है

- **ख्याति का अर्थ :** स्थापित फर्म अपने वृहत व्यावसायिक संबंध बनाती है। यह फर्म को नई फर्म की तुलना में अधिक लाभ अर्जित करने में सहायता करता है। इस लाभ का मौद्रिक मूल्य ख्याति कहलाता है।

- **ख्याति का मूल्यांकन करने की विधियाँ :** (i) औसत लाभ विधि (ii) अधिलाभ विधि (iii) पूँजीकरण विधि

टिप्पणी

- **परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन :** नए साझेदार के प्रवेश पर, फर्म का पुनर्गठन किया जाता है एवं परिसम्पत्तियों का पुनर्मूल्यांकन एव दायित्वों का पुर्ननिर्धारण किया जाता है। यह नए साझेदार के प्रवेश के समय फर्म की सत्य स्थिति दिखाने के लिए आवश्यक है।

- **सचंयों एवं संचित लाभ व हानियों का समायोजन :** नए साझेदार के प्रवेश के समय स्थिति विवरण में दिखाए गए संचित लाभ एवं संचय को वर्तमान साझेदारों के पूँजी खाते में उनके वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात में जमा किया जाएगा। यदि यहाँ पर हानि है तो उसको वर्तमान साझेदारों में वर्तमान अनुपात में नाम किया जाएगा।

- **साझेदारों की पूँजी का समायोजन :** कभी-कभी साझेदार के प्रवेश के समय साझेदार अपनी पूँजी को लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार समायोजित करने के लिए सहमत होते हैं। साझेदार नई फर्म के लिए रखी जाने वाली पूँजी की गणना का निर्णय ले सकते हैं जो कि या तो नए साझेदार की पूँजी के आधार पर एवं उसके लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार या वर्तमान साझेदारों के पूँजी खातों के शेष के आधार पर होगी।

- वर्तमान साझेदारों के लाभ हानि अनुपात में परिवर्तन पर लेखा पुस्तकों मं संचय एवं संचित लाभ/हानि को साझेदारों के पूँजी खातों/चालू खातों में उनके पुराने लाभ आबंटन अनुपात में हस्तान्तरित कर दिया जाएगा।

- यदि साझेदार संचय एवं लाभ/हानि को आबंटन नहीं करना चाहते हैं तो लाभ अनुपात में परिवर्तन का प्रभाव दिखाने के लिए एक समायोजन प्रविष्टि की जाएगी। इसके लिए उस साझेदार/साझेदारों के पूँजी खातों के नाम में लिखा जाएगा, जिनका लाभ हुआ है तथा जिस साझेदार/साझेदारों ने त्याग किया है उनके जमा में अनुपातन लिखा जाएगा।

- लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन का अर्थ होता है कि एक साझेदार दूसरे साझेदारों से लाभ के भाग का क्रय कर रहा है जो कि उस दूसरे साझेदार का था। इसलिए क्रय करने अथवा लाभ प्राप्त करने वाले साझेदार को ख्याति का अनुपातन भाग क्षति पूर्ति के रूप में देना होगा। वर्तमान साझेदारों के लाभ अनुपात में परिवर्तन पर ख्याति के लेखा समाधान के लिए निम्न प्रविष्टि की जाएगी :

लाभ में साझेदार का पूँजी खाता	नाम
त्याग करने वाले साझेदार के पूँजी खाता से	
(वर्तमान साझेदारों के लाभ आबंटन अनुपात में परिवर्तन पर ख्याति का लेखा)	

पाठान्त प्रश्न

1. त्याग अनुपात का अर्थ बताइए।
2. ख्याति का अर्थ बताइए।
3. ख्याति के मूल्यांकन की विधियों का वर्णन कीजिए।
4. पुनर्मूल्यांकन खाता का वर्णन कीजिए। नए साझेदार के प्रवेश के समय परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुर्नमूल्याकन क्यों किया जाता है?
5. नए साझेदार के प्रवेश पर संचित लाभ या हानियों एवं संचय के लेखाकरण का वर्णन करें।
6. नए साझेदार के प्रवेश की स्थिति में नए साझेदार की अनुपातिक पूँजी की गणना का वर्णन करें।
7. अ और ब साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 5 : 3 में करते हैं। वे स को साझेदारी में 1/4 भाग के लिए प्रवेश देते हैं। नए लाभ विभाजन अनुपात एवं त्याग अनुपात की गणना कीजिए।
8. रोहित एवं मीना साझेदार हैं। लाभ हानि का विभाजन 7 : 3 के अनुपात में करते हैं। नए साझेदार टीना के पक्ष में रोहित अपने भाग का 1/7 समर्पण करता है एवं मीना अपने भाग का 1/3 भाग समर्पण करती है। नए लाभ विभाजन अनुपात की गणना कीजिए।
9. एक फर्म पिछले कुछ वर्षों से ₹ 3,00,000 औसत लाभ अर्जित करती है। इस प्रकार के व्यवसाय में सामान्य प्रत्याय दर 15% है। यदि शुद्ध परिसम्पत्तियों की राशि ₹ 16,00,000 है, अधिलाभों का पूँजीकरण के अनुसार ख्याति ज्ञात करें।
10. निम्न स्थिति विवरण वरून एवं आशिमा का है जो लाभ हानि का विभाजन 2 : 1 के अनुपात में करते हैं।

दायित्व		राशि (₹)	परिसम्पत्तियाँ	राशि (₹)
पूँजी			रोकड़	12,000
तरून	50,000		विविध देनदार	60,000
आशिमा	40,000	90,000	स्टॉक	12,000
विविध लेनदार		20,000	फर्नीचर	6,000
			भवन	20,000
		1,10,000		1,10,000

वे सुनीता को साझेदारी में निम्न शर्तों पर प्रवेश देने के लिए सहमत होते हैं :

टिप्पणी

(i) सुनीता ख्याति के रूप में ₹ 9,000 का भुगतान करेगी।

(ii) सुनीता व्यवसाय के लाभ में 1/4 भाग के लिए ₹ 11,000 की पूँजी लायेगी।

(iii) भवन एवं फर्नीचर पर 5% ह्रास लगया जाएगा। स्टॉक में ₹ 1,600 की कमी हुई एवं डूबत ऋण संचय के लिए ₹ 1,300 का प्रावधान किया जाएगा।

आवश्यक खाते एवं प्रवेश के पश्चात् स्थिति विवरण तैयार करें।

11. अ और ब फर्म में साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 2 : 1 के अनुपात में करते हैं। स को 1/4 भाग के लाभों के लिए फर्म में प्रवेश दिया जाता है। वह पूँजी के लिए ₹ 60,000 लाएगा एवं अ और ब की पूँजी का समायोजन लाभ विभाजन अनुपात में किया जाएगा। मार्च 31, 2014 को अ एवं ब का स्थिति विवरण निम्न है :

मार्च 31, 2014 को अ और ब का स्थिति विवरण

दायित्व		*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियाँ*	*राशि (₹)*
विविध लेनदार		16,000	हस्तस्थ रोकड़	4,000
देय विपत्र		8,000	बैंक में रोकड़	20,000
समान्य संचय		12,000	विविध देनदार	16,000
पूँजी			स्टॉक	20,000
अ	1,00,000		फर्नीचर	10,000
ब	64,000	1,64,000	मशीनरी	50,000
			भवन	80,000
		2,00,000		2,00,000

समझौते की अन्य शर्तें निम्न हैं

(i) अपने भाग की ख्याति के लिए ₹ 24,000 लाएगा।

(ii) भवन का ₹ 90,000 एवं मशीनरी का ₹ 46,000 मूल्यांकन किया गया।

(iii) देनदारों पर डूबत ऋण के लिए 6% का प्रावधान करें।

(iv) अ और ब का पूँजी खाता रोकड़ द्वारा समायोजित किया जाएगा।

आवश्यक खाते एवं स के प्रवेश के पश्चात् स्थिति विवरण बनाइए।

12. A और B साझेदार थे और लाभ का बंटवारा 3 : 1 के अनुपात में करते थे। 1.4.2014 से उन्होंने लाभ का बराबर बांटने का निर्णय लिया। इसके लिए फर्म की ख्याति का मूल्य ₹ 5,000 तय किया गया।

A और B के लाभ अनुपात में परिवर्तन पर ख्याति के सम्बन्ध में आवश्यक समायोजन प्रविष्टि कीजिए।

टिप्पणी

13. X और Y साझेदार थे और लाभ का बंटवारा 5 : 3 में करते थे। 1.1.2013 से उन्होंने लाभ के अनुपात में परिवर्तन करने का निर्णय लिया। अब यह अनुपात 3 : 5 होगा। ख्याति का मूल्य ₹ 1,60,000 तय किया गया।

    X और Y के लाभ अनुपात में परिवर्तन पर ख्याति के सम्बन्ध में आवश्यक समायोजन प्रविष्टि कीजिए।

14. अल्का, ज्योति और सोनम साझेदार थे और लाभ का बंटवारा 3 : 2 : 1 में करते थे। यह निर्णय लिया गया कि भविष्य में लाभ बराबर बांटा जाएगा। इसके लिए फर्म की ख्याति का मूल्य ₹ 1,20,000 तय किया गया।

    लाभ अनुपात में परिवर्तन के कारण अल्का, ज्योति और सोनम की बहियों में ख्याति के सम्बन्ध में लेखा करें।

15. अखिल, निखिल और शकील एक फर्म में साझेदार थे और लाभ का आबंटन 5 : 3 : 2 के अनुपात में करते थे। निर्णय लिया गया कि 1.4.2014 से लाभ का बंटवारा 3 : 5 : 2 के अनुपात में होगा। इसके लिए ख्याति का मूल्य ₹ 2,00,000 होगा।

    अखिल, निखिल और शकील के लाभ अनुपात में परिवर्तन पर ख्याति के लेखा समाधान के लिए रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।

16. कुमार ओर जानकी एक फर्म में साझेदार हैं तथा 3 : 2 के अनुपात में लाभ का आबंटन करते हैं। 31.3.2013 को उनका स्थिति विवरण सामान्य संचय ₹ 30,000 दिखा रहा है। इस तिथि को उन्होंने लाभ का आबंटन बराबर करने का निर्णय लिया।

    लाभ आबंटन अनुपात के परिवर्तन पर सामान्य संचय के लेखा समाधान के लिए आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।

17. रवि और कांता साझेदार थे जो लाभ का बंटवारा 3 : 1 के अनुपात में कर रहे थे। 31.3.2013 को उनकी लेखा पुस्तकें ₹ 40,000 का नाम शेष दिखा रही थी। उन्होंने लाभ को 3 : 2 के अनुपात में बांटने का निर्णय लिया।

    ऊपर दिए गए शेष के लेखा समाधान के लिए आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।

18. करन और कार्तिक एक फर्म में साझेदार थे और लाभ का आबंटन 3 : 2 के अनुपात में करते थे। उनका स्थिति विवरण ₹ 15,000 का सामान्य संचय शेष दिखा रहा था। उन्होंने भविष्य में लाभ का बंटवारा 3 : 1 के अनुपात में करने का निर्णय लिया।

    करण और कार्तिक के लाभ हानि अनुपात के परिवर्तन पर सामान्य संचय के लेखा समाधान के लिए आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

19. ममता, ज्योति और रूचि एक फर्म में साझेदार थे और लाभ का आबंटन 3 : 2 : 1 में कर रहे थे। उन्होंने भविष्य में लाभ का बंटवारा बराबर अनुपात में करने का निर्णय लिया। लाभ आबंटन अनुपात के परिवर्तन पर उनके लाभ हानि खाता में ₹ 60,000 का नाम शेष था। उन्होंने हानि के आपस में बंटवारा न करने का निर्णय लिया तथा इसके परिणाम को प्रभावी बनाने के लिए एक समायोजन प्रविष्टि की। इस प्रविष्टि को बनाइए।

20. P और Q एक फर्म में साझेदार थे तथा 3 : 5 के अनुपात में लाभ का आबंटन करते थे। उन्होंने निर्णय लिया कि 1 अप्रैल 2013 से लाभ का बंटवारा बराबर किया जाएगा। इस समय पर साझेदारों में समझौता हुआ कि सम्पत्तियों एवं देयताओं का पुनर्मूल्यांकन निम्न प्रकार से होगा :

    i. भवन पर ₹ 2,000 का अवक्षयण लगाया जाएगा।
    ii. ₹ 10,000 के देनदारों पर 5% से अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान किया जाएगा।
    iii. भूमि के मूल्य में ₹ 70,000 की वृद्धि की जाएगी।
    iv. स्टाक के मूल्य में ₹ 30,000 का अवक्षयण लगाया जाएगा।

    उपरोक्त के लिए रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए एवं पूर्वमूल्यांकन खाता तैयार कीजिए।

21. L और M के लाभ हानि अनुपात में 2 : 3 से 4 : 5 में परिवर्तन पर निम्न मदों के पुनर्मूल्यांकन के लिए आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए तथा पूर्नमूल्यांकन खाता बनाइए।

    i. ₹ 7,000 का कम्प्यूटर जो गैर अभिलेखित था, को अब खातों में दिखाना है।
    ii. ₹ 5,000 की देयता को अब भुगतान नहीं करना होगा।
    iii. 5 वर्ष पहले जो भूमि ₹ 20,000 में खरीदी थी, अब उसका मूल्य ₹ 20,00,000 आंका गया है।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

23.1 I. (i) नया, वर्तमान (ii) पुनर्गठन
(iii) त्याग अनुपात (iv) वर्तमान अनुपात

II. त्याग अनुपात 5 : 3

23.2 I. (i) अमूर्त (ii) आने वाला (iii) सामान्य लाभ
(iv) औसत लाभ, अधिलाभ, पूँजीकरण (v) बाह्य दायित्व

II. (अ) ₹ 62,500 (ब) ₹ 1,25,000

23.3 I. (i) प्रविष्टि नहीं (ii) जमा (iii) त्याग
(iv) अपलिखित (v) नाम

II. (i) घ (ii) ग (iii) क (iv) ख

23.4 I. (i) दायित्व (ii) परिसम्पत्तियाँ (iii) दायित्व
(iv) परिसम्पत्तियाँ (v) जमा पक्ष (vi) वर्तमान अनुपात
(vii) नाम

II. (i) क (ii) क (iii) क (iv) क (v) ख

III. (i) जमा (ii) जमा (iii) नाम (iv) नाम

IV. (i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) असत्य

23.5 नई फर्म की कुल पूँजी ₹ 2,50,000
तनू की पूँजी ₹ 1,20,000; अनु की पूँजी ₹ 80,000

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

7. नया लाभ विभाजन अनुपात 15 : 9 : 8, त्याग अनुपात 5 : 3
8. नया लाभ विभाजन अनुपात 3 : 1 : 1
9. ख्याति ₹ 4,00,000
10. पुनर्मूल्यांकन पर हानि ₹ 4,200 स्थिति विवरण का योग ₹ 1,25,800
11. पुनर्मूल्यांकन पर लाभ ₹ 5,040, अ की पूँजी ₹ 1,20,000, ब एवं स की पूँजी ₹ 60,000 प्रत्येक, स्थिति विवरण का योग ₹ 2,64,000

क्रियाकलाप

ऐसे किन्हीं पाँच व्यावसायिक संगठन के स्वामियों से बात करें जो सफलतापूर्वक अपना व्यवसाय चला रहे हैं तथा जिन्होंने बाजार में अपनी अच्छी ख्याति बना ली है। प्रत्येक फर्म के सामने ख्याति में योगदान देने वाले तत्व लिखें।

फर्म का नाम	*व्यवसाय की प्रकृति*	*फर्म की ख्याति के सहयोगी कारक*

टिप्पणी

24

साझेदार की सेवानिवृत्ति एवं मृत्यु

यदि आप अपने आसपास देखें तो आप अपने रिश्तेदारों तथा पड़ोसियों को साझेदारी में व्यापार करता हुआ पाएंगे। आपने अवश्य ही लोगों को साझेदारी के दौरान सेवानिवृत्ति ग्रहण करते हुए देखा होगा। किसी साझेदार की मृत्यु भी हो सकती है। यह वह घटनाएं हैं जो एक साझेदारी फर्म के जीवनकाल के दौरान होती रहती हैं। इन घटनाओं के कारण, वित्त से संबंधित कुछ मुद्दे उठते रहते हैं। कुछ परिसम्पत्तियों और दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। ख्याति का लेखांकन करना और संयुक्त जीवन बीमा पालिसी की राशि का वितरण करना होता है। जल्द ही इन सबके लेखांकन समायोजन की आवश्यकता पड़ती है। जब भी इस प्रकार की घटनाएं घटित होती हैं, तो फर्म को सेवानिवृत्ति ग्रहण करने वाले तथा मृत्यु को प्राप्त होने वाले साझेदार को देय राशि का निर्धारण करना होता है। इस पाठ में आप फर्म की पुस्तकों में दो प्रकार की स्थितियों अर्थात् साझेदार का सेवानिवृत्ति ग्रहण करने तथा साझेदार की मृत्यु के संबंध में लेखा करना सीखेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् आप :

- साझेदार की सेवानिवृत्ति अथवा मृत्यु का अर्थ समझा सकेंगे;
- लाभ का नया विभाजन अनुपात तथा अधिलाभ अनुपात (gaining ratio) की गणना कर सकेंगे;
- ख्याति का समायोजन कर सकेंगे;
- साझेदार की सेवानिवृत्ति अथवा मृत्यु के समय, संचय, संचित एवं अवितरित लाभ के अभिलेखन को समझा सकेंगे;

- साझेदार की सेवानिवृत्ति/मृत्यु होने पर परिसम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन तथा दायित्वों का पुनः निर्धारण कर सकेंगे;
- साझेदार की सेवानिवृत्ति/मृत्यु होने पर पुनर्मूल्यांकन खाता तैयार कर सकेंगे;
- सेवानिवृत्ति ग्रहण करने वाले साझेदार के दावों के भुगतान तथा उससे संबंधित लेखांकन की विधियों का उदाहरण प्रस्तुत कर सकेंगे;
- साझेदारों के पूंजी खातों तथा इसके समायोजन का उदाहरण प्रस्तुत कर सकेंगे;
- साझेदार की मृत्यु की तिथि तक के लाभ का निर्धारण कर सकेंगे;
- साझेदार की मृत्यु पर उसके उत्तराधिकारी का खाता तैयार कर सकेंगे।

24.1 सेवानिवृत्ति : अर्थ, नए लाभ विभाजन अनुपात एवं अधिलाभ अनुपात (Gaining Ratio) की गणना

जब एक या अधिक साझेदार फर्म से सेवानिवृत्ति लेते हैं एवं शेष साझेदार फर्म का व्यवसाय चलाते रहते हैं तो यह साझेदारों का सेवानिवृत्त होना कहलाता है। अमित, सुमित एवं आशु एक फर्म में साझेदार हैं। कुछ पारिवारिक समस्याओं के कारण, आशु फर्म से अवकाश लेना चाहता है। अन्य साझेदार उसे साझेदारी से निकलने के लिए सहमति प्रदान करते हैं अतः कुछ कारणों से, जैसे वृद्धावस्था, खराब स्वास्थ्य, खराब संबन्ध आदि वर्तमान साझेदार साझेदारी से सेवानिवृत्त होने का निर्णय ले सकते हैं। सेवानिवृत्त होने के कारण वर्तमान साझेदारी समाप्त हो जाती है एवं शेष साझेदार नया समझौता करते हैं। अतः साझेदारी फर्म का पुर्नगठन नए नियम एवं शर्तों के साथ किया जाएगा। सेवानिवृत्ति के समय सेवानिवृत्त साझेदारों के दावों का निपटारा किया जाएगा।

साझेदार सेवानिवृत्त होता है :

(i) सभी साझेदारों की स्वीकृति से, या

(ii) समझौते की शर्तों के अनुसार, या

(iii) अपनी स्वेच्छा से।

साझेदार के सेवानिवृत्त होने की शर्तें एवं नियम सामान्यतः साझेदारी संलेख में दिये जाते हैं। यदि नहीं दिये गये हैं तब साझेदार के सेवानिवृत्त होने पर सभी साझेदारों की सहमति से शर्तें निर्धारित की जायेंगी। ऐसे में वर्तमान साझेदारी समाप्त हो जाएगी तथा शेष साझेदारों के बीच नया समझौता होगा। सेवानिवृत्ति के समय निम्न लेखांकन विषय उत्पन्न होते हैं।

(अ) नया लाभ विभाजन अनुपात एवं अधिलाभ अनुपात

(ब) ख्याति

टिप्पणी

(स) परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों के मूल्य में परिवर्तन का समायोजन

(द) संचय एवं संचित लाभों का लेखाकरण

(ई) सेवानिवृत्त साझेदार के दावों का निपटारा

(फ) शेष साझेदारों की नई पूंजी।

नया लाभ विभाजन अनुपात एवं अधिलाभ अनुपात (New Profit Sharing Ratio and Gaining Ratio)

जैसे ही साझेदार सेवानिवृत्त होगा, शेष साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन होगा। सेवानिवृत्त साझेदार का भाग, शेष साझेदारों के मध्य बांट दिया जाएगा। किसी भी सूचना के अभाव में, शेष साझेदार, सेवानिवृत्त साझेदार का भाग अपने लाभ विभाजन अनुपात या सहमत अनुपात में लेगें। वह अनुपात जिसमें सेवानिवृत्त साझेदार का भाग, शेष साझेदारों में विभाजित किया जाता है अधिलाभ अनुपात कहलाता है। यह है :

अधिलाभ अनुपात = नया अनुपात – वर्तमान अनुपात

नया अनुपात एवं अधिलाभ अनुपात की विभिन्न स्थितियों के उदाहरण निम्न है :

(i) सेवानिवृत्त साझेदार के भाग का वर्तमान अनुपात में विभाजन

इस स्थिति में, सेवानिवृत्त साझेदार का भाग, शेष साझेदारों के बीच वर्तमान अनुपात में विभाजित कर दिया जाएगा। शेष साझेदार, लाभ व हानि का भाग, वर्तमान अनुपात में विभाजित करते रहेंगे। यह निम्न उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया गया है।

तनू, मनू और रीना साझेदार हैं लाभ व हानि का विभाजन 4 : 3 : 2 के अनुपात में करते हैं। तनू सेवानिवृत्त होती है एवं शेष साझेदार तनू का भाग वर्तमान अनुपात 3 : 2 में लेने का निर्णय लेते हैं। मनू और रीना के नए अनुपात की गणना कीजिए:

मनू एवं रीना के बीच वर्तमान अनुपात = 3/9 एवं 2/9

तनू का अनुपात (सेवानिवृत्त साझेदार) = 4/9

तनू का भाग मनू एवं रीना द्वारा 3 : 2 के अनुपात में लेने पर

मनू ने लिया = 4/9 × 3/5 = 12/45

मनू का नया भाग = 3/9 + 12/45 = 27/45

रीना ने लिया = 4/9 × 2/5 = 8/45

रीना का नया भाग = 2/9 + 8/45 = 18/45

मनू एवं रीना के बीच नया अनुपात 27/45 : 18/45 = 27 : 18 = 3 : 2.

अधिलाभ अनुपात = नया अनुपात – वर्तमान अनुपात

मनू का अधिलाभ = 27/45 – 3/9 = 12/45

रीना का अधिलाभ = 18/45 – 2/9 = 8/45

12/45 : 8/45

3 : 2

आप यह देखेंगे कि नया अनुपात, इसी अनुपात के समान है जो कि मनू एवं रीना के मध्य तनू की सेवानिवृत्ति से पहले था।

टिप्पणी : प्रश्न में सूचना के अभाव में, यह मान ले कि सेवानिवृत्त साझेदार के भाग का विभाजन वर्तमान अनुपात में होगा।

(ii) सेवानिवृत्त साझेदार के भाग का निश्चित अनुपात में विभाजन

कभी-कभी शेष साझेदार, सेवानिवृत साझेदार का भाग निश्चित अनुपात में क्रय करते हैं। उनके द्वारा क्रय किए गए भाग को उनके पुराने भाग में जोड़ने पर नया अनुपात प्राप्त होगा। यह निम्न उदाहरण के द्वारा स्पष्ट होगा :

अ, ब और स एक फर्म में साझेदार हैं जो लाभ का विभाजन 3 : 2 : 1 के अनुपात में करते हैं। ब सेवानिवृत्त होता है एवं उसका भाग अ एवं स के मध्य बराबर विभाजित किया जाता है। अ और स का नया लाभ विभाजन अनुपात ज्ञात करें।

ब का भाग = 2/6

ब का भाग अ और स के मध्य 1 : 1 के अनुपात में विभाजित होगा

अ ने लिया 2/6 का 1/2 = 2/6 × 1/2 = 1/6

अ का नया भाग = 3/6 + 1/6 = 4/6

स ने लिया 2/6 का 1/2 = 2/6 × 1/2 = 1/6

स का नया भाग = 1/6+1/6 = 2/6

अ और स का नया लाभ विभाजन अनुपात = 4/6 : 2/6 = 2 : 1

अधिलाभ अनुपात = नया अनुपात – वर्तमान अनुपात

अ का अधिलाभ = 4/6 – 3/6 = 1/6

स का अधिलाभ = 2/6 – 1/6 = 1/6

1/6 : 1/6

1 : 1, अर्थात बराबर

टिप्पणी

(iii) सेवानिवृत्त साझेदार का भाग किसी एक साझेदार द्वारा लेने पर

सेवानिवृत्त साझेदार का भाग शेष साझेदारों में से किसी एक साझेदार द्वारा लिया गया है। इस स्थिति में, साझेदार के वर्तमान भाग में सेवानिवृत्त साझेदार के भाग को जोड़ दिया जाएगा। केवल उसका भाग परिवर्तित होगा। अन्य साझेदार लाभ का विभाजन वर्तमान अनुपात में करते रहेंगे। इस स्थिति को हल करने का उदाहरण निम्न है :

अनुज, बाबू एवं रानी लाभ का विभाजन 5 : 4 : 2 के अनुपात में करते हैं। बाबू सेवानिवृत्त होता है। उसका भाग रानी द्वारा लिया जाता है। अतः रानी का भाग 2/11 + 4/11 = 6/11 होगा। अनुज का भाग अपरिवर्तित रहेगा जो कि 5/11 है। अतः अनुज और रानी का नया लाभ विभाजन अनुपात अर्थात 5/11 : 6/11 होगा।

उदाहरण 1

नीरू, अनू एवं आशू साझेदार हैं जो लाभ का विभाजन 4 : 3 : 2 के अनुपात में करते हैं। आशू सेवानिवृत्त होता है। नीरू एवं अनू का नया अनुपात ज्ञात करें यदि सेवानिवृत्ति की शर्तों में निम्न दिया गया है :

(i) अनुपात नहीं दिया गया हो,

(ii) आशू के भाग का बराबर विभाजन

(iii) आशू का भाग नीरू एवं अनू ने 2:1 अनुपात में लिया

(iv) अनू ने आशू का भाग ले लिया

हल

(i) नीरू एवं अनू का नया लाभ विभाजन अनुपात 4 : 3 है।

(ii) आशू का भाग = 2/9

नीरू ने लिया = 2/9 का 1/2 = 2/9 × 1/2 = 1/9

नीरू का नया भाग = 4/9 + 1/9 = 5/9

अनू ने लिया = 1/2 का 2/9 = 2/9 × 1/2 = 1/9

अनू का नया भाग = 3/9 + 1/9 = 4/9

नीरू और अनू का नया लाभ विभाजन अनुपात 5/9 : 4/9 or 5 : 4

अधिलाभ अनुपात 1/9 : 1/9 = 1 : 1

(iii) आशू का भाग = 2/9

नीरू ने लिया = 2/9 का 2/3 = 2/9 × 2/3 = 4/27

नीरू का नया भाग = 4/9 + 4/27 = 16/27

अनू ने लिया = 2/9 का 1/3 = 2/9 × 1/3 = 2/27

अनू का नया भाग = 3/9 + 2/27= 11/27

नीरू एवं अनू का नया लाभ विभाजन अनुपात 16 : 11 होगा

अधिलाभ अनुपात 4/27 : 2/27 = 4 : 2 = 2 : 1

$$\left[i.e. \frac{16}{27} - \frac{4}{9} = \frac{4}{27}; \frac{11}{27} - \frac{3}{9} = \frac{2}{27}; 4:2 = 2:1 \right]$$

(iv) अनू ने आशू का पूर्ण भाग लिया

आशू का भाग = 2/9

अनू ने लिया = 2/9

अनू का नया भाग = 3/9 + 2/9 = 5/9

नीरू एवं अनू का नया लाभ विभाजन अनुपात 4 : 5 होगा। केवल अनू को अधिलाभ मिला।

उदाहरण 2

आशीष, बर्मन एवं चंदर साझेदार हैं। यह लाभ व हानि का विभाजन क्रमशः 2 : 1 : 2 के अनुपात में करते हैं। चंदर सेवानिवृत्त होता है। आशीष एवं बर्मन भविष्य में लाभ व हानि को बराबर बाँटने का निर्णय लेते हैं। अधिलाभ अनुपात की गणना कीजिए।

हल

अधिलाभ अनुपात = नया अनुपात – वर्तमान अनुपात

आशीष ने लिया = 1/2 – 2/5 = 1/10

बर्मन ने लिया = 1/2 – 1/5 = 3/10

अतः आशीष एवं बर्मन के मध्य अधिलाभ अनुपात 1/10 : 3/10 अर्थात 1 : 3 होगा

पाठगत प्रश्न 24.1

i. उन तीन परिस्थितियों को दीजिए जिसके अंतर्गत एक साझेदार, साझेदारी से सेवानिवृत्त होगा।

ii. शेष साझेदारों का नया अनुपात =

iii. अधिलाभ अनुपात = नया अनुपात (–) ....

iv. अ, ब एवं स लाभ का विभाजन 3 : 2 : 1 के अनुपात में करते हैं। अ सेवानिवृत्त होता है उसका भाग ब और स द्वारा 2 : 1 के अनुपात में लिया जाता है। अ के सेवानिवृत्त होने के बाद, निम्न में से ब और स का कौन सा अनुपात होगा?

(क) 3 : 2, (ख) 2 : 1, (ग) 1 : 2

टिप्पणी

24.2 ख्याति का लेखाकरण (Treatment of Goodwill)

सेवानिवृत्त साझेदार सेवानिवृति के समय अपने भाग की ख्याति पाने का अधिकारी है क्योंकि ख्याति सभी साझेदार, सेवानिवृत्त साझेदार सहित, द्वारा बीते समय में किए गए प्रत्यनों का परिणाम है। सेवानिवृत्त साझेदार को उसके भाग की ख्याति के लिए क्षतिपूर्ति की जाती है। लेखा मानक 10 (AS-10) के अनुसार बहियों में ख्याति का लेखा केवल तब किया जाता है जब उसके लिए राशि का भुगतान किया गया हो। अतः ख्याति का लेखा बहियों में तभी किया जाएगा जब उसका क्रय किया जाता है। अपने आप से ख्याति खाता नहीं खोला जाएगा।

अतः साझेदार के सेवानिवृत्त होने की स्थिति में ख्याति का समायोजन साझेदारों के पूंजी खातों द्वारा किया जाएगा।

सेवानिवृत्त साझेदार के पूंजी खाते को उसके ख्याति के भाग से जमा करेंगे एवं शेष साझेदारों के पूंजी खातों को ख्याति की राशि को उनके अधिलाभ अनुपात से नाम करेंगे। इसकी निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

शेष साझेदारों के पूंजी खाते (व्यक्तिगत)	नाम
सेवानिवृत्त साझेदार का खाता	जमा

(सेवानिवृत्त साझेदार के भाग की ख्याति का शेष साझेदारों के अधिलाभ अनुपात में समायोजन)

उदाहरण 3

मीतू, उदित एवं सन्नी साझेदार है और लाभ का विभाजन बराबर करते हैं। सन्नी सेवानिवृत्त होता है। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 54,000 किया गया। फर्म की पुस्तकों में ख्याति खाता नहीं दर्शाया गया है। मीतू एवं उदित का भविष्य में लाभ विभाजन अनुपात 3 : 2 है। ख्याति के लिए आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियां करें।

हल

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	मीतू का पूंजी खाता नाम उदित का पूंजी खाता नाम सन्नी का पूंजी खाता से (सन्नी के भाग की ख्याति का शेष साझेदारों के अधिलाभ अनुपात 4 : 1 में समायोजन)		14,400 3,600	 18,000

टिप्पणी :

ख्याति में सन्नी का भाग ₹ 54,000 × 1/3 = ₹ 18,000

अधिलाभ अनुपात = नया अनुपात – वर्तमान अनुपात

मीतू को लाभ = 3/5 – 1/3 = 9 – 5/15 = 4/15

उदित को लाभ = 2/5 - 1/3 = 6 – 5/ 15 = 1/15

मीतू एवं उदित के मध्य अधिलाभ अनुपात = 4 : 1

जब ख्याति खाता बहियों में पहले से ही विद्यमान हो

सामान्यतः ख्याति को फर्म की बहियों में नहीं दर्शाया जाता है। यदि साझेदार की मृत्यु/सेवानिवृत्ति के समय, ख्याति फर्म के स्थिति विवरण में दशार्यी गई है तो इसको सभी साझेदारों के पूंजी खातों को उनके वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात से नाम करके एवं ख्याति खाते को जमा करके अपलिखित किया जाएगा। इस स्थिति में निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

साझेदार का पूंजी खाता नाम (सेवानिवृत्त साझेदार की पूंजी खाते सहित)
ख्याति खाता से
(वर्तमान ख्याति अपलिखित करने पर)

उदाहरण 4

तनू, प्रिया एवं मयंक साझेदार हैं। ये लाभ का विभाजन 3 : 2 : 1 के अनुपात में करते हैं। प्रिया सेवानिवृत्त होती है। प्रिया की सेवानिवृत्ति की तिथि को ख्याति का मूल्य ₹ 90,000 है। ₹ 48,000 मूल्य की ख्याति बहियों में पहले से विद्यमान है। तनू एवं मयंक का नया अनुपात 3 : 2 है। आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियां करें।

टिप्पणी

हल

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	तनू का पूंजी खाता नाम		24,000	
	प्रिया का पूंजी खाता नाम		16,000	
	मयंक का पूंजी खाता नाम		8,000	
	ख्याति खाता से			48,000
	(बहियों में वर्तमान ख्याति के अपलिखित करने पर)			
	तनू का पूंजी खाता नाम		9,000	
	मयंक का पूंजी खाता नाम		21,000	
	प्रिया का पूंजी खाता से			30000
	(प्रिया के भाग की ख्याति का शेष साझेदारों के अधिलाभ अनुपात 3 : 7 में समायोजन)			

टिप्पणी : प्रिया के भाग की ख्याति = ₹ 90,000 × 2/6 = ₹ 30,000

अधिलाभ अनुपात = नया अनुपात – वर्तमान अनुपात

तनू का लाभ = 3/5 – 3/6 = 18/30 – 15/30 = 3/30

मयंक का लाभ = 2/5 – 1/6 = 12/30 – 5/30 = 7/30

तनू एवं मयंक के मध्य अधिलाभ अनुपात = 3 : 7

पाठगत प्रश्न 24.2

निम्न में से कौन सा कथन सत्य या असत्य है लिखे?

i. सेवानिवृत्त साझेदार के भाग की ख्याति को सेवानिवृत्ति के समय उसके पूंजी खाते में नाम किया जाता है।

ii. ख्याति का लेखा बहियों में लेखा तभी किया जाता है जब उसे क्रय किया गया हो।

iii. सेवानिवृत्त साझेदार के पूंजी खाते को उसके भाग की ख्याति से नाम किया जाता है एवं शेष साझेदारों के पूंजी खातों को उनके अधिलाभ अनुपात से जमा किया जाता है।

iv. ख्याति खाते को अपलिखित करने की स्थिति में सभी साझेदारों के पूंजी खातों को जमा किया जाता है।

24.3 परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन

साझेदार की सेवानिवृत्ति के समय, फर्म की परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन किया जाता है। पुनर्मूल्यांकन खाते को उसी तरह तैयार किया जाता है जैसा कि साझेदार के प्रवेश के समय किया जाता है। इसको साझेदार की सेवानिवृत्ति/मृत्यु के समय परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों के मूल्य में हुए परिवर्तनों का समायोजन करने के लिए बनाया जाता है। पुनर्मूल्यांकन के कारण लाभ या हानि को सभी साझेदारों में, सेवानिवृत/मृतक साझेदार सहित उनके वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात में विभाजित किया जाएगा। इस उद्देश्य के लिये निम्न रोजनामचा प्रविष्टियाँ की जाएंगी।

टिप्पणी

(i) परिसम्पतियों के मूल्य में वृद्धि के लिये

परिसम्पति खाता	नाम	(व्यक्तिगत)
पुनर्मूल्यांकन खाता से		
(परिसम्पतियों के मूल्य में वृद्धि के लिये)		

(ii) परिसम्पतियों के मूल्य में कमी के लिये

पूर्नमूल्यांकन खाता	नाम	
परिसम्पति खाता से		(व्यक्तिगत)
(परिसम्पत्तियों के मूल्य में कमी पर)		

(iii) दायित्वों के मूल्य में वृद्धि के लिये

पूर्नमूल्यांकन खाता	नाम	
दायित्व खाता से		(व्यक्तिगत)
(दायित्वों के मूल्य में वृद्धि होने पर)		

(iv) दायित्व के मूल्य में कमी के लिये

दायित्व खाता	नाम	
पुनर्मूल्यांकन खाता से		(व्यक्तिगत)
(दायित्व के मूल्य में कमी होने पर)		

परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों में हुये मूल्य परिवर्तन का लेखा करने के लिये पुनर्मूल्यांकन खाता बनाया जाता है। यह पुनर्मूल्यांकन पर लाभ या हानि को दिखाता है। इस लाभ या हानि का विभाजन सभी साझेदारों (सेवा निवृत/मृतक साझेदार सहित) के बीच उनके वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात में किया जाएगा।

(v) पुनर्मूल्यांकन पर लाभ के लिये

पुनर्मूल्यांकन खाता	नाम	
साझेदार का पूँजी खाता से		(व्यक्तिगत)
(पुनर्मूल्यांकन पर लाभ का सभी साझेदारों के मध्य उनके वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार)		

टिप्पणी

(vi) पुनर्मूल्यांकन पर हानि के लिये
साझेदार का पूँजी खाता नाम (व्यक्तिगत)
पुनर्मूल्यांकन खाता से
(पुनर्मूल्यांकन पर हानि, सभी साझेदार द्वारा
उनके वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार)

उदाहरण 5

मुदित, मोहित, एवं सोनू साझेदार हैं। ये लाभ का विभाजन 3 : 2 : 1 के अनुपात में करते हैं। मुदित साझेदारी से सेवानिवृत होता है। उसके दावों का निपटान करने के लिये, परिसम्पत्तियों एव दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन पर निम्न सहमति हुई :

(i) मशीनरी के मूल्य में ₹ 25,000 की वृद्धि होगी।

(ii) विनियोग के मूल्य में ₹ 2,000 की वृद्धि होगी।

(iii) बहियों में ₹ 1,000 के अदत बिल के प्रावधान की अब आवश्यकता नहीं है।

(iv) भूमि व भवन के मूल्य में ₹ 12,000 की कमी होगी।

रोजनामचा प्रविष्टियाँ करें एवं पुनर्मूल्यांकन खाता तैयार करें।

हल

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	मशीनरी खाता नाम		25,000	
	विनियोग खाता नाम		2,000	
	अदत बिल के लिये प्रावधान नाम		1,000	
	पुनर्मूल्यांकन खाता से			28,000
	(परिसम्पत्तियों के मूल्य में वृद्धि मशीनरी व विनियोग एवं प्रावधान में कमी)			
	पुनर्मूल्यांकन खाता नाम		12,000	
	भूमि व भवन खाता से			12,000
	(परिसम्पत्तियों के मूल्य में कमी)			

	पुनर्मूल्यांकन खाता नाम		16,000	
	मुदित का पूँजी खाता से			8,000
	मोहित का पूँजी खाता से			5,333
	सोनू का पूँजी खाता से			2,667
	(पुनर्मूल्यांकन पर लाभ का साझेदारों के पूँजी खातों में उनके वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात 3 : 2 : 1 में जमा)			

पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम जमा

विवरण		*(₹)*	*विवरण*	*(₹)*
भूमि व भवन		12,000	मशीनरी	25,000
लाभ का हस्तांतरण :			विनियोग	2,000
मुदित की पूँजी	8,000		अदत्त बिल के लिय प्रावधान	1,000
मोहित की पूंजी	5,333			
सोनू की पूंजी	2,667	16,000		
		28,000		28,000

24.4 संचित संचय एवं अवितरित लाभों का लेखाकरण

सेवानिवृत्ति/मृत्यु की तिथि को फर्म के स्थिति विवरण में दर्शाये गए सभी संचित कोषों एवं लाभ व हानि की अतिरिक्त राशि के शेष को सभी साझेदारों, सेवा निवृत/मृतक साझेदार सहित, में उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में बाँटा जाएगा। इसके लिये निम्न रोजनामचा प्रविष्टियाँ की जाएंगी:

(i) अवितरित लाभ एवं संचय के वितरण के लिये

संचय खाता	नाम	
लाभ एवं हानि खाता (लाभ)	नाम	
साझेदार का पूंजी खाता से		(व्यक्तिगत)
(संचय एव लाभ व हानि (लाभ) का सभी साझेदारों के पूंजी खातों में उनके वर्तमान लाभ विभजान अनुपात में हस्तांतरण करने पर)		

टिप्पणी

(ii) अवितरित हानि के वितरण के लिये

साझेदार का पूंजी खाता नाम (व्यक्तिगत)
लाभ एव हानि (हानि) खाता से
(लाभ एव हानि (हानि) का सभी साझेदारों के वर्तमान लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरण)

पाठगत प्रश्न 24.3

I. रिक्त स्थानों की उचित शब्द भरकर पूर्ति कीजिए :

i. पुनर्मूल्यांकन खाते का जमा शेष......................दर्शाता है

ii. स्थिति विवरण में दिखाये गए संचय का हस्तातरण, साझेदार की सेवा सेवानिवृति के समय ....के ....पक्ष में किया जाता है।

iii. साझेदार की सेवानिव त्ति के समय परिसम्पत्तियों के मूल्य में कमी के लिये .... खाते को नाम एवं .... खाते को कमी से जमा किया जाएगा।

II. साझेदार के सेवानिवृति के समय लेनदारों के मूल्य में वृद्धि हुई। उपरोक्त के लिये क्या रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी।

24.5 सेवानिवृत साझेदार के दावों का निपटारा (Settlement of Retiring Partner's Claim)

सेवानिवृत साझेदार की देय राशि का भुगतान, साझेदारी समझौते की शर्तो के अनुसार किया जाएगा। सेवानिवृत साझेदार के दावों में निम्न सम्मिलित है:

(अ) पूँजी खाते का जमा शेष,

(ब) फर्म की ख्याति में उसका भाग,

(स) पुनर्मूल्यांकन लाभ में उसका भाग,

(द) सामान्य संचय एवं संचित लाभों में उसका भाग,

(फ) पूंजी पर ब्याज।

लेकिन निम्न को उसके पूंजी खाते में घटाया जाएगा।

(अ) पुर्नमुल्यांकन से हानि में उसका भाग,

(ब) उसके द्वारा सेवानिवृत होने की तिथि तक के आहरण एवं आहरण पर ब्याज,

(स) संचित हानियों में उसका भाग,

(द) फर्म से लिये गए ऋण।

सेवानिवृत साझेदार के दावों की कुल राशि की गणना इस प्रकार की जाएगी। वह शीघ्र राशि प्राप्त करना चाहेगा। उसकी सेवानिवृति के बाद कुल भुगतान तुरंत किया जा सकता है। यदि फर्म के पास सेवानिवृत साझेदार को एकमुश्त भुगतान करने के पर्याप्त साधन नहीं है तब फर्म सेवानिवृत साझेदार को किश्तो में भुगतान कर सकती है।

(i) एकमुश्त भुगतान (Payment in Lumpsum)

सेवानिवृत साझेदार के दावों का भुगतान या तो फर्म में विद्यमान कोषों से या शेष साझेदारों द्वारा लाए गए कोषों से किया जाएगा।

सेवानिवृत साझेदार को देय राशि का निपटान करने के लिये निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

एकमुश्त रोकड़ भुगतान करने पर

सेवानिवृत साझेदार का पूँजी खाता नाम

रोकड/बैंक खाता से

(सेवानिवृत साझेदार को राशि का भुगतान)

उदाहरण 6

ओम, जय, एवं जगदीश साझेदार हैं और लाभ का विभाजन 3 : 2 : 1 के अनुपात में करते हैं। दिसम्बर 31, 2014 को उनका स्थिति विवरण निम्न है :

स्थिति विवरण

दिसंबर 31, 2014

दायित्व		(₹)	परिसम्पत्तियाँ		(₹)
लेनदार		80,000	भवन		1,80,000
देय विपत्र		26,000	संयन्त्र		1,40,000
सामान्य संचय		24,000	मोटर कार		40,000
पूंजी :			स्टॉक		1,00,000
ओम	1,60,000		देनदार	63,000	
जय	1,20,000		घटा : डूबत ऋण		
जगदीश	1,20,000	4,00,000	के लिये प्रावधान	3,000	60,000
			बैंक में रोकड़		10,000
		5,30,000			5,30,000

टिप्पणी

इस तिथि को निम्न शर्तों पर जय सेवानिवृत हुआ

(अ) फर्म की ख्यति का मूल्यांकन ₹ 60,000 किया गया।

(ब) स्टॉक एवं भवन के मूल्य में 10 प्रतिशत वृद्धि होगी।

(स) संयन्त्र पर 10 प्रतिशत ह्रास लगेगा।

(द) डूबत ऋण के लिये प्रावधान को ₹ 5,000 तक बढ़ाया जाएगा।

(इ) जय के भाग की ख्यति को शेष साझेदारों के पूंजी खातों में समायोजित किया जाएगा।

जय को देय राशि का भुगतान ओम एवं जगदीश द्वारा इस उद्देश्य के लिये उनके नये लाभ विभाजन अनुपात में लाए गए कोष से किया जाएगा। जय को पूर्ण राशि का भुगतान किया जाएगा।

पूर्नमूल्यांकन खाता एवं साझेदारों के पूंजी खाते बनाइए।

हल

यह माना गया है कि ओम एवं जगदीश का अधिलाभ अनुपात 3 : 1 है।

(अ) अधिलाभ अनुपात = 3 : 1

ओम ने लिया = 2/6 × 3/4 = 1/4

ओम का नया भाग = 3/6 + 1/4 = 3/4

जगदीश ने लिया = 2/6 × 1/4 = 1/12

जगदीश का नया भाग = 1/6 + 1/12 = 3/12 = 1/4

ओम एवं जगदीश के बीच नया लाभ विभाजन अनुपात 3/4 : 1/4 = 3 : 1.

(ब) ख्याति में जगदीश का भाग = 60,000 × 2/6 = ₹ 20,000

शेष साझेदारों के पूंजी खातो द्वारा समायोजन

ओम का पूंजी खाता	नाम	1,5000	
जगदीश का पूँजी खाता	नाम	5,000	
जय का पूंजी खाता	जमा		20,000
(जय के भाग की ख्याति का शेष साझेदारों के पूँजी खाते में समायोजन)			

पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम — जमा

विवरण	(₹)	विवरण	(₹)
डूबत ऋण के लिये प्रावधान	2,000	स्टॉक	10,000

सयंत्र	14,000	भवन	18,000
लाभ का पूंजी खातो में हस्तांतरण :			
ओम 6,000			
जय 4,000			
जगदीश 2,000	12,000		
	28,000		28,000

पूँजी खाता

नाम जमा

विवरण	ओम (₹)	जय (₹)	जगदीश (₹)	विवरण	ओम (₹)	जय (₹)	जगदीश (₹)
पूँजी	15,000	—	5,000	शेष आ/ला	1,60,000	1,20,000	1,20,000
बैंक		1,52,000		सामान्य संचय	12,000	8,000	4,000
शेष आ/ले	2,77,000	—	1,59,000	पुनर्मूल्यांकन पर लाभ	6,000	4,000	2,000
				ओम की पूँजी	—	15,000	—
				जगदीश की पूँजी	—	5,000	
				बैंक	1,14,000		38,000
	2,92000	1,52,000	164,000		2,92000	1,52,000	164,000

(ii) किश्तों में भुगतान

सेवानिवृत्त साझेदार को देय राशि का भुगतान किश्तों में करने की स्थिति में सामान्यत: सेवा निवृति पर कुछ राशि का भुगतान तुरंत कर दिया जाता है तथा शेष राशि को उसके ऋण खाते में हस्तांतरित कर दिया जाता है। इस राशि का भुगतान एक या अधिक किश्तों में किया जाएगा। ऋण राशि पर कुछ ब्याज देय होगा। समझौते की अनुपस्थिति में भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 की धारा 37 लागू होगी।

इस नियम के अनुसार, यदि सेवानिवृत्ति पर देय राशि का तुरंत भुगतान नहीं किया जाता, तब वह देय राशि पर 6 प्रतिशत वार्षिक की दर से ब्याज का दावा कर सकता है।

किश्तों को दो भागों में बाँटा जा सकता है :

(i) सेवानिवृत्त साझेदार को देय किश्त की मूल राशि

(ii) सहमत दर से ब्याज

ऋण पर देय ब्याज की राशि को सेवानिवृत्त साझेदार के ऋण खाते में जमा किया जाएगा। उसके बाद सेवानिवृत्त साझेदार को किश्त का भुगतान ब्याज सहित निर्धारित समय तालिका अनुसार दिया जाएगा।

टिप्पणी

(i) कुछ भाग का भुगतान रोकड़ में एवं शेष को उसके ऋण खाते में हस्तांतरित किया जाएगा।

सेवानिवृत्त साझेदार का पूंजी खाता   नाम
    रोकड़/बैंक खाता से
    साझेदार का ऋण खाता से
(कुछ भाग का भुगतान एवं शेष का ऋण खाते में हस्तांतरण)

(ii) कुल देय राशि को ऋण खाते में हस्तांतरित करने पर

सेवानिवृत्त साझेदार का पूंजी खाता   नाम
    सेवानिवृत्त साझेदार का ऋण खाता से
(कुल देय राशि का ऋण खाते में हस्तांतरण)

(iii) ब्याज देय होने पर

ऋण पर ब्याज खाता   नाम
    सेवानिवृत्त साझेदार का पूंजी खाता से
(ऋण पर देय ब्याज)

(iv) किस्तों के भुगतान करने पर

सेवानिवृत्त साझेदार का ऋण खाता   नाम
    रोकड़/बैंक खाता से
(किश्त का भुगतान ब्याज सहित)

उदाहरण 7

पिछले उदाहरण की संख्याओं को लेकर यह मानें की देय राशि का 40% तुरंत भुगतान किया गया एवं शेष राशि को 3 बराबर वार्षिक किश्तों में दिया जाएगा। ब्याज 12% वार्षिक दर से देय है।

हल

जय को देय राशि = ₹ 1,52,000

राशि का तुरंत भुगतान = ₹ 1,52,000 × 40/100 = ₹ 60,800

तीन बराबर किश्तों की राशि = ₹ 1,52,000 – ₹ 60,800/3
= ₹ 91,200 ÷ 3 = ₹ 30,400

पहली किश्त, प्रथम वर्ष के समाप्त होने पर = ₹ 30,400 + ₹ 10,944
= ₹ 41,344

ब्याज 12% वार्षिक की दर से = ₹ 91,200 × 12/100
= ₹ 10,944

दूसरी किस्त, द्वितीय वर्ष के समाप्त होने पर = ₹ 30,400 + ₹ 7,296
= ₹ 37,696

ब्याज 12% वार्षिक की दर से = ₹ 60,800 × 12/100
= ₹ 7,296

तीसरी किश्त, तृतीय वर्ष के समाप्त होने पर = ₹ 30,400 + ₹ 3,648
= ₹ 34,048

12% वार्षिक दर से ब्याज = ₹ 30,400 × 12/100
= ₹ 3,648

पाठगत प्रश्न 24.4

I. सेवानिवृत्त साझेदार के विभिन्न दावों की सूची बनाइए।

II. सेवानिवृत्त साझेदार के कुल दावों का निपटान करने की विभिन्न विधियों को लिखे।

III. मुनीष को देय कुल राशि ज्ञात करें जो कि साझेदार के रूप में सेवानिवृत्त हुआ।

i. मुनीष के पूंजी खाते में जमा शेष ₹ 20,000
ii. ख्याति में मुनीष का भाग ₹ 7,000
iii. स्थिति विवरण में दिखाया गया सामान्य संचय का शेष ₹ 10,000
iv. परिसम्पत्तियों/दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन पर लाभ ₹ 3,000
v. आहरण पर ब्याज ₹ 500
vi. फर्म के लाभ में मुनीष का भाग 1/2

24.6 सेवानिवृत्त होने के बाद शेष साझेदारों के पूंजी खातों का समायोजन

साझेदार के सेवानिवृत्त होने के बाद शेष साझेदार आपनी पूंजी को समायोजित करने का निर्णय ले सकते हैं। कभी-कभी शेष साझेदार पुनर्गठित फर्म की कुल पूंजी की राशि का निर्धारण कर लेते हैं एवं आपने पूंजी खातों को नए लाभ विभाजन अनुपात में रखने का निर्णय लेते हैं। फर्म की नवनिर्धारित कुल पूंजी, सेवानिवृत्ति के समय की उनकी कुल पूंजी से कम या अधिक हो सकती है। साझेदार की नई पूंजी की

टिप्पणी

तुलना उनके पूंजी खाते में जमा शेष से की जाती है। यदि पूंजी खाते में कुछ आधिक्य है, तब संबंधित साझेदार द्वारा राशि निकाल ली जाएगी। यदि पूंजी खाते का शेष गणना की गई राशि से कम है तो इस स्थिति में साझेदार इसके द्वारा रोकड़ लाएगा।

उदाहरण 8

रूपा, सुन्दर और शालू साझेदार हैं। ये लाभ का विभाजन 5 : 3 : 2 के अनुपात में करते हैं। रूपा सेवानिवृत्त होती है। उनकी पूंजी सेवानिवृत्ति के समय सभी समायोजन करने के बाद क्रमशः ₹ 46,000; ₹ 42,000; एवं ₹ 38,000 है। सुंदर और शालू ने निर्णय लिया कि फर्म की कुल पूंजी ₹ 84,000 होगी जिसका अनुपात 7 : 5 होगा। प्रत्येक साझेदार द्वारा भुगतान की गई या लाई गई रोकड़ की गणना करें एवं आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियां करें।

हल

नई फर्म की कुल पूंजी = ₹ 84,000

नई पूंजी में सुन्दर का भाग = ₹ 84,000 × 7/12
= ₹ 49,000

नई पूंजी में शालू का भाग = ₹ 84,000 × 5/12
= ₹ 35,000

नई पूंजी में सुंदर के भाग की पूंजी की तुलना उसके पूंजी खाते के जमा शेष से करने पर, यह पता लगता है कि वह कमी की राशि (₹ 49,000 – ₹ 42,000) ₹7,000 रोकड़ लाएगा।

इसी प्रकार फर्म की नई पूंजी में शालू का भाग ₹ 35,000 है जबकि उसके पूंजी खाते में ₹ 38,000 शेष हैं। अतः वह फर्म से ₹ 300 (₹ 38,000 – ₹ 35,000) की आधिक्य राशि निकाल कर ले जाएगी। इस प्रकार उसकी पूंजी नए लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार हो जाएगी।

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
	बैंक खाता नाम सुन्दर का पूंजी खाता से (साझेदार द्वारा कमी की राशि लाने पर)		7,000	7,000

	शालू का पूंजी खाता नाम बैंक खाता से (साझेदार द्वारा आधिक्य राशि निकालने पर)		3,000	3,000

शेष साझेदारों की पूंजी का उनके लाभ विभाजन अनुपात में समायोजन जब नई फर्म की कुल पूंजी का पूर्व निर्धारण नहीं हुआ है।

इस स्थिति में शेष साझेदारों की समायोजित पूंजी की कुल राशि को उनके सहमत अनुपात में पुनः व्यवस्थित किया जाएगा जिसमें वे पुनर्गठित फर्म का लाभ विभाजन करेंगे। इसमें निम्न चरणों को अपनाया जाएगा।

(i) शेष साझेदारों के पूंजी खातों के जमा शेष का योग किया जाएगा।

(ii) प्राप्त योग ही फर्म की कुल पूंजी होगी।

(iii) पूंजी को नए लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार साझेदारों में बांटा जाएगा।

उदाहरण 9

सुमित, अमित एवं नेहा साझेदार है एवं लाभ का विभाजन 4 : 3 : 1 के अनुपात में करते हैं। जब अमित सेवानिवृत्त हुआ, उनकी समायोजित पूंजी क्रमशः ₹ 76,000; ₹45,000 एवं ₹ 34,000 थी।

सुमित और नेहा ने फर्म की कुल पूंजी को 3 : 2 के अनुपात में रखने का निर्णय लिया। इस संबंध में आवश्यक समायोजन केवल रोकड़ द्वारा किए जाएंगे। प्रत्येक साझेदार को भुगतान की गई या लाई गई वास्तविक राशि की गणना करें।

हल :

शेष साझेदारों की समायोजित पूंजी का योग।

	₹
सुमित	76,000
नेहा	34,000
योग	1,10,000

फर्म की कुल पूंजी का 3 : 2 के नए अनुपात में विभाजन

सुमित की नई पूंजी = 1,10,000 × 3/5 = ₹ 66,000

नेहा की नई पूंजी = 1,10,000 × 2/5 = ₹ 44,000

टिप्पणी

सुमित का नई फर्म की पूंजी में भाग ₹ 66,000 है जबकि उसके पूंजी खाते का जमा शेष ₹ 76,000 है। अतः वह फर्म से ₹ 10,000 (₹ 76,000 – ₹ 66,000) निकालकर ले जाएगा और उसकी पूंजी नए लाभ विभाजन अनुपात के अनुसार हो जाएगी।

इसी प्रकार फर्म की नई पूंजी में नेहा का भाग ₹ 44,000 है जबकि उसके पूंजी खाते में ₹ 34,000 जमा शेष है वह ₹ 10,000 (₹ 44,000 – ₹ 34,000) रोकड़ लाएगी, जिससे उसके पूंजी खाते की कमी को पूरा किया जाएगा।

उदाहरण 10

31 मार्च, 2014 को रोहित, निशा एवं सुनील का स्थिति विवरण निम्न है। साझेदार लाभ का विभाजन पूंजी अनुपात में करते हैं।

दायित्व		*(₹)*	*परिसम्पतियां*		*(₹)*
लेनदार		25,000	मशीनरी		40,000
देय विपत्र		13,000	भवन		90,000
सामान्य संचय		22,000	देनदार	30,000	
पूँजी			**घटाः** डूबत ऋण		
रोहित	60,000		के लिए प्रावधान	1,000	29,000
निशा	40,000		स्टॉक		23,000
सुनील	40,000	1,40,000	बैंक में रोकड़		18,000
		2,00,000			2,00,000

स्थिति विवरण की तिथि को निशा फर्म से सेवानिवृत्त हुई एवं निम्न समायोजन किए गए :

(i) भवन के मूल्य में 20% की वृद्धि हुई।

(ii) देनदारों पर डूबत ऋण के लिये प्रावधान में 5 % तक वृद्धि की जाएगी।

(iii) मशीनरी पर 10 % ह्रास लगया जाएगा।

(iv) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 56,000 किया गया और सेवानिवृत्त साझेदार का भाग समायोजित किया जाएगा।

(v) नई फर्म की पूंजी ₹ 1,20,000 निर्धारित की गई।

निशा की सेवानिवृत्ति के उपरान्त पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूंजी खाते बनाएँ तथा नई फर्म का स्थिति विवरण तैयार करें।

हल

पुनर्मूल्यांकन खाता

नाम जमा

विवरण		(₹)	विवरण	(₹)
डूबत ऋण के लिए प्रावधान		500	भवन	18,000
मशीनरी		4,000		
लाभ का पूंजी खातों में हस्तांतरण (3 : 2 : 2)				
रोहित	5,786			
निशा	3,857			
सुनील	3,857	13,500		
		18,000		18,000

पूंजी खाता

नाम जमा

विवरण	रोहित (₹)	निशा (₹)	सुनील (₹)	विवरण	रोहित (₹)	निशा (₹)	सुनील (₹)
निशा की पूंजी	9,600		6,400	शेष आ/ला	60,000	40,000	40,000
बैंक	—	66,143	—	सामान्य संचय	9,428	6,286	6,286
शेष आ/ले	72,000	—	48,000	पुनर्मूल्यांकन (लाभ)	5,786	3,857	3,857
				रोहित की पूंजी	—	9,600	—
				सुनील की पूंजी	—	6,400	—
				बैंक	6,386	—	4,257
	81,600	66,143	54,400		81,600	66,143	54,400

31 मार्च 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		(₹)	परिसम्पत्तियाँ		(₹)
लेनदार		25,000	भवन		1,08,000
बैंक अधिविकर्ष		37,500	मशीनरी		36,000
देय विपत्र		13,000	देनदार	30,000	
पूंजी			**घटाः** डूबत ऋण		
रोहित	72,000		के लिये प्रावधान	1,500	28,500
सुनिल	48,000	1,20,000	स्टॉक		23,000
		1,95,500			1,95,500

कार्यकारी टिप्पणी :

(i) (अ) लाभ विभाजन अनुपात 60,000 : 40,000 : 40,000 = 3 : 2 : 2

(ब) अधिलाभ अनुपात : रोहित = 3/5 – 3/7 = 21/35 – 15/35 = 6/35

सुनील = 2/5-2/7 = 14/35 – 10/35 = 4/35

= 6/35 : 4/35

= 6 : 4 = 3 : 2

(स) ख्याति में निशा का भाग = 56,000 × 2/7 = ₹ 16,000.

ख्याति के इस भाग का वर्तमान साझेदारों पर भार उनके अधिलाभ अनुपात में :

रोहित = 16,000 × 3/5 = ₹ 9,600

सुनील = 16,000 × 2/5 = ₹ 6,400

रोजनामचा प्रविष्टि होगी

रोहित का पूँजी खाता	नाम	9,600	
सुनिल का पूँजी खाता	नाम	6,400	
निशा का पूँजी खाता	जमा		16,000

(सेवानिवृत्त साझी की ख्याति के भाग का अधिलाभ में अनुपात में विभाजन)

बैंक खाता

नाम जमा

विवरण	(₹)	विवरण	(₹)
शेष आ/ला	18,000	निशा का पूंजी खाता	66,143
रोहित का पूंजी खाता	6,386		
सुनील का पूंजी खाता	4,257		
शेष आ/ले	37,500		
	66,143		66,143

(ii) सेवानिवृत्त साझेदार की राशि का भुगतान करने के लिए बैंक अधिविकर्ष लिया गया।

(iii) नई फर्म की कुल पूंजी ₹ 1,20,000 है।

	रोहित ₹	सुनिल ₹
नई पूंजी (1,20,000 3 : 2 के अनुपात में)	72,000	48,000
विद्यमान पूंजी (समायोजनों के बाद)	65,614	43,743
शेष साझेदारों द्वारा लाई गई रोकड़	6,386	4,257

उदाहरण 11

चौहान त्रिपाठी एवं गुप्ता एक फर्म में साझेदार हैं जो हानि का विभाजन क्रमशः 1/2, 1/6 और 1/3 के अनुपात में करते हैं। मार्च 31,2014 को स्थिति विवरण निम्न है :

दायित्व		(₹)	परिसंपत्तियाँ		(₹)
विविध लेनदार		36,000	पट्टामुक्त परिसर		80,000
देय विपत्र		24,000	मशीनरी		60,000
सामान्य संचय		24,000	फर्नीचर		24,000
पूंजी			देनदार	40,000	
चौहान	60,000		**घटा :** डूबत ऋण के		
त्रिपाठी	60,000		लिये प्रावधान	2,000	38,000
गुप्ता	56,000	1,76,000	स्टॉक		44,000
			रोकड़		14,000
		2,60,000			2,60,000

गुप्ता व्यवसाय से सेवानिवृत हुए एवं साझेदार निम्न पुनर्मूल्यांकन के लिए सहमत हुए।

(अ) पट्टा मुक्त परिसर एवं स्टॉक के मूल्य में क्रमशः 20% एवं 15% की वृद्धि हुई।

(ब) मशीनरी एवं फर्नीचर पर क्रमशः 10% एवं 7% ह्रास लगाया जाएगा।

(स) डूबत ऋण के संचय में वृद्धि कर ₹ 3,000 कर दिया जायेगा।

(द) गुप्ता की सेवानिवृत्ति पर ख्याति का ₹ 42,000 मूल्यांकन किया जाए।

(फ) गुप्ता की सेवानिवृत्ति के पश्चात् शेष साझेदारों ने पूंजी को नए लाभ विभाजन अनुपात में समायोजित करने का निर्णय लिया। पूंजी खातों में अधिक या कमी यदि कोई हो तो रोकड़ द्वारा समायोजित की जाएगी।

आवश्यक खाते बनाइए एवं पुनर्गठित फर्म के लिए स्थिति विवरण तैयार कीजिए।

हल

पूर्नमूल्यांकन खाता

नाम | जमा

विवरण		(₹)	विवरण	(₹)
डूबत ऋण के लिए प्रावधान		1,000	पट्टामुक्त परिसर	16,000
मशीनरी		6,000	स्टॉक	6,600
फर्नीचर		1,680		
लाभ का पूंजी खातों में हस्तांतरण				
चौहान	6,960			
त्रिपाठी	2,320			
गुप्ता	4,640	13,920		
		22,600		22,600

पूंजी खाता

नाम | जमा

विवरण	चौहान (₹)	त्रिपाठी (₹)	गुप्ता (₹)	विवरण	चौहान (₹)	त्रिपाठी (₹)	गुप्ता (₹)
गुप्ता की पूंजी	10,500	3,500	—	शेष आ/ला	60,000	60,000	56,000
गुप्ता का ऋण			82,640	समान्य संचय	12,000	4,000	8,000
रोकड़		30,000		पूर्नमूल्यांकन (लाभ)	6,960	2,320	4,640
शेष आ/ले	98,460	32,820		चौहन की पूंजी	—	—	10,500
				त्रिपाठी की पूंजी			3,500
				रोकड़	30,000		
	1,08,960	66,320	82,640		1,08,960	66,320	82,640

मार्च 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		(₹)	परिसम्पत्तियाँ		(₹)
लेनदार		36,000	पट्टामुक्त परिसर		96,000
देयविपत्र		24,000	मशीनरी		54,000
गुप्ता का ऋण		82,640	फर्नीचर		22,320
पूंजी			देनदार	40,000	
चौहान	98,460		**घटा:** डुबत ऋण के		
त्रिपाठी	32,820	1,31,280	लिए प्रावधान	3,000	37,000
			स्टॉक		50,600
			रोकड़		14,000
		2,73,920			2,73,920

कार्यकारी टिप्पणी :

(अ) समझौते की अनुपस्थिति में सेवानिवृत्त साझेदार के पूंजी खाते का शेष उसके ऋण खाते में हस्तांतरित कर दिया गया।

(ब) समझौते की अनुपस्थिति में शेष साझेदारों का वर्तमान अनुपात ही अधिलाभ अनुपात होगा, जोकि 3:1 है।

(स) शेष साझेदारों द्वारा लाई गई रोकड़ (भुगतान की गई) की गणना।

	चौहान ₹	त्रिपाठी ₹
चौहान एवं त्रिपाठी की कुल पूंजी		
समायोजित पूंजी	98,460	32,820
(₹ 68,460 + ₹ 62,820 = ₹ 131280 को 3 : 1 में)	68,460	62,820
अधिक या कमी	30,000 (अधिक)	30,000 (कमी)

पाठगत प्रश्न 24.5

i. सुरिंदर, महिंद्र एवं तरुण एक फर्म में साझेदार हैं। सुरिंदर के सेवानिवृत्त होने के बाद महिंद्र एवं तरुण के बीच लाभ विभाजन अनुपात 5 : 3 है।

वे फर्म की पूंजी ₹ 80,000 करने का भी निर्णय लेते हैं। महिंद्र एवं तरुण की व्यक्तिगत पूंजी ज्ञात करें

महिंद्र की पूंजी ₹ ....

तरुण की पूंजी ₹ ....

ii. सोहन, अमीशा एवं नीना साझेदार हैं। ये लाभ का विभाजन 3 : 2 : 1 के अनुपात में करते है। जब सोहन सेवानिवृत्त होता है उनकी समायोजित पूंजी क्रमशः ₹ 90,000; ₹ 60,000 एवं ₹ 70,000 है। अमीशा एवं मीना ने फर्म की कुल पूंजी को 5:3 के अनुपात में करने का निर्णय लिया। प्रत्येक साझेदार की पूंजी ज्ञात करें।

अमिशा की पूंजी ₹ ....

नीना की पूंजी ₹ ....

टिप्पणी

24.7 साझेदार की मृत्यु

साझेदार की मृत्यु पर, ख्याति, परिसम्पतियों का पुनर्मूल्यांकन एवं दायित्वों का पुनर्निर्धारण, एकत्रित संचय एवं अवितरित लाभों के संबंध में लेखांकन व्यवहार उसी प्रकार होगा जैसा कि साझेदार के सेवानिवृत होने पर किया जाता है। साझेदार की मृत्यु पर उसके कानूनी उत्तराधिकारी को देय राशि का भुगतान किया जाएगा। उत्तराधिकारी निम्न राशि को प्राप्त करने का अधिकारी है :

(क) मृतक साझेदार के पूंजी खाते में जमा शेष।

(ख) पूंजी पर ब्याज, यदि साझेदारी सलेख में प्रावधान हो, मृत्यु की तिथि तक।

(ग) फर्म की ख्याति में भाग;

(घ) अवितरित लाभों के संचय में भाग;

(ङ) मृत्यु की तिथि तक लाभ में भाग;

(छ) संयुक्त जीवन-बीमा में भाग;

मृतक साझेदार के कानूनी उत्तराधिकारी के खाते में निम्न राशियों को नाम में लिखा जाएगा :

(i) आहरण;

(ii) आहरण पर ब्याज;

(iii) परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन से हानि का भाग;

(iv) उसकी मृत्यु की तिथि तक यदि कोई हानि होती है तो उसका भाग।

मृतक साझेदार के पूंजी खाते में उपरोक्त समायोजन करके पूंजी खाते के शेष को, उसके उत्ताधिकारी के नाम से खाता खोलकर उसमें हस्तांतरित कर दिया जाता है।

मृतक साझेदार को राशि का भुगतान समझौते पर निर्भर करता है। समझौते की अनुपस्थिति में मृतक साझेदार का कानूनी उत्तराधिकारी देय राशि पर मृत्यु की तिथि से अंतिम भुगतान होने की तिथि तक 6% वार्षिक ब्याज का अधिकारी होगा।

साझेदार की मृत्यु की तिथि तक के लाभ की गणना

यदि साझेदार की मृत्यु वर्ष के दौरान होती है तब मृतक साझेदार का उत्तराधिकारी, मृत्यु की तिथि तक अर्जित किए गए लाभ में उसके भाग का अधिकारी होगा। इस लाभ का निर्धारण निम्न में से किसी विधि द्वारा किया जाएगा :

(i) समय का आधार;

(ii) विक्रय या आवर्त आधार (Turnover or Sales Basis)

टिप्पणी

(i) समय का आधार

इस स्थिति में यह माना जाएगा कि पूरे वर्ष में समान रूप से लाभ हो रहा है उदाहरण के लिए :

पिछले वर्ष कुल लाभ ₹ 1,25,000 है एवं साझेदार की पिछले वर्ष की समाप्ति के तीन महीने बाद मृत्यु हुई है तो तीन महीने का लाभ ₹ 31,250 होगा (₹ 1,25,000 × 3/12) यदि मृतक साझेदार का लाभ में 2/10 भाग है तो मृत्यु की तिथि तक उसका भाग ₹ 6,250 होगा (₹ 31,250 × 2/10)

(ii) विक्रय या आर्वत आधार

इस विधि में हम पिछले वर्ष की कुल विक्रय एवं लाभ को आधार लेगें। इसके बाद पिछले वर्ष की बिक्री के आधार पर मृत्यु की तिथि तक के लाभ का अनुमान लगाया जाएगा। यह माना जाएगा कि लाभ का अर्जन पूरे वर्ष समान दर से हो रहा है।

उदाहरण 12

अरुण, तरुण एवं नेहा साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 3 : 2 : 1 के अनुपात में करते हैं। 31 मई 2014 को नेहा की मृत्यु हो गई। वर्ष 2013–2014 के लिए विक्रय की राशि ₹ 4,00,000 है तथा विक्रय पर लाभ ₹ 60,000 है। प्रत्येक वर्ष 31 मार्च को खाते बंद किए जाते हैं। 1 अप्रैल 2014 से 31 मई 2014 तक ₹ 1,00,000 का विक्रय हुआ।

मृत्यु की तिथि तक मृतक साझेदार के लाभ के भाग की गणना करें।

हल

1 अप्रैल 2014 से 31 मई 2014 का लाभ, विक्रय के आधार पर

यदि विक्रय ₹ 4,00,000 है तो लाभ ₹ 60,000

यदि विक्रय ₹ 1,00,000 है तब लाभ होगा 60,000/4,00,000 × 1,00,000

= ₹ 15,000

नेहा का भाग = 15,000 × 1/6 = ₹ 2,500

विकल्प के तौर पर लाभ की गणना इस प्रकार की जा सकती है

$$\text{लाभ की दर} = \frac{60,000}{4,00,000} \times 100 = 15\%$$

मृत्यु की तिथि तक विक्रय = ₹ 1,00,000

$$\text{लाभ} = 1{,}00{,}000 \times \frac{15}{100} = ₹15{,}000$$

$$\text{नेहा का भाग} = 15{,}000 \times \frac{1}{6} = ₹2{,}500$$

टिप्पणी

उदाहरण 13

नूतन, सुमित एवं शीबा एक फर्म में साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 5:3:2 के अनुपात में करते हैं। 31 दिसंबर 2014 को उनका स्थिति विवरण निम्न है :

दायित्व		(₹)	परिसम्पत्तियाँ	(₹)
लेनदार		52,000	भवन	60,000
संचय कोष		15,000	सयंत्र	50,000
पूंजी			स्टॉक	27,000
नूतन	60,000		देनदार	25,000
सुमित	45,000		रोकड़	10,000
शीबा	30,000	1,35,000	बैंक	30,000
		2,02,000		2,02,000

1 जुलाई 2015 को नूतन की मृत्यु हो गई। उसके उतराधिकारी एवं शेष साझेदारों के बीच निम्न सहमति हुई :

(i) ख्याति का मूल्यांकन पिछले 4 वर्षों के औसत लाभ के 2½ वर्ष के क्रय के बराबर होगा जो कि 2011, का ₹ 25,000, 2012, का ₹ 20,000, 2013, का ₹ 40,000, एवं 2014, का ₹ 35,000 है।

(ii) भवन का ₹ 70,000, सयंत्र का ₹ 46,000 स्टॉक का ₹ 32,000 मूल्यांकन किया गया।

(iii) 2015 में लाभ पिछले वर्ष की दर से हुआ।

(iv) पूंजी पर ब्याज का 9% वार्षिक प्रावधान है।

(v) 1 जुलाई, 2015 को आहरण खाता में ₹ 20,000 शेष है।

(vi) उसके उत्तराधिकारी को ₹ 25,950 का तुरंत भुगतान किया गया। शेष को उत्तराधिकारी के ऋण खाते में हस्तांतरित किया जाएगा।

1 जुलाई, 2015 को नूतन का पूंजी खाता एवं नूतन के उत्तराधिकारी का खाता तैयार करें।

हल

(i) ख्याति का मूल्यांकन :

कुल लाभ = ₹ 25,000 + ₹ 20,000 + ₹ 40,000 + ₹ 35,000 = ₹ 1,20,000

औसत लाभ = 1,20,000/4 = ₹ 30,000

अतः 2½ वर्ष क्रय पर ख्याति = ₹ 30,000 × 2½ = ₹ 75,000

ख्याति में नूतन का भाग = 75,000 × 5/10 = ₹ 37,500

यह राशि सुमित और शीबा के पूँजी खातों में 3 : 2 के लाभ अनुपात में समायोजित की जायेगी, जो कि क्रमशः ₹ 22,500 एवं ₹ 15,000 है।

(ii) नूतन को देय लाभ का भाग (मृत्यु की तिथि तक)
= ₹ 35,000 × 6/12 × 5/10 = ₹ 8,750

(iii) संचय कोष में नूतन का भाग = 15,000 × 5/10 = ₹ 7,500

(iv) नूतन की पूँजी पर ब्याज = 60,000 × 9/100 × 6/12 = ₹ 2,700

पूर्नमूल्यांकन खाता

नाम | जमा

विवरण		(₹)	विवरण	(₹)
सयंत्र		4,000	भवन	10,000
लाभ का हस्तांतरण :			स्टॉक	5,000
नूतन की पूंजी	5,500			
सुमित की पूंजी	3,300			
शीबा की पूंजी	2,200	11,000		
		15,000		15,000

नूतन का पूंजी खाता

नाम | जमा

विवरण	(₹)	विवरण	(₹)
आहरण	20,000	शेष आ/ला	60,000
नूतन का उतराधिकारी	1,01,950	संचय कोष	7,500
		सुमित की पूंजी (ख्याति)	15,000
		शीबा की पूंजी (ख्याति)	22,500

टिप्पणी

		लाभ व हानि (उचिंत)	8,750
		पुनर्मूल्यांकन खाता	5,500
		पूंजी पर ब्याज	2,700
	1,21,950		1,21,950

नूतन के उतराधिकारी का खाता

नाम | जमा

विवरण	(₹)	विवरण	(₹)
बैंक	25,950	नूतन की पूंजी	1,01,950
नूतन के उतराधिकारी का ऋण		76,000	
	1,01,950		1,01,950

पाठगत प्रश्न 24.6

उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. उत्तराधिकारी को .... के सभी अधिकार मिलेंगें।

ii. मृतक साझेदार के भाग की ख्याति .... खाते में......................की जाएगी।

iii. साझेदार की मृत्यु की स्थिति में लाभ का अनुमान....................एवं........................के आधार पर किया जाएगा।

iv. मृतक साझेदार के पूंजी खाते का शेष उसके........................खाते में हस्तांरित किया जाएगा।

v. मृतक साझेदार द्वारा देय आहरण पर ब्याज की राशि मृत्यु की तिथि तक उसके पूंजी खाते में.................................की जाएगी।

आपने क्या सीखा

- **सेवानिवृत्ति**

  1. कुछ कारणों से जैसे वृद्धावस्था, खराब स्वास्थ्य, खराब संबंध आदि वर्तमान साझेदार साझेदारी से सेवानिवृत होने का निर्णय ले सकते हैं। सेवानिवृत्ति से वर्तमान साझेदारी का अंत होगा एवं शेष साझेदार नये समझौते का निर्माण करेंगे। साझेदारी फर्म का पुनर्गठन नई शर्तों एवं नियमों से होगा।

2. सेवानिवृति के समय निम्न लेखांकन विषय उत्पन्न होते हैं :
   (अ) नया लाभ विभाजन अनुपात एवं अधिलाभ अनुपात
   (ब) ख्याति
   (स) परिसंपतियों एवं दायितवों के मूल्य में परिवर्तन का समायोजन
   (द) संचय एवं एकत्रित लाभों का लेखाकरण
   (च) सेवानिवृत साझेदार को देय का निपटारा
   (छ) विद्यमान साझेदारों की नई पूंजी

- **मृत्यु**

1. जब साझेदार की मृत्यु होती है उसको देय राशि उसके कानूनी उत्तराधिकारी को दी जाती है।
2. मृतक साझेदार का उत्तराधिकारी निम्न का अधिकारी होगा
   (क) मृतक साझेदार के पूंजी खाते में जमा शेष
   (ख) पूंजी पर ब्याज यदि साझेदारी संलेख में प्रावधान हो, मृत्यु की तिथि तक
   (ग) फर्म की ख्याति में भाग
   (घ) अवितरित लाभों एवं संचय में भाग
   (ङ) परिसंपतियों एवं दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन पर लाभ का भाग
   (च) मृत्यु की तिथि तक लाभ में भाग
   (छ) संयुक्त जीवन बीमा में भाग

   मृतक साझेदार के कानूनी उतराधिकारी के खाते में निम्न राशियों को नाम में लिखा जाएगा :
   (i) आहरण
   (ii) आहरण पर ब्याज
   (iii) परिसंपतियों एवं दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन से हानि का भाग
   (iv) उसकी मृत्यु तिथि तक यदि कोई हानि होती है तो उसका भाग
3. साझेदार की मृत्यु की तिथि तक लाभ की गणना करने की दो विधियाँ है :
   (i) समय का आधार (ii) विक्रय या आर्वत आधार

पाठान्त प्रश्न

1. साझेदार की सेवानिवृत्ति से आप क्या समझते हैं?
2. अधिलाभ अनुपात का वर्णन करें।

टिप्पणी

3. साझेदार के सेवानिवृत होने पर ख्याति के लेखाकरण का वर्णन कीजिए।

4. जब साझेदार की मृत्यु होती है तब क्या समस्या उत्पन्न होती है? लेखाकार होने के नाते आप इसका लेखाकरण किस प्रकार करेंगे?

5. सीमा, मोहित, एवं मीनाक्षी फर्म में साझेदार हैं एवं लाभ का विभाजन 7 : 6 : 7 के अनुपात में करते हैं। मोहित सेवानिवृत्ति लेता है। इसका भाग सीमा व मीनाक्षी ने बराबर बाँट लिया। सीमा एवं मीनाक्षी के नये लाभ विभाजन अनुपात की गणना करें।

6. आशू, असमिता एवं मीतू साझेदार हैं। ये लाभ का विभाजन 4 : 3 : 2 के अनुपात में करते हैं। आशू सेवानिवृत होता है। यह मानें कि असमिता व मीतू भविष्य में लाभ को 5 : 3 के अनुपात में विभाजन करेंगे। अधिलाभ अनुपात की गणना कीजिए।

7. अनु बीना और चंदर एक फर्म में साझेदार हैं। ये लाभ का विभाजन 3 : 2 : 1 के अनुपात में करते हैं। 31 मार्च 2014 को उनका स्थिति विवरण निम्न है।

दायित्व		*(₹)*	*परिसंपतियाँ*	*(₹)*
विविध लेनदार		32,00	हस्तस्थ रोकड़	1,200
सामान्य संचय		12,000	बैंक में रोकड़	2,000
पूंजी :			देनदार	18,000
अनु	20,000		स्टॉक	14,000
बीना	20,000		मशीनरी	12,000
चंदर	20,000	60,000	भवन	28,000
		75,200		75,200

स्थिति विवरण की तिथि को चंदर फर्म से सेवानिवृति लेता है। परिसंपतियों में समायोजन के लिए निम्न सहमति हुई :

(अ) विविध देनदारों पर संदिग्ध ऋण के लिए 5% से प्रावधान कीजिए।

(ब) भवन का पुनर्मूल्यांकन ₹ 30,200 हुआ।

(स) स्टॉक पर 5% व मशीनरी पर 10% ह्रास लगाए।

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूंजी खाते व अनु और बीना का स्थिति विवरण तैयार करें।

8. अशोक, बाबू एवं चीनू साझेदार हैं। ये लाभ हानि का विभाजन क्रमशः 3 : 2 : 1 के अनुपात में करते हैं। मार्च 31, 2014 को फर्म का स्थिति विवरण निम्न है :

टिप्पणी

दायित्व		(₹)	परिसंपत्तियाँ		(₹)
विविध लेनदार		38,000	संयन्त्र एवं मशीनरी		70,000
देयविपत्र		10,000	भवन		90,000
सामान्य संचय		24,000	मोटर कार		16,000
पूँजी			देनदार	32,000	
अशोक	80,000		घटा डूबत ऋण		
बाबू	60,000		के लिए प्रावधान	1,000	31,000
चीनू	50,000	1,90,000	स्टॉक		50,000
			रोकड़		5,000
		2,62,000			2,62,000

इस तिथि को बाबू सेवानिवृत हुआ। निम्न का समायोजन हुआ

(अ) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 36,000 किया गया।

(ब) सयंत्र व मशीनरी पर 10% पर एवं मोटर कार पर 15% ह्रास लगाया।

(स) स्टॉक में 20% एवं भवन पर 10% वृद्धि की गई।

(द) संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान में ₹ 3,900 से वृद्धि की गई।

पुनर्मूल्यांकन खाता एवं बाबू का पूंजी खाता तैयार करें।

9. ध्रुव, राजा एवं लीला साझेदार हैं। लाभ–हानि का विभाजन क्रमशः 3 : 2 : 1 के अनुपात में करते हैं। मार्च 31, 2014 को स्थिति विवरण निम्न है।

दायित्व		(₹)	परिसंपत्तियाँ		(₹)
विविध लेनदार		31,200	संयंत्र व मशीनरी		37,600
ध्रुव ऋण		10,000	भवन		24,000
पूंजी :			देनदार	24,800	
ध्रुव	51,840		घटाः डूबत ऋण		
राजा	27,360		के लिए प्रावधान	2,400	22,400
लीला	14,240	93,440	स्टॉक		18,400
			रोकड़		32,240
		1,34,620			1,34,640

ध्रुव 31 मार्च, 2014 को सेवानिवृत होता है। राजा एवं लीला साझेदार रहते हुए लाभ–हानि का विभाजन 2:1 के अनुपात में करते हैं। ध्रुव को 1.4.2014 को ₹ 20,000 का भुगतान किया गया तथा वह शेष राशि को फर्म में उसके ऋण के रूप में रखने के लिए सहमत हो गया।

ध्रुव के सेवानिवृति के लिए निम्न सहमति हुई :

टिप्पणी

(अ) भवन का पुनर्मूल्यांकन ₹ 48,000 व सयंन्त्र एवं मशीनरी का ₹ 31,600 किया गया।
(ब) डूबत ऋण के लिये प्रावधान में ₹ 800 से वृद्धि की गई।
(स) ₹ 1,000 का प्रावधान, जो कि लेनदारों में सम्मिलित है, कि अब आवश्यकता नहीं है।
(द) स्टॉक में सम्मिलित क्षतिग्रस्त वस्तुओं के लिये स्टॉक से ₹ 2,400 अपलिखित किए गए।
(छ) अदत्त कानूनी व्यय के संबंध में ₹ 8,480 का प्रावधान कीजिए।
(द) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 28,800 किया गया।

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूंजी खाते एवं पुनर्गठित फर्म का स्थिति विवरण तैयार करें।

10. सन्नी, हनी एवं रूपेश एक फर्म में साझेदार है। 31 मार्च, 2014 को उनका स्थिति विवरण निम्न है :

दायित्व		(₹)	परिसंपतियाँ	(₹)
लेनदार		20,000	सयन्त्र व मशीनरी	40,000
समान्य संचय		20,000	फर्नीचर व फिटिंग	5,000
पूंजी :			देनदार	30,000
सन्नी	40,000		स्टॉक	21,000
हनी	30,000		विनियोग	24,000
रूपेश	10,000	80,000		
		1,20,000		1,20,000

30.06.2014 को हनी की मृत्यु हो गई। साझेदारी संलेख में यह प्रावधान है कि मृतक साझेदार का उत्तराधिकारी निम्न राशि का अधिकारी होगा :

(i) मृतक साझेदार के पूंजी खाते का शेष।
(ii) पूंजी पर ब्याज 8% वार्षिक मृत्यु की तिथि तक।
(iii) मृत्यु की तिथि तक उनके भाग का लाभ पिछले 3 वर्षों के लाभों के औसत के आधार पर।
(iv) अंतिम स्थिति विवरण के अनुसार अवितरित लाभ व हानि में उसका भाग।
(v) पिछले 3 वर्षों का लाभ ₹ 30,000; ₹ 40,000 एवं ₹ 50,000 है।

हनी के कानूनी उत्तराधिकारी को देय राशि का निर्धारण कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

24.1 i. (अ) बड़ी आयु (ब) अस्वस्थता (स) खराब

ii. वर्तमान अनुपात + अधिलाभ अनुपात

iii. वर्तमान अनुपात   iv. 2 : 1

24.2 (i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) असत्य

24.3 I. (i) लाभ (ii) जमा : साझेदार का पूंजी खाता
(iii) पुनर्मूल्यांकन, संपतियाँ

II पुनर्मूल्यांकन खाता   नाम
लेनदारों का खाता से
(लेनदारों के मूल्य में वृद्धि)

24.4 I. (i) उसके पूंजी खाते का शेष
(ii) फर्म की ख्याति में उसका भाग
(iii) पुनर्मूल्यांकन लाभ में उसका भाग
(iv) सामान्य संचय एवं एकत्रित लाभ में उसका भाग
(v) पूंजी पर ब्याज या कोई अन्य

II. (i) एकमुश्त (ii) किश्तों में

III. ₹ 33,000

24.5 I. महेंद्र की पूंजी ₹ 50,000; तरुण की पूंजी ₹ 30,000

II. अमीशा की पूंजी ₹ 1,37,500; नीना की पूंजी ₹ 82,500;
कुल पूंजी ₹ 2,20,000

24.6 I. (i) मृतक साझेदार (ii) जमा (iii) समय, विक्रय
(iv) उत्तराधिकारी (v) नाम

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

5. नया अनुपात 1 : 1
6. अधिलाभ अनुपात 21 : 11
7. पुनर्मूल्यांकन पर हानि ₹ 600   स्थिति विवरण का योग ₹ 74,600
8. पुनर्मूल्यांकन पर लाभ ₹ 5,700   बाबू के पूंजी खाते का शेष ₹ 81,900
9. पुनर्मूल्यांकन पर लाभ ₹ 7,320   स्थिति विवरण का भाग ₹ 1,22,680
10. हनी के उतराधिकारी को देय राशि ₹ 44,534

टिप्पणी

25

साझेदारी फर्म का समापन

राकेश एवं मुकेश अच्छे मित्र थे। वे एक व्यावसाय चला रहे थे जो कि साझेदारी फर्म है। वे बहुत सफल थे। लोग उनके संबंधों से द्वेष करते थे। लेकिन एक दिन लोगों को पता चला कि उन्होंने व्यावसाय बंद कर दिया था। इस प्रकार से कुछ विषयों पर उनमें आपसी मतभेद उत्पन्न हो गए थे। साझेदारों के बीच मतभेद या पिछले कुछ वर्षों में हानि या न्यायालय के आदेश के कारण फर्म को बंद किया जा सकता है। हम कह सकते हैं कि साझेदारी फर्म का समापन हो गया है। इस पाठ में आप साझेदारी फर्म के समापन के संबंध में लेखाकरण की प्रक्रिया के संबंध में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप :

- साझेदारी फर्म के समापन का अर्थ बता सकेगे;
- साझेदारी का समापन एवं साझेदारी फर्म का समापन में अंतर कर सकेगें;
- वसूली खाता, परिसंपतियों का विक्रय एवं दायित्वों के भुगतान का वर्णन कर सकेगे;
- गैर अभिलेखित परिसंपतियों एवं दायित्वों के लेखाकरण को समझा सकेगे;
- साझेदारों के पूंजी खाते, बैंक/रोकड़ खाता बना सकेगें।

25.1 साझेदारी का समापन एवं साझेदारी फर्म का समापन

समापन शब्द का अर्थ अंत करना या समाप्त होना है। साझेदारी फर्म का समापन यह बताता है कि सभी साझेदारों के बीच संबंधों का पूर्ण अंत हो गया है। साझेदारी का समापन (साझेदार द्वारा सेवानिवृति, मृत्यु या दिवालिया होने के कारण) साझेदारों के संबंधों में बदलाव मात्र है न कि फर्म का अंत। साझेदारी का अंत निश्चित रूप से होगा, लेकिन पुनर्गठित फर्म निरंतर

इसी नाम के अंतर्गत चलती रहेगी। अतः साझेदारी के समापन को फर्म का समापन माना भी जा सकता है और नहीं भी लेकिन फर्म के समापन में साझेदारी का समापन अवश्य होगा। फर्म के समापन पर फर्म द्वारा चालित व्यवसाय समाप्त हो जाता है। क्योंकि इस पर परिसम्पत्तियों का विक्रय, दायित्वों का भुगतान एवं साझेदारों के दावों का निपटारा हो जाता है। सभी साझेदारों के मध्य साझेदारी के अंत को ही फर्म का समापन कहते हैं।

(i) समझौते द्वारा समापन : एक फर्म का समापन निम्न स्थिति में होता है :

- सभी साझेदारों की सहमति पर, या
- साझेदारी समझौते की शर्तों के अनुसार।

(ii) अनिवार्य समापन : एक फर्म का निम्न स्थितियों में अनिवार्य समापन होता है :

- जब सभी साझेदार या एक को छोड़कर सभी साझेदार दिवालिए हो गए हों या मानसिक संतुलन खो बैठे हों।
- जब व्यवसाय गैर-कानूनी हो गया हो।
- जब केवल एक को छोड़कर सभी साझेदार फर्म से सेवानिवृत्त होना चाहते हैं।
- जब सभी साझेदार या एक को छोड़कर सभी की मृत्यु हो गई हो।
- फर्म अनिवार्य रूप से भी समाप्त हो जाती है, यदि साझेदारी संलेख में निम्न में से किसी एक घटना के घटित होने से संबंधित प्रावधान हो :

  (क) जितनी अवधि के लिए फर्म बनी है उस अवधि की समाप्ति हो गई हो।

  (ख) उस विशेष उपक्रम या परियोजना की समाप्ति हो गई हो जिसके लिए फर्म बनाई गई हो।

(iii) सूचना द्वारा समापन : स्वैच्छिक साझेदारी की स्थिति में यदि कोई एक साझेदार दूसरे साझेदारों को लिखित सूचना दे तो फर्म का समापन हो सकता है।

(iv) न्यायालय द्वारा समापन : न्यायालय फर्म के समापन का आदेश निम्न स्थितियों में दे सकती है :

(क) जब कोई साझेदार मानसिक संतुलन खो बैठा हो।

(ख) जब कोई साझेदार, साझेदारी के कर्तव्य पूरा करने में स्थायी रूप से असमर्थ हो जाए।

(ग) जब कोई साझेदार फर्म के प्रबंध से संबंधित समझौते का जान बूझकर और लगातार उल्लंघन करे।

(घ) जब साझेदार के आचरण से फर्म के व्यवसाय पर विपरीत प्रभाव पड़े।

(ङ) जब साझेदार फर्म में अपना संपूर्ण हित किसी तीसरे पक्ष को हस्तांतरित कर दे।

(च) जब न्यायालय फर्म के समापन को ठीक व न्यायसंगत समझे।

टिप्पणी

साझेदारी का समापन और साझेदारी फर्म के समापन में अंतर

अभी तक आपने पढ़ा कि प्रवेश, सेवानिवृत्ति एवं मृत्यु के अवसर पर, वर्तमान साझेदारी समाप्त हो जाती है लेकिन फर्म का व्यवसाय एक नए समझौते के अंतर्गत चलता रहता है। जब फर्म दी गई परिस्थितियों में व्यवसाय को बंद करने का निर्णय लेती है तब यह समापन होगा। साझेदारी फर्म का समापन साझेदारी के समापन से भिन्न है।

फर्म के समापन का अर्थ है फर्म व्यवसाय को बंद कर दे और उसका कार्य बंद हो जाए। जबकि साझेदारी के समापन का अर्थ है पुराने साझेदारी समझौते का स्थगित होना एवं प्रवेश, सेवानिवृत्ति एवं मृत्यु के कारण, फर्म का पुनर्गठन होना। साझेदारी के समापन में शेष साझेदार व्यवसाय को एक नए समझौते के अंतर्गत चलाने का निर्णय लेते हैं।

पाठगत प्रश्न 25.1

उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों को पूर्ण कीजिए :

i. एक साझेदारी फर्म का समापन तब होता है जब फर्म की गतिविधियाँ .... हो जाए।

ii. जब फर्म व्यवसाय को बंद करने का निर्णय लेती है तो यह .... कहलाता है।

iii. .... का समापन .... के समापन से भिन्न है।

iv. फर्म का अनिवार्य .... होगा जब सभी साझेदार या एक को छोड़कर सभी की मृत्यु हो गई हो।

v. फर्म का समापन .... द्वारा होगा जब कोई साझेदार मानसिक संतुलन खो बैठा हो।

vi. फर्म का समापन .... द्वारा होगा जब सभी साझेदार अपनी सहमति दें।

25.2 परिसम्पतियों एवं दायित्वों का लेखाकरण

जब साझेदार फर्म के व्यवसाय को बंद करने का निर्णय लेते हैं तब आवश्यक हो जाता है कि वह अपने खातों का निपटारा करें। इस उद्देश्य के लिए वे अपनी सभी परिसम्पतियों की बिक्री (रोकड़ एवं बैंक शेष के अतिरिक्त) अपने विरूद्ध दावों के निपटारा के लिए करते हैं। इस उद्देश्य के लिए एक अलग खाता खोला जाता है जिसे वसूली खाता (Realisation account) कहते हैं। वसूली खाता वह खाता है जिसमें सभी परिसम्पत्तियों (रोकड़ एवं बैंक अतिरिक्त) को उनके पुस्तक मूल्य पर हस्तांतरित किया जाता है एवं सभी बाह्य दायित्वों को उनके पुस्तक मूल्य पर हस्तांतरित किया जाता है।

यह दिखाता है कि परिसम्पत्तियों के विक्रय से कितनी राशि वसूल हुई एवं दायित्वों का निपटान कितनी राशि पर हुआ।

परिसम्पत्तियों के विक्रय एवं दायित्वों के निपटान का लेखा करने के लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टियां अभिलेखित की जाएगी :

1. परिसम्पत्तियों के हस्तांतरण पर : परिसम्पत्ति खातों को वसूली खाते में पुस्तक मूल्य पर हस्तांतरित करके बंद किया जाएगा।

वसूली खाता   नाम
    परिसम्पत्ति खाता से (व्यक्तिगत)
(परिसम्पत्तियों का हस्तांतरण)

यह ध्यान रहे कि स्थिति विवरण के परिसम्पति पक्ष की निम्न मदों को वसूली खाते में हस्तांतरित नहीं किया जाएगा।

(अ) (i) अविभाजित हानि (लाभ-हानि खाते का नाम शेष)

(ii) अवास्तविक परिसम्पत्तियों (Fictitions assets) या आस्थगित आगम व्यय जैसे कि प्रारंभिक व्यय।

ऊपर दी गई सभी मदों को साझेदारों के पूंजी खाते में उनके लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरित करके बंद किया जाएगा। इसके लिए यह रोजनामचा प्रविष्टि होगी।

साझेदार का पूंजी खाता   नाम   (व्यक्तिगत)
    लाभ-हानि खाता से
    अवास्तविक परिसम्पत्ति खाता से
(हानि एवं अवास्तविक परिसम्पत्तियों का हस्तांतरण)

(ब) हस्तस्थ रोकड़ एवं बैंक में रोकड़, रोकड़/बैंक खाते का आरंभिक शेष होगा।

(स) परिसम्पतियों के विरुद्ध प्रावधान एवं संचय को वसूली खाते में जमा करके बंद किया जाएगा।

रोजनामचा प्रविष्टि होगी :

संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान खाता   नाम
अवयक्षण के लिए प्रावधान खाता   नाम
कोई अन्य प्रावधान खाता   नाम
    वसूली खाता से
(परिसम्पत्तियों पर प्रावधान का हस्तांतरण)

2. दायित्वों का हस्तांतरण करने के लिए : विभिन्न बाह्य दायित्वों के खातों को वसूली खाते में हस्तांतरित करके बंद किया जाएगा। साझेदार की पत्नी द्वारा फर्म को दिए गए ऋण को बाह्य दायित्व माना जाएगा एवं वसूली खाते के जमा में हस्तांतरित किया जाएगा। इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि होगी :

बाह्य दायित्व खाता नाम (व्यक्तिगत)
    वसूली खाता से
(बाह्य दायित्वों का हस्तांतरण)

साझेदारों के पूंजी एवं ऋण खातों का अलग निपटान किया जाएगा। इसलिये इनकी वसूली खाते में हस्तान्तरण नहीं किया जायेगा।

3. संचित संचय एवं लाभ/हानि का लेखाकरण (Treatment of accumulated reserves and profit/loss) : संचित संचय की कोई भी राशि (जैसे सामान्य संचय), लाभ–हानि खाता (जमा) संचय कोष एवं अन्य संचय, समापन की तिथि को साझेदारों के पूंजी खातों में उनके लाभ विभाजन के अनुपात के आधार पर जमा की जाएगी। इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि का लेखा किया जाएगा :

लाभ हानि खाता नाम
सामान्य संचय खाता नाम
अन्य कोष नाम
    साझेदार का पूंजी खाता से (व्यक्तिगत)
(लाभ एवं संचय का हस्तांतरण)

4. परिसंपत्तियों के विक्रय के लिए (रोकड़ में) :

बैंक/रोकड़ खाता नाम (वसूली मूल्य)
    वसूली खाता से
(परिसम्पत्तियों का विक्रय)

5. साझेदार द्वारा परिसम्पत्तियां ली जाने पर :

साझेदार का पूंजी खाता नाम
    वसूली खाता से (सहमति मूल्य)
(साझेदार द्वारा परिसम्पत्तियां लिए जाने पर)

बैंक/रोकड/साझेदार का पूंजी खाता नाम
    साझेदार को ऋण खाता से
(साझेदार को ऋण का निपटारा)

टिप्पणी

6. साझेदार द्वारा दिए गए ऋण का निपटारा :

साझेदार का ऋण खाता नाम
बैंक/रोकड़/साझेदार का पूंजी खाता से
(साझेदार द्वारा दिए गए ऋण का निपटारा)

7. दायित्वों का रोकड़ भुगतान :

वसूली खाता नाम
रोकड़ खाता से
(दायित्वों का भुगतान)

8. साझेदार द्वारा दायित्वों का भुगतान :

वसूली खाता नाम
साझेदार का पूंजी खाता से
(साझेदार द्वारा दायित्व लेने पर)

गैर-अभिलेखित परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों का लेखाकरण (Treatment of Unrecorded Assets and Liabilities)

कभी-कभी कुछ परिसम्पत्तियां ऐसी भी होती हैं जिनको पूर्णतया पिछले वर्षों में अपलिखित किया जा चुका है अतः उनको स्थिति विवरण में नहीं दिखाया जाता है लेकिन प्रत्यक्ष में वे परिचालन के लिए विद्यमान हैं। उदाहरण के लिए, एक पुराना कम्प्यूटर है जो कि अभी भी कार्य करने की स्थिति में है लेकिन इसका बहियों में मूल्य शून्य है। इसी प्रकार कुछ दायित्व ऐसे होते हैं जिनको स्थिति विवरण में नहीं दिखाया गया है लेकिन ये अभी तक विद्यमान हैं। उदाहरण के लिए बैंक से भुनाए गए विपत्र, जिनका निरादरण हो जाता है लेकिन समापन पर फर्म द्वारा भुगतान के उद्देश्य से ले लिए जाते हैं।

यह ध्यान रहे कि गैर-अभिलेखित परिसम्पत्तियों को कभी भी वसूली खाते के नाम पक्ष में हस्तांतरित नहीं किया जाएगा, लेकिन उनके वसूली मूल्य की राशि जो कि उसके विक्रय से प्राप्त होगी, अधिलाभ प्रकृति के कारण वसूली खाते में नियम के अनुसार जमा की जाएगी। इसी प्रकार गैर अभिलेखित दायित्वों को वसूली खाते में हस्तांतरित करने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए कारण यह है कि इसका भुगतान वसूली खाते के लिए हानि है। इसको केवल भुगतान की गई मूल राशि से नाम किया जाएगा। इस स्थिति में निम्न रोजनामचा प्रविष्टियां की जाएगी :

(क) जब गैर-अभिलेखित परिसम्पत्तियों के विक्रय से कुछ राशि वसूल की जाती है:

टिप्पणी

रोकड़/बैंक खाता नाम
वसूली खाता से
(गैर-अभिलेखित परिसम्पत्तियों का विक्रय)

(ख) जब गैर-अभिलेखित परिसम्पति साझेदार द्वारा सहमति मूल्य पर ली जाती है।

साझेदार का पूंजी खता नाम
वसूली खाता से
(गैर-अभिलेखित परिसम्पत्ति को साझेदार द्वारा लिया गया)

(ग) जब गैर-अभिलेखित दायित्वों का निपटारा फर्म द्वारा किया जाता है।

वसूली खाता नाम
बैंक/रोकड़ खाता से
(गैर-अभिलेखित दायित्वों का भुगतान)

(घ) जब गैर-अभिलेखित दायित्वों को फर्म की ओर से साझेदार द्वारा भुगतान किया जाता है।

वसूली खाता नाम
साझेदार का पूंजी खाता से
(गैर-अभिलेखित दायित्वों का साझेदार द्वारा भुगतान)

वसूली व्ययों का भुगतान

(क) जब वसूली व्ययों का भुगतान फर्म द्वारा किया जाता है (फर्म द्वारा भुगतान पर) इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

वसूली खाता नाम
रोकड़/बैंक खाता से
(वसूली व्यय का भुगतान)

(ख) जब वसूली व्यय फर्म की ओर से साझेदार द्वारा किया जाता है। (वसूली व्ययों का साझेदार द्वारा फर्म की ओर से भुगतान) इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

वसूली खाता नाम
साझेदार का पूंजी खाता से
(साझेदार द्वारा फर्म की ओर से वसूली व्यय का भुगतान)

(ग) जब वसूली व्ययों का भुगतान साझेदार द्वारा किया एवं वहन किया जाता है।

साझेदार का पूंजी खाता नाम
रोकड़/बैंक खाता से
(वसूली व्ययों का भुगतान एवं वहन साझेदार द्वारा)

वसूली खाते को बंद करना

समापन पर वसूली खाता लाभ या हानि दिखा सकता है। यदि जमा पक्ष का योग नाम पक्ष के योग से अधिक होगा, तब लाभ होगा एवं इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

वसूली खाता नाम
साझेदार का पूंजी/चालू खाता से (व्यक्तिगत)
(वसूली पर लाभों का साझेदारों के पूंजी खाते में हस्तांतरण)

यदि नाम पक्ष का योग जमा पक्ष के योग से अधिक होगा तब हानि होगी एवं इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

साझेदार का पूंजी/चालू खाता नाम
वसूली खाता से,
(वसूली पर हानि का पूंजी खाते में हस्तांतरण)

वसूली खाते का प्रारूप

वसूली खाता

नाम जमा

विवरण	*(₹)*	*विवरण*	*(₹)*
सभी परिसम्पत्तियां खाता (पुस्तक मूल्य) (रोकड़ एवं बैंक के अतिरिक्त)		**सभी बाह्य दायित्व खाता (पुस्तक मूल्य)**	
रोकड़/बैंक खाता (बाह्य दायित्वों के भुगतान पर)		**रोकड़/बैंक खाता** (विभिन्न परिसम्पत्तियों के विक्रय से वसूल राशि)	
साझेदार का पूंजी खाता (साझेदार द्वारा दायित्व का भुगतान करने पर)		साझेदार का पूंजी खाता (यदि परिसम्पत्ति साझेदार द्वारा ली गई)	
रोकड़/बैंक खाता (वसूली पर व्यय)		**साझेदार का पूंजी खाता** (वसूली पर हानि का हस्तांतरण)	
साझेदार का पूंजी खाता (वसूली व्यय का भुगतान साझेदार द्वारा करने पर)			
साझेदार का पूंजी खाता (वसूली पर लाभ का हस्तांतरण)			

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 25.2

नीचे कुछ कथन दिए गए हैं इनमें से कुछ कथन सत्य हैं एवं कुछ कथन असत्य हैं। सत्य कथन के लिए 'स' एव असत्य कथन के लिए 'अ' लिखें।

i. समापन के समय रोकड़ एवं बैंक सहित सभी खातों का हस्तांतरण वसूली खाते में किया जाता है।

ii. फर्म के समापन पर फर्म की व्यापारिक गतिविधियां बंद हो जाती हैं।

iii. वसूली खाता बनाने के पश्चात्, वसूली पर लाभ एवं हानि को साझेदारों के पूंजी खातों में हस्तांतरित किया जाता है।

iv. गैर-अभिलेखित परिसम्पत्ति के विक्रय से वसूल राशि का लेखा वसूली खाते में किया जाता है।

v. सामान्य संचय का शेष साझेदारों के पूंजी खातों में हस्तांतरित कर दिया जाता है।

vi. साझेदार द्वारा फर्म की ओर से किए गए वसूली व्ययों का लेखा वसूली खाता एवं साझेदार के पूंजी खाते में किया जाता है।

25.3 साझेदार का पूंजी खाता एवं रोकड़/बैंक खाता

साझेदारों के पूंजी खातों से संबंधित सभी समायोजन, एवं वसूली पर लाभ या हानि का हस्तांतरण साझेदारों के पूंजी खातों में करने के पश्चात् पूंजी खातों को निम्न प्रकार से बंद किया जा सकता है :

(क) यदि साझेदार का पूंजी खाता नाम शेष दिखाता है तब साझेदार आवश्यक रोकड़ लाएगा। इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

बैंक/रोकड़ खता   नाम

    साझेदार का पूंजी खाता से

(साझेदार द्वारा रोकड़ लाने पर)

(ख) यदि साझेदार का पूंजी खाता जमा शेष दिखाता है तब उसको आवश्यक राशि का भुगतान किया जाएगा। इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

साझेदार का पूंजी खाता   नाम

    रोकड़/बैंक खाता से

(साझेदार को रोकड़ का भुगतान)

रोकड़/बैंक खाता बनाना

साझेदारों के पूंजी खाते बंद करने के पश्चात् बैंक खाता बनाया जाता है एवं फर्म के समापन पर साझेदारों द्वारा लाई गई रोकड़ सहित बैंक/रोकड़ से संबंधित सभी प्रविष्टियों की इस खाते में खतौनी की जाती है। साझेदारों के पूंजी खातों को बैंक से भुगतान करके बंद किया जाता है एवं इसके बाद बैंक खाता भुगतान करके/प्राप्त करके बंद कर दिया जाता है। इस प्रकार सभी खातों को बंद कर दिया जाता है। यदि रोकड़/बैंक खाता कुछ शेष नहीं दिखाता तब यह दर्शाता है कि फर्म के समापन पर सभी खातों को नियमानुसार बंद किया गया है।

उदाहरण 1

अरुण और सीमा एवं फर्म में बराबर के साझेदार है। वे 31 दिसंबर, 2014 को फर्म के समापन का निर्णय लेते हैं। स्थिति विवरण निम्न प्रकार से है :

दिसंबर 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		*(₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*(₹)*
विविध लेनदार		54,000	बैंक में रोकड़	22,000
संचय कोष		20,000	विविध देनदार	24,000
ऋण		80,000	स्टॉक	84,000
पूंजी			फर्नीचर	50,000
अरुण	1,20,000		संयत्र	94,000
सीमा	1,20,000	2,40,000	पट्टाकृत भूमि (Leasehold land)	1,20,000
		3,94,000		3,94,000

परिसम्पत्तियों से निम्न वसूली हुई :

	₹
पट्टाकृत भूमि	1,44,000
फर्नीचर	45,000
स्टॉक	81,000
संयन्त्र	96,000
विविध देनदार	21,000

लेनदारों को ₹ 51,000 का भुगतान कर पूर्ण निपटान किया गया। वसूली व्यय ₹6,000 है।

फर्म की पुस्तकों को बंद करते हुए वसूली खाता, बैंक खाता, साझेदारों के पूंजी खाते तैयार करें।

टिप्पणी

हल

अरुण और सीमा की बहियां

वसूली खाता

नाम   जमा

विवरण		(₹)	विवरण		(₹)
परिसम्पत्तियों का हस्तांतरण			विविध लेनदार		54,000
विविध देनदार	24,000		ऋण		80,000
संयन्त्र	94,000		बैंक		
स्टॉक	84,000		विविध देनदार	21,000	
पट्टाकृत भूमि	1,20,000		संयंत्र	96,000	
(Leasehold land)			स्टॉक	81,000	
फर्नीचर	50,000	3,72,000	पट्टाकृत भूमि	1,44,000	
बैंक			फर्नीचर	45,000	3,87,000
लेनदार	51,000				
ऋण	80,000				
वसूली व्यय	6,000	1,37,000			
लाभ का हस्तांतरण :					
अरुण की पूंजी	6,000				
सीमा की पूंजी	6,000	12,000			
		5,21,000			5,21,000

पूँजी खाते

नाम   जमा

विवरण	अरूण (₹)	सीमा (₹)	विवरण	अरूण (₹)	सीमा (₹)
बैंक	1,36,000	1,36,000	शेष आ/ला.	1,20,000	1,20,000
			संचय कोष	10,000	10,000
			वसूली (लाभ)	6,000	6000
	1,36,000	1,36,000		1,36,000	1,36,000

टिप्पणी

बैंक खाता

नाम | | | जमा

विवरण	(₹)	विवरण	(₹)
शेष आ/ला.	22,000	वसूली खाता	1,37,000
वसूली खाता	3,87,000	अरूण की पूँजी	1,36,000
		सीमा की पूँजी	1,36,000
	4,09,000		4,09,000

उदाहरण 2

सोनिया एवं मयंक साझेदार हैं जो लाभ का विभाजन 3 : 2 में करते हैं। दिसंबर 31, 2014 को स्थिति विवरण निम्न प्रकार से है :

दिसंबर 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व	(₹)	परिसंपत्तियां		(₹)
लेनदार	28,000	हस्तस्थ रोकड़		10,500
देय विपत्र	20,000	बैंक में रोकड़		30,000
लाभ हानि खाता	13,500	स्टॉक		7,500
सोनिया की पूँजी	32,500	विविध देनदार	21,500	
मयंक की पूँजी	11,500	**घटा:** डूबत ऋण के		
		लिये प्रावधान	500	21,000
		भूमि एवं भवन		36,500
	1,05,500			1,05,500

दिसंबर 31,2014 को फर्म का समापन हआ। निम्न सूचनाओं के साथ फर्म की लेखा पुस्तकों को बंद कीजिए :

(i) देनदारों से 5% बट्टे पर वसूली हुई।

(ii) स्टॉक से ₹ 7,000 वसूल हुए।

(iii) भवन से ₹ 42,000 वसूल हुए।

(iv) वसूली व्यय की राशि ₹ 1,500 है।

(v) लेनदार एवं देय विपत्रों का पूर्ण भुगतान किया गया।

आवश्यक खाते तैयार कीजिए।

हल :

सोनिया एवं मयंक की पुस्तके

वसूली खाता

नाम | जमा

विवरण		(₹)	विवरण		(₹)
परिसंपत्तियों का हस्तांतरण			डूबत ऋण के लिये प्रावधान		500
स्टॉक	7,500		लेनदार		28,000
विविध देनदार	21,500		देय विपत्र		20,000
भूमि व भवन	36,500	65,500	बैंक		
बैंक			देनदार	20,425	
लेनदार	28,000		स्टॉक	7,000	
देय विपत्र	20,000		भूमि व भवन	42,000	69,425
वसूली व्यय	1,500	49,500			
लाभ का हस्तांतरण (3 : 2)					
सोनिया की पूँजी	1,755				
मयंक की पूँजी	1,170	2,925			
		1,17,925			1,17,925

पूँजी खाता

नाम | जमा

विवरण	सोनिया (₹)	मयंक (₹)	विवरण	सोनिया (₹)	मयंक (₹)
बैंक	42,355	18,070	शेष आ/ला	32,500	11,500
			लाभ हानि खाता	8,100	5,400
			वसूली (लाभ)	1,755	1,170
	42,355	18,070		42,355	18,070

रोकड़ एवं बैंक खाता

नाम | जमा

विवरण	(₹)	विवरण	(₹)
शेष आ/ले	30,000	वसूली	49,500
हस्तथ रोकड़	10,500	सोनिया की पूँजी	42,355
वसूली	69,425	मयंक की पूँजी	18,070
	1,09,925		1,09,925

टिप्पणी

उदाहरण 3

तनु, मनु एवं चेतन साझेदार हैं जो लाभ का विभाजन क्रमशः 1/2, 1/3, 1/6 के अनुपात में करते हैं वे दिसम्बर 31, 2014 को साझेदारी का समापन करते हैं जब फर्म का स्थिति विवरण निम्न प्रकार से है :

दिसम्बर 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		(₹)	परिसंपत्तियां	(₹)
विविध लेनदार		30,000	बैंक	37,500
देय विपत्र		25,000	विविध देनदार	58,000
मनु से ऋण		40,000	स्टॉक	39,500
पूँजी			विनियोग	42,000
तनु	90,000		मशीनरी	48,000
मनु	75,000		पट्टामुक्त संपत्ति	90,000
चेतन	55,000	2,20,000	(Freehold property)	
		3,15,000		3,15,000

मनु ने मशीनरी को ₹ 45,000 में ले लिया। तनु ने विनियोग को ₹ 40,000 में लिया एवं पट्टामुक्त संपत्ति को चेतन ने ₹ 95,000 में लिया। शेष परिसम्पत्तियों से निम्न वसूली हुई : विविध देनदार ₹ 56,500 एवं स्टॉक ₹ 36,500। विविध लेनदारों का निपटान 5% बट्टे पर किया गया। देय विपत्र को चेतन ने ₹ 23,000 में लिया। ₹ 3,000 के दायित्वों जिनको बहियों में दिखाया नहीं गया, का भी भुगतान कर दिया गया। एक कार्यालय का कम्प्यूटर, जिसको लेखा पुस्तकों में नहीं दिखाया गया था, से ₹ 9,000 वसूल हुए।

वसूली व्यय की राशि ₹ 3,000 है।

वसूली खाता, साझेदारों के पूंजी खाते बैंक खाता तैयार करें।

हल

तनु मनु एवं चेतन की बहियां

वसूली खाता

नाम जमा

विवरण		(₹)	विवरण	(₹)
परिसम्पत्तियों का हस्तांतरण			विविध लेनदार	30,000
विविध देनदार	58,000		देय विपत्र	25,000
स्टॉक	39,500		तनु की पूँजी (विनियोग)	40,000

टिप्पणी

मशीनरी	48,000		मनु की पूँजी (मशीनरी)		45,000
विनियोग	42,000		चेतन की पूँजी		95,000
पट्टामुक्त संपत्ति	90,000	2,77,500	(पट्टामुक्त संपत्ति)		
चेतन की पूँजी		23,000	बैंक		
(देय विपत्र)			विभिन्न देनदार	56,500	
बैंक			स्टॉक	36,500	
विविध लेनदार	28,500		कम्प्यूटर	9,000	1,12,000
दायित्व (अलिखित)	3,000				
वसूली व्यय	6,000	37,500			
लाभों का हस्तांतरण					
तनु की पूँजी	4,500				
मनु की पूँजी	3,000				
चेतन की पूँजी	1,500	9,000			
		3,47,000			3,47,000

पूंजी खाता

नाम जमा

विवरण	तनु (₹)	मनु (₹)	चेतन (₹)	विवरण	तनु (₹)	मनु (₹)	चेतन (₹)
वसूली (परिसम्पत्तियां)	40,000	45,000	95,000	शेष आ/ला	90,000	75,000	55,000
बैंक	54,500	33,000	—	वसूली (परिसम्पत्तियां)	—	—	23,000
				वसूली (लाभ)	4,500	3,000	1,500
				बैंक	—	—	15,500
	94,500	78,000	95,000		94,500	78,000	95,500

बैंक खाता

नाम जमा

विवरण	(₹)	विवरण	(₹)
शेष आ/ला.	37,500	वसूली	37,500
वसूली	1,12,000	मनु का ऋण	40,000
चेतन की पूँजी	15,500	तनु की पूँजी	54,500
		मनु की पूँजी	33,000
	1,65,000		1,65,000

पाठगत प्रश्न 25.3

I. निम्न में से कौन सी परिसम्पतियां गैर-अभिलेखित मानी जाएंगी :

(i) पुराने फर्नीचर का विक्रय।

(ii) स्थिति विवरण में दिखाई गई ख्याति।

(iii) पिछले वर्ष अपलिखित डूबत ऋण की वसूली

(iv) विनियोगों का विक्रय

(v) पिछले वर्ष अपलिखित पुराने कम्प्यूटर का विक्रय

II. निम्न में से कौन सा दायित्व गैर-अभिलेखित माना जाएगा।

(i) बैंक से बट्टे पर भुनाए गए विपत्र का अनादरण।

(ii) बैंक ऋण का भुगतान।

(iii) स्टॉक के लिए क्रय किए गए माल के लेनदार।

(iv) फर्म के विरूद्ध विवाद का निपटारा।

(v) अदत बिलों का भुगतान।

आपने क्या सीखा

- जब फर्म व्यवसाय को बंद करने का निर्णय लेती है एवं फर्म द्वारा कोई भी व्यापारिक गतिविधियां नहीं की जाती हैं तो यह फर्म का समापन कहलाएगा।
- फर्म का समापन साझेदारी के समापन से भिन्न है। फर्म के समापन का अर्थ है फर्म अपने व्यापार को बंद कर देती है और उसका अंत हो जाता है जब कि साझेदारी के समापन का अर्थ है पहले साझेदारी समझौते का अंत एवं साझेदार के प्रवेश, सेवानिवृत्ति एवं मृत्यु के कारण फर्म का पुनर्गठन होना।
- फर्म के समापन पर लेखा पुस्तकों को बंद कर दिया जाता है। सभी परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों का हस्तांतरण जिस खाते में किया जाता है वह वसूली खाता कहलाता है। इस खाते में परिसम्पत्तियों की वसूली एवं दायित्वों के भुगतान का अभिलेखन किया जाता है।
- जब साझेदार फर्म के व्यावसाय को बंद करने का निर्णय लेते हैं तब यह आवश्यक हो जाता है कि वे अपने खातों का निपटारा करें। इस उद्देश्य के लिए सभी

परिसम्पत्तियों को बेचा जाता है (रोकड़ और बैंक शेष के अतिरिक्त) ताकि अपने विरुद्ध दावों का निपटारा किया जा सके।

- गैर-अभिलेखित परिसम्पत्तियों को कभी भी वसूली खाते में हस्तांतरित नहीं किया जाता क्योंकि इसके विक्रय से प्राप्त राशि अधिलाभ है एवं नियमानुसार केवल वसूली खाते को जमा किया जाएगा।
- साझेदारों के पूंजी खातों को बैंक खाते से भुगतान करके बंद कर दिया जाएगा एवं इसी प्रकार बैंक खाता भुगतान करने व प्राप्त करने पर बंद हो जाएगा।

पाठान्त प्रश्न

1. निम्न प्रश्नों का उत्तर एक वाक्य में दीजिए :
   (क) साझेदारी फर्म के समापन का क्या अर्थ है?
   (ख) वसूली खाता क्यों बनाया जाता है?
   (ग) गैर–अभिलेखित दायित्वों की स्थिति में कौन सी रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी?
   (घ) जब वसूली व्यय का भुगतान व उसको वहन साझेदार द्वारा किया जाता है तब कौन सी रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी?
2. साझेदारी फर्म का समापन एवं साझेदारी के समापन में अंतर कीजिए।
3. किन परिस्थितियों में न्यायालय द्वारा साझेदारी फर्म का समापन किया जा सकता है?
4. सुमित एवं अनीष फर्म में बराबर के साझेदार हैं। वे दिसंबर 31, 2014 को फर्म का समापन करने का निर्णय लेते हैं जब स्थिति विवरण इस प्रकार से है :

दिसंबर 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		(₹)	परिसंपतियाँ	(₹)
विविध लेनदार		30,000	बैंक में रोकड़	7,000
संचय कोष		7,000	विविध देनदार	23,000
देय विपत्र		30,000	स्टॉक	42,000
पूँजी			फर्नीचर	35,000
सुमित	70,000		संयंत्र	40,000
अनीष	60,000	1,30,000	पट्टाकृत भूमि (Leasehold land)	50,000
		1,97,000		1,97,000

परिसम्पत्तियों से वसूली इस प्रकार है :

	रु.
पट्टाकृत भूमि (leasehold land)	62,000
फर्नीचर	30,500
स्टॉक	40,500
संयन्त्र	48,000
विविध देनदार	22,500

विविध लेनदारों को ₹ 29,500 में पूर्ण निपटान किया गया। देय विपत्र को 5% कम भुगतान किया गया। वसूली व्यय की राशि ₹ 2,500 है।

फर्म की बहियों को बंद करते हुए वसूली खाता, बैंक खाता, साझेदारों के पूंजी खाते बनाइए।

5. आशू एवं हिमानी साझेदार हैं तथा लाभ–हानि का विभाजन 3:2 के अनुपात में करते हैं। वे दिसंबर 31, 2014 को फर्म का समापन करने का निर्णय लेते हैं। इस तिथि को उनका स्थिति विवरण निम्न प्रकार से है।

दिसंबर 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		(₹)	परिसंपतियाँ	(₹)
पूँजी			भवन	90,000
आशू	1,00,000		मशीनरी	60,000
हिमानी	92,000	1,92,000	फर्नीचर	10,000
लेनदार		88,000	स्टॉक	24,000
बैंक अधिविकर्ष		20,000	विनियोग	50,000
			देनदार	48,000
			हस्तस्थ रोकड़	18,000
		3,00,000		3,00,000

आशु ने भवन को ₹ 98,000 में ले लिया एवं हिमानी ने मशीन एवं फर्नीचर को ₹ 70,000 के मूल्य पर लिया। आशु लेनदारों को भुगतान करने के लिए सहमत हुआ एवं हिमानी बैंक अधिविकर्ष को देने के लिए सहमत हुई। स्टॉक एवं विनियोग को दोनों साझेदारों ने लाभ विभाजन अनुपात में ले लिया। लेनदारों से ₹ 46,000 वसूल हुए। वसूली व्यय की राशि ₹ 3,000 है।

आवश्यक खाते तैयार करें।

टिप्पणी

6. तरुण, नीरू एवं विकास लाभ का विभाजन 3 : 2 : 1 के अनुपात में करते हैं दिसंबर 31, 2014 को उनका स्थिति विवरण निम्न प्रकार से है।

दिसंबर 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		(₹)	परिसंपतियाँ	(₹)
पूँजी :			संयंत्र	80,000
तरूण	90,000		देनदार	70,000
नीरू	1,00,000		फर्नीचर	22,000
विकास	80,000	2,70,000	स्टॉक	70,000
लेनदार		60,000	विनियोग	60,000
देय विपत्र		30,000	प्राप्य विपत्र	46,000
संचय		20,000	हस्तस्थ रोकड़	32,000
		3,80,000		3,80,000

इस तिथि को फर्म का समापन हो गया। परिसम्पत्तियों से वसूली निम्न प्रकार है संयन्त्र ₹ 85,000; देनदार ₹ 69,000; फर्नीचर ₹ 20,000 स्टॉक पुस्तक मूल्य का 95% विनियोग ₹ 86,000 एवं प्राप्य विपत्र ₹ 31,000 एवं इलेक्ट्रॉनिक कार्यालय टाईपराइटर, जिसको बहियों में नहीं दिखाया गया, से ₹ 9,000 वसूल हुए। वसूली व्यय की राशि ₹ 4,500 है विकास ने लेनदारों को पुस्तक मूल्य पर ले लिया।

वसूली खाता, पूंजी खाते एवं रोकड़ खाता बनाइए।

7. दिसंबर 31, 2014 को अनू और हेमा का स्थिति विवरण निम्न प्रकार से हैं :

दिसंबर 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		(₹)	परिसंपतियाँ	(₹)
विविध देनदार		42,000	बैंक में रोकड़	13,000
देय विपत्र		26,000	विविध देनदार	50,000
हेमा से ऋण		20,000	स्टॉक	40,000
संचय कोष		6,000	प्राप्य विपत्र	28,000
डूबत ऋण के लिये प्रावधान		2,000	मशीनरी	60,000
पूँजी			विनियोग	30,000
अनु	90,000		फिक्सचर	27,000
हेमा	62,000	1,52,000		
		2,48,000		2,48,000

टिप्पणी

दिसंबर 31, 2014 को फर्म का समापन हो गया एवं परिसम्पत्तियों से वसूली और दायित्वों का निपटारा निम्न प्रकार हुआ :

(क) परिसम्पत्तियों से वसूली निम्न है :

	(₹)
विविध देनदार	48,000
स्टॉक	38,000
प्राप्य विपत्र	27,000
मशीनरी	62,000

(ख) हेमा ने विनियोग को ₹ 36,000 के सहमत मूल्य पर लिया एवं लेनदारों का भुगतान करने के लिए सहमत हुई। देय विपत्रों को 3% कम भुगतान किया गया।

(ग) फिक्सचर का कुछ मूल्य प्राप्त नहीं हुआ।

(घ) वसूली के लिए ₹ 2,200 व्यय किए गए।

फर्म के समापन पर रोजनामचा प्रविष्टियां करें और वसूली खाता, बैंक खाता एवं साझेदारों के पूंजी खाते तैयार करें।

8. रोहित एवं टीना फर्म में साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 3 : 2 के अनुपात में करते हैं। वे मार्च 31, 2014 को फर्म के समापन का निर्णय लेते हैं, जब फर्म का स्थिति विवरण निम्न प्रकार से है :

मार्च 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		(₹)	परिसंपत्तियाँ	(₹)
पूँजी :			मशीनरी	80,000
रोहित	80,000		विनियोग	60,000
टीना	90,000	1,70,000	स्टॉक	22,000
विविध लेनदार		70,000	विविध देनदार	80,000
संचय		10,000	बैंक में रोकड़	8,000
		2,50,000		2,50,000

परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों का निपटान निम्न है :

(क) मशीनरी लेनदारों को उनके खातों के पूर्ण भुगतान के लिए दी गई। स्टॉक रोहित ने ₹ 19,000 में ले लिया।

(ख) विनियोग को टीना ने पुस्तक मूल्य पर ले लिया। ₹ 50,000 पुस्तक मूल्य के विविध देनदारों को रोहित ने 10% कम पर ले लिया, और शेष देनदारों से ₹ 28,000 वसूल हुए।

(ग) ₹ 2,000 वसूली व्यय का भुगतान रोहित द्वारा किया गया

फर्म की पुस्तकों को बंद करते हुए आवश्यक खाते तैयार करें।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

25.1 (i) गैर-कानूनी, (ii) समापन, (iii) फर्म, साझेदारी, (iv) समापन, (v) न्यायालय, (vi) समझौता

25.2 (i) अ (ii) स (iii) स (iv) स (v) स (vi) स

25.3 I. (iii) एवं (v)
II. (i) एवं (iv)

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

4. वसूली पर लाभ ₹ 13,000 रोकड़ खाते का योग ₹ 2,10,500
5. वसूली पर लाभ ₹ 2,000 रोकड़ खाते का योग ₹ 64,000
6. वसूली पर लाभ ₹ 14,000 रोकड़ खाते का योग ₹ 3,98,500
7. वसूली पर हानि ₹ 23,420 रोकड़ खाते का योग ₹ 1,88,000
8. वसूली पर हानि ₹ 92,000 रोकड़ खाते का योग ₹ 83,800

26

कंपनी : एक परिचय

आपके सामने संगठन के ऐसे नाम अवश्य आये होंगे जिनके पीछे लिमिटेड (लि.) शब्द लगे होते हैं जैसे कि हिंदुस्तान मोटर्स लि. अथवा हिंदुस्तान एयरोनैटिक्स लि. क्या आपने कभी सोचा है कि इसका क्या अर्थ है? संगठन के नाम के साथ यदि लि. शब्द लगा हो तो यह दर्शाता है कि यह संगठन का वह स्वरूप है जो एकल स्वामित्व एवं साझेदारी से भिन्न हैं। इन्हें संयुक्त पूँजी कंपनी कहते हैं।

आप जानते हैं कि एकल स्वामित्व एवं साझेदारी संगठन व्यवसाय के बड़े पैमाने एवं बढ़ती आर्थिक क्रियाओं के कारण बढ़ती भारी पूँजी एवं प्रबंधकीय कौशल की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं थे। इन संगठनों के स्वामी/स्वामियों का दायित्व असीमित होता है। इन समस्याओं के समाधान के लिए व्यवसाय संगठन का एक नया स्वरूप अस्तित्व में आया जिसे 'कंपनी' कहते हैं।

इस पाठ में आप कंपनी, इसकी विशेषताओं एवं अंशों के निर्गमन के द्वारा पूँजी जुटाने की पद्धतियों को पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- व्यवसाय संगठन के स्वरूप के रूप में कंपनी का अर्थ बता सकेंगे;
- कंपनी की विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- कंपनी के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कर सकेंगे;
- सार्वजनिक एवं निजी कंपनी में अंतर बता सकेंगे;
- अंशों के विभिन्न प्रकारों को समझा सकेंगे;

- समता अंश एवं पूर्वाधिकार अंशों में अंतर कर सकेंगे;
- अंश पूँजी के प्रकारों को समझा सकेंगे।

26.1 कंपनी–अर्थ एवं विशेषताएँ

कंपनी कुछ व्यक्तियों का एक एच्छिक संगठन है जिसका निर्माण लाभ कमाने के लिए किसी व्यवसाय को चलाने अथवा गैर–लाभ उद्देश्यों के लिए किया जाता है। यह व्यक्ति इसके अंशों का क्रय कर इसकी पूँजी में अपना योगदान देते हैं जो कि अंशों में विभक्त होती है। कंपनी कुछ व्यक्तियों का संगठन है जिसका पंजीयन कंपनी अधिनियम के अंतर्गत अनिवार्य है। कंपनी की पूंजी अंशों में विभक्त होती है जो सदस्यों द्वारा व्यवसाय में लाभ कमाने के उद्देश्य से लगाई जाती है।

> *"कंपनी अधिनियम 1956 के अनुसार एक कंपनी वह है जिसका निर्माण एवं पंजीयन कंपनी अधिनियम के अंतर्गत किया गया है अथवा विद्यमान कम्पनी जिसका पंजीयन अन्य किसी अधिनियम के अंतर्गत किया गया है।"*

कंपनी की विशेषताएँ

कंपनी की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- **कृत्रिम वैधानिक व्यक्ति :** कंपनी एक कृत्रिम व्यक्ति है जिसकी रचना केवल कानून के द्वारा होती है। इसे लगभग वे सब अधिकार तथा शक्तियाँ प्राप्त हैं जो एक प्राकृतिक व्यक्ति को प्राप्त होते हैं। यह प्रंसविदे कर सकती है। यह अपने नाम में मुकदमा चला सकती है तथा अन्य भी इस पर मुकदमा चला सकते हैं।

- **समामेलित संस्था :** एक कंपनी का कंपनी अधिनियम के अंतर्गत पंजीयन अनिवार्य है। इसके परिणाम स्वरूप ही इसको कंपनी–व्यक्तित्व प्राप्त होता है। इसकी अपनी अलग पहचान होती है। यद्यपि इसकी पूँजी इसके सदस्यों, जिन्हें अंशधारी कहते हैं, के द्वारा जुटाई जाती है, फिर भी इस पूँजी में से खरीदी गई संपत्ति कंपनी की होती है न कि अंशधारियों की।

- **पूँजी का अंशों में विभाजन :** कंपनी की पूँजी अंशों में विभक्त होती है। अंश कंपनी की पूँजी की अविभाजित इकाई होती है। कंपनी के अंशों का अंकित मूल्य होता है जो कि सामान्यतः ₹ 10, ₹ 25 अथवा ₹ 100 होता है।

- **हस्तांतरणीय अंश :** कंपनी के अंश आसानी से हस्तांतरणीय हैं। अंशों का स्टाक बाजार में क्रय–विक्रय किया जा सकता है।

- **स्थाई अस्तित्व :** कंपनी का अस्तित्व अपने अंशधारियों से स्वतंत्र एवं अलग होता है। मृत्यु अथवा दिवालिया हो जाने के कारण इसकी सदस्यता में परिवर्तन का इसके अस्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता तथा यह चलती रहती है।
- **सीमित दायित्व :** कंपनी के अंशधारियों का दायित्व उनके द्वारा खरीदे हुए अंशों के अंकित मूल्य तक सीमित होता है। किसी भी अंशधारी को उसके पास रखे अंशों के अंकित मूल्य से अधिक का भुगतान करने के लिए नहीं कहा जा सकता। अधिक से अधिक उनसे अंशों के अयाचित मूल्य का भुगतान करने के लिए कहा जा सकता है।
- **प्रतिनिधिक प्रबंध :** अंशधारियों की संख्या इतनी अधिक होती है तथा बिखरी हुई होती है कि वह सब मिलकर कंपनी के कार्यों का प्रबंध नहीं कर सकते। इसीलिए कंपनी के प्रबंधन एवं संचालन के लिए वह अपने में से ही कुछ व्यक्तियों को चुन लेते हैं। अंशधारियों के यह चुने हुए प्रतिनिधि कंपनी के निदेशक कहलाते हैं तथा सम्मिलित रूप से इन्हें निदेशक मंडल कहते हैं।
- **सार्वमुद्रा (Common Seal) :** सार्वमुद्रा किसी कंपनी का अधिकृत हस्ताक्षर है। किसी भी दस्तावेज पर यदि कंपनी की सार्वमुद्रा अंकित है तो इससे कंपनी कानूनी रूप से बाध्य हो जाती है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 26.1

I. कंपनी की विशेषताओं से संबंधित सही शब्द/शब्दों को रिक्त स्थानों में भरिये:

(i) कंपनी का निर्माण कानून के अंतर्गत होता है। इसीलिए कंपनी एक .... होती है।

(ii) कंपनी की पूँजी की अविभाजित इकाई को .... कहते हैं।

(iii) .... कंपनी का अधिकृत हस्ताक्षर है।

(iv) अंशधारी कंपनी के कार्यों का प्रबंध करने के लिए अपनी इच्छा से कुछ व्यक्तियों को चुन लेते हैं। यह कंपनी का .... लक्षण को बताता है।

II. सही कथनों के सामने (√) का निशान लगाकर तथा गलत कथनों के सामने (×) का निशान लगाकर पहचान कीजिए :

(i) कंपनी की संपत्ति अंशधारियों की संपत्ति होती है।

(ii) कंपनी के प्रत्येक सदस्य का दायित्व उसके द्वारा खरीदे गए अंशों के अंकित मूल्य तक सीमित होता है।

(iii) कंपनी के सदस्य अपने अंशों का स्वतंत्रता से हस्तांतरण नहीं कर सकते।

(iv) एक कंपनी अपने नाम से अनुबंध कर सकती है।

टिप्पणी

26.2 कंपनियों के प्रकार

कंपनियों को निम्नलिखित शीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है:

1. स्थापना के आधार पर
2. दायित्व के आधार पर
3. स्वामित्व के आधार पर

1. स्थापना के आधार पर

स्थापना के आधार पर कंपनियों को इस प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है—

(क) **संवैधानिक कंपनियाँ (Statutory Companies) :** वह कंपनी जो किसी संसद अथवा राज्य विधान सभा के विशेष अधिनियम द्वारा स्थापित की जाती है संवैधानिक कंपनी कहलाती है। भारतीय रिजर्व बैंक, भारतीय औद्योगिक वित्त निगम, भारतीय जीवन बीमा निगम, दिल्ली राज्य वित्त निगम, इसके कुछ उदाहरण हैं।

(ख) **पंजीकृत कंपनी (Registered Company) :** वह कंपनी जिसकी स्थापना एवं पंजीयन कंपनी अधिनियम, 1956 अथवा इससे पहले के कंपनी अधिनियम के अंतर्गत की गई है, पंजीकृत कंपनी कहलाती है। ऐसी कंपनियों के कार्य-कलाप कंपनी अधिनियम के प्रावधानों से व्यवस्थित होते हैं।

2. दायित्व के आधार पर

दायित्व के आधार पर कंपनियों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है—

(क) **अंशों द्वारा सीमित कंपनियाँ :** ऐसी कंपनियों के सदस्यों का दायित्व उनके अंशों के अंकित मूल्य तक ही सीमित होता है।

(ख) **गारंटी द्वारा सीमित कंपनी :** ऐसी कंपनी के प्रत्येक अंशधारी का दायित्व कंपनी के समापन की स्थिति में उनके द्वारा स्वेच्छा से दी गई गारंटी तक सीमित होती है। यह दायित्व कंपनी के समापन के समय पैदा हो सकता है।

(ग) **असीमित कंपनी (Unlimited Company) :** जिस कंपनी के सदस्यों के दायित्व की कोई सीमा नहीं तय की जाती उसे असीमित कंपनी कहते हैं। ऐसी स्थिति में दायित्व अंशधारियों की व्यक्तिगत संपत्ति तक होता है। ऐसी कंपनियां अपने नाम के साथ 'लिमिटेड' शब्द का प्रयोग नहीं कर सकती।

(घ) **25 अनुभाग के अंतर्गत स्थापित कंपनी (Company Under Section 25) :** अनुभाग 25 के अंतर्गत कंपनी की स्थापना कला, संस्कृति एवं सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए की जाती है। ऐसी कंपनियों को अपने नाम के अंत में 'लिमिटेड' शब्द लगाने की आवश्यकता नहीं है। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली चैम्बर ऑफ कॉमर्स, इनके उदाहरण हैं।

टिप्पणी

3. स्वामित्व के आधार पर

स्वामित्व के आधार पर कंपनियों को निम्न वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

(क) निजी कंपनी (Private Company) : निजी कंपनी ऐसी कंपनी होती है जो अपने अंतर्नियमों के द्वारा :

(i) अपने सदस्यों के अंशों के हस्तांतरण के अधिकार पर प्रतिबंध लगाती है,

(ii) अपने सदस्यों की संख्या (अपने भूतपूर्व तथा वर्तमान कर्मचारियों को छोड़कर) 50 तक सीमित करती है,

(iii) सर्वसाधारण को अपने अंशों तथा ऋणपत्रों के खरीदने के लिए आमंत्रण पर प्रतिबंध लगाती है;

(iv) कंपनी की न्यूनतम प्रदत्त पूँजी एक लाख रुपये (₹ 1,00,000) होती है।

ऐसी कंपनी में न्यूनतम अंशधारियों की संख्या 2 होती है तथा कंपनी को अपने नाम के साथ 'प्राइवेट लिमिटेड' शब्द लगाना पड़ता है। निजी कंपनियों में आम जनता की भागीदारी नहीं होती।

(ख) सार्वजनिक कंपनी (Public Company) : वह कंपनी जो निजी कंपनी नहीं है सार्वजनिक कंपनी होती है। इसके अंतर्नियम उपरोक्त प्रतिबंध नहीं लगाते। इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं :

(i) सदस्यों की न्यूनतम संख्या 7 है।

(ii) सदस्यों की अधिकतम संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है।

(iii) यह अपने अंशों को खरीदने के लिए सर्वसाधारण को आमंत्रित कर सकती है।

(iv) इसके अंश स्वतंत्रता से हस्तांतरणीय हैं।

(v) इसे अपने नाम के साथ 'लिमिटेड' शब्द जोड़ना पड़ता है।

(vi) इसकी न्यूनतम प्रदत्त पूँजी पाँच लाख रुपये (₹ 5,00,000) की होती है।

(ग) सरकारी कंपनी (Government Company) : एक सरकारी कंपनी वह कंपनी है जिसकी प्रदत्त पूंजी का 51% भाग (1) केंद्रीय सरकार; (2) राज्य सरकार; अथवा (3) अंशतः राज्य सरकार तथा अंशतः केंद्रीय सरकार इत्यादि के अधिकार में है।

सरकारी कंपनी के उदाहरण हैं हिंदुस्तान मशीन टूल्स लि. (HMT), राज्य व्यापार निगम (STC), मिनरल एंड मैटल ट्रेडिंग कार्पोरेशन (MMTC)।

(घ) विदेशी कंपनी (Foreign Company) : विदेशी कंपनी वह कंपनी है जिसका समामेलन भारत के बाहर तथा व्यापार का स्थान भारत में होता है, जैसे—फिलिप्स, एल.जी. आदि।

(ड़) **धारक कंपनी एवं सहायक कंपनी (Holding Company and Subsidiary Company):** एक धारक कंपनी वह कंपनी है जो अन्य किसी कंपनी (जिसे सहायक कंपनी कहते हैं) पर उसके आधे से अधिक समता अंशों का अधिग्रहण कर अथवा उसके निदेशकों के गठन पर नियंत्रण द्वारा अथवा किसी अन्य धारक कंपनी जो अन्य किसी कंपनी पर नियंत्रण रखती है।

सूचीबद्ध कंपनी एवं गैर सूचीबद्ध कंपनी (Listed Company and Unlisted Company)

एक कंपनी यदि अपनी प्रतिभूतियों को स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध करना चाहती है तो उसे स्टॉक एक्सचेंज में आवेदन करना होता है। जब यह उन प्रतिभूतियों के प्रवेश एवं उनमें लेन-देन के जारी रखने के लिए योग्य मान ली जाती है तो इसे सूचीबद्ध कंपनी कहते हैं। जिन कंपनियों की प्रतिभूतियाँ स्टॉक एक्सचेंज की सूची में सम्मिलित नहीं होती उन्हें गैर सूचीबद्ध कंपनी कहते हैं।

सार्वजनिक कंपनी तथा निजी कंपनी में अंतर

सार्वजनिक कंपनी तथा निजी कंपनी में प्रमुख अंतर निम्न हैं :

अंतर का आधार	*सार्वजनिक कंपनी*	*निजी कंपनी*
1. न्यूनतम सदस्यों की संख्या	कंपनी की स्थापना के लिए कम से कम सात सदस्यों की आवश्यकता होती है।	कंपनी की स्थापना के लिए कम से कम दो सदस्यों की आवश्यकता होती है।
2. अधिकतम सदस्यों की संख्या	अधिकतम सदस्यों की संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है।	इसमें 50 से अधिक सदस्य नहीं हो सकते।
3. नाम	इसके नाम के साथ 'लिमिटेड' शब्द का प्रयोग होता है।	इसके नाम के अंत में 'प्राइवेट लिमिटेड' शब्द लिखा होता है।
4. व्यवसाय का प्रारंभ	यह अपना व्यवसाय, व्यवसाय प्रारंभ करने के प्रमाणपत्र प्राप्त करने के पश्चात् प्रारंभ कर सकती है।	यह अपना व्यवसाय, समामेलन का प्रमाणपत्र प्राप्त करने के पश्चात् प्रारंभ कर सकती है।
5. सर्वसाधारण को आमंत्रण	यह अपने अंशों के खरीद के लिए सर्वसाधारण को आमंत्रित कर सकती है।	यह अपने अंशों के खरीदने के लिए सर्वसाधरण को आमंत्रित नहीं कर सकती।
6. अंशों का हस्तांतरण	इसके अंशों के हस्तांतरण पर कोई प्रतिबंध नहीं है।	इसके अंशों के हस्तांतरण पर प्रतिबंध है।

7. संचालकों की संख्या	इसके कम से कम तीन संचालक होने चाहिएँ।	इसके कम से कम दो संचालक होने चाहिएँ।
8. न्यूनतम पूँजी	इसकी न्यूनतम प्रदत्त पूँजी पाँच लाख रुपये (₹ 5,00,000) की होनी आवश्यक है।	इसकी न्यूनतम प्रदत्त पूँजी एक लाख रुपये (₹ 1,00,000) की होनी चाहिए।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 26.2

I. कोष्ठकों में दिये गये शब्दों/अंकों में से सही शब्द/अंक रिक्त स्थानों में भरिये–

(i) सार्वजनिक कंपनी में सदस्यों की न्यूनतम संख्या .... हैं। (दो, पाँच, सात)

(ii) सरकारी कंपनी में प्रदत्त पूंजी का 51% से .... भाग सरकार के पास होता है। (कम, अधिक)

(iii) निजी कंपनी की न्यूनतम प्रदत्त पूँजी .... रुपये होती है। (एक लाख, पाँच लाख, दस लाख)

(iv) एक विदेशी कंपनी वह होती है जिसका समामेलन .... किया जाता है। (भारत में, भारत से बाहर)

II. निम्न में कंपनी के प्रकार के नाम बताइये:

(i) जो अपने अंतर्नियमों के द्वारा अपने अंशों के हस्तांतरण पर प्रतिबंध लगाती है।

(ii) कंपनी जिसके सदस्यों का दायित्व इसके अंशों की अदत्त राशि तक सीमित है।

(iii) एक कंपनी जो संसद अथवा राज्य विधान सभा के विशेष अधिनियम से स्थापित होती है।

(iv) कंपनी जिसके सदस्यों का दायित्व असीमित होता है।

(v) कंपनी जो किसी अन्य कंपनी पर नियंत्रण रखती है।

26.3 अंश–अर्थ एवं प्रकार

एक संयुक्त पूँजी कंपनी अपनी पूँजी को समान मूल्य की इकाइयों में विभक्त करती है। प्रत्येक इकाई को अंश कहते हैं। पूँजी एकत्रित करने के लिए इन इकाइयों/अंशों को बिक्री के लिए लाया जाता है। इसे अंशों का निर्गमन करना कहते हैं। जो व्यक्ति कंपनी के अंश/अंशों का क्रय करता है उसे अंशधारी कहते हैं तथा कंपनी के अंश/अंशों को प्राप्त करने पर वह कपंनी के स्वामियों में से एक बन जाता है।

इस प्रकार से अंश, पूँजी की अविभाज्य इकाई होता है। यह कंपनी एवं अंशधारी के बीच स्वामित्व का संबंध स्थापित करता है। इसका अंकित मूल्य ही इसका सम मूल्य होता है। कंपनी की समस्त पूँजी को अनेक अंशों में विभक्त कर दिया जाता है।

अंशों के प्रकार

कंपनी अधिनियम के अनुसार, कंपनी निम्न प्रकार के अंश जारी कर सकती है—

(i) पूर्वाधिकार अंश (Preference Shares) (ii) समता अंश (Equity shares)

(i) पूर्वाधिकार अंश : पूर्वाधिकार अंश वह अंश है जिसके अंशधारियों को समता अंशधारियों की तुलना में निम्न के संबंध में पूर्वाधिकार प्राप्त होते हैं—

- लाभांश का भुगतान,
- कंपनी के समापन के समय पूँजी का भुगतान

पूर्वाधिकारी अंशों की विशेषताएँ

i. पूर्वाधिकारी अंशधारियों को लाभांश का भुगतान, समता अंशों से पहले किया जाता है।

ii. इन अंशों पर लाभांश की दर पूर्व निर्धारित होती है।

(ii) समता अंश : वे समस्त अंश जो पूर्वाधिकारी अंश नहीं हैं समता अंश हैं। इन अंशों के धारक कंपनी के लाभ में से पूर्वाधिकारी अंशधारियों को भुगतान के पश्चात लाभांश प्राप्त करते हैं।

समता अंशधारियों को कंपनी के संचालकों को चुनने का अधिकार है। समता अंश पूँजी के स्थाई स्रोत होते हैं।

समता अंशों की विशेषताएँ

i. समता अंशों पर लाभांश की दर वर्ष प्रति वर्ष परिवर्तित हो सकती है।

ii. पूर्वाधिकारी अंशधारियों को लाभांश के भुगतान के बाद ही समता अंशों पर लाभांश का भुगतान किया जाता है।

iii. कंपनी के समापन की दशा में समता अंशधारियों की पूँजी सबसे अंत में लौटाई जाती है।

iv. समता अंशधारी कंपनी के वास्तविक स्वामी होते हैं।

टिप्पणी

पूर्वाधिकार अंशों तथा समता अंशों में अंतर

अंतर का आधार	समता अंश	पूर्वाधिकार अंश
1. लाभांश की दर	इन अंशों पर लाभांश की दर निश्चित नहीं होती है तथा यह निदेशक मंडल के निर्णय पर निर्भर करता है।	इन अंशों पर स्थायी दर से लाभांश प्राप्त होता है।
2. लाभांश का भुगतान	पूर्वाधिकार अंशधारियों को लाभांश का भुगतान करने के पश्चात् लाभांश दिया जाता है।	इन अंशों पर लाभांश का भुगतान समता अंशधारियों को भुगतान के पूर्व होता है।
3. कंपनी के समापन पर अंशपूंजी की वापसी	कंपनी के समापन की स्थिति में समता अंशधारियों की पूँजी वापसी पूर्वाधिकार अंशधारियों के पश्चात् ही होती है।	कंपनी के समापन की स्थिति में पूर्वाधिकारी अंशधारकों को अंश पूँजी वापसी का समता अंशधारकों से पूर्वाधिकार होता है।
4. मतदान का अधिकार	अंशधारियों को मत का अधिकार होता है।	केवल विशेष परिस्थितियों में ही पूर्वाधिकारी अंशधारियों को मत का अधिकार होता है।
5. शोधन (Redemption)	समता अंशों का शोधन कंपनी के जीवनकाल में नहीं किया जाता है।	पूर्वाधिकार अंशों का शोधन निर्गमन की शर्तों के अनुसार किया जाता है।

उदाहरण 1

आलोक लिमिटेड ने ₹ 10 प्रत्येक वाले 12,000 अंश निर्गमित किए। आवेदन पर ₹ 2, आबंटन पर ₹ 4 एवं प्रथम व अंतिम मांग पर ₹ 4 धनराशि देय थी। सभी अंश अभिदत्त हुए तथा देय तिथियों पर सभी मांगें प्राप्त हुईं। कंपनी की बहियों में आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

टिप्पणी

हल

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
	बैंक खाता नाम अंश आवेदन खाते से (अंश आवेदन राशि की प्राप्ति)		24,000	24,000
	अंश आवेदन खाता नाम अंश पूँजी खाते से (आवेदन राशि का अंश पूँजी खाते में हस्तांतरण)		24,000	24,000
	अंश आबंटन खाता नाम अंश पूँजी खाते से (आबंटन राशि देय हुई)		48,000	48,000
	बैंक खाता नाम अंश आबंटन खाते से (आबंटन राशि प्राप्त हुई)		48,000	48,000
	अंश प्रथम व अंतिम मांग खाता नाम अंश पूँजी खाते से (प्रथम व अंतिम मांग राशि देय हुई)		48,000	48,000
	बैंक खाता नाम अंश प्रथम व अंतिम मांग खाते से (प्रथम व अंतिम मांग राशि प्राप्त हुई)		48,000	48,000

पाठगत प्रश्न 26.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त शब्द/शब्दों से कीजिए :

i. एक कंपनी में .... वित्त का मुख्य साधन है।

ii. .... पूँजी की अविभाजित इकाई होता है।

iii. .... को कंपनी के संचालकों को चुनने का अधिकार है।

iv. .... को .... की तुलना में कंपनी के समापन पर पूँजी की वापसी के भुगतान का पूर्वाधिकार होता है।

26.4 अंश पूँजी–अर्थ एवं प्रकार

एक संयुक्त पूँजी कंपनी अपनी पूँजी की अधिकतम आवश्यकताओं का अनुमान लगा लेती है। इस पूँजी की राशि का कंपनी रजिस्ट्रार के पास पंजीकृत कंपनी के सीमानियम की पूँजी की धारा में उल्लेख किया जाता है। कुल पूँजी को निश्चित राशि की छोटी अविभाजित इकाइयों में बाँट दिया जाता है तथा प्रत्येक इकाई को अंश कहते हैं। एक अंश कंपनी की पूँजी में हिस्सा होता है, क्योंकि कंपनी की पूँजी को अंशों में विभक्त कर दिया जाता है इसलिए कंपनी की पूँजी को अंश पूँजी कहते हैं। कंपनी की अंश पूँजी को निम्न श्रेणियों में विभक्त किया जाता है :

- **नाम मात्र/अधिकृत/पंजीकृत पूँजी (Nominal/Authorised/Registered Capital) :** यह अंश पूँजी की वह अधिकतम राशि है जिसके निर्गमन के लिये कंपनी का उद्देश्य पत्र उसे अधिकृत करता है।
- **निर्गमित पूँजी (Issued Capital) :** निर्गमित पूँजी अधिकृत पूँजी का वह भाग होती है जिसे कंपनी जन साधारण को बिक्री करना चाहती है जिनमें अभिदान अथवा क्रय के लिए लोग सम्मिलित होते हैं। कंपनी अपनी पूरी अधिकृत पूँजी का एक बार में निर्गमन कर सकती है या फिर इसे हिस्सों में समय–समय पर कंपनी की आवश्यकतानुसार निर्गमन कर सकती है। इसका अभिप्राय है कि इसमें कंपनी द्वारा निर्गमित अंशों का अंकित मूल्य सम्मिलित होता है जो कि (क) नकद एवं (ख) रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के बदले (i) कंपनी के प्रवर्तकों को एवं (ii) अन्य लोगों को निर्गमित किये गये हैं।
- **अभिदान पूँजी (Subscribed Capital) :** निर्गमित पूँजी का यह वह भाग है जिसे वह लोग खरीदते हैं जिनको इसकी प्रस्तावना की जाती है। कंपनी निर्गमित अंशों के बराबर या उनसे अधिक अथवा कम के लिए आवेदन प्राप्त कर सकती है। निर्गमित अंश पूँजी के नामित मूल्य का वह भाग जिसके अंशधारी वास्तव में भुगतान करते हैं (अथवा अभिदान करते हैं) अभिदान पूँजी का भाग होती है।
- **याचित पूँजी (Called up Capital) :** यह निर्गमित पूँजी/अभिदान पूँजी का वह भाग होती है जिसके कंपनी अंशों के आबंटन पर भुगतान के लिए याचना करती है तथा जिसका भुगतान करने के लिए अंशधारी बाध्य होते हैं। अंशों के निर्गमित मूल्य का वह भाग जिसकी कंपनी ने अंशधारियों से याचना की है उसे याचित पूँजी कहते हैं।
- **अयाचित पूँजी (Uncalled Capital) :** अयाचित पूँजी निर्गमित/अभिदान पूँजी का वह भाग होती है जिसकी आबंटित अंशों पर कंपनी ने याचना नहीं की है।
- **प्रदत्त पूँजी (Paid up Capital) :** याचित पूँजी का वह भाग जिसका अंशधारियों ने भुगतान कर दिया है प्रदत्त पूँजी कहलाती है। किश्तों की अदत्त राशि को याचित पूँजी में से घटा दिया जाता है।

टिप्पणी

- **अदत्त पूँजी (Unpaid Capital) :** याचित पूँजी का वह भाग जिसे मांग लिया गया है लेकिन जिसका अंशधारियों ने अभी भुगतान नहीं किया है। अदत्त पूँजी अर्थात् शेष याचना कहलाती है।
- **संचित पूँजी (Reserve Capital) :** कंपनी अपनी पूँजी का एक भाग अयाचित रख सकती है तथा उसे संचित कर सकती है जिसे वह कंपनी के समापन के समय आवश्यकता पड़ने पर माँगती है। इसे संचित पूँजी कहते हैं। इसके लिए कंपनी को एक विशेष प्रस्ताव पारित करना होता है। अतः यह अयाचित पूँजी का वह भाग होती है कंपनी ने जिसको कंपनी के समापन पर ही माँगने का निर्णय लिया है।

पाठगत प्रश्न 26.4

I. उचित शब्द/शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) अंश पूँजी पूँजी की वह राशि होती है जिसे .... के द्वारा एकत्रित किया जाता है।

(ii) पूँजी, जिसका उल्लेख सीमानियम की पूँजी की धारा में किया जाता है, को .... कहते हैं।

(iii) अधिकृत पूँजी का वह भाग, जिसके अभिदान हेतु प्रस्तावना जन साधारण को की जाती हैं...................... कहलाती है।

(iv) अयाचित पूँजी का वह भाग जिसे संचय में रखा जाता है तथा जिसे केवल कंपनी के समापन पर ही मांगा जाता है .... कहलाती है।

II. निम्नलिखित कथनों में सही के लिए 'सही' तथा गलत के लिए 'गलत' शब्द लिखिए।

(i) अभिदान पूँजी, निर्गमित पूँजी के या तो बराबर होती है या फिर उससे कम।

(ii) निर्गमित पूँजी सीमानियम के पूँजी अनुभाग में दिखाई जाती है।

(iii) एक अंशधारी का दायित्व अंश के अंकित मूल्य तक सीमित होता है।

(iv) संचित पूँजी की याचना कंपनी कभी भी कर सकती है।

26.5 अंशों का निजी आधार पर निर्गमन

कंपनी अधिनियम, 1956 के अनुसार धारा 81(1ए) के अनुसार, अंशों के निजी आधार पर निर्गमन का अर्थ है व्यक्तियों के चयनित समूह को अंशों का आबंटन करना।

अंशों द्वारा सीमित निजी कंपनी को कंपनी अधिनियम द्वारा सार्वजनिक अभिदान हेतु अंशों के निर्गमन से प्रतिबंधित किया गया है। इसे स्थानापन्न प्रविवरण जमा कराने

की भी आवश्यकता नहीं है। इसके अंश बहुत कम व्यक्तियों को, जिन्हें प्रवर्तक कहा जाता है या उनके पारिवारिक संपर्कों से संबंधित होते हैं, निजी तौर पर निर्गमित किए जाते हैं। पूँजी जुटाने का यह एक सरल तरीका है, जिसमें बहुत कम वैधानिक औपचारिकताएँ आवश्यक होती हैं। यद्यपि, एक सार्वजनिक कंपनी भी अभिदान हेतु जनता को आमंत्रित किए बिना ही निजी आधार पर अंशों का निर्गमन कर सकती है। इस प्रकार के निजी आबंटन हेतु कंपनी द्वारा विशेष प्रस्ताव पारित करने तथा केन्द्रीय सरकार की सहमति की आवश्यकता होती है। अभिगोपक अथवा ब्रोकर उन ग्राहकों को खोजते हैं जो अंश क्रय करना चाहते हैं। क्योंकि सार्वजनिक आमंत्रण इसमें संलिप्त नहीं है, इसलिए प्रविवरण जारी करना आवश्यक नहीं होता। ऐसे मामले में कंपनी पंजीयक के कार्यालय में स्थानापन्न प्रविवरण जमा कराना चाहिए।

निजी तौर पर अंशों के आबंटन का लेखांकन व्यवहार बिल्कुल वैसा ही है जैसा सार्वजनिक अभिदान में होता है।

निजी तौर पर अंश आबंटन की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

i. कंपनी को प्रविवरण के स्थान पर स्थानापन्न प्रविवरण बनाकर, अंशों अथवा ऋणपत्रों के आबंटन से न्यूनतम 3 दिन पूर्व पंजीयक के कार्यालय में जमा कराना आवश्यक है।

ii. निजी तौर पर अंशों तथा ऋणपत्रों का निर्गमन केवल तभी किया जा सकता है, जब कंपनी सार्वजनिक अभिदान के माध्यम से पूँजी नहीं जुटाना चाहती।

iii. अंशों के निजी तौर पर आबंटन के आबंटी अपने अंशों को आबंटन से न्यूनतम 3 वर्ष तक बेच नहीं सकते। इस अवधि को प्रतिबंधित अवधि कहा जाता है।

उदाहरण 2 (न्यून अभिदान)

सुकृति लिमिटेड ₹ 10,000 की पूँजी, जो ₹ 10 प्रत्येक वाले अंशों में बँटी हुई है, के साथ पंजीकृत हुई। कंपनी ने 60,000 अंशों को जारी करने हेतु आमंत्रण दिया तथा धनराशि इस प्रकार देय थी :

आवेदन पर	₹ 3;
आबंटन पर	₹ 2;
मांग पर	₹ 5

55,000 अंशों हेतु आवेदन प्राप्त हुए, जो आबंटित कर दिए गए। देय तिथियों पर संपूर्ण राशि प्राप्त हुई। सुकृति लिमिटेड की पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

टिप्पणी

हल :

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
	बैंक खाता नाम अंश आवेदन खाते से (आवेदन राशि प्राप्त हुई)		1,65,000	1,65,000
	अंश आवेदन खाता नाम अंश पूँजी खाते से (आवेदन राशि का अंश पूँजी खाते से हस्तांतरण)		1,65,000	1,65,000
	अंश आबंटन खाता नाम अंश पूँजी खाते से (आबंटन राशि देय हुई)		1,10,000	1,10,000
	बैंक खाता नाम अंश आबंटन खाते से (आबंटन राशि प्राप्त हुई)		1,10,000	1,10,000
	अंश मांग खाता नाम अंश पूँजी खाते से (मांग राशि देय हुई)		2,75,000	2,75,000
	बैंक खाता नाम अंश मांग खाते से (मांग राशि प्राप्त हुई)		2,75,000	2,75,000

उदाहरण 3 (अधि-अभिदान)

₹ 10 प्रत्येक वाले 10,000 समता अंशों हेतु जनता को आमंत्रण देने हेतु भिवानी लिमिटेड ने प्रविवरण जारी किया। धनराशि इस प्रकार देय थी :

आवश्यकता पर ₹ 2; आबंटन पर ₹ 3 तथा शेष राशि आवश्यकता पड़ने पर मांगी जाएगी।

12,000 अंशों हेतु आवेदन प्राप्त हुए तथा आबंटन इस प्रकार किया गया :

8,000 अंशों के आवेदनों पर पूर्ण आबंटन

3,000 अंशों के आवेदनों पर 2,000 अंश

1,000 अंशों के आवेदनों पर कोई आबंटन नहीं

यह मानते हुए कि आबंटन राशि प्राप्त हो गई है तथा कोई मांग राशि नहीं मांगी गई है, कंपनी की पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	बैंक खाता नाम		24,000	
	अंश आवेदन खाते से			24,000
	(12,000 अंशों पर ₹ 2 प्रत्येक की दर से आवेदन राशि प्राप्त हुई)			
	अंश आवेदन खाता नाम		24,000	
	अंश पूँजी खाते से			20,000
	अंश आबंटन खाते से			2,000
	बैंक खाते से			2,000
	(आवेदन राशि का अंश पूँजी खाते तथा अंश आबंटन खाते में हस्तांतरण तथा शेष राशि की वापसी)			
	अंश आबंटन खाता नाम		30,000	
	अंश पूँजी खाते से			30,000
	(आबंटन राशि देय हुई)			
	बैंक खाता नाम		28,000	
	अंश आबंटन खाते से			28,000
	(आबंटन राशि प्राप्त हुई)			

पाठगत प्रश्न 26.5

बताइए कि निम्नलिखित कथन सत्य हैं अथवा असत्य :

i. संयुक्त पूँजी कंपनी एक कृत्रिम व्यक्ति है, जिसका निर्माण कानून द्वारा होता है।

ii. कंपनी के अंशधारकों का दायित्व असीमित होता है।

iii. संयुक्त पूँजी कंपनी का पंजीकरण आवश्यक नहीं है।

iv. पूर्वाधिकारी अंशधारियों को समता अंशधारियों के बाद लाभांश का भुगतान किया जाता है।

टिप्पणी

26.6 रोकड़ के अतिरिक्त किसी अन्य प्रतिफल के बदले अंशों का निर्गमन

कंपनी, विक्रेताओं से कुछ विशिष्ट संपत्तियाँ उधार खरीदती है। क्रय की गई संपत्तियों के प्रतिफल के भुगतान स्वरूप रोकड़ देने के बजाय कंपनी विक्रेताओं को निर्धारित संख्या में अपने अंश निर्गमित कर देती है। विक्रेताओं को अंश सममूल्य पर, अधिलाभ पर अथवा बट्टे पर जारी किए जा सकते हैं। ऐसे मामलों में आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ निम्न प्रकार से होती हैं :

संपत्तियाँ क्रय करने पर

विशिष्ट सम्पत्ति/विविध संपत्तियाँ नाम
    विक्रेता खाते से
(उधार संपत्तियाँ क्रय की गई)

विक्रेताओं को अंश जारी करने पर

सममूल्य पर

विक्रेता नाम
    अंश पूँजी खाते से
(विक्रेता को .... अंश ₹ .... की दर से निर्गमित किए गए)

अधिलाभ पर

विक्रेता नाम
    अंश पूँजी खाते से
    प्रतिभूति अधिलाभ संचय खाते से
(विक्रेता को .... अंश ₹ .... (₹ .... अधिलाभ सहित) की दर से निर्गमित किए गए)

बट्टे पर

विक्रेता नाम
अंश निर्गमन पर बट्टा खाता नाम
    अंश पूंजी खाता से
(विक्रेता को .... अंश ₹ .... प्रत्येक वाले ₹ .... के बट्टे पर निर्गमित किए गए)

उदाहरण 4 (रोकड़ के अतिरिक्त किसी अन्य प्रतिफल के बदले अंशों का निर्गमन)

हिन्दुस्तान लिमिटेड ₹ 5,00,000 की अंश पूँजी, जो ₹ 100 वाले समता अंशों में बँटी हुई थी। निम्नलिखित मामलों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए :

टिप्पणी

(क) कंपनी ने ₹ 1,50,000 से राम एंड कंपनी का व्यवसाय क्रय किया, जिसके भुगतान स्वरूप ₹ 20,000 रोकड़ दिए तथा शेष के ₹ 100 वाले समता अंश निर्गमित किए।

(ख) कंपनी ने भवन क्रय किया तथा क्रय प्रतिफल के रूप में ₹ 100 वाले 2,000 समता अंश निर्गमित किए।

हल :

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
(क)	विविध संपत्तियाँ खाता नाम राम एंड कंपनी के खाते से (राम एंड कंपनी से व्यवसाय क्रय किया)		1,50,000	1,50,000
	राम एंड कंपनी नाम बैंक खाते से समता अंश पूँजी खाते से (राम एंड कंपनी को भुगतान स्वरूप ₹ 20,000 रोकड़ तथा ₹ 100 वाले 1,300 समता अंश जारी किए)		1,50,0.00	20,000 1,30,000
(ख)	भवन खाता नाम विक्रेता के खाते से (भवन उधार क्रय किया)		2,00,000	2,00,000
	विक्रेता का खाता नाम समता अंश पूँजी खाते से (₹ 100 वाले 2,000 अंश विक्रेता को निर्गमित किए)		2,00,000	2,00,000

उदाहरण 5

सिमरन लिमिटेड ने चारू लिमिटेड से ₹ 99,000 की संपत्तियाँ क्रय कीं। क्रय प्रतिफल के रूप में सिमरन लिमिटेड के समता अंश जारी करने पर सहमति हुई। निम्नलिखित मामलों में आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए :

टिप्पणी

i. ₹ 10 वाले अंश सममूल्य पर जारी किए गए।

ii. ₹ 10 वाले अंश 10% अधिलाभ पर जारी किए गए।

iii. ₹ 10 वाले अंश 10% बट्टे पर जारी किए गए।

हल

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
(i)	विविध संपत्तियाँ खाता नाम		99,000	
	चारू लिमिटेड से			99,000
	(चारू लिमिटेड से संपत्तियाँ क्रय की)			
	चारू लिमिटेड नाम		99,000	
	समता अंश पूँजी खाते से			99,000
	(क्रय प्रतिफल के रूप में ₹ 10 वाले 9,900 समता अंश जारी किए)			
(ii)	चारू लिमिटेड नाम		99,000	
	समता अंश पूंजी खाते से			90,000
	प्रतिभूति अधिलाभ संचय खात से			9,000
	(₹ 10 वाले 9,000 समता अंश 10% अधिलाभ पर निर्गमित किए)			
(iii)	चारू लिमिटेड नाम		99,000	
	समता अंश निर्गमन पर बट्टा खाता नाम		11,000	
	समता अंश पूंजी खाते से			1,10,000
	(₹ 10 वाले 11,000 समता अंश 10% बट्टे पर निर्गमित किए)			

कार्यप्रणाली टिप्पणी

(i) अंशों की संख्या $= \dfrac{99{,}000}{10} = 9{,}900$ अंश

(ii) अंशों की संख्या $= \dfrac{99{,}000}{11} = 9{,}000$ अंश

टिप्पणी

(iii) अंशों की संख्या $= \frac{99,000}{9} = 11,000$ अंश

26.7 प्रवर्तकों को अंशों का निर्गमन

प्रवर्तक, वे व्यक्ति, फर्में अथवा कंपनियाँ हैं जो कंपनी का प्रवर्तन करते/करती हैं। ये कंपनी निर्माण संबंधी कार्य में संलग्न रहते हैं। प्रवर्तकों को उनकी सेवाओं के बदले पारिश्रमिक का भुगतान किया जाता है। इस पारिश्रमिक का भुगतान अंशों के रूप में भी किया जा सकता है। ऐसे मामलों में कंपनियाँ अपने प्रवर्तकों को बिना किसी भुगतान के अंश जारी करती हैं। निम्न प्रकार से रोजनामचा प्रविष्टि की जाती है:

ख्याति खाता नाम
    अंश पूंजी खाते से

ख्याति खाते को यह मानकर नामित किया जाता है कि प्रवर्तकों के कार्य के परिणामस्वरूप कंपनी, लाभदायक इकाई बन गई है।

वैकल्पिक रूप से, रूढ़िवादी व्यवहार इस प्रकार है :

प्रारंभिक व्यय/समामेलन लागत खाता नाम
    अंश पूँजी खाते से

प्रारंभिक व्यय/समामेलन लागत खाते को, जितना शीघ्र संभव हो, लाभ–हानि विवरण में अपलिखित कर दिया जाता है।

उदाहरण 6 (रोकड़ के अतिरिक्त किसी अन्य प्रतिफल के बदले अंशों का निर्गमन)

ABC लिमिटेड ₹ 10,00,000 की नामित पूँजी, जो ₹ 10 वाले समता अंशों में बँटी थी, के साथ पंजीकृत हुई। कंपनी ने XYZ लिमिटेड से ₹ 27,000 की मशीनरी क्रय की तथा दावे के संतुष्टिकरण में ₹ 10 वाले पूर्णदत्त समता अंश जारी किए। प्रवर्तकों को उनकी सेवाओं हेतु ₹ 10,000 के समता अंश जारी किए गए।

उपर्युक्त लेनदेनों के लिए रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए। यदि XYZ लिमिटेड को जारी अंश :

(i) सममूल्य पर हों।

(ii) 20% अधिलाभ पर हों।

(iii) 10% बट्टे पर हों।

टिप्पणी

हल :

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
(क)	**मशीनरी क्रय करने पर :**			
	मशीनरी खाता नाम		27,000	
	XYZ लिमिटेड से			27,000
	(XYZ लिमिटेड से मशीनरी क्रय की)			
(i)	**यदि अंश सममूल्य पर हों :**			
	XYZ लिमिटेड नाम		27,000	
	अंश पूँजी खाते से			27,000
	(₹ 10 वाले 2,700 अंश XYZ लिमिटेड को सममूल्य पर निर्गमित किए)			
(ii)	**यदि अधिलाभ पर अंश जारी हों :**			
	XYZ लिमिटेड नाम		27,000	
	अंश पूँजी खाते से			22,500
	प्रतिभूति अधिलाभ संचय खाते से			4,500
	(₹ 10 वाले 2,250 अंश 20% अधिलाभ पर जारी किए गए)			
	अंशों की संख्या = 27,000 ÷ 12 = 2,250			
(iii)	**यदि बट्टे पर अंश जारी हों :**			
	XYZ लिमिटेड नाम		27,000	
	अंश निर्गमन पर बट्टा खातानाम		3,000	
	अंश पूँजी खाते से			30,000
	(₹ 10 वाले 3,000 अंश 10% बट्टे पर जारी किए गए)			
	अंशों की संख्या = 27,000 9 = 3,000			

(ख)	**प्रवर्तकों को अंश निर्गमन पर**			
	ख्याति खाता नाम		10,000	
	अंश पूँजी खाता से			10,000
	(प्रवर्तकों को उनकी सेवाओं के प्रतिफलस्वरूप समता अंश जारी किए गए)			

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 26.6

बहुविकल्पीय प्रश्न

i. जब विक्रेता को सम्पत्ति क्रय के प्रतिफल स्वरूप सममूल्य पर अंश जारी किए जाते हैं तो अंशों का कुल मूल्य होगा :

(क) क्रय प्रतिफल से अधिक (ख) क्रय प्रतिफल से कम

(ग) क्रय प्रतिफल के समान (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

ii. जब विक्रेताओं को सम्पत्ति के क्रय के प्रतिफल स्वरूप अधिलाभ पर अंश जारी किए जाते हैं तो अंशों का कुल मूल्य होगा :

(क) क्रय प्रतिफल के समान (ख) क्रय प्रतिफल से अधिक

(ग) क्रय प्रतिफल से कम (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

iii. जब विक्रेताओं को सम्पत्ति के क्रय के प्रतिफल स्वरूप बट्टे पर अंश जारी किए जाते हैं तो अंशों का कुल मूल्य होगा :

(क) क्रय प्रतिफल से कम (ख) क्रय प्रतिफल से अधिक

(ग) क्रय प्रतिफल के समान (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

आपने क्या सीखा

- कंपनी कुछ व्यक्तियों का एक संगठन होती है जो इसकी पूँजी जुटाते हैं तथा कंपनी अधिनियम 1956 के अंतर्गत जिसका पंजीयन कराया जाता है।
- कंपनी की विशेषताएँ
  - स्वतंत्र वैद्यानिक अस्तित्व
  - समामेलित संस्था
  - स्थायी अस्तित्व
  - सीमित दायित्व
  - सार्वमुद्रा

टिप्पणी

- कंपनी के प्रकार

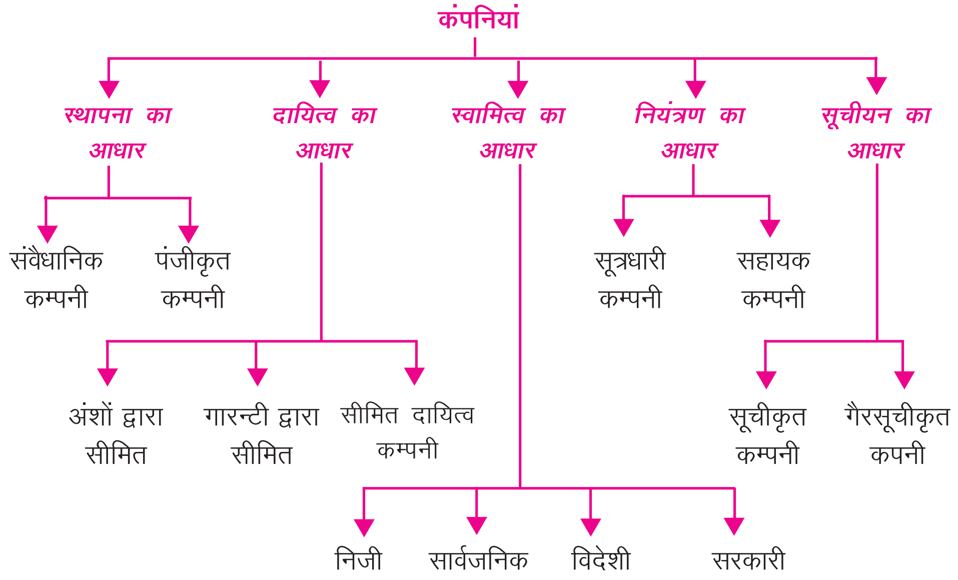

- निजी कम्पनी वह कम्पनी होती है जिसके अन्तर्नियम
  (i) सदस्यों की अधिकतम सीमा पचास तक सीमित रखते हैं।
  (ii) अंशों के हस्तांतरण पर रोक लगाते हैं।
  (iii) जन साधारण को अंशों का क्रय करने के लिए आमंत्रण पर रोक लगाते हैं।
  (iv) इन कंपनियों की न्यूनतम प्रदत्त पूँजी एक लाख रुपये होती है।
- निजी कंपनी को अपने नाम के साथ प्राइवेट लिमिटेड शब्द लगाना अनिवार्य है।
- जो कंपनियाँ निजी कंपनी नहीं होती वह सार्वजनिक कंपनी होती हैं।
- कंपनी अंशों का निर्गमन कर पूँजी एकत्रित करती है।
- अंश दो प्रकार के होते हैं—समता अंश एवं पूर्वाधिकार अंश; पूर्वाधिकार अंशों को अन्य अंशों पर लाभांश एवं कंपनी के समापन की स्थिति पर पूँजी की वापसी का पूर्वाधिकार होता है। पूर्वाधिकार अंशों को छोड़कर अन्य अंशों को समता अंश कहते हैं।
- अंश पूँजी एवं इसके प्रकार : नाममात्र अधिकृत; निर्गमित; अभिदान; याचित; गैरयाचित प्रदत्त; अदत्त; संचित।
- **अंश :** अंश पूँजी के एक विशिष्ट भाग पर अधिकार को अंश कहते हैं।
- **अंशों के प्रकार :** समता अंश तथा पूर्वाधिकारी अंश।
- संपत्तियाँ क्रय करने पर विक्रेताओं को क्रय प्रतिफल के भुगतान स्वरूप अंश जारी किए जा सकते हैं। ऐसे अंश सममूल्य पर, अधिलाभ पर अथवा बट्टे पर निर्गमित किए जा सकते हैं।

- जब अंश कुछ चयनित लोगों के समूह को (बिना प्रविवरण जारी किए) निर्गमित किए जाते हैं तो इसे निजी आधार पर अंशों का निर्गमन कहते हैं।

टिप्पणी

पाठान्त प्रश्न

1. कंपनी की परिभाषा दीजिए। इसकी विशेषताओं को समझाइए।
2. पूर्वाधिकार अंश क्या हैं? समता अंश एवं पूर्वाधिकार अंशों में अंतर कीजिए।
3. निजी कंपनी पर लगे प्रतिबंधों को सूचीबद्ध कीजिए। सार्वजनिक कंपनी एवं निजी कंपनी में अंतर कीजिए।
4. अंश पूँजी किसे कहते हैं? पूँजी के विभिन्न प्रकार को समझाइए।
5. कंपनी के विभिन्न प्रकारों को समझाइए।
6. एक संयुक्त पूँजी कंपनी का क्या अर्थ है?
7. एक कंपनी की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
8. समता अंशों की विशेषताएँ बताइए।
9. निजी आधार पर अंशों के निर्गमन से क्या अभिप्राय है?
10. निजी आधार पर अंशों के निर्गमन की विशेषताओं की विवेचना कीजिए।
11. समता अंशों तथा पूर्वाधिकारी अंशों में अंतर्भेद कीजिए।
12. विक्रेताओं को अंश जारी करने का क्या तात्पर्य है?
13. प्रवर्तकों को अंश जारी करने का क्या अभिप्राय है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

26.1 I. (i) कृत्रिम व्यक्ति, (ii) अंश
(iii) सार्वमुद्रा (iv) प्रतिनिधित्व

II. (i) × (ii) √ (iii) × (iv) √

26.2 I. (i) सात (ii) 51% (iii) एक लाख (iv) भारत से बाहर

II. (i) निजी (ii) अंशों द्वारा सीमित कंपनी
(iii) सरकारी कंपनी (iv) असीमित दायित्व की कंपनी
(v) सूत्रधारी कंपनी

26.3 (i) अंश पूँजी, (ii) अंश,
(iii) समता अंशधारक (iv) पूर्वाधिकार अंश धारक, समता अंशधारक

26.4 I. (i) अंशों का निर्गमन (ii) अधिकृत पूँजी
(iii) निर्गमित पूँजी (iv) संचित पूँजी

II. (i) सही (ii) गलत (iii) सही (iv) गलत

26.5 (i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य (iv) असत्य

26.6 (i) ग (ii) क (iii) ख

क्रियाकलाप

आपके पिता एक कंपनी के अंशधारी हैं। हर वर्ष वे कंपनी से रिपोर्ट प्राप्त करते हैं। यह रिपोर्ट वार्षिक रिपोर्ट के नाम से जानी जाती है इस रिपोर्ट को देखने के पश्चात, निम्न को ज्ञात करें :

1. कंपनी के नाम के साथ सीमित/निजी सीमित
2. पूँजी के प्रकार

(क) अधिकृत (authorised) ....

(ख) निर्गमित (Issued) ....

(ग) याचित (Called up) ....

(घ) शेष याचना (Call in Arrears) ....

(ङ) संचित पूँजी (Reserved) ....

27

अंशों का निर्गमन

पिछले पाठ में आपने संयुक्त पूँजी कम्पनी का अर्थ, विशेषताएं तथा इसके विभिन्न प्रकारों के विषय में अध्ययन किया। आपको अंश पूँजी तथा इसके विभिन्न प्रकारों की जानकारी है। अंश निर्गमन द्वारा इकट्ठा किया गया धन कम्पनी वित्त का प्रमुख स्रोत है। इस पाठ में हम अंशों के निर्गमन तथा इसके कंपनी की बहियों में लेखांकन विधि की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन करने के पश्चात् आप

- अंश निर्गमन की प्रक्रिया को समझा सकेंगे;
- अंश राशि को (क) एकमुश्त (ख) दो या दो से अधिक किश्तों में मांगा जा सकता है को समझा सकेंगे;
- कंपनी अंशों को सममूल्य मूल्य, अधिमूल्य तथा बट्टे पर निर्गमित कर सकती है;
- अंशों के निर्गमन की प्रविष्टि के लिए रोजनामचा में प्रविष्टि कर सकेंगे;
- अदत्त याचना (calls in arrears) राशि एवं पूर्वदत्त याचना (calls in advance) राशि शब्दों की व्याख्या कर सकेंगे।

27.1 अंशों के निर्गमन की प्रक्रिया (Procedure of Issue of Shares)

अंशों का अंकित मूल्य अंश के सममूल्य के बराबर होता है। इसे अंश का अंकित मूल्य भी कहते हैं। अंशों के निर्गमन के लिए कंपनी एक विशेष प्रक्रिया का पालन करती है जिसका नियमन कंपनी अधिनियम के द्वारा होता है। अंशों के निर्गमन की कई विधियां है जो इस प्रकार हैं :

(क) रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के बदले (For consideration other than cash)

(ख) रोकड़ के बदले (For cash)।

(क) रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के बदले

कभी–कभी कंपनी की स्थापना के समय कंपनी के प्रवर्त्तकों को उनकी सेवाओं के बदले अंश जारी किये जाते हैं। इन अंशों के निर्गमन मूल्य को साधारणतया 'ख्याति' खाते के नाम में लिखा जाता है तथा रोजनामचा में प्रविष्टि इस प्रकार से होती है

ख्याति खाता	नाम
अंश पूँजी खाता से	

जब किसी कंपनी के पास स्थाई संपत्ति खरीदने के लिए अथवा लेनदारी के भुगतान के लिए पर्याप्त राशि नहीं होती है तो यह नकद भुगतान के बदले अपने अंश देने अथवा आबंटन करने का प्रस्ताव रख सकती है। कोई भी अंशों का आबंटन, जिसके लिए रोकड़ न प्राप्त की गई हो, उसे रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के बदले में अंशों का निर्गमन कहते हैं। उदाहरण के लिए भवन खरीदा तथा भुगतान में अंशों का निर्गमन किया गया।

सम्पत्ति जैसे कि भवन, मशीन, माल का स्टाक आदि के क्रय पर, नीचे दी गई रोजनामचा प्रविष्टि की जायेगी

1.	परिसम्पत्ति खाता	नाम
	विक्रयकर्त्ता/लेनदार खाता से	
	(परिसम्पत्ति खरीदी गई)	
2.	विक्रयकर्त्ता/लेनदार खाता	नाम
	पूँजी खाता से	
	(अंशों का निर्गमन ₹......... प्रति अंश सम्पूर्ण देय)	

(ख) अंशों का रोकड़ के बदले निर्गमन

सामान्यतः अंशों का निर्गमन नकद के बदले ही किया जाता है। कंपनी अंश राशि को एक मुश्त अथवा दो या अधिक किश्तों में मांग सकती है। लेकिन कंपनी इस राशि को सदा बैंक के माध्यम से इकट्ठा करती है।

(i) अंश राशि को एक मुश्त प्राप्त करना : कंपनी समग्र अंश राशि को आवेदन पत्र के साथ एक ही बार में प्राप्त कर सकती है। ऐसा होने पर कंपनी की बहियों में निम्न प्रविष्टि की जाएगी

1. प्रार्थना राशि की प्राप्ति पर

बैंक खाता	नाम
अंश आवेदन खाता से	
(अंशों पर ₹......... प्रति अंश से आवेदन राशि प्राप्त हुई)	

2. आवेदन राशि का हस्तान्तरण

अंश प्रार्थना खाता नाम
  अंश पूँजी खाता से
(आवेदन राशि का अंश पूँजी खाता में हस्तान्तरण)

(ii) अंश राशि को दो या अधिक किश्तों में प्राप्त करना : एक ही किश्त अर्थात आवेदन के साथ में भुगतान न प्राप्त कर कंपनी इसे दो अथवा अधिक किश्तों में एकत्रित करता है। पहली किश्त का भुगतान प्रार्थी अंशों के लिए प्रार्थना पत्र के साथ करती है इसे प्रार्थना राशि कहते हैं। अंशों के आबंटन पर आबंटियों को दूसरी किश्त का भुगतान करना है उसे आबंटन राशि कहते हैं। यदि कंपनी राशि को दो से अधिक किश्तों में मांगती है तो अन्य किश्तों को याचना राशि अर्थात प्रथम याचना, द्वितीय याचना अथवा अन्तिम याचना कहते हैं।

उपर्युक्त मामलों में लेनदेन की रोजनामचे में प्रविष्टि इस प्रकार से होंगी :

(क) आवेदन राशि की प्राप्ति पर

बैंक खाता नाम
  अंश आवेदन खाता से
(अंशों के लिए ₹......... प्रति अंश से आवेदन राशि प्राप्त हुई)

(ख) अंशों के आबंटन पर : निर्धारित समय के भीतर अंशों के लिए आवेदन प्राप्त होने के पश्चात कंपनी का निदेशक मंडल अंशों का आबंटन करता है। अंशों के आबंटन पर अंश आवेदन राशि को अंश पूँजी खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। इसके लिए नीचे दी गई रोजनामचा प्रविष्टि की जाती है

अंश आवेदन खाता नाम
  अंश पूँजी खाता से
(.................... अंशों की आवेदन राशि का ₹......... प्रति दर से पूँजी खाते में हस्तान्तरण)

आबंटन राशि का देय होना एवं प्राप्त होना

अंशों के आबंटन पर अगली किश्त अर्थात आबंटन पर प्राप्य राशि देय हो जाती है। आबंटन राशि के देय होने पर निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाती है

(i) आबंटन राशि का देय होना

अंश आबंटन खाता नाम
  अंश पूँजी खाता से
(अंशों पर ₹......... प्रति अंश से आबंटन राशि देय)

टिप्पणी

(ii) आबंटन राशि की प्राप्ति

आबंटन राशि की प्राप्ति पर निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाती है

बैंक खाता नाम
अंश आबंटन खाता से
(अंशों पर देय आबंटन राशि की प्राप्ति)

अंशों पर याचना (Calls on Shares)

आवेदन राशि एवं आबंटन राशि की प्राप्ति के पश्चात शेष देय राशि को कंपनी आवश्यकता पड़ने पर कभी भी मांग सकती है। अतः याचना कंपनी की वह मांग है जिसको वह अंश धारकों से उनको आबंटित अंशों पर याचना राशि को भेजने के लिए कहती है।

शेष राशि को कंपनी दो से अधिक किश्तों में मांग सकती है। आबंटन के पश्चात मांगी गई राशि को याचना राशि कहते हैं। एक या एक से अधिक याचनाएं हो सकती है। यह कंपनी की आवश्यकता पर निर्भर करती है।

जब केवल एक ही बार याचना की जानी है, तो याचना के देय होने पर प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

अंश प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता नाम
अंश पूँजी खाता से
(अंशों पर ₹......... प्रति अंश याचना राशि देय)

याचना राशि की प्राप्ति

रोजनामचा में याचना राशि की प्रप्ति पर नीचे दी गई प्रविष्टि की जाएगी

बैंक खाता नाम
अंश प्रथम एवं अंतिम याचना खाता से
(अंशों पर ₹......... प्रति अंश याचना राशि प्राप्त हुई)

नोट : यदि कंपनी एक से अधिक बार याचना करती है तो द्वितीय अथवा तृतीय याचना राशि के देय होने एवं प्राप्ति का समान लेखा किया जायेगा। अंतिम मांग को अंतिम याचना कहते हैं।

उदाहरण 1

दि फैशन फैबरिक लि. ने 1 अप्रैल 2014 को ₹ 10 प्रति के 1,00,000 अंश निर्गमित किए हैं। इन अंशों पर राशि का भुगतान इस प्रकार से होना है

आवेदन पर ₹ 2 प्रति अंश

आबंटन पर ₹ 3 प्रति अंश

याचना पर ₹ 5 प्रति अंश

रोजनामचा में प्रविष्टि कीजिए और संबंधित खाते तैयार कीजिए :

टिप्पणी

हल :

दि फैशन फैबरिक्स लि.
रोजनामचा प्रविष्टियां

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
1.	बैंक खाता नाम अंश आवेदन खाता से (₹ 2 प्रति अंश, आवेदन राशि प्राप्त हुई।)		2,00,000	2,0,0000
2.	आवेदन खाता नाम अंश पूँजी खाता से (₹ 1,00,000 अंशों के लिए आवेदन राशि का अंश पूँजी खाता में हस्तान्तरण)		2,00,000	2,00,000
3.	अंश आबंटन खाता नाम अंश पूँजी खाता से (1,00,000 अंशों पर ₹ 3 प्रति अंश आबंटन राशि देय)		3,00,000	3,00,000
4.	बैंक खाता नाम अंश आबंटन खाता से (1,00,000 अंशों पर ₹ 3 प्रति अंश आबंटन राशि प्राप्त)		3,00,000	3,00,000
5.	अंश प्रथम एवं अंतिम याचना खाता नाम अंश पूँजी खाता से (1,00,000 अंशों पर ₹ 5 प्रति अंश याचना राशि देय)		5,00,000	5,00,000
6.	बैंक खाता नाम अंश प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता से (1,00,000 अंशों पर ₹ 5 प्रति अंश याचना राशि प्राप्त हुई)		5,00,000	5,00,000

नोट : अंश समता अंश अथवा पूर्वाधिकार अंश हो सकते हैं, लेकिन यदि केवल 'अंश' शब्द प्रयुक्त हुआ है तो इसे समता अंश माना जायेगा।

टिप्पणी

संबंधित खाते

बैंक खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	राशि (₹)
	अंश आवेदन खाता		2,00,000		शेष c/d		10,00,000
	अंश आबंटन खाता		3,00,000				
	अंश प्रथम एवं अंतिम खाता		5,00,000				
			10,00,000				10,00,000
	शेष b/d		10,00,000				

अंश आवेदन खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	राशि (₹)
	अंश पूंजी खाता		2,00,000		बैंक खाता		2,00,000
			2,00,000				2,00,000

अंश पूंजी खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	राशि (₹)
	शेष cld		10,00,000		अंश आवेदन खाता		2,00,000
					अंश आबंटन खाता		3,00,000
					अंश प्रथम एवं अंतिम याचना खाता		5,00,000
			10,00,000				10,00,000
					शेष b/d		10,00,000

अंश आबंटन खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	राशि (₹)
	अंश पूंजी खाता		3,00,000		बैंक खाता		3,00,000
			3,00,000				3,00,000

अंश प्रथम एवं अंतिम याचना खाता

नाम | जमा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	राशि (₹)
	अंश पूंजी खाता		5,00,000		बैंक खाता		5,00,000
			5,00,000				5,00,000

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 27.1

रिक्त स्थानों में उचित शब्द भरिये :

(i) अंश का मूल्य उसका .... मूल्य होता है।

(ii) रोकड़ के अतिरिक्त अन्य के बदले अंश .... को जारी किये जाते हैं।

(iii) अंशों के निर्गमन पर कंपनी अंश राशि को एक मुश्त अथवा .... में मांग सकती है।

(iv) कंपनी के पास अंश प्रार्थना राशि अंशों के .... से प्राप्त होती है।

27.2 संम्पूर्ण, अल्प एवं अधिक्य अभिदान

एक कंपनी पूँजी जुटाने के लिए कुछ अंशों को जारी करने का निर्णय लेती है। यह जनसाधारण को इन अंशों के क्रय के लिए आमन्त्रित करती है। तीन स्थितियां हो सकती हैं :

I. सम्पूर्ण अभिदान (Full Subscription) : कंपनी के पास उतनी संख्या में अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हो सकते हैं जितने अंशों को कंपनी जनता को बेचना चाहती है। इसे सम्पूर्ण अभिदान कहते हैं। पूर्ण अभिदान की स्थिति में रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार से होगी:

(क) आवेदन राशि की प्राप्ति पर

बैंक खाता नाम
अंश आवेदन खाता से
(............. अंशों के लिए आवेदन राशि प्राप्त हुई)

(ख) अंशों के आबंटन पर

अंश आवेदन खाता नाम
अंश पूंजी खाता से
(अंश आवेदन राशि का उनके आबंटन पर अंश पूँजी खाता में हस्तान्तरण)

टिप्पणी

II. यदि कंपनी के पास उतने अंशों के बराबर के लिए आवेदन प्राप्त नहीं होते हैं जितना कंपनी अभिदान के लिए प्रस्तावित करती है तो दो स्थितियां हो सकती है : (i) अल्प-अभिदान (under subscription); (ii) आधिक्य-अभिदान (over subscription)

(i) ***अल्प-अभिदान (Under Subscription) :*** अंशों का अल्प–अभिदान कहलाता है जब कंपनी को अभिदान के लिए सर्वसाधारण को प्रस्तुत अंशों की संख्या से कम के लिए प्रार्थनापत्र प्राप्त होते हैं। इस स्थिति में कंपनी को अंशों के आबंटन करने में किसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ता क्योंकि प्रत्येक आवेदनकर्त्ता को जितने अंशों के लिए आवेदन किया था, उतने ही अंश आबंटित किये जाते हैं। लेकिन कंपनी अंशों के आबंटन की प्रक्रिया को उसी स्थिति में प्रारम्भ कर सकती है जबकि कम से कम आवश्यक अंशों का अभिदान हुआ हो, जिसे न्यूनतम अभिदान कहते हैं।

(ii) ***आधिक्य-अभिदान (Over Subscription) :*** कभी–कभी कंपनी को अभिदान के लिए सर्वसाधारण को प्रस्तावित अंशों की संख्या से अधिक के लिए प्रार्थना पत्र प्राप्त हो जाते है। इस स्थिति को आधिक्य अभिदान कहते हैं। कोई भी कंपनी प्रस्तावित अंशों से अधिक का आबंटन नहीं कर सकती। अभिदान के आधिक्य की स्थिति में कंपनी के पास निम्न विकल्प होते हैं :

विकल्प I

(i) ***आधिक्य प्रार्थना पत्रों को अस्वीकार करना एवं प्राप्त राशि की वापसी :*** कंपनी प्रस्तावित अंशों से अधिक के प्रार्थना पत्रों को अस्वीकार कर सकती है तथा आवेदनकर्त्ताओं को अस्वीकृति पत्र भेज दिया जाता है। इस स्थिति में ऐसे आवेदकों से प्राप्त आवेदन राशि को वापस कर दिया जाता है। रोजनामचे में निम्न प्रविष्टि की जाती है :

अंश आवेदन खाता   नाम
      बैंक खाता से
(अंशों की प्रार्थना राशि को आवेदकों को लौटाया गया)

(ii) ***अधिक्य आवेदन राशि को आबंटन पर देय राशि में समायोजन :*** इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाती है :

अंश आवेदन खाता   नाम
      अंश आबंटन खाता से
(अधिक्य प्रार्थना राशि का आबंटन पर देय राशि में समायोजन)

यदि आंशिक स्वीकृत प्रार्थना पत्रों पर प्रार्थना राशि उस राशि से अधिक है जो आबंटन राशि के समायोजन के लिए आवश्यक है तो अधिक राशि को वापस कर दिया जाता

है। यदि कंपनी के अन्तर्नियम अधिकार देते हैं तो निर्देशक अधिक राशि को अग्रिम याचना के रूप में रोक सकते हैं। जिसको भविष्य में याचना/याचनाओं के विरुद्ध समायोजित किया जायेगा। इसमें निम्न राजनामचा प्रविष्टि की जाती है

अंश आवेदन खाता नाम

अग्रिम याचना खाता से

(अंशों की रोकी गई आधिक्य प्रार्थना राशि का अग्रिम याचना में समायोजन)

विकल्प II

आवेदन पत्रों की आंशिक स्वीकृति (Partial acceptance of Applications)

कुछ स्थितियों में कंपनी आवेदन पत्रों को आंशिक रूप से स्वीकार करती है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि कंपनी को जितने अंशों के लिए प्रार्थना पत्र भेजे गये हैं उनका पूरा आबंटन नहीं करती है। उदाहरण के लिए यदि किसी आवेदन में 5000 अंशों के लिए आवेदन किया था तथा उसे 2000 अंश आबंटित किये गये तब यह कहा जा सकता है कि आवेदन आंशिक रूप से स्वीकार किया गया। कंपनी ऐसा सूत्र निकाल सकती है जिसके अनुसार प्रार्थना पत्रों को आंशिक रूप से स्वीकार किया जायें अथवा अनुपातिक आबंटन किया जाये। अनुपातिक आबंटन (Prorata allotment) का अभिप्राय है कि आवेदकों को अंशों का अनुपातिक आबंटन किया गया है। इस स्थिति में कंपनी आवेदन पर प्राप्त अधिक अंश राशि को आंशिक स्वीकृत आवेदन पर देय अंश आबंटन राशि में समायोजित करती हैं। प्रार्थना पत्र राशि को अंश आबंटन राशि में समायोजन करने के लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाती है :

अंश आवेदन खाता नाम

अंश आबंटन खाता से

(अंशों की आवेदन राशि का अंश आबंटन खाते में हस्तान्तरण)

उदाहरण 2

दि फुल हैल्थ केयर लि. ने ₹ 100 प्रति अंश के 20,000 अंश जनसाधारण को अभिदान हेतु प्रस्तावित किये जिन पर भुगतान इस प्रकार किया जाना था : आवेदन पर ₹ 30 प्रति अंश, आबंटन पर ₹ 30 प्रति अंश तथा शेष याचना पर 30,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। 5,000 अंशों के लिए आवेदन पूरी तरह अस्वीकृत कर दिये तथा प्रार्थना राशि लौटा दी गई। शेष आवेदकों को प्रस्तावित अंशों का आबंटन कर दिया गया। उनकी अधिक प्रार्थना राशि को आबंटन पर देय राशि में समायोजित कर दिया गया। याचना राशि मांगी गई तथा समय पर प्राप्त हुई। कंपनी की लेखा बहियों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

टिप्पणी

हल :

दि फुल हैल्थ केयर लि.
रोजनामचा प्रविष्टियां

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
1	बैंक खाता नाम अंश आवेदन खाता से (3,00,000 अंशों के लिए ₹ 30 प्रति अंश से प्रार्थना राशि प्राप्त हुई)		9,00,000	9,00,000
2.	अंश आवेदन खाता नाम अंश पूँजी खाता से बैंक खाता से अंश आबंटन खाता से (2,00,000 अंशों के लिये प्रार्थना राशि का पूँजी खाता में हस्तान्तरण 5,000 की राशि लौटा दी गई तथा शेष 5,000 की राशि आबंटन खाता में समायोजित किया गया)		9,00,000	6,00,000 1,50,000 1,50,000
3.	अंश आबंटन खाता नाम अंश पूँजी खाता से (आबंटन राशि देय)		6,00,000	6,00,000
4.	बैंक खाता नाम अंश आबंटन खाता से (आबंटन राशि प्राप्त हुई)		6,00,000	6,00,000
5.	अंश प्रथम एवं अंतिम याचना खाता नाम पूँजी खाता से (याचना राशि देय)		8,00,000	8,00,000
6.	बैंक खाता नाम अंश प्रथम एवं अंतिम याचना खाता से (याचना राशि प्राप्त हुई)		8,00,000	8,00,000

पाठगत प्रश्न 27.2

निम्नलिखित वाक्यांशों में रिक्त स्थानों में शब्द/शब्दों से पूर्ति कीजिए :

i. जब कंपनी अभिदान हेतु प्रस्तावित अंशों की संख्या से अधिक संख्या के लिए आवेदन प्राप्त करती है तो इसे .... की स्थिति कहते हैं।

ii. जब अंश राशि दो या दो से अधिक किश्तों में प्राप्त होती है तो पहली किश्त को .... कहते हैं।

iii. याचना कंपनी की वह मांग है जिसमें वह अंश धारकों से .... राशि के भुगतान के लिए कहती है।

iv. कोई कंपनी .... किये गये अंशों से अधिक का आबंटन करती है।

27.3 अंशों का अधिमूल्य पर जारी करना

कंपनी अपने अंशों का निर्गमन उनके अंकित मूल्य (face value) पर कर सकती है। इन्हें सममूल्य पर जारी करना कहते हैं। कंपनी अपने अंशों का निर्गमन अंकित मूल्य से अधिक अथवा कम मूल्य पर अर्थात क्रमशः अधिमूल्य (प्रीमियम) पर अथवा बट्टे (discount) पर निर्गमन कर सकती है।

जब अंशों को अधिमूल्य पर अथवा बट्टे पर जारी किया जाता है तो इसका लेखा अंशों के सममूल्य पर जारी करने से भिन्न होता है। आइए अंशों के अधिमूल्य पर निर्गमन का वर्णन करें :

अंशों का अधिमूल्य पर जारी करना (Issue of shares at premium)

यदि कंपनी अंशों को उनके अंकित मूल्य से अधिक मूल्य पर जारी करती है तो इसे अंशों का अधिमूल्य पर निर्गमन कहा जाता है। निर्गमन मूल्य तथा अंकित मूल्य के अन्तर को अधिमूल्य (प्रीमियम) कहते हैं। यदि 10 रुपये का अंश 12 रुपये में जारी किया जाता है तो इसे दो रुपये प्रीमियम पर जारी करना कहा जायेगा। जो राशि प्रीमियम के रूप में प्राप्त होती है उसे प्रतिभूति प्रीमियम (Securities premium) खाते में हस्तान्तरित किया जाता है। कंपनी अपने अंशों का प्रीमियम पर निर्गमन तभी करती है जबकि उसकी वित्तीय स्थिति सुदृढ़ हो। कंपनी के लिए यह पूँजीगत आय है। कंपनी प्रीमियम की राशि को प्रार्थना राशि, आबंटन अथवा याचनाओं के साथ मांग सकती है।

कंपनी अधिनियम ने प्रतिभूति प्रीमियम खाते में जमा राशि के उपयोग करने पर कुछ प्रतिबंध लगाए हैं।

अधिनियम की धारा 78 के अनुसार प्रीमियम की राशि को निम्न के लिए उपयोग में लाया जा सकता है :

(i) पूर्णप्रदत्त बोनस अंशों के निर्गमन के लिए

(ii) प्रारम्भिक व्यय, अंशों के निर्गमन पर बट्टे की राशि, अभिगोपन कमीशन अथवा निर्गमन व्यय अपलिखित करने हेतु

(iii) पूर्वाधिकार अंश तथा ऋणपत्रों के शोधन पर प्रीमियम के भुगतान के लिए

(iv) कंपनी प्रीमियम की पूरी राशि को एक से अधिक किश्तों में मांग सकती है।

यदि कंपनी उस याचना विशेष को निर्दिष्ट नहीं करती है जिसके साथ प्रीमियम राशि का भुगतान किया जाता है तो माना जायेगा कि इसको आबंटन के समय मांगा गया है।

अंशों के निर्गमन पर प्रीमियम का लेखांकन (Accounting Treatment of premium on Issue of Shares)

अंशों के अधिमूल्य पर निर्गमन पर निम्न लेखांकन किया जायेगा।

(क) प्रतिभूति प्रीमियम (Securities premium) राशि प्रार्थना राशि के साथ प्राप्त हुई: यदि प्रतिभूति प्रीमियम की राशि प्रार्थना राशि के साथ एकत्रित की गई है तथा कंपनी ने अंशों के आबंटन का निर्णय लिया है तो नीचे दी गई रोजनामचा प्रविष्टि की जायेगी :

अंश आवेदन खाता	नाम
प्रतिभूति प्रीमियम खाता से	
(आवेदन के साथ प्राप्त प्रतिभूति प्रीमियम राशि को प्रतिभूति प्रीमियम खाते में हस्तान्तरण)	

(ख) प्रीमियम की राशि का आबंटन अथवा याचना के साथ प्राप्ति : यदि कंपनी प्रीमियम राशि को अंशों के आबंटन अथवा/एवं याचना राशि के साथ मांगती है तो रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

अंश आबंटन खाता	नाम
या/एवं	
अंश याचना खाता	नाम
प्रतिभूति प्रीमियम खाता से	
(अंशों पर ₹ .... प्रति अंश से अंश अधिमान देय का समायोजन)	

उदाहरण 3

लक्जरी कार लि. ₹ 10 प्रति के 1,00,000 अंश ₹ 5 प्रीमियम पर निर्गमित किए जिनका भुगतान इस प्रकार होना था

आवेदन पर ₹ 4 (₹ 2 प्रीमियम सहित) प्रति अंश

आबंटन पर ₹ 8 (₹ 3 प्रीमियम सहित) प्रति अंश

याचना पर ₹ 3 प्रति अंश

1,00,000 अंशों के लिए प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए तथा सभी को अंशों का आबंटन कर दिया गया। रोजनामचा में प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल

लक्जरी कारस् लि.

रोजनामचा

तिथि	विवरण		खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
1.	बैंक खाता	नाम		4,00,000	
	अंश आवेदन खाता से				4,00,000
	(1,00,000 अंश पत्र प्रार्थना राशि प्राप्त)				
2.	अंश आवेदन खाता	नाम		4,00,000	
	अंश पूँजी खाता से				2,00,000
	प्रतिभूति प्रीमियम खाता से				2,00,000
	(प्रार्थना राशि का अंश पूँजी खाता एवं प्रतिभूति प्रीमियम खातों में हस्तान्तरण)				
3.	अंश आबंटन खाता	नाम		8,00,000	
	अंश पूँजी खाता से				5,00,000
	प्रतिभूति प्रीमियम खाता से				3,00,000
	(1,00,000 अंश पर आबंटन राशि देय ₹ 3 प्रति अंश अंश प्रीमियम राशि सहित)				
4.	बैंक खाता	नाम		8,00,000	
	अंश आबंटन खाता से				8,00,000
	(1,00,000 अंश पर 8 प्रति अंश से आबंटन राशि प्राप्त)				

टिप्पणी

5.	अंश प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता नाम अंश पूँजी खाता से (1,00,000 अंशों पर 3 प्रति अंश याचना की गई)		3,00,000	3,00,000
6.	बैंक खाता नाम प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता से (1,00,000 अंशों पर ₹ 3 प्रति अंश से याचना राशि प्राप्त हुई)		3,00,000	3,00,000

पाठगत प्रश्न 27.3

रिक्त स्थानों में उचित शब्द एवं अंक भरिए :

(i) प्रतिभूति प्रीमियम कंपनी का .... होता है।

(ii) यदि आबंटन पर ₹ 5 प्रति अंश मांगे गये हैं, जिसमें ₹ 2 प्रीमियम के सम्मिलित है तो अंश पूँजी खाता के जमा में ₹ .... लिखे जायेगें।

(iii) एक कंपनी अपने ₹ 50 प्रति वाले अंशों को ₹ 60 पर निर्गमित करती है। ₹ 10 की आधिक्य राशि .... है।

(iv) यदि ₹ 100 प्रति के अंशें पर ₹ 20 प्रीमियम राशि है तो अंश पूँजी खाते के जमा में .... प्रति अंश जमा किये जायेंगे।

उदाहरण 4

सुनीता लिमिटेड ₹ 50,00,000 की अधिकृत पूँजी, जो ₹ 100 वाले 50,000 अंशों में विभाजित थी, के साथ पंजीकृत हुई। कंपनी ने ₹ 20 प्रति अंश अधिलाभ पर 20,000 अंश निर्गमित किए। आवेदन पर ₹ 40, आबंटन (अधिलाभ सहित) पर ₹ 40, प्रथम मॉंग पर ₹ 20 एवं द्वितीय तथा अंतिम मांग पर ₹ 20 की धनराशि प्राप्य थी। सभी अंश अभिदत्त हुए तथा संपूर्ण धनराशि प्राप्त हुई। अंश निर्गमन व्यय ₹ 20,000 थे जो प्रतिभूति अधिलाभ संचय खाते से पूर्णतः अपलेखित कर दिए गए। आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए एवं बैंक खाता, प्रतिभूति अधिलाभ खाता तथा आर्थिक चिट्ठा बनाइए।

हल :

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
	बैंक खाता नाम अंश आवेदन खाते से (20,000 अंशों पर ₹ 40 प्रति अंश की दर से आवेदन राशि प्राप्त हुई)		8,00,000	 8,00,000
	अंश आवेदन खाता नाम अंश पूँजी खाते से (आवेदन राशि का अंश पूँजी खाते में हस्तांतरण)		8,00,000	 8,00,000
	अंश आबंटन खाता नाम अंश पूँजी खाते से प्रतिभूति अधिलाभ संचय खाते से (अधिलाभ सहित आबंटन राशि देय)		8,00,000	 4,00,000 4,00,000
	बैंक खाता नाम अंश आबंटन खाते से (अधिलाभ सहित आबंटन राशि प्राप्त)		8,00,000	 8,00,000
	अंश प्रथम मांग नाम अंश पूँजी खाते से (20,000 अंशों पर ₹ 20 प्रति अंश की दर से प्रथम माँग देय)		4,00,000	 4,00,000
	बैंक खाता नाम अंश प्रथम माँग खाते से (अंश प्रथम माँग राशि प्राप्त हुई)		4,00,000	 4,00,000
	अंश द्वितीय व अंतिम माँग खाता नाम अंश पूँजी खाते से (20,0000 अंशों पर ₹ 20 प्रति अंश की दर से द्वितीय व अंतिम माँग देय)		4,00,000	 4,000
	बैंक खाता नाम अंश द्वितीय व अंतिम माँग खाते से (द्वितीय व अंतिम मांग राशि प्राप्त हुई)		4,00,000	 4,00,000

टिप्पणी

	अंश निर्गमन व्यय खाता नाम बैंक खाते से (अंश निर्गमन व्ययों का भुगतान किया)		20,000	20,000
	अंश अधिलाभ संचय खाता नाम अंश निर्गमन व्यय खाते से (अंश निर्गमन व्ययों का अपलेखन अंश अधिलाभ संचय खाते से किया)		20,000	20,000

बैंक खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
अंश आवेदन खाता	8,00,000	अंश निर्गमन व्यय	20,000
अंश आबंटन खाता	8,00,000	अंतिम शेष	23,80,000
अंश प्रथम माँग खाता	4,00,000		
अंश द्वितीय माँग खाता	4,00,000		
	24,00,000		24,00,000

प्रतिभूति अधिलाभ संचय खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
अंश निर्गमन व्यय खाता	20,000	अंश आबंटन खाता	4,00,000
अंतिम शेष	3,80,000		
	4,00,000		4,00,000

सुनीता लिमिटेड का आर्थिक चिट्ठा
दिनांक .... को

विवरण	*नोट*	*₹*
I. समता एवं देयताएँ		
(1) अंशधारक निधि		
(क) अंश पूँजी	1	20,00,000
(ख) संचय एवं आधिक्य	2	3,80,000

टिप्पणी

नोट 1

अंश पूँजी

अधिकृत पूँजी	
50,000 समता अंश ₹ 100 प्रत्येक	50,00,000
निर्गमित पूँजी	
20,000 समता अंश ₹ 100 प्रत्येक	20,00,000
अभिदत्त पूँजी	
अभिदत्त तथा पूर्ण प्रदत्त	
20,000 समता अंश ₹ 100 प्रत्येक	20,00,000

नोट 2

संचय एवं आधिक्य

प्रतिभूति अधिलाभ संचय	3,80,000

कंपनी के आर्थिक चिट्ठे में अंश पूँजी का दर्शाया जाना (लम्बत रूप)

कंपनी अधिनियम 1956 की अनुसूची VI भाग I के अनुसार एक कंपनी के आर्थिक चिट्ठे में अंश पूँजी निम्न प्रकार दर्शाई जाती है :

कंपनी का आर्थिक चिट्ठा (लिया गया अंश)

दिनांक .... को

विवरण	*नोट संख्या*	*₹*
I. समता तथा देयताएँ		
(1) अंशधारक निधि		
(क) अंश पूँजी		
(ख) संचय एवं आधिक्य		
(ग) अंश वारंट के विरूद्ध प्राप्त धनराशि		
(2) आबंटन लंबित अंश आवेदन राशि		

टिप्पणी :

आर्थिक चिट्ठे के केवल मुख्य पृष्ठ पर अंश पूँजी दर्शाई जाती है तथा अंश पूँजी से संबंधित अन्य सूचनाएँ 'नोट्स टू अकाउंट्स' में दर्शाई जाती हैं।

टिप्पणी

उदाहरण 5

ABC लिमिटेड ने ₹ 10 वाले 80,000 समता अंशों हेतु आवेदन आमंत्रित किए। धनराशि इस प्रकार देय थी :

आवेदन पर ₹ 3; आबंटन पर ₹ 3; प्रथम मांग पर ₹ 2 तथा द्वितीय व अंतिम मांग पर ₹ 2।

सभी अंश आवेदित हुए तथा आबंटन व मांगों पर संपूर्ण धनराशि प्राप्त हुई। अंश निर्गमन व्यय ₹ 8,000 थे। आपसे अपेक्षा है कि आप ABC लिमिटेड का रोजनामचा, खाते तथा आर्थिक चिट्ठा बनाइए।

हल :

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
	बैंक खाता नाम अंश आवेदन खाते से (80,000 अंशों पर ₹ 3 प्रत्येक की दर से आवेदन राशि प्राप्त हुई)		2,40,000	2,40,000
	अंश आवेदन खाता नाम अंश पूँजी खाते से (आवेदन राशि का अंश पूँजी खाते में हस्तांतरण)		2,40,000	2,40,000
	अंश आबंटन खाता नाम अंश पूँजी खाते से (80,000 अंशों पर ₹ 3 प्रत्येक की दर से आबंटन राशि देय हुई)		2,40,000	2,40,000
	बैंक खाता नाम अंश आबंटन खाते से (आबंटन राशि प्राप्त हुई)		2,40,000	2,40,000
	अंश प्रथम मांग खाता नाम अंश पूँजी खाते से (80,000 अंशों पर ₹ 2 की दर से मांग राशि देय हुई)		1,60,000	1,60,000

	बैंक खाता नाम अंश प्रथम मांग खाते से (प्रथम मांग राशि प्राप्त हुई)		1,60,000	1,60,000
	अंश द्वितीय व अंतिम मांग खाता नाम अंश पूँजी खाते से (80,000 अंशों पर ₹ 2 प्रत्येक की दर से द्वितीय व अंतिम मांग राशि देय हुई)		1,60,000	1,60,000
	बैंक खाता नाम अंश द्वितीय व अंतिम मांग खाते से (द्वितीय व अंतिम मांग राशि प्राप्त हुई)		1,60,000	1,60,000
	अंश निर्गमन व्यय नाम बैंक खाते से (अंश निर्गमन व्ययों का भुगतान किया)		8,000	8,000

बैंक खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
अंश आवेदन खाता	2,40,000	अंश निर्गमन व्यय	8,000
अंश आबंटन खाता	2,40,000	अंतिम शेष आ. ले.	7,92,000
अंश प्रथम मांग खाता	1,60,000		
अंश द्वितीय व अंतिम मांग खाता	1,60,000		
	8,00,000		8,00,000

अंश आवेदन खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
अंश पूँजी खाता	2,40,000	बैंक खाता	2,40,000
	2,40,000		2,40,000

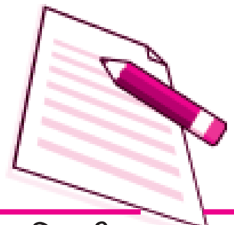

टिप्पणी

अंश आबंटन खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
अंश पूँजी खाता	2,40,000	बैंक खाता	2,40,000
	2,40,000		2,40,000

अंश प्रथम मांग खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
अंश पूँजी खाता	1,60,000	बैंक खाता	1,60,000
	1,60,000		1,60,000

अंश द्वितीय व अंतिम मांग खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
अंश पूँजी खाता	1,60,000	बैंक खाता	1,60,000
	1,60,000		1,60,000

अंश पूँजी खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
अंतिम शेष आ. ले.	8,00,000	अंश आवेदन खाता	2,40,000
		अंश आबंटन खाता	2,40,000
		अंश प्रथम मांग खाता	1,60,000
		अंश अंतिम मांग खाता	1,60,000
	8,00,000		8,00,000

अंश निर्गमन व्यय खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
बैंक खाता	8,000	अंतिम शेष आ. ले.	8,000
	8,000		8,000

ABC लिमिटेड का आर्थिक चिट्ठा

दिनांक .... को

विवरण	नोट	₹
I. समता एवं देयताएँ		
(1) अंशधारक निधि		
(क) अंशधारक निधि	1	8,00,000
II. संपत्तियाँ		
(1) अचल संपत्तियाँ		
(क) अन्य अंचल संपत्तियाँ	2	8,000

नोट 1

अंश पूँजी

अधिकृत पूँजी

.... समता अंश ₹ 10 प्रत्येक	....

निर्गमित पूँजी

80,000 समता अंश ₹ 10 प्रत्येक	8,00,000

अभिदत्त पूँजी

अभिदत्त तथा पूर्ण प्रदत्त

80,000 समता अंश ₹ 10 प्रत्येक	8,00,000

नोट 2

अन्य अचल संपत्तियाँ

अपरिशोधित व्यय

अंश निर्गमन व्यय	8,000

टिप्पणी

27.4 अंशों का बट्टे पर निर्गमन (Issue of Shares at Discount)

जब अंशों का निर्गमन मूल्य उनके अंकित मूल्य से कम है तो अंशों का बट्टे पर निर्गमन कहा जायेगा। उदाहरण के लिए यदि कंपनी अपने ₹ 100 के अंश का ₹ 90 में निर्गमन करती है तो हम कहेंगे कि अंशों का बट्टे पर निर्गमन किया गया है। यहाँ बट्टे की राशि ₹ 10 प्रति अंश है (अर्थात ₹ 100 - ₹ 90) अंशों पर बट्टा कंपनी के लिए हानि है।

कंपनी अधिनियम 1956 की धारा 79 में कुछ शर्तें दी गई हैं; जिन पर कंपनी अपने अंशों को बट्टे पर जारी कर सकती है।

यह शर्तें इस प्रकार हैं :

(i) व्यवसाय आरम्भ करने की पात्रता की तिथि से कम से कम एक वर्ष का समय हो चुका हो;

(ii) ऐसे अंश उसी श्रेणी के हों जो कंपनी पहले जारी कर चुकी हो;

(iii) कंपनी ने उसको अपनी साधारण सभा में प्रस्ताव पास कर स्वीकृति प्रदान कर दी हो तथा केंद्रीय सरकार ने इसका अनुमोदन कर दिया हो;

(iv) बट्टे की दर 10% से अधिक न हो। यदि कंपनी ने 10% से अधिक बट्टा देने का इरादा किया है तो इसकी केन्द्रीय सरकार से अनुमति लेनी होगी।

अंशों के बट्टे पर निर्गमन का लेखांकन व्यवहार (Accounting Treatment of Shares Issued at Discount)

बट्टे की राशि को साधारणतया अंश आबंटन राशि के साथ निम्न रोजनामचा प्रविष्टि करके समायोजित किया जाता है :

अंश आबंटन खाता नाम
अंश बट्टा खाता नाम
    अंश पूंजी खाता से
(₹ .... प्रति अंश के .... अंशों पर ₹ ....
प्रति अंश बट्टा काटकर आबंटन राशि देय)

उदाहरण 6

श्री कृष्ण एगरो केमीकल लि. को ₹ 50,00,000 के पूँजी से पंजीकृत कराया गया जो ₹ 100 प्रति अंश के 50,000 अंशों में विभक्त थी। इसमें 10,000 अंश ₹ 10 प्रति अंश बट्टे पर जारी किए जिन पर भुगतान इस प्रकार होना था।

₹ 40 प्रति अंश आवेदन पर

₹ 30 प्रति अंश आबंटन पर

₹ 20 प्रति अंश याचना पर

कंपनी को 15,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। 12,000 अंशों के प्राथना पत्रों पर 10,000 अंशों का आबंटन किया गया तथा शेष आवेदकों को खेद पत्र भेज दिये गये तथा उनकी आवेदन राशि को लौटा दिया गया। याचना राशि मांगी गई। आबंटन राशि एवं याचना राशि समय पर प्राप्त हुई। कंपनी की लेखा पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

टिप्पणी

हल :

श्री कृष्ण एग्रो केमीकल्स लि.
रोजनामचा प्रविष्टियां

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
1.	बैंक खाता नाम अंश आवेदन खाता से (15,000 अंशों के लिए ₹ 40 प्रति अंश से आवेदन राशि प्राप्त हुई)		6,00,000	6,00,000
2.	अंश आवेदन खाता नाम अंश पूँजी खाता से (10,000 अंशों के लिए प्रार्थना राशि का उनके आबंटन पर अंश पूँजी खाते में हस्तान्तरण)		4,00,000	4,00,000
3.	अंश आवेदन खाता नाम अंश आबंटन खाता से बैंक खाता से (3,000 अंशों की प्रार्थना राशि लौटाई गई एवं 2,000 अंशों की आबंटन राशि में समायोजित की गई)		2,00,000	80,000 1,20,000
4.	अंश आबंटन खाता नाम अंश बट्टा खाता नाम अंश पूँजी खाता से (अंश आबंटन राशि देय)		3,00,000 1,00,000	4,00,000
5.	बैंक खाता नाम अंश आबंटन खाता से (आबंटन की राशि प्राप्त हुई)		2,20,000	2,20,000
6.	अंश प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता नाम अंश प्रथम एवं अन्तिम से (याचना राशि देय)		2,00,000	2,00,000

7.	बैंक खाता नाम अंश प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता से (याचना राशि प्राप्त हुई)		2,00,000	2,00,000

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 27.4

रिक्त स्थानों में उचित शब्द/शब्दों को भरिए :

(i) अंशों का बट्टे पर निर्गमन कंपनी का .... होता है।

(ii) एक कंपनी ₹ 100 प्रति अंशों का निर्गमन करती है जिसमें 10% प्रति अंश बट्टे की राशि है। प्रति अंश पर प्राप्त .... है।

(iii) यदि ₹ 100 प्रति अंश पर 5 रु. बट्टा है तब अंश पूंजी खाता .... राशि से जमा किया जाएगा।

27.5 पूर्वदत्त याचना एवं अदत्त याचना

यदि कोई अंशधारी मांगने से पहले किसी राशि का भुगतान करता है तो इसे पूर्वदत्त याचना कहते हैं। इस राशि को एक अलग खाते में रखा जाता है जिसे 'पूर्वदत्त याचना खाता' (calls in advance account) कहते हैं। इस राशि को कंपनी की पूँजी के रूप में तब तक नहीं दिखाया जाता जब तक कि कंपनी सभी अंश धारकों से मांग न करे। पूर्वदत्त याचना खाते को स्थिति विवरण के दायित्व पक्ष की ओर दिखाया जाता है। उदाहरण के लिए यदि कोई कंपनी ₹ 10 मूल्य के अंश जारी करती है जिस पर यह ₹ 5 प्रति अंश मांग चुकी है। अब यदि ₹ 5 प्रति अंश के न मांगे गये भाग के विरुद्ध कंपनी ₹ 3 प्रति अंश मांगती है तो याचना के लिए केवल ₹ 3 प्रति अंश से प्रविष्टि की जायेगी। दूसरी ओर यदि एक अंशधारी ₹ 5 प्रति अंश जिसमें ₹ 2 न मांगा गया शेष भी सम्मिलित है भुगतान करता है तो इसका अभिप्राय हुआ कि उसने ₹ 2 प्रतिअंश पूर्वदत्त याचना का भुगतान किया है जिसे पूर्वदत्त याचना खाते के जमा में लिखा जायेगा। कंपनी को इस राशि पर 6% वार्षिक से समायोजन की तिथि तक का ब्याज देना होगा।

लेखा (Accounting Treatment)

पूर्वदत्त याचना की निम्नलिखित प्रविष्टि की जाएगी

बैंक खाता नाम
पूर्वदत्त याचना खाता से
(अंशों पर ₹ .... प्रति अंश से पूर्वदत्त याचना राशि प्राप्त हुई)

पूर्वदत्त याचना खाते का अन्तिम याचना में समायोजन :

रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

पूर्वदत्त याचना खाता नाम
अंश अंतिम याचना खाता से
(पूर्वदत्त याचना राशि का समायोजन)

पूर्वदत्त याचना पर ब्याज का भुगतान

रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

पूर्वदत्त याचना पर ब्याज खाता नाम
बैंक खाता से
(पूर्वदत्त याचना पर ब्याज का भुगतान)

उदाहरण 7

इन्डिया सॉफ्टवेयर लि. ने 50,000 अंश ₹ 10 प्रति अंश जनसाधारण को प्रस्तावित किए जिनका भुगतान इस प्रकार होना था।

₹ 2 आवेदन पर

₹ 3 आबंटन पर

₹ 2 प्रथम याचना पर तथा शेष आवश्यकता पड़ने पर

सभी अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए तथा उन्हें समुचित रुप से आबंटित कर दिया गया। एक अंशधारी मुकेश ने अपने 200 अंशों की पूरी राशि आबंटन राशि के साथ भुगतान कर दी।

आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल :

इन्डिया सॉफ्टवेयर लि.
रोचनामचा प्रविष्टियां

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	बैंक खाता नाम अंश आवेदन खाता से (50,000 अंशों के लिए ₹ 2 प्रति अंश से प्रार्थना राशि प्राप्त हुई)		1,00,000	1,00,000
	अंश आवेदन खाता नाम अंश पूँजी खाता से (अंशों के आबंटन पर आवेदन राशि का अंश पूँजी खाता में हस्तान्तरण)		1,00,000	1,00,000

टिप्पणी

	अंश आबंटन खाता नाम पूँजी खाता से (50,000 अंशों पर ₹ 3 प्रति अंश से आबंटन राशि देय हुई)		1,50,000	 1,50,000
	बैंक खाता नाम अंश आबंटन खाता से पूर्वदत्त याचना खाता से (आबंटन राशि ₹ 3 प्रति अंश से प्राप्त हुई एवं 200 अंशों पर ₹ 5 प्रति अंश पूर्वदत्त		1,51,000	 1,50,000 1,000
	राशि प्राप्त हुई) अंश प्रथम याचना खाता नाम अंश पूँजी खाता से (50,000 अंशों पर ₹ 2 प्रति अंश प्रथम याचना राशि प्राप्त हुई)		 1,00,000	 1,00,000
	बैंक खाता नाम पूर्वदत्त याचना खाता नाम अंश प्रथम याचना खाता से (49,800 अंशों पर प्रथम याचना राशि प्राप्त हुई तथा 200 अंशों पर प्राप्त पूर्वदत्त याचना राशि का समायोजन किया गया।)		99,600 400	 1,00,000

अदत्त याचना (Calls in Arrears)

जब कंपनी अंश धारकों को आबंटन तथा याचना राशियों का भुगतान करने का नोटिस देती है तो उन्हें इसका निश्चित अवधि में भुगतान करना होता है। यदि अंश धारकों ने इनका भुगतान नहीं किया है तो अदत्त राशि उन पर देय हो जाती है। इस बकाया राशि को अदत्त याचना राशि कहते हैं। इसे 'अदत्त' याचना खाता (Calls in arrears A/c) में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। देय राशि के प्राप्त न होने की तिथि से इसके प्राप्त हो जाने की तिथि के बीच की अवधि के लिए कंपनी को अदत्त राशि पर 5% वार्षिक से ब्याज लेने का अधिकार होता है।

लेखा (Accounting Treatment)

अदत्त राशि का लेखा करने के लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जायेगी :

अदत्त याचना खाता नाम
    अंश आबंटन/याचना खाता से
(............... अंशों पर आबंटन/याचना पर देय राशि प्राप्त नहीं हुई)

टिप्पणी

बाद में जब अदत्त राशि प्राप्त होती है तो निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाती है :

बैंक खाता   नाम
        अदत्त खाता से
(आबंटन/याचना पर देय राशि में से बकाया राशि प्राप्त हुई)

अदत्त याचना राशि पर कंपनी द्वारा ब्याज लगाना

कंपनी अदत्त याचना राशि पर निर्धारित दर से ब्याज लगा सकती है जब तक कि उसका भुगतान न किया जाय। ब्याज लगाने पर रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी –

बैंक खाता   नाम
        अदत्त याचना पर ब्याज खाता से
(.................. के अदत्त याचना राशि पर 10% वार्षिक
की दर से .... महीने का ब्याज)

उदाहरण 8

एक्स लि. ने ₹ 20 प्रति अंश से राशि की मांग 17 जुलाई 2006 को की। जाहिर, जो 200 अंशों का धारक था याचना राशि का भुगतान नहीं कर सका। उसने इसका भुगतान 31 दिसम्बर, 2006 को किया। कंपनी ने 12% वार्षिक की दर से उस पर ब्याज लिगाया। कंपनी द्वारा लगाए गये ब्याज की रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।

हल :

देय ब्याज की राशि = $4{,}000 \times \frac{12}{100} \times \frac{6}{12}$ = ₹ 240

रोजनामचा प्रविष्टि

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	बैंक खाता नाम अदत्त याचना पर ब्याज खाता से (अदत्त याचना राशि पर ब्याज प्राप्त हुआ)		240	 240

उदाहरण 9

ए. बी. सी. लि. ने 20,000 अंश ₹ 10 प्रति अंश से निर्गमित किए जिन पर भुगतान इस प्रकार से किया जाना है ₹ 2 प्रति अंश आवेदन पर, ₹ 5 प्रति अंश (₹ 2 प्रति अंश प्रीमियम राशि सम्मिलित) आबंटन पर, ₹ 3 प्रति अंश प्रथम याचना तथा शेष अन्तिम याचना पर।

टिप्पणी

सभी राशि प्राप्त हुई केवल 400 अंशों पर प्रथम याचना नहीं प्राप्त हुई जो बाद में अन्तिम याचना राशि के साथ प्राप्त हुई।

रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल :

रोजनामचा प्रविष्टियां

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
1.	बैंक खाता नाम अंश आवेदन खाता से (20,000 अंशों के लिए ₹ 2 प्रति अंश से प्रार्थना राशि प्राप्त हुई)		40,000	 40,000
2.	अंश आवेदन खाता नाम अंश पूँजी खाता से (20,000 अंशों पर प्राप्त प्रार्थना राशि का आबंटन पर पूँजी खाता में हस्तान्तरण)		40,000	 40,000
3.	अंश आबंटन खाता नाम अंश पूँजी खाता से प्रतिभूति प्रीमियम खाता से (20,000 अंशों पर ₹ 3 प्रति से ₹ 2 प्रीमियम सम्मिलित आबंटन राशि प्राप्त हुई)		1,00,000	 60,000 40,000
4.	बैंक खाता नाम अंश आबंटन खाता से (अंश आबंटन राशि प्राप्त हुई)		1,00,000	 1,00,000
5.	अंश प्रथम याचना खाता नाम अंश पूँजी खाता से (20,000 अंशों पर ₹ 3 प्रति अंश याचना राशि देय)		60,000	 60,000
6.	अदत्त याचना खाता नाम बैंक खाता नाम अंश प्रथम याचना खाता से (19,600 अंशों पर ₹ 3 प्रति अंश से याचना राशि प्राप्त हुई)		1,200 58,800	 60,000

टिप्पणी

7.	अंश अंतिम याचना खाता नाम अंश पूँजी खाता से (20,000 अंशों पर ₹ 2 प्रति अंश से अन्तिम याचना राशि प्राप्त हुई)		40,000	 40,000
8.	बैंक खाता नाम अंश अन्तिम याचना खाता से अदत्त याचना खाता से (प्रति अंश अंतिम याचना राशि 400 अंशों की अदत्त प्रथम याचना राशि सहित प्राप्त)		41,200	 40,000 1,200

उदाहरण 10

दि प्रोगरैसिव इन्डस्ट्रीज लि. का ₹ 50,00,000 पूँजी से पंजीकृत कराई गई 20,000 अंश ₹ 100 प्रति से निर्गमित गये जिन पर राशि देय इस प्रकार थी।

₹ 25 आवेदन पर, ₹ 25 आबंटन पर तथा शेष प्रथम एवं अन्तिम याचना पर तथा 10,000 9% पूर्वाधिकार अंश ₹ 100 प्रतिअंश से निर्गमित किए जिन पर ₹ 50 आवेदन एवं आबंटन पर एवं ₹ 25 प्रति से दो याचना तथा उन्हें आबंटित किया गया। सभी राशि प्राप्त हुई।

कंपनी की लेखा पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल

प्रोगरैसिव इन्डस्ट्रीज लि.

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
1.	बैंक खाता नाम समता अंश आवेदन खाता से 9% पूर्वाधिकार अंश आवेदन एवं आबंटन खाता से (2,000 समता अंशों के लिए ₹ 25 प्रति अंश एवं 10,000 9% पूर्वाधिकार अंशों पर ₹ 50 प्रति अंश आवेदन पर प्राप्त हुए)		10,00,000	 5,00,000 5,00,000
2.	समता अंश आवेदन खाता नाम 9% पूर्वाधिकार अंश आवेदन एवं आबंटन खाता नाम समता अंश पूँजी खाता से 9% पूर्वाधिकार अंश पूँजी खाता से (आवेदन राशि का पूँजी खातों में हस्तान्तरण)		5,00,000 5,00,000	 5,00,000 5,00,000

टिप्पणी

3.	समता अंश आबंटन खाता नाम समता अंश पूँजी खाता से (20,000 समता अंश पर ₹ 25 प्रति अंश आबंटन राशि देय)		5,00,000	 5,00,000
4.	9% पूर्वाधिकार अंश प्रथम याचनानाम 9% पूर्वाधिकार अंशपूँजी खाता से (10000 9% पूर्वाधिकार अंशों पर ₹ 25 प्रतिअंश प्रथम याचना देय)		2,50,000	 2,50,000
5.	बैंक खाता नाम समता अंश आबंटन खाता से 9% पूर्वाधिकार अंश प्रथम याचना खाता से (समता अंशों पर आबंटन एवं 9% पूर्वाधिकार अंशों पर प्रथम याचना राशि प्राप्त हुई)		7,50,000	 5,00,000 2,50,000
6.	समता अंश प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता नाम 9% पूर्वाधिकार अंश अन्तिम याचना खाता नाम समता अंश पूँजी खाता से 9% पूर्वाधिकार अंश खाता से (प्रथम एवं अन्तिम याचना समता अंशों पर अन्तिम याचना पूर्वाधिकर अंशों परदेय)		 10,00,000 2,50,000	 10,00,000 2,50,000
7.	बैंक खाता नाम समता अंश प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता से 9% पूर्वाधिकार अंश अन्तिम याचना से (समता अंशों पर एवं पूर्वाधिकार अंशों पर क्रमशः प्रथम एवं अन्तिम याचना राशि एवं अन्तिम याचना राशि प्राप्त हुई)		12,50,000	 10,00,000 2,50,000

पाठगत प्रश्न 27.5

रिक्त स्थानों में उपयुक्त शब्द अथवा अंक भरिए :

(i) कंपनी द्वारा मांगी गई याचना राशि का यदि किसी अंशधारी ने भुगतान नहीं किया है तो इसे .... खाते के नाम में लिखा जाएगा।

(ii) एक अंश धारक आबंटन पर ₹ 6 प्रति अंश से भुगतान करता है जिसमें ₹ 2 प्रति अंश अगली याचना के लिए है। यह अतिरिक्त राशि कहलाती .... है।

(iii) कम्पनी द्वारा अदत्त याचना राशि पर लगाया गया ब्याज को .... के जमा में लिखा जाएगा।

(iv) पूर्वदत्त याचना राशि पर दिया गया ब्याज .... के नाम लिखा जाएगा।

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

- अंश का अंकित मूल्य उसका सममूल्य होता है। अंशों को रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के बदले जारी किया जा सकता है जैसे कि परिसम्पत्ति के क्रय के बदले अथवा लेनदार या प्रवर्तकों का भुगतान के रूप में।
- अंश राशि को एक मुश्त या किश्तों में एकत्रित किया जा सकता है।
- पहली किश्त को आवेदन राशि तथा दूसरी किश्त को अंश आबंटन राशि कहा जाता है।
- यदि अंश राशि को दो से अधिक किश्तों में एकत्रित किया जाता है इसे याचना राशि कहते है।
- अंशों के लिए आवेदन जारी किए गये अंशों की संख्या के बराबर (पूर्ण अभिदान), जारी किए गये अंशों की संख्या से कम (अल्प अभिदान), जारी किए गये अंशों की संख्या से अधिक (आधिक्य अभिदान) के लिए प्राप्त किया जा सकता है।
- जब अंशों को उनके अंकित मूल्य से अधिक पर जारी किया जाता है इन्हें प्रीमियम पर जारी करना कहते हैं प्रीमियम राशि को कंपनी अधिनियम की धारा 78 में निर्धारित उद्देश्यों के लिए ही उपयोग में लाया जा सकता है।
- जब अंश का उनके अंकित मूल्य से कम पर जारी किया जाता है तो इन्हें बट्टे पर जारी करना कहते हैं। कंपनी अधिनियम की धारा 79 में कुछ शर्तें दी गई है अंशों को बट्टे पर जारी करते समय जिन्हें पूरा करना होता है।
- जब कोई अंशधारी कंपनी द्वारा मांगी गई आबंटन राशि अथवा अंश याचना राशि को मांगने में असमर्थ रहता है तो अंशधारियों के अदत्त शेष को अदत्त याचना कहा जाता है। यदि अंशधारी उस याचना का भुगतान भी कर देता है जो मांगी नहीं गई है तो भुगतान की गई राशि को पूर्वदत्त याचना कहते हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. अंशों के अधिक्य अभिदान (over subscription) से क्या अभिप्राय है? आधिक्य अभिदान राशि के साथ क्या व्यवहार किया जाता है?

टिप्पणी

2. अंशों के प्रीमियम पर जारी करने का क्या अर्थ है? प्रीमियम की राशि का उपयोग किन उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है बताइए।

3. अंशों के बट्टे पर जारी करने का क्या अर्थ है? कंपनी अधिनियम के अन्तर्गत अंशों के बट्टे पर जारी करने से सम्बन्धित शर्तों को बताइए।

4. संक्षेप में निम्न शब्दों को समझाइए :

   (1) अदत्त याचना

   (2) पूर्वदत्त याचना

5. रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए :

   (क) एक्स, वाई लि. कंपनी, जिसकी पूँजी ₹ 10 के 20,000 अंशों में विभक्त है, ने 6,000 अंश जनसाधारण को जारी किए। पूरी राशि का भुगतान आवेदन के साथ किया जाना था। सभी अंशों का अभिदान हुआ तथा प्रार्थना राशि प्राप्त हुई।

   (ख) एक लिमिटेड कंपनी ने 10,000 समता अंश 100 प्रति अंश निर्गमित किये जिन पर भुगतान इस प्रकार से किया जाना है ₹ 25 प्रति अंश आवेदन राशि, ₹ 25 प्रति अंश आबंटन पर एवं ₹ 25 प्रति अंश प्रति याचना अन्य दो याचनाओं पर सभी राशि समय पर प्राप्त हुई।

   (ग) एक्स लि. ने 10,000 अंश ₹ 10 प्रति अंश ₹ 15 पर निर्गमित किये जिन पर भुगतान इस प्रकार किया जाना था। ₹ 3 आवेदन राशि, ₹ 8 आबंटन पर जिसमें ₹ 5 प्रीमियम का सम्मिलित है एवं ₹ 4 याचना पर। सभी अंशों का अभिदान हुआ, आबंटन किया गया तथा राशि समय पर प्राप्त हुई।

   (घ) एक लिमिटेड कम्पनी ने ₹ 20 प्रति अंश 10,000 अंश 10% बट्टे पर निर्गमित किए। अंशों का भुगतान ₹ 4 प्रति अंश आवेदन राशि, ₹ 8 प्रति अंश आबंटन पर एवं शेष प्रथम याचना पर किया जाना था। सभी राशियां समय पर प्राप्त हुई।

6. (क) अक्षय लि. ने ₹ 10 प्रति अंश से 20,000 अंश निर्गमित किए जिन पर भुगतान इस प्रकार किया जाना था।

   ₹ 2 आवेदन राशि, ₹ 2 आबंटन पर, ₹ 3 प्रथम याचना पर तथा शेष अंतिम याचना पर/प्रथम याचना राशि मांगी गई। सभी सदस्यों ने इसका भुगतान कर दिया। एक सदस्य जो 800 अंशों का धारक है उसने शेष देय भी पूरा भुगतान कर दिया तत्पश्चात अंतिम याचना की गई जिसका पूरा भुगतान हो गया।

   रोजनामचा में प्रविष्टियाँ कीजिए

   (ख) निर्मल लि, जिसकी अधिकृत पूँजी ₹ 10,00,000 है जो ₹ 10 के अंशों में बंटी है, ने 50,000 अंश जारी किए जिनका भुगतान इस प्रकार होना था ₹ 2 प्रति अंश प्रार्थना राशि, ₹ 3 आबंटन पर, 2.50 प्रति अंश से तीन महीने के पश्चात। सभी राशि समय पर प्राप्त हुई लेकिन जब ₹ 2.50 की याचना की गई तो 200 अंशों

के एक धारक ने भुगतान नहीं किया जबकि एक अन्य ने जिसके पास 400 अंश है पूरा शेष का भुगतान कर दिया। रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए।

7. गुडलक लि. कम्पनी ने 50,000 अंश ₹ 10 प्रति अंश को ₹ 4 प्रीमियम पर जारी किया जिन पर भुगतान इस प्रकार होना था :

   आवेदन पर ₹ 2 प्रति अंश

   आबंटन पर ₹ 6 प्रति अंश (₹ 3 प्रति अंश प्रीमियम सहित)

   प्रथम एवं अन्तिम याचना पर ₹ 6 प्रति अंश सहित (₹ 1 प्रीमियम सहित)

   आवेदन पर आधिक्य भुगतान केवल आबंटन में समायोजित किया जाएगा। 75,000 अंशों के लिए आवेदन पत्र प्राप्त हुए। 15,000 अंशों के प्रार्थियों को क्षमा याचना पत्र भेजे गये तथा उनकी पूरी राशि लौटा दी गई। 15,000 अंशों के लिए आवेदकों को 5,000 अंशों का आबंटन किया गया। आबंटन तथा याचना पर देय पूरी राशि प्राप्त हुई।

   रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए।

टिप्पणी

8. सुपर इन्डिया पैट्रो केमीकल्स् लि. को 1 करोड. की पूँजी से पंजीकृत कराया गया जो ₹ 100 प्रति के अंशों में विभक्त की गई। कंपनी ने ₹ 25 लाख का संयंत्र खरीदा तथा भुगतान ₹ 25 प्रीमियम पर अंशों में किया। कंपनी ने ₹ 50 लाख के अंश ₹ 25 प्रीमियम पर जनसाधारण को जारी किए। इन पर भुगतान इस प्रकार देय था :

   ₹ 65 आवेदन एवं आबंटन पर

   ₹ 30 प्रथम याचना पर

   शेष अन्तिम याचना पर

   कंपनी को 75,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए जिनका आबंटन इस प्रकार से किया गया।

10,000 अंशों के आवेदक	शून्य
40,000 अंशों के आवेदक	पूर्ण
25,000 अंशों के आवेदक	10,000

   सभी से आबंटन राशि प्राप्त हुई लेकिन जब याचना राशि मांगी गई तो 400 अंशों के एक धारक को छोडकर सभी ने पूरी राशि का भुगतान कर दिया। वह सम्पूर्ण आबंटन वर्ग में से था तथा उसने प्रथम याचना का भुगतान नहीं किया लेकिन बाद में अन्तिम याचना के साथ इसका भुगतान कर दिया।

   कंपनी अग्रिम याचना राशि पर 6% वार्षिक से ब्याज देती है तथा अदत्त याचना पर 12% वार्षिक से ब्याज लेती है। आबंटन के पश्चान प्रति 2 माह के अन्तराल पर याचना राशि मांगी गई।

   कंपनी की लेखा पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

27.1 (i) मूल्यांकित (ii) विक्रेता (iii) किश्तें (iv) प्रार्थी/आवेदक

27.2 (i) अधि–अभिदान (ii) अंश प्रथम याचना
(iii) मांग पूँजी (iv) नहीं कर सकते

27.3 (i) लाभ (ii) ₹ 3 (iii) प्रतिभूति प्रीमियम (iv) ₹100 प्रति अंश

27.4 I. (i) हानि (ii) ₹ 90 (iii) ₹ 100 प्रतिअंश

II. (i) अदत्त याचना
(ii) पूर्वदत्त याचना
(iii) अदत्त याचना पर ब्याज खाता
(iv) पूर्वदत्त याचना पर ब्याज खाता

28
अंशों की जब्ती

पिछले पाठ में आप एक संयुक्त पूँजी कंपनी के अंशों एवं उनके निर्गमन के संबंध में जान चुके हैं। आप यह भी जान चुके हैं कि निर्गमित अंशों का मूल्य किश्तों में चुकाया जाता है जैसे कि आवेदन पर, आबंटन पर, तथा कंपनी के निर्देशक मण्डल द्वारा समय-समय पर मांगी गई याचनाओं पर। कभी–कभी कुछ अंश धारक याचना राशि का पूर्ण भुगतान नहीं कर पाते हैं अर्थात उनको अंशों के आबंटन के पश्चात वह एक या दो याचनाओं का भुगतान नहीं करते हैं। ऐसा होने पर चूककर्ता अंशधारी के खिलाफ या तो कंपनी न्यायालय की शरण ले सकती है तथा देय राशि की वसूली के लिए मुकदमा कर सकती है या फिर उनके अंशों को रद्द कर सकती है। यदि सदस्यता रद्द हो जाती है तो चूककर्ता सदस्य द्वारा भुगतान की गई राशि जब्त कर ली जाती है। इसे अंशों की जब्ती कहते हैं।

इस पाठ में अंशों के जब्त करने की विभिन्न स्थितियों एवं उनके लेखाकरण का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- अंशों के जब्त करने के अर्थ को समझा सकेंगे;
- अंशों के जब्त किये जाने की विभिन्न परिस्थितियों को समझा सकेंगे;
- सम मूल्य पर निर्गमित, बट्टे पर निर्गमित एवं प्रीमियम पर निर्गमित अंशों के जब्त किये जाने पर लेखाकरण व्यवहार को समझा सकेंगे; तथा
- संबंधित खातों को तैयार कर सकेंगे।

टिप्पणी

28.1 अर्थ एवं प्रक्रिया

यदि एक अंशधारक कंपनी द्वारा निर्गमित अंशों पर देय आबंटन अथवा किसी भी याचना राशि का भुगतान नहीं करता है तो निर्देशक मण्डल उस व्यक्ति की कंपनी में सदस्यता को समाप्त कर सकता है।

अतः जब किसी अंशधारक की सदस्यता याचना राशि के भुगतान न करने के कारण समाप्त हो जाती है तो इसे अंशों की जब्ती (forfeiture of shares) कहते हैं। अंशों की जब्ती का परिणाम निम्न होता हैः

अंश धारक की सदस्यता समाप्त हो जाती है।
कंपनी की निर्गमित अंश पूँजी कम हो जाती है।

आइए एक उदाहरण के द्वारा इसे और स्पष्ट करें। एस. के. लि. ने ₹ 10 प्रति अंश के 100000 अंशों का निर्गमन किया जिनका भुगतान इस प्रकार किया जाना था : ₹ 2 आवेदन पर, ₹ 2 आबंटन पर, ₹ 3 प्रथम याचना पर एवं ₹ 3 द्वितीय व अंतिम याचना पर। हरीश जो 100 अंशों का धारक है कंपनी द्वारा मांगी गई द्वितीय एवं अंतिम याचना राशि का भुगतान नहीं कर पाया। इस स्थिति में यदि कंपनी का निर्देशक मण्डल उसके अंशों को जब्त करने का निर्णय लेता है तो उसकी सदस्यता रद्द कर दी जाएगी तथा उसने जो ₹ 700 का भुगतान किया है (100 अंशों पर ₹ 2 आवेदन राशि, ₹ 2 आबंटन राशि तथा ₹ 3 प्रथम याचना राशि) को जब्त कर लिया जाएगा। अब हरीश कंपनी का सदस्य नहीं रहेगा तथा कंपनी की निर्गमित पूँजी में से ₹ 100 कम हो जाएगा।

अंशों के जब्ती की प्रक्रिया (Procedure of Forfeiture of Shares)

अंशों के जब्त करने का अधिकार निर्देशक मण्डल को कंपनी के अन्तर्नियमों में दिया होता है। निर्देशक मण्डल चूककर्ता सदस्य को 14 दिन की सूचना देकर एक निश्चिन तिथि से पहले देय राशि को ब्याज सहित या ब्याज के बिना, जैसा भी निर्णय लिया गया हो, अदत्त राशि का भुगतान करने के लिए कहता है। नोटिस में यह कहा जाता है कि यदि इसमें घोषित राशि का निर्धारित तिथि तक भुगतान नहीं किया गया तो निर्देशक मण्डल एक प्रस्ताव पारित कर इन अंशों को जब्त कर सकते हैं। जब्त करने के निर्णय से आबंटी को अवगत कराया जाए तथा उसे जब्त किये गये अंशों के आबंटन पत्र एवं अंश प्रमाणपत्रों को कंपनी को लौटाने को कहा जाएगा।

पाठगत प्रश्न 28.1

उचित शब्द/शब्दों को भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) यदि कोई अंशधारी अंशों पर देय राशि का भुगतान नहीं कर पाता है तो निर्देशक मण्डल अंशों का .... कर सकते हैं।

(ii) अंशों की जब्ती का अर्थ है

(क) ....

(ख) ....

(iii) अंशों की जब्ती का अधिकार कंपनी के .... में दिया होता है।

(iv) निर्देशक मण्डल को कम से कम .... दिन का नोटिस चूककर्ता सदस्य को देना होता है।

28.2 लेखाकरण (Accounting Treatment)

आप यह जान चुके हैं कि अंशों को सममूल्य बट्टे पर, तथा प्रीमियम पर जारी किया जा सकता है इन स्थितियों में अंशों की जब्ती का लेखांकन इस प्रकार से किया जाएगा :

1. सममूल्य पर जारी अंशों की जब्ती

जब सममूल्य पर जारी अंशों को जब्त किया जाता है तो लेखांकन इस प्रकार से होता है:

(i) जब्त के समय तक प्रति अंश मांगी गई राशि (चाहे प्राप्त हुई है अथवा नहीं) से अंश पूँजी खाते के नाम में लिखा जाएगा।

(ii) जब्त के समय तक प्राप्त राशि से अंश जब्त खाता के जमा में लिखा जाएगा।

(iii) अदत्त याचना खाता के जमा में जब्त किये अंशों पर देय राशि को लिखा जाएगा।

(iv) यह इस प्रकार की याचनाओं के नाम के प्रभाव को समाप्त कर देगी यह उस समय होती है जब राशि देय हो जाती है

रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार से होगी

अंश पूँजी खाता	नाम	(मांगी गई राशि)
अंश जब्त खाता से		(भुगतान कर दी गई राशि)
अदत्त याचना खाता से		(राशि जो मांग ली गई लेकिन भुगतान नहीं हुआ)

नोट :

(i) मांगी गई राशि = अंशों की संख्या × प्रति अंश मांगी गई राशि

(ii) भुगतान की गई राशि = अंशों की संख्या × प्रति अंश प्रदत्त राशि

(iii) मांगी गई राशि जिसका भुगतान नहीं किया गया है = अंशों की संख्या × प्रति अंश मांगी गई राशि जिसका भुगतान नहीं हुआ है।

टिप्पणी

उदाहरण 1

₹ 10 प्रति अंश के 100 अंशों का धारक एक्स (X) ने ₹ 2 प्रतिअंश आवेदन राशि, ₹ 3 प्रतिअंश आबंटन राशि का भुगतान कर दिया है जो कि ₹ 2 प्रति अंश से प्रथम याचना तथा ₹ 3 प्रति अंश से द्वितीय याचना का भुगतान नहीं किया है। उसके अंशों को जब्त कर लिया गया है। अंशों के जब्त करने पर लेखा करने के लिए रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।

हल :

रोजनामचा प्रविष्टि

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	अंश पूँजी खाता (100 × ₹ 10) नाम		1000	
	अंश जब्ती खाता (100 ₹ 5) से			500
	अंश प्रथम याचना खाता (100 ₹ 2) से			200
	अंश द्वितीय याचना तथा अन्तिम याचना खाता से			300
	(100 अंशों की जब्ती)			

उदाहरण 2

अल्फा लि. ने 10000 अंश ₹ 100 प्रति अंशों का निर्गमन किया जो इस प्रकार देय था :

₹ 25 आवेदन पर

₹ 25 आबंटन पर

₹ 20 प्रथम याचना पर

₹ 30 द्वितीय एवं अंतिम याचना पर

9000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए तथा उनका आबंटन कर दिया गया। सभी राशि प्राप्त कर ली गई केवल गणेश को आबंटित 300 अंशों पर आबंटन प्रथम याचना तथा द्वितीय एवं अन्तिम याचना राशि प्राप्त नहीं हुई। निर्देशक मण्डल ने इन अंशों को जब्त करने का निर्णय लिया। अंशों के जब्त करने से सम्बन्धित लेनदेनों की रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।

हल :

रोजनामचा प्रविष्टि

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	अंश पूँजी खाता (300 ₹ 100) नाम		30,000	

	अंश जब्ती खाता (300 ₹ 25) से			7,500
	अंश आबंटन खाता (300 ₹ 25) से			7,500
	अंश प्रथम याचना खाता (300 ₹ 20) से			6,000
	अंश द्वितीय याचना खाता (300 ₹ 30.) से			9,000
	(₹ 100 प्रति अंश के 300 अंशों का आबंटन, एवं याचना राशि के भुगतान न करने पर जब्त कर लिया गया)			

अनुपातिक आधार पर आबंटित अंशों को जब्त करना (Forfeiture of Shares Allotted on Pro-rata Basis)

अंशों के अधि-अभिदान की स्थिति में आवेदकों को आबंटन की एक योजना यह भी होती है कि उन्हें कंपनी अंशों की वह संख्या जिनके आवेदन को कंपनी आबंटन के योग्य मानती है तथा अंशों की वह संख्या जिनके अभिदान के लिए कंपनी ने प्रस्ताव किया है इन दोनों के अनुपात में आवेदकों को अंशों का आबंटन किया जाता है। इसे अंशों का अनुपातिक आबंटन (Prorata allotment) कहते हैं। अनुपातिक आबंटन में अतिरिक्त आवेदन राशि को अंश आवेदन खाते से आबंटन खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। यदि कोई अंशधारक अपने अंशों पर आबंटन एवं याचना राशि का भुगतान नहीं कर पाता है तो देय लेकिन भुगतान नहीं की गई राशि का निर्धारण इस प्रकार से होगा :

(i) आबंटन हेतु प्राप्त अंशों के लिए आवेदन की संख्या

$$= \frac{\text{अंशों की कुल संख्या जिनके लिए आवेदन प्राप्त हुए हैं} \times \text{भुगतान के लिए दोषी को आबंटित अशों की संख्याा}}{\text{कुल आबंटित अंशों की कुल संख्या}}$$

(ii) अंशों की कुल संख्या जिनके लिए आवेदन प्राप्त हुए है (चरण के अनुसार) – आबंटित अंशों की संख्या = अतिरिक्त अंश जिनके लिए आवेदन प्राप्त हुए हैं।

(iii) अतिरिक्त प्राप्त आवेदन राशि = अतिरिक्त अंश जिनके लिए प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए × प्रति अंश आवेदन राशि

(iv) आबंटन पर अप्राप्य राशि = आबंटन पर देय राशि अतिरिक्त आवेदन राशि जिसे आबंटन पर देय राशि में समायोजित किया गया है।

टिप्पणी

उदाहरण 3

एक कंपनी ने जनसाधारण को 10,000 अंश अभिदान हेतु प्रस्तावित किए। इसके पास 15,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। कंपनी ने अनुपातिक आधार पर अंशों के आबंटन का निर्णय लिया। गुणाक्षी, जिसके पास 200 अंश थे, ने आबंटन राशि एवं प्रथम याचना राशि का भुगतान नहीं किया उसके अंशों को जब्त कर लिया गया।

देय राशि इस प्रकार थी :

₹ 2 आवेदन पर

₹ 3 आबंटन पर

₹ 5 याचना पर

कंपनी की लेखापुस्तकों में प्रविष्टियाँ कीजिए और संबंधित खाते बनाइये।

हल :

कार्यकारी टिप्पणी : गुणाक्षी द्वारा आवेदन किये गये अंशों की संख्या =

$$\frac{\text{कुल अंश जिनके लिए आवेदन प्राप्त हुए} \times \text{गुणाक्षी को आबंटित अंश}}{\text{कुल अंश जिनका आबंटन किया गया}}$$

$$= \frac{15,000}{10,000} \times 200 = 300$$

अतिरिक्त प्राप्त आवेदन = 300 – 200 = 100

अतिरिक्त आवेदन

राशि प्राप्त = 100 × 2 = ₹ 200

आबंटन पर देय राशि = 200 × 3 = ₹ 600

अतिरिक्त समायोजित आवेदन राशि = ₹ 200

आबंटन पर नहीं भुगतान की गई राशि = 600 – 200 = ₹ 400

रोजनामचा प्रविष्टियां

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
1.	बैंक खाता नाम अंश आवेदन खाता से (15,000 अंशों के लिए ₹ 2 प्रति अंश आवेदन राशि प्राप्त हुई)		30,000	30,000

टिप्पणी

2.	अंश आवेदन खाता नाम अंश पूँजी खाता से अंश आबंटन खाता से (10,000 अंशों की आवेदन राशि उनके आबंटन पर पूँजीखाता तथा 5,000 पर आबंटन खाते में हस्तान्तरित कर दी गई।)		30,000	 20,000 10,000
3.	अंश आबंटन खाता नाम अंश पूँजी खाता से (10,000 अंशों पर ₹ 3 प्रति अंश आबंटन राशि देय)		30,000	 30,000
4.	बैंक खाता नाम अंश आबंटन खाता से (9,800 अंशों पर आबंटन राशि प्राप्त)		19,600	 19,600
5.	अंश प्रथम एवं याचना खाता नाम अंश पूँजी खाता से (10,000 अंशों पर ₹ 5 प्रति अंश से याचना राशि देय)		50,000	 50,000
6.	बैंक खाता नाम अंश प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता से (9,800 अंशों पर ₹ 5 प्रति अंश याचना राशि प्राप्त)		49,000	 49,000
7.	अंश पूँजी खाता नाम अंश जब्ती खाता से अंश आबंटन खाता से अंश प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता से (200 अंशों को आबंटन एवं याचना राशि के भुगतान न करने पर जब्त किया)		2,000	 600 400 1,000

टिप्पणी

खाता बही

बैंक खाता

नाम | जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)
	अंश आवेदन खाता		30,000		शेष आ/ले		98,600
	अंश आबंटन खाता		19,600				
	अंश प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता		49,000				
			98,600				98,600
	शेष आ/ला		98,600				

अंश आवेदन खाता

नाम | जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)
	अंश पूँजी खाता		20,000		बैंक खाता		30,000
	अंश आबंटन खाता		10,000				
			30,000				30,000

अंश पूँजी खाता

नाम | जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)
	अंश जब्त खाता		600		अंश आवेदन खाता		20,000
	अंश आबंटन खाता		400		अंश आबंटन खाता		30,000
	अंश प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता		1,000		अंश प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता		50,000
	शेष आ/ले		98,000		शेष आ/ला		98,000
			1,00,000				1,00,000

अंश आबंटन खाता

नाम | जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)
	अंश पूँजी खाता		30,000		बैंक खाता		19,600
					अंश आवेदन खाता		10,000
					अंश पूँजी खाता		400
			30,000				30,000

अंश प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता

नाम | | | | | | | जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)
	अंश पूँजी खाता		50,000		बैंक खाता		49,000
					अंश पूँजी खाता		1,000
			50,000				50,000

अंश जब्ती खाता

नाम | | | | | | | जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)
	शेष आ/ले		600		अंश पूँजी खाता		600
			600				600
					शेष आ/ला		600

.... कं. का स्थिति विवरण
.... को

विवरण	नोट	₹
I. समता एवं देयताएँ		
(1) अंशधारक निधि		
(क) अंशधारक निधि	1	98,600

नोट 1

अंशधारक निधि

अधिकृत पूँजी

.... अंश ₹ 10 प्रति

निर्गमित पूँजी

10,000 अंश ₹ 10 प्रति अंश	1,00,000
घटा 200 जब्त किए गये	2,000
	98,000
अंश जब्ती खाता	600
	98,600

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 28.2

i. ₹ 100 प्रति अंश के 200 अंशों को ₹ 20 प्रति अंश की प्रथम याचना एवं ₹ 30 प्रति अंश की अन्तिम याचना के भुगतान न करने पर जब्त कर लिये गए। जब्त करने की रोजनामचा प्रविष्टि व प्रत्येक खाते के योग, राशि लिखें :

		₹	₹
अंश पूँजी खाता	नाम	(क)	
अंश जब्ती खाता से			(ख) ....
अंश प्रथम याचना खाता से			(ग) ....
अंश अन्तिम याचना खाता से			(घ) ....
(₹ 100 प्रति अंश के 200 अंशों का प्रथम याचना एवं अंतिम याचना के भुगतान न होने पर जब्त किया)			

ii. एक संयुक्त पूँजी कंपनी ने ₹ 100 प्रति अंश के 50,000 अंश अभिदान हेतु प्रस्तावित किए जिन पर राशि इस प्रकार मांगी गई :

₹ 30 आवेदन पर, ₹ 40 आबंटन पर तथा शेष आवश्यकता पड़ने पर। 60,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। आवेदकों को आबंटन अनुपातिक आधार पर किया। राकेश जिसे 200 अंश आबंटित किए गये थे उसने आबंटन राशि का भुगतान नहीं किया। राकेश के अंशों की निम्नलिखित राशियों का निर्धारण कीजिए।

(क) अतिरिक्त आवेदन राशि प्राप्त ₹ ....

(ख) आबंटन पर राशि देय ₹ ....

(ग) आबंटन पर शुद्ध अदत्त राशि ₹ ....

28.3 प्रीमियम पर निर्गमित एवं बट्टे पर निर्गमित अंशों की जब्ती

प्रीमियम पर निर्गमित अंशों की जब्ती :

अंशों के प्रीमियम पर निर्गमित करने पर उनको यदि जब्त किया जाये तो दो स्थितियां हो सकती है :

- अंशों की जब्ती से पूर्व प्रीमियम राशि प्राप्त हो चुकी है।
- अंशों पर प्रीमियम राशि अभी प्राप्त नहीं हुई है तथा यह अभी भी प्रतिभूति प्रीमियम खाते के जमा में लिखी हुई है।

1. **अंशों की जब्ती से पूर्व प्रीमियम राशि प्राप्त हो चुकी है :** यदि जब्त किये गये अंशों पर जब्ती से पूर्व ही कंपनी प्रीमियम की राशि को प्राप्त कर चुकी

है तो प्रतिभूति प्रीमियम खाता प्रभावित नहीं होगा। ऐसी स्थिति में अंशों के जब्त करने की वही प्रविष्टि होगी जो कि अंशों के सम मूल्य पर निर्गमन पर की जाती है।

रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

अंश पूँजी खाता नाम
अंश जब्ती खाता से
अदत्त याचना खाता/अप्राप्त याचना खाता से
(प्रीमियम पर निर्गमित अंशों की जब्ती)

उदाहरण 4

एम. बी. सॉफ्टवेयर लि. ने ₹ 5,00,000 की पूँजी निर्गमित की जिसे ₹ 10 प्रति अंश के समता अंशों में विभक्त किया गया। अंशों को ₹ 4 प्रीमियम पर निर्गमित किया गया जिनका भुगतान इस प्रकार होना था : ₹ 3 प्रति अंश आवेदन पर ₹ 7 प्रति अंश (प्रीमियम को सम्मिलित कर) आबंटन पर तथा शेष याचना पर।

सभी अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए तथा उनका आबंटन कर दिया गया। 500 अंशों को छोड़कर पूरी राशि समय पर प्राप्त हुई। इन अंशों पर याचना राशि प्राप्त नहीं हुई। कंपनी ने इन अंशों को जब्त करने का निर्णय लिया। इन 500 अंशों को जब्त करने पर रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।

हलः

रोजनामचा प्रविष्टि

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	अंश पूँजी खाता नाम अंश जब्ती खाता से अंश प्रथम याचना एवं अन्तिम याचना खाता से (₹ 10 प्रति अंश के 500 अंश का याचना राशि के भुगतान न करने के कारण जब्त कर लिया गया)		5,000	 3,000 2,000

2. **अंशों पर प्रीमियम की राशि प्राप्त नहीं हुई है तथा यह प्रतिभूति प्रीमियम खाते के जमा में देय लेकिन अदत्त दिखाई हुई है :** जब एक अंश को प्रीमियम राशि के देय होने लेकिन प्राप्त न होने (चाहे पूरी राशि अथवा राशि का कुछ भाग) के कारण जब्त

किया जाता है तो प्रतिभूति प्रीमियम खाते को रद्द कर दिया जाता है। राशि को देय दर्शाने पर प्रतिभूति प्रीमियम खाता के जमा में लिखा गया है। ऐसे में रोजनामचा प्रविष्टि निम्न प्रकार से होगी :

अंश पूँजी खाता नाम
प्रतिभूति प्रीमियम खाता नाम
  अंश जब्त खाता से
  अदत्त खाता से
(मूलतः प्रीमियम पर जारी अंशों के देय राशि के भुगतान न करने पर जब्ती)

उदाहरण 5

दि लेटेस्ट टैक्नोलॉजी कंपनी लिमिटेड ने 50,000 अंश ₹ 20 प्रति अंश ₹ 5 प्रति अंश प्रीमियम पर जनसाधारण को अभिदान हेतु प्रस्तावित किए। अंशों पर भुगतान इस प्रकार से करना था :

आवेदन पर	₹ 5 प्रति अंश
आबंटन पर	₹ 12 प्रति अंश (₹ 5 प्रति अंश प्रीमियम सहित)
प्रथम याचना पर	₹ 4 प्रति अंश
द्वितीय एवं अंतिम याचना पर	₹ 4 प्रति अंश

सभी अंशों के लिए आवेदन पत्र प्राप्त हुए। सभी आवेदकों को पूरे–पूरे अंश आबंटित कर दिए गये। आशिमा जो 200 अंशों पर आबंटन एवं याचना राशि का भुगतान नहीं कर सकी। रेशमा को 300 अंशों का आबंटन किया गया। उसने याचना राशि का भुगतान नहीं किया। उनके अंशों को जब्त कर लिया गया। केवल जब्ती संबंधी रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए :

हल :

रोजनामचा प्रविष्टि

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
(1)	अंश पूँजी खाता (200 x 20) नाम		4,000	
	प्रतिभूति प्रीमियम खाता (200 x 5) नाम		1,000	
	अंश जब्ती खाता से (200 x 5)			1,000
	अंश आबंटन खाता से (200 x 12)			2,400
	अंश प्रथम याचना खाता से (200 x 4)			800
	अंश द्वितीय एवं अंतिम याचना खाता से (200 x 4)			800
	(आशिमा के 200 अंशों को आबंटन को याचना राशि के भुगतान न करने पर जब्त कर लिया गया)			

टिप्पणी

(2)	अंश पूँजी खाता (200 x 30) नाम अंश जब्ती खाता से अंश प्रथम याचना से अंश द्वितीय एवं अन्तिम याचना से (रेशमा के 300 अंशों को जब्त किया)		6,000	 3,600 1,200 1,200

उपयुक्त की मिलाकर प्रविष्टि (Combined entry) इस प्रकार से होगी

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
	अंश पूँजी खाता नाम प्रतिभूति प्रीमियम खाता नाम अंश जब्ती खाता से अंश आबंटन खाता से अंश प्रथम याचना खाता से अंश द्वितीय एवं अन्तिम याचना खाता से (आशीमा के 200 अंशों की जब्ती जिस पर उसने आबंटन एवं याचना राशि का भुगतान नहीं किया तथा रेशमा के 300 अंशों की जब्ती जिस पर उसने याचना राशि का भुगतान नहीं किया।)		10,000 1,000	 4,600 2,400 2,000 2,000

बट्टे पर जारी अंशों का जब्त करना (Forfeiture of Shares Issued at Discount)

अंशों के जारी करने पर दी गई छूट की राशि कंपनी के लिए हानि होती है। जब बट्टे पर निर्गमित अंश को देय राशि का भुगतान न करने पर जब्त किया जाता है तो उन पर दी गई छूट/बट्टे को पुनः अंशों के निर्गमन पर अंश निर्गमन बट्टा खाता के नाम में लिखा जाता है लेकिन जब इन अंशों को जब्त किया जाता है तो इस खाते के जमा में लिख दिया जाता है।

इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जायेगी;

अंश पूँजी खाता नाम
  अंश जब्ती खाता से
  अंशों के निर्गमन पर बट्टा खाता से
(मूलतः बट्टे पर निर्गमित किए गये अंशों की जब्ती, देय राशि का भुगतान न करने पर)

टिप्पणी

उदाहरण 6

दि ऐवरग्रोइंग लिमिटेड ने ₹ 50 प्रत्येक के 20,000 अंशों को 10% बट्टे पर निर्गमन के लिए आवेदन आमंत्रित किए जो निम्न प्रकार देय है;

आवेदन पर ₹ 10 प्रति अंश

आबंटन पर ₹ 20 प्रति अंश

याचना पर ₹ 15 प्रति अंश

200 अंशों की याचना राशि को छोड़कर सभी अंशों का अभिदान हो गया तथा उनका भुगतान प्राप्त हो गया जिन्हें कंपनी ने जब्त कर लिया।

अंशों के जब्ती के संबंध में रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।

हल :

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	अंश पूँजी खाता (200 x 50) नाम		10,000	
	अंश जब्ती खाता (200 x 30) से			6,000
	अंशों के निर्गमन पर बट्टा खाता (200 x 5) से			1,000
	अंशों की प्रथम एवं अंतिम याचना खाता (200 x 15) से			3,000
	(₹ 50 प्रति अंश के 200 अंशों के जिन्हें 10% बट्टे पर जारी किया गया था के याचना राशि के भुगतान न किए जाने पर जब्त किया गया)			

उदाहरण 7

मै. हर्बल टी प्लांटेशन्स लि. को 1 करोड़ रुपये की पूँजी से पंजीकृत कराया गया जो ₹ 100 प्रति के अंशों में विभक्त थी। कंपनी ने 50,000 अंश जन साधारण को ₹ 20 प्रति अंश प्रीमियम पर प्रस्तावित किए। इन अंशों पर राशि इस प्रकार से देय थी :

₹ 25 आवेदन पर

₹ 50 (₹ 20 प्रीमियम सहित) आबंटन पर

₹ 20 प्रथम याचना पर, एवं

₹ 25 अंतिम याचना पर

75,000 अंशों के लिए आवेदन पत्र प्राप्त हुए। आवेदकों को अनुपात के आधार पर अंशों का आबंटन किया गया। कांति भाई जिसे 500 अंश दिए गये थे ने आबंटन राशि का भुगतान नहीं किया। उसने प्रथम याचना राशि का भुगतान भी नहीं किया। उसके अंशों को जब्त कर लिया गया। शीतल जिसके पास 200 अंश थे ने प्रथम याचना राशि का भुगतान नहीं किया। अंतिम याचना मांगी नहीं गई।

कंपनी की लेखा पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल :

मै. हरबल टी प्लांटेशन्स लि.
रोजनामचा प्रविष्टियां

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
1.	बैंक खाता नाम		18,75,000	
	अंश आवेदन खाता से			18,75,000
	(आवेदन राशि प्राप्त हुई)			
2.	अंश आवेदन खाता नाम		18,75,000	
	समता अंश पूँजी खाता से			12,50,000
	अंश आबंटन खाता से			6,25,000
	(50,000 अंशों की आवेदन राशि उनके आबंटन पर पूँजी खाता में हस्तान्तिरित की गई तथा शेष का अंश आबंटन में समायोजन कर दिया गया)			
3.	अंश आबंटन खाता नाम		25,00,000	
	समता अंश पूँजी खाता से			15,00,000
	प्रतिभूति प्रीमियम खाता से			10,00,000
	(प्रीमियम सहित आबंटन राशि देय)			
4.	बैंक खाता नाम		18,56,250	
	अंश आबंटन खाता से			18,56,250
	(आबंटन राशि प्राप्त हुई)			
5.	अंश प्रथम याचना खाता नाम		10,00,000	
	समता अंश पूँजी खाता से			10,00,000
	(प्रथम याचना राशि देय)			

6.	बैंक खाता नाम		9,86,000	
	अदत्त याचना खाता नाम		4,000	
	अंश प्रथम याचना खाता से			9,90,000
	(49,300 अंशों पर प्रथम याचना राशि प्राप्त हुई तथा 200 अंशों की राशि को अदत्त याचना खाते के नाम लिखा गया)			
7.	अंश पूँजी खाता नाम		37,500	
	प्रतिभूति प्रीमियम खाता नाम		10,000	
	अंश जब्ती खाता से			18,750
	अंश आबंटन खाता से			18,750
	अंश प्रथम याचना खाता से			10,000
	(500 अंशों को आबंटन राशि एवं याचना राशि के भुगतान करने पर जब्त किया।)			

कार्यकारी नोट

अंश जिनके लिए आवेदन प्राप्त हुए 75,000

अंश जिनका आबंटन किया गया 50,000

अनुपात 3 : 2

कांती भाई के पास अंश = 500

अंश जिनके लिए आवेदन किया $500 \times \frac{3}{2} = 750$

अतिरिक्त आवेदन राशि प्राप्त हुई = 250×25 = ₹ 6,250

अंश आबंटन राशि देय = 500 × 50 = ₹ 25,000

अतिरिक्त आवेदन राशि के समायोजन के पश्चात्

शुद्ध देय राशि = ₹ 25,000 – ₹ 8,250 = ₹ 18,750

कुल आबंटन राशि देय ₹ 25,00,000

घटा : अतिरिक्त आवेदन राशि जो समायोजित की गई ₹ 6,25,000

घटा : कांति भाई की आबंटन राशि देय ₹ 18,750

शुद्ध राशि जो प्राप्त हुई = ₹ 18,56,250

पाठगत प्रश्न 28.3

नीचे दी गई स्थितियों में दिये खातों के नाम लिखा जायेगा अथवा जमा तथा कितनी राशि लिखी जाएगी।

i. 100 अंश ₹ 10 प्रति अंश पूर्ण प्रदत्त सममूल्य पर निर्गमित किए गए जिन पर ₹ 3 प्रति अंश की अन्तिम याचना प्राप्त नहीं हुई।

अंश जब्ती खाता

ii. 250 अंश ₹ 10 प्रति अंश ₹ 4 प्रति अंश प्रीमियम पर निर्गमित किए गये जिन्हें ₹ 2 प्रति अंश की याचना राशि के भुगतान न करने पर जब्त किया गया जिन पर ₹ 2 प्रीमियम की राशि जो आबंटन के साथ मांगी थी प्राप्त हुई।

अंश जब्ती खाता

iii. 100 अंश ₹ 10 प्रति अंश जिन्हें पूर्ण प्रदत्त ₹ 2 प्रति अंश प्रीमियम पर निर्गमन किया गया तथा जिन पर केवल ₹ 2 प्रति अंश से आवेदन राशि प्राप्त हुई है को जब्त किया गया।

प्रतिभूति प्रीमियम खाता

iv. 200 अंश ₹ 20 प्रति अंश जो ₹ 2 प्रति अंश बट्टे पर निर्गमन किये गये जिन पर ₹15 प्रति अंश से राशि मांगी गई को ₹ 5 प्रति अंश की अन्तिम याचना के प्राप्त न होने पर जब्त किया गया।

अंश निर्गमन पर बट्टा खाता

आपने क्या सीखा

- अंशों की जब्ती का अर्थ है कंपनी द्वारा याचना की गई राशि के भुगतान न करने पर अंश धारक की सदस्यता को समाप्त करना। अंशों की जब्ती का परिणाम होता है : भुगतान न करने वाले अंशधारी की सदस्यता की समाप्ति, एवं कंपनी की अंश पूँजी में कटौती।
- कम्पनी के अर्न्तनियमों में अंशों के जब्त करने का अधिकार दिया गया होता है। निदेशक मण्डल को कंपनी के अंशों के जब्त करने से पहले भुगतान के दोषी अंश धारक को 14 दिन का नोटिस देना होता है।
- अंशों को तीन परिस्थितियों में जब्त किया जा सकता है :

  (i) अंशों को सममूल्य पर जारी किया गया

(ii) अंशों को प्रीमियम पर जारी किया गया

(क) प्रीमियम की पूर्ण राशि प्राप्त हो गई है

(ख) प्रीमियम की राशि देय है लेकिन प्राप्त नहीं हुई है

(iii) अंशों का बट्टे पर जारी करना

टिप्पणी

- सभी स्थितियों में जब्त किए गये अंशों पर मांग की गई राशि से अंश पूँजी खाते के नाम में लिखा जाएगा।
- अंश जब्ती खाता को जब्त किए गये अंशों पर प्राप्त राशि (प्रीमियम की राशि को छोड़कर) से जमा किया जाता है।
- जब्त किये गये अंशों पर यदि प्रीमियम राशि प्राप्त हो गई है तो प्रतिभूति प्रीमियम खाता प्रभावित नहीं होगा। लेकिन इसके नाम में लिखा जाएगा यदि यह देय हो गया है लेकिन प्राप्त नहीं हुआ है।
- बट्टे पर जारी अंश यदि जब्त किये जाते हैं तो अंश निर्गमन पर बट्टा खाता को सदा जब्त किए गये अंशों पर दी गई छूट से 'जमा' दिखाया जाएगा।

पाठान्त प्रश्न

1. अंशों के जब्ती का अर्थ बताइए। अंशों को कब जब्त किया जाता है?
2. अंशों की जब्ती पर प्रतिभूति प्रीमियम खाता का क्या लेखांकन किया जाता है जब कि

   (क) प्रीमियम की राशि प्राप्त हो गई है

   (ख) जब्त किए गये अंशों पर प्रीमियम की राशि प्राप्त नहीं हुई है।
3. एक्स लि. ने ₹ 100 प्रति अंश के 300 अंशों को जब्त किया जिन पर ₹ 30 प्रति अंश की अन्तिम याचना राशि प्राप्त नहीं हुई है। अन्य याचनाएं समय पर प्राप्त हो गई हैं। अंशों की जब्ती का लेखा करने के लिए रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।
4. ऑल टाइम एन्टरटेनमैंट लि. ने 50,000 अंश ₹ 10 प्रति अंश ₹ 4 प्रीमियम पर जारी किए, जिन पर भुगतान इस प्रकार किया जाता था ₹ 3 प्रति अंश आवेदन पर, ₹ 7 (प्रीमियम सहित) आबंटन पर तथा शेष याचना पर। अकबर, जिसे 300 अंश आबंटित किए गये थे, ने आबंटन राशि का भुगतान नहीं करने पर, उन अंशों को जब्त कर लिया गया। 300 अंशों की जब्ती पर रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।
5. एक्स लिमिटेड ने ₹ 50 प्रति अंश से 10,000 अंश बट्टे ₹ 5 प्रति अंश पर निर्गमित किए। राशि का भुगतान इस प्रकार किया जाना था, आवेदन पर ₹ 10 प्रति अंश, आबंटन पर ₹ 20 प्रति अंश, शेष राशि प्रथम एवं अंतिम याचना सारी राशि प्राप्त हो गई। केवल 400 अंशों पर आबंटन राशि तथा याचना राशि प्राप्त नहीं हुई। इन अंशों को जब्त कर लिया गया। कंपनी की लेखा पुस्तकों में प्रविष्टि कीजिए तथा आवश्यक खाते भी बनाइए।

6. दि मल्टीमीडिया लि. ने ₹ 100 प्रति अंश के 50,000 अंशों के ₹ 20 प्रति अंश प्रीमियम पर निर्गमित करने हेतु आवेदन पत्र आमन्त्रित किये। राशि का भुगतान इस प्रकार किया जाना था :

आवेदन पर	₹ 30 प्रति अंश
आबंटन पर	₹ 60 प्रति अंश (प्रीमियम सहित)
प्रथम एवं अन्तिम याचना पर	₹ 30 प्रति अंश

1 लाख अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। 20,000 अंशों के लिए प्रार्थना पत्र पूरी तरह नकार दिये गये तथा उनकी राशि लौटा दी गई। शेष आवेदकों को अनुपात के आधार पर आबंटन कर दिया गया। सुखबिन्दर जिसको 400 अंशों का आबंटन किया गया था ने आबंटन राशि का भुगतान नहीं किया। याचना राशि के भुगतान न करने पर उसके अंशों को जब्त कर लिया गया। राजेन्द्र, जिसने 400 अंशों के लिए आवेदन किया था याचना राशि का भुगतान नहीं कर सका। कंपनी की लेखा पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए तथा आवश्यक खाते भी बनाइए।

7. अग्रवाल कन्सट्रक्शन लि. ने ₹ 50 प्रति अंश के 40,000 अंश ₹ 10 प्रीमियम पर अभिदान हेतु जनसाधारण को प्रस्तावित किये। इन अंशों पर राशि का भुगतान इस प्रकार किया जाना था : ₹ 30 प्रति अंश आवेदन के साथ

₹ 30 प्रति अंश आबंटन पर (जिसमें ₹ 10 प्रति अंश प्रीमियम का सम्मिलित है)

शेष प्रथम एवं अन्तिम याचना पर 75,000 अंशों के लिए आवेदन पत्र प्राप्त हुए 15,000 अंशों के आवेदकों को क्षमा याचना पत्र भेजे गये तथा उनकी राशि लौटा दी गई। शेष को अंश अनुपात के आधार पर आबंटित किए गये। सुधीर जिसके पास 400 अंश थे, ने आबंटन राशि का भुगतान नहीं किया उसके अंशों को जब्त किर लिया गया। याचना राशि मांगी गई। रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

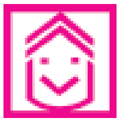

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

28.1 (i) जब्ती (ii) (क) कंपनी की सदस्यता से समाप्ति; (ख) निर्गमित पूँजी में कटौती (iii) अन्तर्नियम (iv) 14

28.2 I. (i) ₹ 20,000 (i) ₹ 10,000 (i) ₹ 4,000 (i) ₹ 6,000

II. (i) 40 × 30 = ₹ 1,200 (i) 200 × 40 = ₹ 8,000
(i) 8000 – 1200 = ₹ 6,800

28.3 (i) ₹ 700 से जमा (ii) ₹ 2,000 से जमा
(iii) ₹ 200 से नाम (iv) ₹ 400 से जमा

29

जब्त किये अंशों का पुनर्निर्गमन

आप यह जान चुके हैं कि एक कंपनी अंश राशि को किश्तों में मांग सकती है। आप यह भी जान चुके हैं कि यदि कोई अंशधारी आबंटन राशि एवं/अथवा याचना राशि का भुगतान नहीं करता है तो कंपनी ऐसे अंशों को जब्त कर सकती है। यदि अंशों को जब्त कर लिया जाता है तो अंशधारी की सदस्यता समाप्त मानी जाती है तथा यह अंश कंपनी की सम्पत्ति बन जाते हैं। जब्त किये गये अंशों की बिक्री को अंशों का पुनर्निर्गमन (Reissue) कहते हैं।

इस पाठ में आप अंशों के पुनर्निर्गमन का अर्थ एवं कंपनी की लेखा पुस्तकों में इसके लेखांकन के सम्बन्ध में जान सकेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- अंशों के पुनर्निर्गमन का अर्थ बता सकेंगे;
- उस न्यूनतम मूल्य को बता सकेंगे जिस पर कंपनी अपने जब्त किए अंशों का पुनर्निर्गमन कर सकती है;
- विभिन्न स्थितियों में अंशों के पुनर्निर्गमन का लेखांकन कर सकेंगे।

29.1 अंशों का पुनर्निर्गमन-अर्थ एवं निर्गमन मूल्य

अंशों की जब्ती इसलिए की जाती है क्योंकि ऐसे अंशों पर देय राशि का एक भाग ही प्राप्त हुआ है तथा शेष अभी अदत्त है। जब्त हो जाने पर मूल आबंटी की सदस्यता समाप्त हो जाती है। उससे शेष राशि की मांग नहीं की जा सकती। ऐसे अंश कंपनी की संपत्ति बन जाते हैं। इसलिए कंपनी इन अंशों को बेच सकती है। इस प्रकार से की गई अंशों की बिक्री को अंशों का पुनर्निर्गमन कहते हैं। अतः अंशों के पुनर्निर्गमन का अर्थ है जब्त किए गये अंशों का निर्गमन।

जब निदेशक मंडल अंशों को जब्त कर लेता है तो भुगतान के लिए दोषी अंशधारक से अंशों के प्रमाण पत्र को लौटाने के लिए कहा जाता है जिसे बाद में रद्द कर दिया जाता है। निर्देशक मंडल एक प्रस्ताव पास कर जब्त किए गये अंशों को इनके नये खरीददार को आबंटित कर देता है।

अंशों के पुनर्निर्गमन करने पर न तो प्रविवरण पत्र जारी किया जाता है और न हीं जनसाधारण को इनके क्रय के लिए आमन्त्रित किया जाता है। यद्दपि ऐसे अंशों की राशि एक से अधिक किश्तों में मांगी जा सकती है लेकिन सामान्यतः पूरी की पूरी राशि एक मुश्त मांग ली जाती है।

अंशो के पुनर्निर्गमन पर इनके मूल्य के सम्बन्ध में निर्णय कम्पनी का निदेशक मण्डल लेता है। यह अंश सममूल्य पर, प्रीमियम पर या फिर बट्टे पर जारी किये जा सकते हैं। यह मूल्य अधिकांश रूप से सम मूल्य से कम ही होता है। पुनर्निर्गमन पर दी गई छूट की राशि किसी भी रूप में इन अंशों पर जब्त की गई राशि से अधिक नहीं होनी चाहिए।

अब प्रश्न उठता है कि जब्त किए गये अंशों को किस मूल्य पर बेचा जा सकता है? इनके पुनर्निर्गमन के मूल्य की कोई सीमा नहीं है यदि मूल्य जब्ती के समय के निर्गमन के मूल्य से अधिक है। लेकिन पुनर्निर्गमन के न्यूनतम मूल्य की सीमा होती है। इससे कम पर कंपनी अपने जब्त किये गये अंशों को नहीं बेच सकती। हम इसे एक और दृष्टि से देखें तो कंपनी जब्त किए गये अंशों के पुनर्निर्गमन पर एक निश्चित राशि से अधिक की छूट नहीं दे सकती।

जब्त किए गये अंशों के पुनर्निर्गमन पर दी जाने वाली अधिकतम छूट का विभिन्न परिस्थितियों में निर्धारण नीचे दिए गये तरीके से किया जायेगा :

(i) अंश जिन्हें मूल रूप से सममूल्य पर जारी किया गया : जब अंशों को मूल रूप से सममूल्य पर जारी किया जाता है तो अंशों के पुनर्निर्गमन पर अधिकतम इन अंशों पर जब्त राशि तक की छूट दी जा सकती है।

(ii) अंश प्रारम्भ में प्रीमियम पर जारी किये गये : जब अंशों को प्रारम्भ में ही प्रीमियम पर जारी किया जाता है तो दो स्थितियां होती है : (क) जब्त किये गये अंशों पर प्रीमियम की राशि प्राप्त नहीं हुई है; (ख) ऐसे अंशों पर प्रीमियम की गई राशि प्राप्त हो गई है। जब्त की गई राशि वह राशि है जो प्राप्त हो गई है जिसमें प्रीमियम की राशि भी सम्मिलित है यदि वह भी प्राप्त हो गई है तथा इन अंशों के पुनर्निर्गमन पर अधिक से अधिक इस जब्त की गई राशि तक की छूट दी जा सकती है।

(iii) अंश जिन्हें प्रारम्भ में बट्टे पर जारी किया गया : इस स्थिति में वास्तविक रूप में प्राप्त राशि ही जब्त की गई राशि होती है। लेकिन इन अंशों के पुनर्निर्गमन पर छूट की अधिकतम राशि जब्त की गई राशि तथा इन अंशों के प्रारम्भिक निर्गमन पर दी गई छूट के बराबर होगी।

पाठगत प्रश्न 29.1

उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) अंशों की जब्ती पर .... आबंटी की सदस्यता समाप्त कर दी जाती है।

(ii) जब्त किये गये अंश .... की सम्पत्ति होते हैं।

(iii) जब प्रारम्भ में अंशों को सममूल्य पर निर्गमित किया जाता है तो ऐसे अंशों के पुनर्निर्गमन पर अधिकतम छूट इन अंशों की .... की राशि के बराबर होती है।

(iv) यदि अंश प्रारम्भ में प्रीमियम पर जारी किये गये हैं तो जब्त की गई राशि वह राशि होती है जो प्राप्त हो गई है तथा इसमें .... की प्राप्त राशि सम्मिलित होती है।

(v) जब्त किये गये वह अंश जो मूल रूप से बट्टे पर जारी किये गये थे के पुनर्निर्गमन पर छूट की राशि, जब्त की गई राशि तथा प्रारम्भ में दी गई .... की राशि के योग के बराबर होगी।

29.2 अंशों के पुनर्निर्गमन का अभिलेखन

जब्त किए गये अंशों का बट्टे पर पुनर्निर्गमन जब जब्त किए गये अंशों का बट्टे पर पुननिर्गमन किया जाता है तो प्राप्त राशि बैंक खाता के नाम पक्ष में लिखी जाती है तथा प्रदत्त राशि से अंश पूँजी खाते को जमा किया जाता है। छूट दी गई राशि को अंश जब्ती खाता के नाम में लिखा जाता है। यह जब्ती के समय जब्त की गई राशि में से इस प्रकार से दी गई छूट की राशि के समायोजन के लिए होता है।

इसकी रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार से होगी :

बैंक खाता (पुननिर्गमन पर प्राप्त राशि)	नाम
अंश जब्ती खाता (छूट की राशि)	नाम
अंश पूँजी खाता (प्रदत्त राशि) से	

जैसा कि पहले कहा जा चुका है अंशों के पुनर्निर्गमन पर छूट की राशि अधिक से अधिक इन अंशों पर जब्त की गई राशि के बराबर हो सकती है। ऐसी स्थिति में पुनर्निर्गमन के पश्चात अंश जब्ती खाता शून्य शेष दर्शाएगा। लेकिन यदि यह छूट की राशि जब्त की गई राशि से कम है तो शेष जब्त की गई राशि कंपनी के लिए लाभ होगी। कंपनी के लिए यह पूँजीगत लाभ होगा तथा इसे पूँजी संचय खाते में हस्तान्तरित कर दिया जायेगा। इसकी रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार से होगी।

अंश जब्ती खाता	नाम
पूँजी संचय खाता से	

यदि जब्त किये गये सभी अंशों का पुनर्निर्गमन कर दिया गया है तो अंश जब्ती खाता शून्य शेष दर्शाएगा क्योंकि पुनर्निर्गमन पर छूट की राशि के समायोजन के पश्चात इस खाते की राशि को पूँजी संचय खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाएगा। लेकिन यदि जब्त किये गये कुछ ही अंशों का पुनःनिर्गमन किया गया है तथा शेष रद्द किये हुए हैं तो उन जब्त किये गये अंशों की जब्त राशि जिनका पुनर्निर्गमन नहीं किया गया है अंश जब्ती खाता में ही रहेगा। पुनर्निर्गमित अंशों पर जब्त राशि के समायोजन की राशि का निर्धारण इस प्रकार से होगा :

$$\text{समायोजन की राशि} = \frac{\text{कुल जब्त राशि}}{\text{जब्त किए गए कुल अंश}} \times \text{पुनर्निर्गमित अंशों की संख्या}$$

पाठगत प्रश्न 29.2

नीचे कुछ कथन दिये गये हैं। सही के आगे 'स' तथा गलत के आगे 'ग' लिखिए :

(i) अंश जब्ती खाता का शून्य शेष हो सकता है।

(ii) जब्त किये गये अंशों पर प्रदत्त छूट की राशि अंशों के निर्गमन पर 'बट्टा खाता' के नाम लिखी जाएगी।

(iii) अंशों के पुनःनिर्गमन पर दी गई छूट के समायोजन के पश्चात अंश जब्ती खाता की शेष राशि इसी खाते में रहेगी।

29.3 जब्त किये गये अंशों के पुनर्निर्गमन का लेखांकन

जब्त किये गये अंशों के पुनर्निर्गमन की चार परिस्थितियां हो सकती है जो इस प्रकार है :

(i) मूलरूप से सममूल्य पर निर्गमित जब्त किये अंशों का बट्टे पर पुनर्निर्गमन

(ii) मूलरूप से सममूल्य पर निर्गमित जब्त किये गये अंशों का सममूल्य, अथवा प्रीमियम पर पुनर्निर्गमन

(iii) मूलरूप से प्रीमियम पर निर्गमित जब्त किये गये अंशों का सममूल्य पर बट्टे पर या फिर प्रीमियम पर पुनर्निर्गमन।

(iv) मूलरूप से बट्टे पर निर्गमित जब्त किए गये अंशों का सममूल्य, बट्टे पर या फिर प्रीमियम पर पुनर्निर्गमन

उपर्युक्त सभी स्थितियों में लेखाकरण को आगे समझाया गया है :

1. जब्त किये गये अंशों का बट्टे पर निर्गमन, मूल रूप से जिन्हें सममूल्य पर जारी किया गया

टिप्पणी

इस स्थिति में जब्त किये गये अंशों पर अधिकतम छूट की राशि इन अंशों पर प्राप्त राशि हो सकती है तथा इसे अंश जब्ती खाते के नाम में लिखा जाता है

उदाहरण 1

एक्स (X) कंपनी लि. ने ₹ 10 के 200 अंश पूर्ण मांगे हुए को जब्त कर लिया। इन पर ₹7 प्रति अंश प्राप्त हुए तथा ₹ 3 प्रति अंश की याचना राशि प्राप्त नहीं हुई। इन अंशों को बाद में ₹ 8 प्रति अंश पूर्ण प्रदत्त पुनर्निर्गमित कर दिया गया। अंशों के जब्त करने तथा उनके पुनर्निर्गमन की रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल :

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
(i)	अंश पूँजी खाता नाम		2,000	
	अंश जब्ती खाता से			1,400
	अंश अन्तिम याचना खाता से			600
	(200 अंश ₹ 10 प्रति अंश को ₹ 3 प्रति अंश की अन्तिम याचना के भुगतान न करने पर जब्त कर लिया गया)			
(ii)	बैंक खाता नाम		1,600	
	अंश जब्ती खाता नाम		400	
	अंश पूँजी खाता से			2,000
	(जब्त किए 200 अंशों का ₹ 8 प्रति अंश से पूर्णप्रदत्त पुनर्निर्गमन)			
(iii)	अंश जब्ती खाता नाम		1,000	
	पूँजी संचय खाता से			1,000
	(अंश जब्ती खाता की शेष राशि का पूँजी संचय खाता में हस्तान्तरण)			

2. जब्त किये अंशों का प्रीमियम पर एवं सममूल्य पर पुनर्निर्गमन, जो प्रारम्भ में सममूल्य पर जारी किये गये थे

इस स्थिति में अंशों के पुनर्निर्गमन पर अंश जब्त खाते के जमा की कुल राशि को पूँजी संचय खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।

टिप्पणी

उदाहरण 2

वाई (Y) लि. ने ₹ 20 प्रति अंश के 400 अंश जब्त किये जिन पर ₹ 15 प्रति अंश से प्राप्त हुए तथा शेष अभी देय है और उनका भुगतान नहीं किया गया है। इन अंशों का पुनर्निर्गमन किया गया :

(क) ₹ 20 प्रति अंश अर्थात सममूल्य पर

(ख) ₹ 24 प्रति अंश अर्थात प्रीमियम पर

अंशों के पुनर्निर्गमन की रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।

हल

रोजनामचा प्रविष्टियाँ

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
स्थिति (क)				
(i)	बैंक खाता नाम अंश पूँजी खाता से (400 अंश ₹ 20 प्रति अंश पर पुनर्निर्गमित किए)		8,000	 8,000
(ii)	अंश जब्ती खाता नाम पूँजी संचय खाता से (अंश जब्ती खाता की शेष राशि का पूँजी संचय खाते में हस्तान्तरण)		6,000	 6,000
स्थिति (ख)				
(i)	बैंक खाता नाम अंश पूँजी खाता से प्रतिभूति प्रीमियम खाता से (जब्त किये अंशों का प्रीमियम पर पुनर्निर्गमन)		9,600	 8,000 1,600
(iii)	अंश जब्ती खाता नाम पूँजी संचय खाता से (अंश जब्ती खाते की शेष राशि का पूँजी संचय खाते में हस्तान्तरण)		6,000	 6,000

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों में पुनर्निर्गमित अंशों की जब्त की गई कुल राशि को पूँजी संचय खाते में हस्तान्तरित कर दिया गया क्योंकि इन अंशों के पुनर्निर्गमन पर कोई छूट नहीं दी गई, इसलिए जब्त की गई पूरी राशि कंपनी का लाभ है।

3. मूलरूप से प्रीमियम पर निर्गमित अंशों का सममूल्य पर, बट्टे एवं प्रीमियम पर पुनर्निर्गमन

टिप्पणी

यदि अंश मूल रूप से प्रीमियम पर जारी किये गये थे तो यह आवश्यक नहीं है कि उनके जब्त किये जाने के पश्चात् उनका पुनर्निर्गमन भी प्रीमियम पर हो। ऐसे अंशों को सममूल्य पर, बट्टे पर या फिर प्रीमियम पर जारी किया जा सकता है।

यदि इन अंशों को प्रीमियम पर जारी किया जाता है तो प्रीमियम की प्राप्त राशि को प्रतिभूति प्रीमियम खाते के जमा में लिखा जाना चाहिए। ऐसे में रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी

बैंक खाता नाम
(अंशों की संख्या × प्रति अंश प्राप्त राशि)
  अंश पूँजी खाता से
  (अंशों की संख्या × प्रति अंश प्रदत्त राशि)
  प्रतिभूति प्रीमियम खाता से
  (अंशों की संख्या × प्रति अंश प्रीमियम राशि)

यदि इन अंशों का पुनर्निर्गमन सममूल्य पर किया जाता है जो राशि प्राप्त हो चुकी है तथा अंश जब्ती खाता के जमा में लिखी जा चुकी है को पूँजी संचय खाते के जमा में लिखा जायेगा।

यदि इन अंशों का पुनर्निर्गमन बट्टे पर किया जाता है तो छूट की राशि को जब्ती खाते के जमा की राशि में से समायोजित कर लिया। अंश जब्ती खाते के शेष को पूँजी संचय खाते में हस्तान्तरित कर दिया जायेगा।

उदाहरण 3

एजैड (AZ) लिमिटेड ने ₹ 10 के 200 अंशों को जब्त किया। ये अंश ₹ 4 प्रति अंश से प्रीमियम पर जारी किये गये थे। अंशधारी ने ₹ 3 प्रति अंश से आवेदन पर भुगतान किये थे लेकिन उसने ₹ 7 प्रति अंश (प्रीमियम सम्मिलित) आबंटन पर तथा ₹ 4 प्रति अंश याचना पर भुगतान नहीं किये। इन अंशों के जब्त करने तथा उसके पुन:निर्गमन की रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए, यदि इनका :

I. ₹ 10 प्रति अंश पर पुनर्निर्गमन अर्थात सममूल्य पर हुआ है,

II. ₹ 8 प्रति अंश पर पुनर्निर्गमन अर्थात बट्टे पर हुआ है,

III. ₹ 12 प्रति अंश पर पुनर्निर्गमन अर्थात प्रीमियम पर हुआ है,

टिप्पणी

हल

रोजनामचा प्रविष्टियां

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
(i)	अंश पूँजी खाता (200 × ₹ 10) नाम प्रतिभूति प्रीमियम खाता (200 × ₹ 4)नाम अंश जब्ती खाता (200 × ₹ 3) से आबंटन खाता (200 × ₹ 7) से अंश प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता (200 × ₹ 4) से		2,000 800	 600 1,400 800

स्थिति I

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
(i)	बैंक खाता नाम अंश पूँजी खाता से (200 जब्त किये गये अंशों का सममूल्य पर पुनर्निर्गमन)		2,000	 2,000
(ii)	अंश जब्ती खाता नाम पूँजी संचय खाता से (अंश जब्ती खाता के शेष का पूँजी संचय खाता में हस्तान्तरण)		600	 600

अब क्योंकि जब्त किये गये अंशों का सममूल्य पर पुनर्निर्गमन किया गया है अर्थात् पुनर्निर्गमन पर इन अंशों पर कोई छूट नहीं दी गई है। अतः सम्पूर्ण जब्त की गई ₹ 600 की राशि कंपनी का लाभ है जिसका पूँजी संचय खाते में हस्तान्तरण कर दिया गया है।

स्थिति II

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
(i)	बैंक खाता नाम अंश जब्ती खाता नाम पूँजी खाता से (200 अंशों का बट्टे पर पुनर्निर्गमन)		1,600 400	 2,000

टिप्पणी

(ii)	अंश जब्ती खाता नाम पूँजी संचय खाता से (अंश जब्ती खाता की शेष राशि का पूँजी संचय खाता में हस्तान्तरण)		200	200

जब्त किये गये अंशों के पुनर्निर्गमन के समय ₹ 2 प्रति अंश से छूट दी गई। ₹ 400 की बट्टे की इस राशि को ₹ 600 की जब्त की राशि में से समायोजित कर लिया गया तथा शेष ₹ 200 पूँजीगत लाभ होने के कारण पूँजी संचय खाते में हस्तान्तरित कर दिया गया।

स्थिति III

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
(i)	बैंक खाता नाम अंश पूँजी खाता से प्रतिभूति प्रीमियम खाता से (जब्त किये गये 200 अंशों का प्रीमियम पर पुनर्निर्गमन)		2,400	 2,000 400
(ii)	अंश जब्ती खाता नाम पूँजीगत संचय खाता से (अंश जब्ती खाता के शेष का पूँजीगत संचय खाते में हस्तान्तरण)		600	 600

जब्त किये अंशों को प्रीमियम पर जारी किया गया है इसलिये कोई छूट की राशि नहीं है जिसे जब्त की राशि से समायोजत किया जाय। इसलिए जब्त की कुल ₹ 600 की राशि को कंपनी के पूँजीगत लाभ होने के कारण पूँजी संचय खाते में हस्तान्तरित कर दिया गया।

4. मूलरूप से बट्टे पर जारी जब्त किये अंशों का सममूल्य पर, प्रीमियम पर या बट्टे पर पुनःनिर्गमन

जब जब्त किये गये अंशों को जो प्रारम्भ में बट्टे पर निर्गमित किये गये थे, पुनःनिर्गमन किया जाता है तो प्रारम्भ में बट्टे पर निर्गमन के समय बट्टे की राशि जिसे अंशों के जब्ती के समय वापस लिख दिया गया था पुनर्निर्गमन पर फिर से वह छूट दी जाएगी। अतः अंशों के जब्त किये जाने पर अंश बट्टा खाता के जमा में इनके निर्गमन पर दी गई छूट की राशि लिख दी जायेगी। क्योंकि अंशों के जब्त किये जाने पर इसके प्रभाव को समाप्त किया जाता है। जब इन अंशों का पुनर्निर्गमन किया जाता है तो निर्गमन पर मूल छूट की राशि को छूट खाता के नाम में लिख दिया जाता है।

टिप्पणी

उदाहरण 4

इन्डिया इन्फ्रास्ट्रकचर लि. ने अपने ₹ 20 प्रति अंश, ₹ 2 प्रति अंश से बट्टे पर जारी किये थे। 200 अंशों की धारक महिमा ने ₹ 5 की अन्तिम याचना का भुगतान नहीं किया। उसके अंशों को जब्त कर लिया गया। बाद में कंपनी ने जब्त किये इन अंशों में से 100 अंशों का (i) ₹ 15 प्रति अंश, (ii) ₹ 20 प्रति अंश एवं (iii) ₹ 25 प्रति अंश पर पुनःनिर्गमन कर दिया।

कंपनी की लेखा पुस्तकों में अंशों के जब्त करने एवं उनके पुनःनिर्गमन की रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए।

हल

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
	अंश पूँजी खाता नाम अंश जब्ती खाता से अंश निर्गमन पर बट्टा खाता से अंश अन्तिम याचना खाता से (बट्टे पर निर्गमित जब्त किये 200 अंशों की अन्तिम याचना के भुगतान न करने पर जब्ती)		2,000	 1,300 200 500

अंशों का पुनर्निर्गमन

I. ₹ 15 प्रति अंश से पुनर्निर्गमन :

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
(i)	बैंक खाता नाम अंश निर्गमन पर बट्टा खाता नाम अंश जब्ती खाता नाम अंश पूँजी खाता से (100 अंशों का 15 प्रतिअंश से पुनर्निर्गमन)		1,500 200 300	 2,000
(ii)	अंश जब्ती खाता नाम पूँजी संचय खाता से (अंश जब्त खाता के शेष का पूँजी संचय खाता में हस्तान्तरण)		1,000	 1,000

टिप्पणी

II. ₹ 20 प्रति अंश से पुनर्निर्गमन

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
(i)	बैंक खाता नाम अंश पूँजी खाता से (100 अंशों का ₹ 20 प्रतिअंश से पुनःनिर्गमन)		2,000	 2,000
(ii)	अंश जब्ती खाता नाम पूँजी संचय खाता से (अंश जब्ती खाता के शेष का पूँजी संचय खाते में हस्तान्तरण)		1,300	 1,300

III. ₹ 25 प्रति अंश पर पुनर्निर्गमन

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
(i)	बैंक खाता नाम अंश निर्गमन पर बट्टा खाता नाम अंश पूँजी खाता से प्रतिभूति प्रीमियम खाता से (100 बट्टे पर जारी अंशों का ₹ 25 प्रति अंश से पुनर्निर्गमन)		2,500 200	 2,000 700
	अंश जब्ती खाता नाम पूँजी संचय खाता से (अंश जब्त खाता के शेष का पूँजी संचय खाते में हस्तान्तरण)		1,300	 1,300

जब्त किये अंशों में से कुछ अंशों का पुनर्निर्गमन

कभी–कभी जब्त किये गये सभी अंशों को पुनर्निर्गमित नहीं किया जाता है उनमें से कुछ का ही पुनर्निर्गमन होता है। उसके लेखांकन को नीचे दिये गये उदाहरण से समझाया गया है:

उदाहरण 5

एक कंपनी ने ₹ 50 प्रति अंश के 400 अंशों को जब्त किया जिन पर ₹ 10 प्रति अंश आवेदन पर तथा ₹ 20 प्रति अंश आबंटन पर प्राप्त हुए हैं। ₹ 20 प्रतिअंश की अंतिम याचना राशि प्राप्त नहीं हुई। इनमें से 300 अंशों को ₹ 40 प्रति अंश से पुनः जारी किया गया। अंशों की जब्ती एवं उनके पुनर्निर्गमन की रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।

हल :

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	अंश पूँजी खाता नाम		2,000	
	अंश जब्ती खाता से			1,200
	अंश प्रथम एवं अन्तिम याचना से			800
	(याचना राशि के भुगतान न होने पर 400 अंशों की जब्ती)			
	बैंक खाता नाम		1,200	
	अंश जब्ती खाता नाम		300	
	अंश पूँजी खाता से			1,500
	(जब्त किये गये अंशों में से 300 अंशों का पुनःनिर्गमन)			
	अंश जब्ती खाता नाम		600	
	पूँजी संचय खाता से			600
	(3000 अंशों का जब्त किया शेष पूँजी संचय खाता में हस्तान्तरण)			

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 29.3

निम्न स्थितियों में पूँजीगत संचय खाता जमा में कितनी राशि लिखी जायेगी?

(i) 100 अंश ₹ 10 प्रति अंश ₹ 3 की याचना के भुगतान न करने पर जब्त किये गये थे उन्हें ₹ 7 प्रति अंश से पुनर्निर्गमित किया गया।

(i) 200 अंश ₹ 10 प्रति अंश के जब्त किये गये जिन पर ₹ 8 प्रति अंश मांगे गये थे तथा केवल ₹ 2 प्रति अंश का भुगतान किया गया था। इनका ₹ 9 प्रति अंश से पुनर्निर्गमन किया गया।

(iii) 100 अंश ₹ 20 प्रतिअंश जिन्हें ₹ 2 प्रति अंश से बट्टे पर जारी किया गया था, को ₹ 4 प्रति अंश की प्रथम याचना तथा ₹ 5 प्रति अंश की अन्तिम याचना के भुगतान न करने पर जब्त कर लिया गया। इन अंशों का ₹ 15 प्रति अंश से पुनर्निर्गमन किया गया।

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

- अंशों के पुनर्निर्गमन का अर्थ है उन अंशों की बिक्री जो पहले ही जारी किये जा चुके हैं लेकिन जिनको मांगी गई राशि के भुगतान न करने के कारण जब्त कर लिया गया।
- अंशों का पुनर्निर्गमन जब्त किये गये अंशों की कम से कम उस राशि की वसूली के लिए किया जाता है जिसकी मांग की जा चुकी है लेकिन उसका भुगतान नहीं किया गया।
- पुनर्निर्गमित अंशों की राशि सामान्यतः एक ही किश्त में मांग ली जाती है।
- अंशों का पुनर्निर्गमन सममूल्य पर, बट्टे पर एवं प्रीमियम पर किया जा सकता है।
- पुनर्निर्गमन पर छूट दी जाने वाली अधिकतम राशि ऐसे अंशों पर जब्त राशि के बराबर हो सकती है।
- जब्त की गई राशि इन अंशों के पुनर्निर्गमन पर दी जाने वाली छूट के समायोजन के लिये उपयोग की जाती है।
- अंश जब्ती खाता का शेष कंपनी का पूँजीगत लाभ है तथा इसे पूँजी संचय खाते के जमा में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।

पाठान्त प्रश्न

1. अंशों के पुनर्निर्गमन का अर्थ बताइए।
2. जब्त किये अंशों के पुनर्निर्गमन पर छूट की अधिकतम राशि क्या होगी जब कि जब्त किये गये अंश मूलतः जारी किये गये थे (क) सममूल्य पर (ख) प्रीमियम पर (ग) बट्टे पर?
3. जब्त किये अंशों के पुनर्निर्गमन के पश्चात पूँजी संचय खाते में कौन सी राशि हस्तान्तरित की जाती है? यह राशि क्यों हस्तान्तरित की जाती है?
4. निम्न स्थितियों में अंशों के जब्त करने एवं उनके पुनर्निर्गमन की क्या रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए :

    (a) X लि. के निदेशकों ने ₹ 10 के 400 अंश पूर्ण प्रदत्त जब्त किये जिन पर ₹ 2,400 प्राप्त हुए हैं। इनमें से 300 अंशों को ₹ 2,500 में पुनः जारी कर दिया गया।

    (b) रीयल एस्टेट डैवलपर्स लि. ने ₹ 10 के 500 अंशों को जिनका धारक अमरजीत सिंह था, को जब्त किया जो ₹ 3 प्रति अंश प्रीमियम पर जारी किये थे जिसका भुगतान आबंटन पर होना था। उसने केवल ₹ 2 प्रति अंश से आवेदन राशि का भुगतान किया था। इनमें से 200 अंशों का ₹ 10 प्रति अंश से पुनर्निर्गमन किया गया।

(c) रायॅल एन्टरप्राइज लि. ने 200 अंश ₹ 10 प्रीमियम वाले 10% बट्टे पर जारी किये थे। इन पर केवल ₹ 4 प्रति अंश का ही भुगतान किया गया। इनमें से 100 अंशों का ₹ 7 प्रति अंश से पुनर्निर्गमन कर दिया गया।

5. रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए :

(a) पी. लि. ने 10 प्रति अंश के 400 अंश सुरेश को निर्गमित किये जिन पर उसने ₹ 3 की आवेदन राशि का ही भुगतान किया था तथा ₹ 3 प्रति अंश से आबंटन राशि एवं ₹ 2 प्रति अंश से प्रथम याचना राशि का भुगतान नहीं कर सका। अन्तिम याचना से पूर्व ही उसके अंशों को जब्त कर लिया गया। बाद में इन्हीं अंशों का ₹ 8 प्रति अंश पूर्ण प्रदत्त पुनर्निर्गमन कर दिया गया।

टिप्पणी

(b) एक कंपनी ने ₹ 100 प्रति अंश के 10,000 अंश ₹ 20 प्रीमियम पर जारी किये जिसका भुगतान इस प्रकार होना था ₹ 20 आवेदन पर, ₹ 60 प्रीमियम सहित, आबंटन पर, तथा ₹ 20 प्रति याचना से दो याचनाओं पर। अन्तिम याचना नहीं मांगी गई। 200 अंशों की धारक पिंकी ने आबंटन राशि का भुगतान नहीं किया तथा प्रथम याचना राशि के भुगतान न करने पर कंपनी के निदेशक मंडल ने उसके अंशों को जब्त कर लिया। इनमें से 150 अंशों को ₹ 120 प्रति अंश पूर्णप्रदत्त पुनः जारी कर दिया गया।

6. जॉय एन्टरटेन लिमिटेड ने 1,00,000 अंश ₹ 10 प्रति के ₹ 2 प्रीमियम पर निर्गमित किये। इन पर राशि का भुगतान इस प्रकार होना था :

₹ 3 प्रति अंश आवेदन पर

₹ 5 (प्रीमियम सहित) आबंटन पर

₹ 2 प्रति अंश प्रथम याचना पर

₹ 2 प्रति अंश अंतिम याचना पर

1,50,000 अंशों के लिये आवेदन प्राप्त हुए। सभी आवेदन स्वीकार कर लिये गये तथा आबंटन अनुपात के आधार पर किया गया। सुशील, जिसे 1,000 अंश आबंटित किये गये थे ने आबंटन राशि का भुगतान नहीं किया। प्रथम याचना के भुगतान न करने पर उसके अंशों को जब्त कर लिया गया।

गोमांग ने जिसने 750 अंशों के लिये आवेदन किया था, दो याचनाओं का भुगतान नहीं किया। उसके अंशों को भी जब्त कर लिया गया। सुशील के सभी अंश तथा गोमांग के 200 अंशों का ₹ 2 बट्टे पर पुनःनिर्गमन किया गया। कंपनी की बहियों में रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए तथा आवश्यक खाते भी बनाइए।

7. 21 सैन्च्यूरी कॉटन मिलस् लिमिटेड ₹ 10,00,000 की पूँजी से पंजीकृत की गई जो ₹ 10 के 1 लाख अंशों में विभक्त थी। 50,000 अंश जनसाधारण को ₹ 1 बट्टे पर प्रस्तावित किये गये।

टिप्पणी

राशि का भुगतान ₹ 5 आवेदन एवं आबंटन पर एवं ₹ 4 प्रति अंश याचना पर करना था। 48,000 अंशों के लिये आवेदन प्राप्त हुए। याचना मांगी गई तथा 1,000 अंशों को छोड़कर सभी पर राशि प्राप्त हुई। यह अंश जब्त कर लिये गये। इनमें से 800 अंश ₹ 12 प्रति से पुनर्निर्गमित कर दिये गये।

कंपनी की लेखा पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए। स्थिति विवरण भी तैयार कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

29.1 (i) मौलिक (ii) कंपनी (iii) जब्त किये गये
(iv) प्रीमियम (v) बट्टा

29.2 (i) (स) (ii) (स) (iii) (ग)

29.3 (i) ₹ 400 (ii) ₹ 200 (iii) ₹ 300

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

4. (क) पूँजी संचय ₹ 1,300 (ख) पूँजी संचय ₹ 600
(ग) पूँजी संचय ₹ 200

5. (क) पूँजी संचय ₹ 400 (ख) पूँजी संचय ₹ 3,000

6. पूँजी संचय ₹ 1,800

7. पूँजी संचय ₹ 4,000

30

ऋणपत्रों का निर्गमन

आप यह जान चुके हैं कि एक संयुक्त पूँजी कंपनी के लिए अंश पूँजी वित्त का मुख्य स्रोत है। यह पूँजी अंशों का निर्गमन कर एकत्रित की जाती है। जिन व्यक्तियों के पास कंपनी के अंश होते हैं वह अंशधारी कहलाते हैं तथा वह कंपनी के स्वामी होते हैं। कंपनी को दीर्घ अवधि के लिए अतिरिक्त राशि की आवश्यकता हो सकती हे। यह हर बार अंशों का निर्गमन नहीं कर सकती। यह जनसाधारण से ऋण ले सकती है। ऋण की राशि को छोटी राशि की इकाइयों में विभक्त कर, उन्हें जनसाधारण को बेच सकती है। प्रत्येक इकाई को 'ऋणपत्र' कहते हैं तथा इन इकाइयों के धारक को ऋणपत्रधारी कहते हैं। इस प्रकार से जुटाई गई राशि कंपनी पर ऋण होती है। इस पाठ में हम ऋणपत्रों के निर्गमन एवं लेखाकरण का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के पढ़ने के पश्चात आप :

- ऋणपत्रों का अर्थ एवं उसके प्रकारों को जान सकेंगे;
- ऋणपत्रों के निर्गमन एवं इसके लेखाकरण की प्रक्रिया को समझा सकेंगे;
- अंशों के सह प्रतिभूति (collateral security) के रूप में निर्गमन को समझा सकेंगे;
- ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टे एवं हानि को अपलिखित एवं कंपनी की लेखा पुस्तकों में उनके लेखाकरण व्यवहार को समझा सकेंगे;
- ऋणपत्रों पर ब्याज की गणना कर सकेंगे।

टिप्पणी

30.1 ऋणपत्रों का अर्थ एवं इसके प्रकार

ऋणपत्र ऋण राशि की एक इकाई होती है। जब भी कंपनी जन साधारण से ऋण जुटाना चाहती है, तो ऋणपत्र जारी करती है। जिस व्यक्ति के पास ऋणपत्र होते हैं वह 'ऋणपत्रधारी' कहलाता है। ऋणपत्र एक ऐसा प्रपत्र होता है जिस पर कंपनी की सार्वमुद्रा होती है। यह ऋण पत्र के सम मूल्य के बराबर कंपनी द्वारा प्राप्त ऋण की स्वीकृति होती है। इस पर शोधन की तिथि तथा ब्याज की दर एवं भुगतान का माध्यम अंकित होता है। एक ऋणपत्र धारक कंपनी का लेनदार होता है।

कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 2(12) के अनुसार 'ऋणपत्र में ऋणपत्र स्टॉक' बांड एवं कंपनी की अन्य प्रतिभूतियाँ सम्मिलित होती हैं चाहे उनका कंपनी की परिसम्पत्तियों पर प्रभार है अथवा नहीं।''

ऋणपत्रों के प्रकार

ऋणपत्रों को नीचे दिये गये आधार के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है :

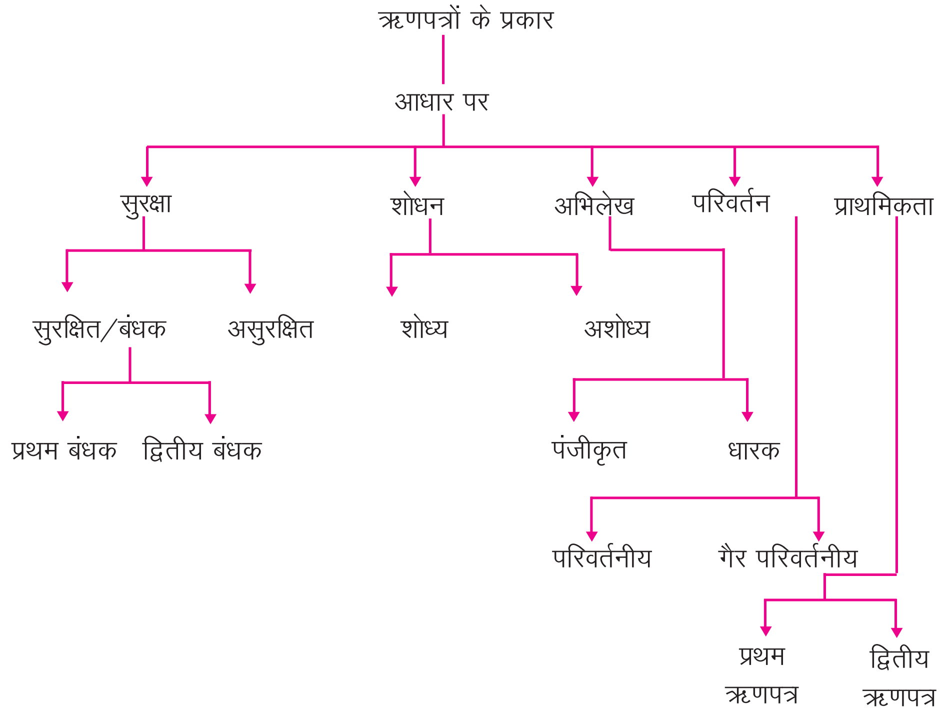

1. सुरक्षा की दृष्टि से (From Security Point of View)

(i) **सुरक्षित अथवा बंधक ऋणपत्र :** यह वह ऋणपत्र होते हैं जिनको कंपनी की सम्पत्तियों पर प्रभार के द्वारा सुरक्षित किया जाता है। इन्हें बंधक ऋणपत्र भी कहते हैं। सुरक्षित ऋणपत्रों के धारकों को अपनी मूल राशि तथा अदत्त ब्याज की राशि को कंपनी की बंधक रखी गई परिसम्पत्तियों से वसूलने का अधिकार होता है। भारत में ऋणपत्रों को सुरक्षित करना अनिवार्य है। सुरक्षित ऋणपत्र दो प्रकार के हो सकते हैं :

(a) ***प्रथम बंधक ऋणपत्र :*** इन ऋणपत्र धारियों का प्रभार पर रखी गई परिसम्पत्तियों पर पहला दावा होता है

(b) ***द्वितीय बंधक ऋणपत्र :*** इन ऋणपत्र धारियों का प्रभार पर रखी गई परिसम्पत्तियों पर दूसरे स्थान पर दावा होता है।

टिप्पणी

(ii) असुरक्षित ऋणपत्र : जिन ऋणपत्रों को मूल राशि एवं अदत्त ब्याज की कोई सुरक्षा नहीं मिली होती है उन्हें असुरक्षित ऋणपत्र कहते हैं। इन्हें साधारण ऋणपत्र भी कहते हैं।

2. शोधन के आधार पर (On the Basis of Redemption)

(i) शोध्य ऋणपत्र (Redeemable debentures) : यह ऋणपत्र एक निश्चित अवधि के लिए जारी किये जाते हैं। इन ऋणपत्रों की मूल राशि का ऋणपत्र धारकों को एक निश्चित अवधि की समाप्ति पर भुगतान कर दिया जाता है। इनका शोधन वार्षिक आहरण द्वारा अथवा खुले बाजार से क्रय करके किया जा सकता है।

(ii) अशोध्य ऋणपत्र (Non-redeemable debentures) : यह वे ऋणपत्र होते हैं जिनका शोधन कंपनी के जीवन काल में नहीं किया जाता। इन ऋणपत्रों का भुगतान कंपनी के समापन पर ही किया जाता है।

3. अभिलेख के आधार पर (On the basis of Records)

(i) पंजीकृत ऋणपत्र : यह वह ऋणपत्र है जिनका कंपनी में पंजीकरण करा लिया गया है। इन ऋणपत्रों की राशि का भुगतान केवल उन ऋणपत्र धारकों को किया जाता है जिनका नाम कंपनी के रजिस्टर में लिखा हुआ है।

(ii) धारक ऋणपत्र : यह वह ऋणपत्र है जिनका कंपनी के रजिस्टर में अभिलेख नहीं हुआ है। इन को मात्र सुपुर्दगी से हस्तान्तरित किया जा सकता है। इन ऋणपत्र धारकों को ब्याज पाने का अधिकार होता है।

4. परिवर्तनशीलता के आधार पर (On the basis of convertibility)

(i) परिवर्तनीय ऋणपत्र : ये वे ऋणपत्र हैं जिनको कंपनी के अंशों में पूर्व निर्धारित अवधि के समापन पर परिवर्तित किया जा सकता है। परिवर्तन की शर्तें साधारणतया ऋणपत्रों के निर्गमन के समय घोषित की जाती हैं।

(ii) गैर-परिवर्तनीय ऋणपत्र : इस प्रकार के ऋणपत्र धारक अपने ऋणपत्रों को कंपनी के अंशों में परिवर्तन नहीं करा सकते हैं।

5. प्राथमिकता के आधार पर (On the basis of priority)

(i) प्रथम ऋणपत्र : इन ऋणपत्रों का भुगतान अन्य ऋण पत्रों के पूर्व किया जाता है।

(ii) द्वितीय ऋणपत्र : इनका शोधन प्रथम ऋणपत्रों के शोधन के पश्चात किया जाता है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 30.1

निम्न में प्रत्येक के सामने ऋणपत्र के प्रकार का नाम लिखें :

(i) ऋणपत्र जिनका अन्य ऋणपत्रों से पूर्व शोधन किया जाता है।

(ii) ऋणपत्र जिनका धारक प्रभार की गई परिसम्पत्तियों पर पहला अधिकार होता है।

(iii) ऋणपत्र जिनका हस्तान्तरण केवल सुपुर्दगी द्वारा होता है।

(iv) ऋणपत्र जिनकी राशि कंपनी के समापन पर ही लौटाई जाती है।

30.2 ऋणपत्रों का निर्गमन

ऋणपत्रों के निर्गमन का अर्थ है कंपनी की सार्वमुद्रा के अर्न्तगत प्रमाण पत्र जारी करना जो कंपनी द्वारा ऋण लेने की स्वीकृति होती है।

किसी कंपनी द्वारा ऋण पत्रों के निर्गमन की प्रक्रिया अंशों के निर्गमन की प्रक्रिया के समान होती है। प्रविवरण पत्र जारी किया जाता है, आवेदन आमन्त्रित किए जाते हैं एवं आबंटन पत्र जारी किये जाते हैं। आवेदनों की अस्वीकृति एवं आबंटन पत्र जारी किये जाते हैं। आवेदनों की अस्वीकृति पर आवेदन राशि को लौटा दिया जाता है। आंशिक आबंटन पर अतिरिक्त आवेदन राशि को आगे की किश्तों में समायोजित किया जा सकता है।

ऋणपत्रों के निर्गमन के विभिन्न स्वरूप हैं जो इस प्रकार हैं :

1. ऋणपत्रों का नकद निर्गमन
2. ऋणपत्रों का नकद के अतिरिक्त निर्गमन
3. ऋणपत्रों का सहप्रतिभूति के रूप में निर्गमन

ऋणपत्रों का इस प्रकार से भी निर्गमन किया जा सकता है :

(i) सममूल्य पर (ii) प्रीमियम पर (iii) बट्टे पर

ऋणपत्रों के नकद निर्गमन पर लेखांकन

1. ऋणपत्रों का नकद सममूल्य पर निर्गमन :

निम्नलिखित रोजनामचा प्रविष्टियाँ की जाएंगी :

(i) आवेदन राशि प्राप्त

बैंक खाता	नाम
ऋणपत्र आवेदन खाता से	
(ऋणपत्रों पर आवेदन राशि प्राप्त हुई)	

(ii) ऋणपत्रों के आबंटन पर आवेदन राशि का ऋणपत्र खाते में हस्तान्तरण

ऋणपत्र आवेदन खाता नाम
 ऋणपत्र खाता से
(आवेदन राशि का ऋणपत्र खाते में हस्तान्तरण किया गया)

(iii) आबंटन पर राशि देय

ऋणपत्र आबंटन खाता नाम
 ऋणपत्र खाता से
(आबंटन राशि देय हुई)

(iv) आबंटन पर देय राशि की प्राप्ति

बैंक खाता नाम
 ऋणपत्र आबंटन खाता से
(ऋणपत्र आबंटन राशि प्राप्त हुई)

(v) प्रथम एवं अन्तिम याचना राशि मांगी गई :

ऋणपत्र प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता नाम
 ऋणपत्र खाता से
(................ ऋणपत्रों पर प्रथम एवं अन्तिम याचना राशि देय हुई)

(vi) प्रथम एवं अन्तिम याचना राशि प्राप्त हुई :

बैंक खाता नाम
 ऋणपत्र प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता से
(देय याचना राशि प्राप्त हुई)

नोट : दो याचनाएं की जा सकती है प्रथम एवं द्वितीय। इनकी प्रविष्टियां वही हैं जो प्रथम एवं अन्तिम याचना की हैं।

उदाहरण 1

शाइनिंग इन्डिया लि. ने 5,000 8% ऋणपत्र ₹ 100 प्रति निर्गमित किये जिन पर भुगतान इस प्रकार किया जाना था।

₹ 20 आवेदन पर

₹ 30 आबंटन पर

₹ 50 प्रथम एवं अन्तिम याचना पर

सभी ऋणपत्रों के लिए आवेदन प्राप्त हुए तथा उनका आबंटन किया गया। सभी याचनाएं समय पर प्राप्त हुई। कंपनी की लेखा पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

टिप्पणी

हल :

शाइनिंग इन्डिया लि.

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
1.	बैंक खाता नाम ऋणपत्र आवेदन खाता से (5,000 ऋणपत्रों के लिए आवेदन राशि प्राप्त हुई)		1,00,000	1,00,000
2.	ऋणपत्र आवेदन खाता नाम 8% ऋणपत्र खाता से (आवेदन राशि का आबंटन पर ऋण पत्रों में हस्तान्तरण)		1,00,000	1,00,000
3.	ऋणपत्र आबंटन खाता नाम 8% ऋणपत्र खाता से (5,000 ऋणपत्रों पर ₹ 30 प्रति ऋण पत्र आबंटन राशि देय)		1,50,000	1,50,000
4.	बैंक खाता नाम ऋणपत्र आबंटन खाता से (आबंटन राशि प्राप्त हुई)		1,50,000	1,50,000
5.	ऋणपत्र प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता नाम 8% ऋणपत्र खाता से (ऋणपत्र प्रथम एवं अन्तिम याचना राशि ₹ 50 प्रति ऋणपत्र की दर से देय)		2,50,000	2,50,000
6.	बैंक खाता नाम ऋणपत्र प्रथम एवं अन्तिम याचना खाता से (ऋणपत्र प्रथम एवं अन्तिम याचना राशि प्राप्त हुई)		2,50,000	2,50,000

टिप्पणी

अधि-अभिदान (Over Subscription)

जब कंपनी अभिदान हेतु ऋणपत्रों की संख्या से अधिक के लिए आवेदन प्राप्त करती है तो इसे अधि-अभिदान कहते हैं। अतिरिक्त आवेदन राशि के साथ निम्न व्यवहार किया जा सकता है :

(क) आवेदनों को पूर्ण तथा रद्द करने पर अतिरिक्त आवेदनों की कुल राशि को लौटा दिया जाता है।

(ख) आवेदनों पर प्राप्त अतिरिक्त राशि का समायोजन आबंटन एवं याचना पर देय राशि में कर लिया जाता है।

आंशिक आबंटन पर

अतिरिक्त राशि का आबंटन पर देय राशि में समायोजन कर लिया जाता है ताकि शेष राशि वापस कर दी जाती है। उपरोक्त स्थिति में रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

आवेदनों के रद्द कर दिये जाने पर राशि की वापसी के लिए :

ऋणपत्र आवेदन खाता	नाम
बैंक खाता से	
(रद्द किये गये आवेदनों की राशि की वापसी)	

अतिरिक्त आवेदन राशि का आबंटन देय राशि में समायोजन करने पर

ऋणपत्र आवेदन खाता	नाम
ऋणपत्र आबंटन खाता से	
(अतिरिक्त आवेदन राशि का समायोजन)	

उदाहरण 2

ए. बी. सी. लि. ने 5,000 10% ऋणपत्र 100 रु. प्रति से जारी किये जिन पर भुगतान इस प्रकार करना था : ₹ 40 आवेदन पर एवं ₹ 60 आबंटन पर। 6,000 ऋणपत्रों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। 500 ऋणपत्रों के आवेदकों को क्षमा पत्र भेज दिए गये तथा उनकी राशि लौटा दी गई शेष आवेदकों को अनुपातन आबंटन कर दिया गया। अधि-अभिदान की राशि को आबंटन पर देय राशि में समायोजत कर दिया गया। सभी राशि समय पर प्राप्त हुई।

उपरोक्त लेनदेनों के लिए कंपनी की लेखा पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

टिप्पणी

हल :

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
1.	बैंक खाता नाम ऋणपत्र आवेदन खाता से (6,000 ऋणपत्रों के लिए ₹ 40 प्रति ऋणपत्र की दर से आवेदन राशि प्राप्त की गई)		2,40,000	 2,40,000
2.	ऋणपत्र आवेदन खाता नाम 10% ऋणपत्र खाता से बैंक खाता से ऋणपत्र आबंटन खाता से (5,000 ऋणपत्रों की ऋणपत्र आवेदन राशि का उनके आबंटन पर ऋणपत्र खाते में हस्तान्तरण 500 ऋणपत्रों की राशि को वापस किया तथा शेष 500 की राशि आबंटन में समायोजत की गई)		2,40,000	 2,00,000 20,000 20,000
3.	ऋण आबंटन खाता नाम 10% ऋणपत्र खाता से (5,000 ऋणपत्रों पर ₹ 60 प्रति ऋणपत्र आबंटन राशि देय)		3,00,000	 3,00,000
4.	बैंक खाता नाम ऋणपत्र आबंटन खाता से (आबंटन राशि प्राप्त हुई)		2,80,000	 2,80,000

पाठगत प्रश्न 30.2

i. ***ऋणपत्रों के विभिन्न प्रकारों को लिखिए :***

(अ) ____________________

(ब) ____________________

ii. एक कंपनी ने ₹ 100 प्रत्येक के 10,000, 10% ऋणपत्रों का निर्गमन किया जिस पर ₹ 30 प्रति ऋणपत्र की राशि का भुगतान आवेदन के साथ किया जायेगा। 12,000 ऋणपत्रों के लिये आवेदन प्राप्त हुए। कंपनी अधिक प्राप्त आवेदन राशि जो कि ₹60,000 (2,000 × ₹ 30) है क्या करे।

30.3 ऋणपत्रों का प्रीमियम और बट्टे पर निर्गमन

ऋणपत्रों का प्रीमियम पर निर्गमन करने का अभिप्राय सममूल्य से अधिक मूल्यपर जारी करना है। उदाहरण के लिए ₹ 100 का ऋणपत्र का ₹ 110 में निर्गमन करना। यह अधिक राशि ₹ 10 है जो कि प्रीमियम की राशि है। ऋणपत्रों के निर्गमन पर प्रीमियम की राशि प्रतिभूति प्रीमियम खाता के जमा में लिखी जाती है।

कंपनी अधिनियम 1956 की धारा 78 के अनुसार :

रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार से होगी

ऋणपत्र आबंटन खाता नाम
    ऋणपत्र खाता से
    प्रतिभूति प्रीमियम खाता से
(आबंटन पर ₹ .... प्रीमियम सहित देय राशि)

उदाहरण 3

एक कंपनी ने ₹ 100 के 5,000 10% ऋणपत्र 20% प्रीमियम पर जारी किये जिनका भुगतान इस प्रकार होना था :

₹ 60 आवेदन पर

₹ 60 आबंटन पर (प्रीमियम सहित)

सभी ऋणपत्रों का अभिदान हुआ तथा राशि समय पर प्राप्त हुई ।

रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए।

हल

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
1.	बैंक खाता नाम ऋण पत्र आवेदन खाता से (आवेदन राशि प्राप्त हुई)		3,00,000	 3,00,000

टिप्पणी

2.	ऋणपत्र आवेदन खाता नाम 10% ऋणपत्र खाता से (आवेदन राशि का ऋणपत्र खाते में हस्तान्तरण)		3,00,000	3,00,000
3.	ऋणपत्र आबंटन खाता नाम 10% ऋणपत्र खाता से प्रतिभूति प्रीमियम खाता से (प्रीमियम सहित आबंटन राशि देय)		3,00,000	2,00,000 1,00,000
4.	बैंक खाता नाम ऋणपत्र आबंटन खाता से (आबंटन राशि प्राप्त हुई)		3,00,000	3,00,000

ऋणपत्रों का बट्टे पर निर्गमन

जब ऋणपत्र उनके सममूल्य से कम पर जारी किये जाते हैं तो इनका बट्टे पर निर्गमन करना कहा जाता है। उदाहरण के लिये ₹ 100 का ऋणपत्र ₹ 90 पर निर्गमन किया गया कंपनी अधिनियम 1956 में ऋणपत्रों के बट्टे पर निर्गमन के लिये कोई शर्त नहीं रखी है जैसा कि अंशों के बट्टे पर जारी करने के लिये होती हैं। लेकिन ऋणपत्रों के इस प्रकार के निर्गमन हेतु कंपनी के अन्तर्नियमों में प्रावधान होना चाहिए।

ऋणपत्रों के बट्टे पर निर्गमन की रोजनामचा प्रविष्टि (जबकि बट्टा आबंटन के समय दिया गया हो)

ऋणपत्र आबंटन खाता नाम
ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टा खाता नाम
ऋणपत्र खाता से
(आबंटन देय हुआ बट्टे की राशि ₹ .... प्रति ऋणपत्र है)

उदाहरण 4

एक कंपनी ने 2,000, 9% ऋणपत्र ₹ 100 प्रति ऋणपत्र 10% बट्टे पर जारी किये जिन पर भुगतान इस प्रकार होना था :

₹ 40 आवेदन पर

₹ 50 आबंटन पर

रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए।

टिप्पणी

हल :

रोजनामचा प्रविष्टियां

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
1.	बैंक खाता नाम ऋणपत्र आवेदन खाता (आवेदन राशि प्राप्त हुई)		80,000	 80,000
2.	ऋणपत्र आवेदन खाता नाम 9% ऋणपत्र खाता से (आवेदन राशि का ऋणपत्र खाते में हस्तान्तरण किया गया)		80,000	 80,000
3.	ऋणपत्र आबंटन खाता नाम ऋणपत्र बट्टा खाता नाम 9% ऋणपत्र खाता से (₹ 10 प्रति ऋणपत्र बट्टे पर आबंटन पर राशि देय)		1,00,000 20,000	 1,20,000
4.	बैंक खाता नाम ऋणपत्र आबंटन खाता (आबंटन राशि प्राप्त हुई)		1,00,000	 1,00,000

रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के बदले में ऋणपत्रों का निर्गमन

जब कंपनी परिसम्पत्तियों का क्रय करती है तथा क्रय के भुगतान स्वरूप विक्रेता को ऋणपत्र जारी करती है तो इसे रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल स्वरूप ऋणपत्रों का निर्गमन कहते हैं। विक्रेता को ऋणपत्र सममूल्य पर प्रीमियम पर तथा बट्टे पर जारी किये जा सकते हैं।

लेखाकरण

1. सम्पत्ति का क्रय :

(विभिन्न) सम्पत्ति खाता नाम
(प्रत्येक सम्पत्ति अलग-अलग)
विक्रेता खाता से
(परिसम्पत्तियों का क्रय)

टिप्पणी

2. ऋणपत्रों का निर्गमन

(i) सममूल्य पर

विक्रेता खाता नाम
ऋणपत्र खाता से
(विक्रेता को ऋणपत्रों का सममूल्य पर निर्गमन)

(ii) बट्टे पर

विक्रेता खाता नाम
ऋणपत्र बट्टा खाता नाम
ऋणपत्र खाता से
(ऋणपत्रों का विक्रेता को .... प्रति ऋणपत्र बट्टे पर निर्गमन)

(iii) प्रीमियम पर

विक्रेता खाता नाम
ऋणपत्र खाता से
प्रतिभूति प्रीमियम खाता से
(विक्रेता को .... प्रीमियम पर ऋणपत्रों का निर्गमन)

उदाहरण 5

एम. बी. इलैक्ट्रोनिक्स लि. ने ₹ 1,98,000 की मशीन का क्रय किया तथा विक्रेता को ₹ 100 के 9% ऋणपत्रों का निर्गमन किया। रोजनामचा प्रविष्टियाँ करें यदि ऋणपत्र :

(क) सममूल्य पर जारी किये गये हैं;

(ख) ₹ 10 के प्रीमियम पर जारी किये हैं;

(ग) ₹ 10 के बट्टे पर जारी किये हैं।

हल :

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
(क)	मशीन खाता नाम विक्रेता खाता से (मशीन का क्रय किया गया)		1,98,000	1,98,000
	विक्रेता खाता नाम 9% ऋणपत्र खाता से (₹ 100 प्रति के 1,980 ऋण पत्र विक्रेता को जारी किये)		1,98,000	1,980,000

टिप्पणी

(ख)	विक्रेता खाता नाम 9% ऋणपत्र खाता से प्रतिभूति प्रीमियम खाता से (1800 ऋणपत्र ₹ 10 प्रति ऋणपत्र अभिमूल्य पर जारी किये)		1,98,000	 1,80,000 18,000
(ग)	विक्रेता खाता नाम ऋणपत्र बट्टा खाता नाम 9% ऋणपत्र खाता से (2,200 ऋणपत्रों का ₹ 100 प्रति से ₹ 10 प्रति ऋणपत्र बट्टे पर निर्गमन)		1,98,000 22,000	 2,20,000

कार्यकारी टिप्पणी :

देय राशि = ₹ 1,98,000

₹ 10 प्रीमियम राशि सहित ऋणपत्र का मूल्य = ₹ 110

निर्गमित किये जाने वाले ऋणपत्रों की संख्या = $\frac{₹1,98,000}{₹110}$ =₹1,800

ऋणपत्रों की राशि = 1,800 × 100 = ₹ 1,80,000

प्रतिभूति प्रीमियम राशि = 1,800 × 10 = ₹ 18,000

कार्यकारी टिप्पणी :

विक्रेता को देय राशि = ₹ 1,98,000

₹ 10 बट्टे पर एक ऋणपत्र का मूल्य = ₹ 90 (₹ 100 – ₹ 10)

निर्गमन के लिए ऋणपत्रों की संख्या = $\frac{₹1,98,000}{₹90}$ =₹2,200

ऋणपत्र राशि = 2,200 × ₹ 100 = ₹ 2,20,000 (सममूल्य पर)

ऋणपत्र बट्टा = 2,200 × ₹ 10 = ₹ 22,000

ऋणपत्रों का उनके शोधन से जुड़ी शर्तों पर निर्गमन (रोजनामचा प्रविष्टि)

(i) सममूल्य पर निर्गमन एवं सममूल्य पर शोधन :

बैंक खाता नाम

ऋणपत्र खाता से

(₹ .... के ऋणपत्र सममूल्य पर निर्गमित किये)

टिप्पणी

(ii) बट्टे पर निर्गमन सममूल्य पर शोधन

बैंक खाता	नाम
ऋणपत्र बट्टा खाता	नाम
ऋणपत्र खाता से	
(₹ .... का ऋणपत्र .... बट्टे पर जारी)	

(iii) प्रीमियम पर निर्गमन सममूल्य पर शोधन

बैंक खाता	नाम
ऋणपत्र खाता से	
प्रतिभूति प्रीमियम खाता से	
(₹ ....ऋणपत्रों के ....प्रीमियम पर निर्गमन)	

(iv) सममूल्य पर निर्गमन, प्रीमियम पर शोधन

बैंक खाता	नाम
ऋणपत्र निर्गमन पर हानि खाता	नाम
ऋणपत्र खाता से	
ऋणपत्र शोधन पर प्रीमियम खाता से	
(₹ .... के ऋणपत्रों .... प्रीमियम पर शोधन का निर्गमन)	

(v) बट्टे पर निर्गमन और प्रीमियम पर शोधन

बैंक खाता	नाम
ऋणपत्र बट्टा खाता	नाम
ऋणपत्र निर्गमन पर हानि खाता	नाम
ऋणपत्र खाता से	
ऋणपत्र शोधन पर प्रीमियम खाता से	
(₹ .... ऋणपत्रों का ₹ .... बट्टे पर निर्गमन जिनका शोधन ₹ .... प्रीमियम पर)	

उदाहरण 6

₹ 500 के 200 ऋणपत्रों के निम्न प्रकार से निर्गमन रोजनामचा पर प्रविष्टियां कीजिए :

(i) ₹ 500 पर निर्गमन ₹ 500 पर शोधन

(ii) ₹ 450 पर निर्गमन ₹ 500 पर शोधन

(iii) ₹ 550 पर निर्गमन ₹ 500 पर शोधन

(iv) ₹ 500 पर निर्गमन ₹ 550 पर शोधन

(v) ₹ 450 पर निर्गमन ₹ 550 पर शोधन

टिप्पणी

हल :

रोजनामचा

तिथि	विवरण		खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
(i)	बैंक खाता	नाम		1,00,000	
	ऋणपत्र खाता से				1,00,000
	(₹ 500 प्रति के 200 अंशों निर्गमित किए)				
(ii)	बैंक खाता	नाम		90,000	
	ऋणपत्र बट्टा खाता	नाम		10,000	
	ऋणपत्र खाता से				1,00,000
	(₹ 500 के 200 ऋणपत्र ₹ 450 प्रति ऋणपत्र जारी किये)				
(iii)	बैंक खाता	नाम		1,10,000	
	ऋणपत्र खाता से				1,00,000
	प्रतिभूति प्रीमियम खाता से				10,000
	(₹ 500 के 200 ऋणपत्र ₹ 550 पर जारी किये)				
(iv)	बैंक खाता	नाम		10,000	
	ऋणपत्र निर्गमन हानि खाता	नाम		10,000	
	ऋणपत्र खाता से				1,00,000
	ऋणपत्र शोधन पर प्रीमियम खाता से				10,000
	(₹ 500 के 200 ऋणपत्रों का निर्गमन ₹ 550 पर भुगतान होना है)				
(v)	बैंक खाता	नाम		90,000	
	ऋणपत्र निर्गमन हानि खाता	नाम		10,000	
	ऋणपत्र बट्टा खाता	नाम		10,000	
	ऋणपत्र खाता से				1,00,000
	ऋणपत्र शोधन पर प्रीमियम खाता से				10,000
	(₹ 500 के 200 ऋणपत्र ₹ 450 पर जारी किये जिनका भुगतान ₹ 550 पर होना है)				

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 30.3

I. एक कम्पनी ने ₹3,15,000 में भवन खरीदा तथा उसके प्रतिफल स्वरूप ₹100 को 10% ऋणपत्र 5% प्रीमियम पर निर्गमन किया :

(i) विक्रेता को जारी किये गये ऋणपत्रों की संख्या की गण्ना करें।

(ii) निर्गमन की रोजनामचा प्रविष्टि करें।

II. उचित शब्द अथवा अंक भर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) ₹ 100 सममूल्य के 10% ऋणपत्र का ₹ 90 में निर्गमन किया गया। इसको .... पर निर्गमन कहेगें।

(ii) ₹ 100 सममूल्य के 9% ऋणपत्र का ₹ 120 में निर्गमन किया गया। इसको .... पर निर्गमन कहेगे।

(iii) ₹ 100 प्रत्येक के 100, 8% ऋणपत्रों को समान क्रय के लिए विक्रेताओं को निर्गमित किये गये इसको .... निर्गमन कहेगें।

(iv) एक कंपनी ने अपने ऋणपत्र बट्टे पर जारी किये हैं इस सम्बन्ध में अपनी .... में प्रावधान किया है।

30.4 ऋणपत्रों की सह प्रतिभूति के रूप में निर्गमन

सह प्रतिभूति से अभिप्राय मुख्य प्रतिभूति के अतिरिक्त दी गई सहायक प्रतिभूति से है। यह एक सहायक अथवा द्वितीयक प्रतिभूति होती है। जब भी कोई कंपनी किसी बैंक अथवा वित्तीय संस्थान से ऋण लेती है तो यह सहायक प्रतिभूति के रूप में अपने ऋणपत्र निर्गमित कर सकती है जो कि मुख्य प्रतिभूति के अतिरिक्त होती है ऋणपत्रों के इस निर्गमन को 'ऋणपत्रों का सह प्रतिभूति के लिए निर्गमित करना' कहते हैं। ऋणदाता का इन ऋणपत्रों पर उसी स्थिति में अधिकार होगा जब कंपनी ऋण का भुगतान नहीं कर पाती तथा मुख्य प्रतिभूति का उपयोग कर लिया गया है। यदि इस अधिकार के उपयोग की आवश्यकता नहीं होती है तो इन ऋणपत्रों को कंपनी को लौटा दिया जाता है। सह प्रतिभूति के लिये निर्गमित ऋणपत्रों पर ब्याज नहीं दिया जाता क्योंकि कंपनी ऋण पर ब्याज का भुगतान कर रही है।

कंपनी की लेखापुस्तकों में ऋणपत्रों के सह प्रतिभूति के रूप में निर्गमन का दो प्रकार से लेखांकन किया जा सकता है :

(i) कंपनी की लेखा पुस्तकों में कोई रोजनामचा प्रविष्टि नहीं की जाती :

ऋणपत्र सह प्रतिभूति के रूप में जारी किये गये हैं। यह टिपण्णी स्थिति विवरण की देयताएं स्तम्भ में रक्षित ऋण एवं अग्रिम शीर्षक के अन्तर्गत लिख दी जाती है। यदि अल्प अवधि ऋणों के लिए जारी किए गये है तो चालू देयताओं में दिखाएंगे।

उदाहरण 7

30.9.2014 को X लि. ने ₹ 8,00,000 का ऋण लिया, जो 5 वर्षों के बाद पुनर्भुगतेय है। इसके लिए कंपनी ने 9% ऋणपत्र समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमित किए। कंपनी के तुलन पत्र में इन ऋणपत्रों को दर्शाइए तथा खाता टिप्पणियां तैयार कीजिए।

हल :

X लि.
स्थिति विवरण
31.3.2014 को

विवरण	*नोट*	₹
I. समता एवं देयताएँ		
गैर चालू देयताएं – दीर्घ अवधि ऋण	1	8,00,000

नोट

दीर्घ अवधि ऋण

बैंक ऋण — 8,00,000

(9% ऋण पत्र सहप्रतिभूति द्वारा सुरक्षित)

उदाहरण 8

1.3.2014 को Y लि. ने ₹ 10,00,000 को अल्प अवधि ऋण लिया। कम्पनी ₹ 100 प्रति के 9%, 12,000 ऋण पत्र सह प्रतिभूति के रूप में जारी किए। Y लि. की स्थिति विवरण में ऋण को दर्शाइए तथा नोट टु एकाउन्ट बनाइए।

हल :

Y लि.
स्थिति विवरण
31.3.2014 को

विवरण	*नोट*	₹
I. समता एवं देयताएं		
चालू देयताएं – अल्प अवधि ऋण	1	10,00,000

नोट :

अल्प अवधि ऋण

बैंक ऋण

(12,000 9% ऋण पत्र 100 प्रति के सहप्रतिभूति द्वारा सुरक्षित)

टिप्पणी

(ii) कम्पनी लेखापुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टि की जाती है

ऋणपत्रों के सह प्रतिभूति के रूप में जारी करने पर रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी जिसमें ऋणपत्र उचिन्त (suspense) खाते के नाम में लिखा जाएगा क्योंकि इस निर्गमन के बदले में कोई रोकड़ प्राप्त नहीं हुई है।

निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी

ऋणपत्र उचिन्त खाता   नाम
    ऋणपत्र खाता से
(₹ ....के .... ऋणपत्र .... को सहवर्ती प्रतिभूति के रूप में जारी किये गये)

ऋणपत्र निर्गमन करने वाली कंपनी के स्थिति विवरण में इसे इस प्रकार दर्शाया जायेगा :

जब ऋण चुकता कर दिया जाता है तो इस प्रविष्टि को इसकी उलट प्रविष्टि कर इसको रद्द कर दिया जाता है, स्थिति विवरण में सहप्रतिभूति के रूप में निर्गमित ऋणपत्रों को अन्य ऋण पत्रों से भिन्न दर्शाया जाता है।

सहप्रतिभूति के रूप में निर्गमित ऋणपत्रों को ऋण से संबंधित किया जाता है। इसलिए इन्हें उसी खातों के नोट में दिखाया जाता है, जिसमें ऋणपत्रों द्वारा सुरक्षित ऋण दिखाया जाता है। उदाहरण के लिए यदि ऋण को दीर्घ अवधि ऋण में दिखाया है तो सहप्रतिभूति के रूप में निर्गमित ऋण पत्रों को भी स्थिति विवरण के एक मात्र समता एवं देयताएँ में गैर चालू देयता के अन्तर्गत दिखाया जाएगा।

उदाहरण 9

XY Ltd. ने 1.1.14 को ₹ 8,00,000 का ऋण लिया तथा ₹ 200 प्रति के 9% ऋणपत्र सहप्रतिभूति के रूप में निर्गमित किए स्थिति विवरण बनाइए रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए तथा खाता नोट बनाइए।

हल :

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	बैंक खाता नाम बैंक ऋण खाता से (₹ 8,00,000 का बैंक से ऋण लिया)		8,00,000	8,00,000
	ऋण पत्र उचिन्त खाता नाम 9% ऋण पत्र खाता से (9% ऋण पत्र लेने पर सहप्रतिभूति के रूप में निर्गमित किए)		10,00,000	10,00,000

XY Ltd.
स्थिति विवरण
31.3.2014 का

विवरण	नोट	₹
I. समता एवं देयताएं		
दीर्घ अवधि ऋण	1	8,00,000

खाता नोट

दीर्घ अवधि ऋण

बैंक से ऋण		8,00,000
1,000 9% ₹ 100 प्रति के ऋण पत्र (सहप्रतिभूति के रूप में निर्गमित)	10,00,000	
घटा : ऋण पत्र उचिन्त खाता	10,00,000	0
		8,00,000

पाठगत प्रश्न 30.4

निम्नलिखित का उत्तर एक शब्द/शब्दों में दीजिए :

(i) मुख्य प्रतिभूति के अतिरिक्त निर्गमित प्रतिभूति का नाम लिखें।

(ii) ऋणपत्रों के सह प्रतिभूति के निर्गमन पर कंपनी की लेखा पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टि करते समय किस खाते के 'नाम' में लिखा जायेगा?

(iii) ऋणपत्रों के सह प्रतिभूति के निर्गमन पर ऋणपत्र उचिंत (suspense) खाते को कंपनी के स्थिति विवरण के किस ओर लिखा जाएगा?

(iv) कम्पनी ऋणपत्रों को सह प्रतिभूति के रूप में कब जारी करती है?

30.5 ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टा एवं ऋण पत्रों के निर्गमन पर हानि

यदि कंपनी अपने ऋणपत्रों को बट्टे पर जारी करती है तो बट्टे की पूरी राशि को कंपनी के लाभ-हानि खाते में से उसी वर्ष नहीं घटाया जाएगा जिस वर्ष यह छूट दी गई है। बट्टे की राशि बहुत अधिक होती है तथा ऋणपत्रों के निर्गमन से कम्पनी को कई वर्षों तक लाभ प्राप्त होता है। इसीलिए बट्टे की राशि के एक भाग को ही प्रतिवर्ष अपलिखित किया जाता है। सामान्यतः इसे इन ऋणपत्रों के शोधन से पूर्व ही समाप्त कर दिया जाता है।

ऋणपत्रों के निर्गमन पर दी गई छूट की राशि को पूँजीगत हानि माना जाता है।

टिप्पणी

ऋणपत्र पर बट्टे की राशि का अपलेखन दो प्रकार से किया जा सकता है :

1. सभी ऋणपत्रों का एक निश्चित अवधि की समाप्ति पर शोधन किया जाता है :

जब ऋणपत्रों का एक निश्चित अवधि की समाप्ति पर शोधन किया जाता है तो बट्टे की राशि को ऋणपत्रों के निर्गमन से उनके शोधन के मध्य के वर्षों में बराबर बांट दिया जाता है। ऋणपत्रों के निर्गमन पर दी गई छूट की राशि के अपलेखन की राशि की गणना इस प्रकार की जाएगी :

$$\text{प्रति वर्ष अपलिखित बट्टा राशि} = \frac{\text{बट्टे की कुल राशि}}{\text{कुल वर्ष}}$$

उदाहरण 10

एक कंपनी ने 1000 ऋणपत्र ₹ 1,000 प्रति से 10% बट्टे पर 5 वर्ष के लिये निर्गमित किये अर्थात इनका शोधन 5 वर्ष के पश्चात होना था। प्रतिवर्ष के लिए बट्टे की राशि की गणना कीजिए तथा ऋण पत्र बट्टा खाता बनाइए।

हल :

$$\text{ऋणपत्र बट्टे की राशि} = \frac{(1,000 \times 1,000) \times 10}{100} = ₹\ 1,00,000$$

$$\text{प्रतिवर्ष अपलिखित की जाने वाली राशि} = \frac{₹1,00,000}{100} = ₹\ 20,000$$

लेखाकरण

प्रतिवर्ष ऋणपत्र बट्टे को अपलिखित करने की रोजनामचा प्रविष्टि

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
	लाभ-हानि खाता नाम ऋणपत्रों का निर्गमन बट्टा खाता से (ऋणपत्र बट्टा राशि का अपलिखित करना)		20,000	20,000

ऋणपत्र बट्टा खाता, बट्टे की राशि के अपलिखित करने तक इस प्रकार से दर्शाया गया है :

ऋणपत्र निर्गमन पर बट्टा खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	राशि (₹)
	प्रथम वर्ष				*प्रथम वर्ष*		
जन 1	ऋणपत्र खाता		1,00,000	दिस. 31	लाभ-हानि खाता		20,000
				दिस. 31	शेष आ/ला		80,000
			1,00,000				1,00,000
	द्वितीय वर्ष				*द्वितीय वर्ष*		
जन 1	शेष आ/ले		80,000	दिस. 31	लाभ हानि खाता		20,000
				दिस. 31	शेष आ/ला		60,000
			80,000				80,000
	तृतीय वर्ष				*तृतीय वर्ष*		
जन 1	शेष आ/ले		60,000	दिस. 31	लाभ हानि खाता		20,000
				दिस. 31	शेष आ/ला		40,000
			60,000				60,000
	चौथा वर्ष				*चौथा वर्ष*		
जन 1	शेष आ/ले		40,000	दिस. 31	लाभ हानि खाता		20,000
				दिस. 31	शेष आ/ला		20,000
			40,000				40,000
	पाँचवा वर्ष				*पाँचवा वर्ष*		
जन 1	शेष आ/ले		20,000	दिस. 31	लाभ हानि खाता		20,000
			20,000				20,000

2. ऋणपत्रों का किश्तों में शोधन

ऋणपत्रों का एक निश्चित अवधि के भीतर किश्तों में शोधन किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में ऋणपत्र बट्टे की राशि को ऋणपत्र की शोधित राशि के अनुपात में प्रतिवर्ष समाप्त कर दिया जाएगा।

उदाहरण 11

एक कंपनी में 3000 9% ऋणपत्र ₹ 1,000 प्रति से 10% बट्टे पर निर्गमित किए। यदि ऋणपत्रों का पांच वार्षिक समान किश्तों में शोधन किया गया है तो प्रतिवर्ष अपलिखित की जाने वाली ऋणपत्र बट्टा राशि की गणना कीजिए तथा ऋणपत्र बट्टा खाता भी बनाइए।

हल :

ऋणपत्र के निर्गमन पर बट्टा राशि की गणना :

कुल ऋणपत्र निर्गमन पर बट्टा राशि

$$= \frac{10}{100} \times 3,000 \times 1,000 = ₹\ 3,00,000$$

वर्ष समाप्ति	ऋण पत्र की देय राशि	अनुपात	बट्टे की राशि की समाप्ति
प्रथम	30,00,000	5	$3,00,000 \times \frac{5}{15} = 1,00,000$
द्वितीय	24,00,000	4	$3,00,000 \times \frac{4}{15} = 80000$
तृतीय	18,00,000	3	$3,00,000 \times \frac{3}{15} = 60000$
चतुर्थ	12,00,000	2	$3,00,000 \times \frac{2}{15} = 40000$
पंचम	6,00,000	1	$3,00,000 \times \frac{1}{15} = 20000$
		15	

टिप्पणी

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
प्रथम वर्ष	लाभ-हानि खाता ऋणपत्र निर्गमन पर बट्टे खाता से (ऋणपत्र निर्गमन पर बट्टे को समाप्त किया)		1,00,000	1,00,000

प्रतिवर्ष बट्टे की सम्बन्धित राशि से समान प्रविष्टि की जाएगी।

बट्टे की राशि की सम्पूर्ण समाप्ति तक ऋण पत्र बट्टा खता इस प्रकार दर्शाया जाएगा :

ऋणपत्र निर्गमन पर बट्टा खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	राशि (₹)
	प्रथम वर्ष				*प्रथम वर्ष*		
जन. 1	ऋणपत्र खाता		3,00,000	दिस. 31	लाभ हानि खाता		1,00,000
				दिस. 31	शेष आ/ले		2,00,000
			3,00,000				3,00,000

	द्वितीय वर्ष				*द्वितीय वर्ष*		
जन. 1	शेष आ/ले		2,00,000	दिस. 31	लाभ हानि खाता		80,000
				दिस. 31	शेष आ/ले		1,20,000
			2,00,000				2,00,000
	तृतीय वर्ष				*तृतीय वर्ष*		
जन. 1	शेष आ/ले		1,20,000	दिस. 31	लाभ हानि खाता		60,000
				दिस. 31	शेष आ/ले		60,000
			1,20,000				1,20,000
	चतुर्थ वर्ष				*चतुर्थ वर्ष*		
जन. 1	शेष आ/ले		60,000	दिस. 31	लाभ हानि खाता		40,000
				दिस. 31	शेष आ/ले		20,000
			60,000				60,000
	पंचम वर्ष				*पंचम वर्ष*		
जन. 1	शेष आ/ले		20,000	दिस. 31	लाभ हानि खाता		20,000
			20,000				20,000

ऋणपत्रों के निर्गमन पर हानि

आप सीख चुके हैं कि एक कंपनी इस शर्त के साथ ऋणपत्रों का निर्गमन कर सकती है कि परिपक्वता पर ऋणपत्रों का भुगतान प्रीमियम पर किया जाएगा। ऋणपत्रों के निर्गमन के समय देय प्रीमियम राशि को ऋणपत्र निर्गमन हानि खाता के नाम में लिखा जाएगा। राशि को उसी प्रकार से अपलिखित किया जाएगा जिस प्रकार ऋणपत्र निर्गमन पर बट्टे की राशि को समाप्त किया जाता है। इसका उदाहरण नीचे दिया गया है :

(i) एक निश्चित अवधि की समाप्ति पर सभी ऋणपत्रों का शोधन :

रोजनामचा प्रविष्टि

ऋणपत्र बट्टा राशि की प्रतिवर्ष समाप्ति :

लाभ-हानि विवरण नाम

    ऋणपत्र निर्गमन पर हानि खाता से

(ऋणपत्र निर्गमन पर हानि का अपलेखन)

यही रोजनामचा प्रविष्टि प्रति वर्ष की जाएगी जब तक कि ऋणपत्र निर्गमन पर सम्पूर्ण हानि अपलिखित नहीं हो जाती।

प्रतिवर्ष अपलिखित की जाने वाली कुल राशि की गणना

$$\text{प्रतिवर्ष हानि की अभिलेखन की राशि} = \frac{\text{ऋणपत्रों के निर्गमन पर कुल हानि}}{\text{कुल वर्ष}}$$

टिप्पणी

उदाहरण 12

एक कंपनी ने 1,000 10% ऋणपत्र ₹ 1,000 प्रति से 1 जनवरी 2006 को निर्गमित किये जिनका भुगतान 5 वर्ष के पश्चात 10% प्रीमियम पर किया जाना था। वर्ष समाप्ति 31 दिसम्बर 2006 के लिए रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए तथा ऋणपत्र निर्गमन पर हानि खाता बनाइए।

हल :

ऋणपत्रों के निर्गमन पर हानि की राशि $= \frac{1{,}000 \times 1{,}000 \times 10}{100} = ₹\,1{,}00{,}000$

राशि जिसे प्रतिवर्ष अपलिखित करना है $= \frac{1{,}00{,}000}{5} = ₹\,20{,}000$

ऋणपत्र निर्गमन पर हानि खाता

तिथि	*विवरण*	*राशि (₹)*	*तिथि*	*विवरण*	*राशि (₹)*
2006			2006		
जन. 1	10% ऋणपत्र खाता	1,00,000	दिस. 31	लाभ–हानि खाता	20,000
			दिस. 31	शेष आ/ले	80,000
		1,00,000			1,00,000
2006					
जन. 1	शेष आ/ला	80,000			

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
2006 दिस. 31	लाभ-हानि विवरण नाम		20,000	
	ऋणपत्र निर्गमन पर हानि खाता से			20,000
	(ऋण निर्गमन पर हानि का लाभ-हानि विवरण में हस्तान्तरण)			

(ii) ऋणपत्रों का किश्तों में शोधन

ऋणपत्रों के निर्गमन पर हानि की प्रतिवर्ष अपलिखित की जाने वाली राशि की गणना उसी प्रकार से की जाएगी जिस प्रकार से ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टे की की जाती है तथा इनका लेखांकन भी उसी के समान किया जाएगा।

उदाहरण 13

उदाहरण 10 में कंपनी ऋणपत्रों का शोधन पांच समान किश्तों में करने का निर्णय लेती है जिसका प्रारम्भ वह प्रथम वर्ष से करना चाहती है। ऋणपत्र निर्गमन पर हानि को समाप्त करने की रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए तथा प्रथम वर्ष के लिए ऋणपत्र के निर्गमन पर हानि के अपलेखन करने की रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए तथा प्रथम वर्ष के लिए ऋणपत्र के निर्गमन पर हानि खाता बनाइयेः

हल

ऋणपत्रों के निर्गमन पर हानि की राशि $= \frac{1{,}000 \times 1{,}000 \times 10}{100} =$ ₹ 1,00,000

प्रति वर्ष अपलेखन की जाने वाली राशि की गणना

वर्ष समाप्ति	*देय राशि (₹)*	*अनुपात*	*प्रतिवर्ष समाप्त की जाने वाली हानि की राशि*
प्रथम	10,00,000	5	$1{,}00{,}000 \times \frac{5}{15} = 33{,}333$
द्वितीय	8,00,000	4	$1{,}00{,}000 \times \frac{4}{15} = 26{,}667$
तृतीय	6,00,000	3	$1{,}00{,}000 \times \frac{3}{15} = 20{,}000$
चतुर्थ	4,00,000	2	$1{,}00{,}000 \times \frac{2}{15} = 13{,}333$
पंचम	2,00,000	1	$1{,}00{,}000 \times \frac{1}{15} = 6{,}667$
		15	

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
2006 दिस. 31	लाभ-हानि विवरण नाम ऋणपत्र निर्गमन हानि खाता से (वर्ष 2006 के लिए ऋणपत्र निर्गमन		33,333	33,333

टिप्पणी

ऋणपत्र निर्गमन पर हानि खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	राशि (₹)	तिथि	विवरण	राशि (₹)
2006			2006		
जन. 1	10% ऋणपत्र खाता	1,00,000	दिस. 31	लाभ-हानि खाता	33,333
			दिस. 31	शेष आ/ले	66,667
		1,00,000			1,00,000
2007					
जन. 1	शेष आ/ला	66,667			

ऋणपत्रों पर ब्याज

यदि आपने समाचार पत्र में किसी कंपनी के ऋणपत्रों के निर्गमन का विज्ञापन देखा है तो आपने ध्यान दिया होगा कि ऋणपत्रों के आगे सदा कुछ प्रतिशत् जुड़ा होता है जैसे कि 9% ऋण पत्र, 12% ऋणपत्र आदि। क्या कभी आपने सोचा है कि इसका क्या अर्थ होता है। यह ब्याज की वह दर होती है जिसके अनुसार ऋणपत्रधारकों को प्रति वर्ष ब्याज का भुगतान किया जायेगा। सामान्यतः कंपनी ऋणपत्रों को ब्याज का भुगतान 6 माह के पश्चात करती है; कंपनी की बहियों में इसकी रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार की जायेगी :

(i) ऋणपत्र ब्याज का भुगतान

ऋणपत्र ब्याज खाता नाम

बैंक खाता से

(........... : से ऋणपत्रों पर छमाही समाप्ति

.... : की दर से ब्याज का भुगतान किया)

(ii) ऋणपत्रों पर ब्याज का लाभ-हानि विवरण में हस्तान्तरण

लाभ-हानि खाता नाम

ऋणपत्र ब्याज खाता से

(ऋणपत्रों पर ब्याज का लाभ हानि खाते में हस्तान्तरण)

उदाहरण 14

एक्स लि. (X Ltd) ने 1 अप्रैल, 2006 को 5,000 9% ऋणपत्र ₹ 1,000 प्रति से निर्गमित किये। ब्याज का भुगतान प्रति छः महीने के बाद किया जाता है। निर्गमन की तिथि से प्रथम छमाही के ब्याज के भुगतान की रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।

टिप्पणी

हल :

6 माह के अन्तराल में देय ब्याज की गणना

$$\text{ब्याज} = \frac{\text{ऋणपत्रों की राशि} \times 9}{100} \times \frac{6}{12} = ₹\ 2{,}25{,}000$$

ऋणपत्र की राशि = 5,000 × ₹ 1,000 = ₹ 50,00,000

छमाही समाप्ति 30 सितम्बर, 2006 के लिए ऋणपत्रों पर ब्याज

$$= \frac{50{,}00{,}000 \times 9}{100} \times \frac{6}{12} = 2{,}25{,}000$$

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
2006 सित. 30	ऋणपत्र ब्याज खाता नाम बैंक खाता से (5,000 9% ऋणपत्र ₹ 1,000 प्रति पर 30 सितम्बर, 2006 को समाप्त छमाही का ब्याज)		2,25,000	2,25,000
2007 मार्च 31	लाभ–हानि विवरण नाम ऋणपत्र ब्याज खाता से (ऋणपत्र पर ब्याज का लाभ हानि खाते में हस्तान्तरण)		2,25,000	2,25,000

पाठगत प्रश्न 30.5

निम्न का उत्तर दीजिए :

(i) ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टे की राशि स्थिति विवरण में क्यों लिखी जाती है?

(ii) 1,000 10% ऋणपत्र का 10% का बट्टे पर निर्गमन किया जिनका शोधन पांच वर्ष के पश्चात होना था। प्रतिवर्ष ऋणपत्र बट्टे की अपलेखन की राशि की गणना कीजिए।

(iii) कम्पनी ने 5,000 10% 100/- प्रति के ऋण पत्र 1 जन. 2014 को जारी किए। ब्याज प्रतिवर्ष 30 जून एवं 31 दिसम्बर को भुगतान किया जाना है। 2015 में ऋण पत्र धारक को दिए जाने वाले ब्याज की गणना कीजिए।

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

- ऋणपत्र ऋण राशि की एक इकाई होती है जिसको कंपनी के ऋणदाता को निर्गमित किया जाता है। ऋणपत्रों में ऋणपत्र स्टाक, बांड या अन्य प्रतिभूतियाँ सम्मिलित होती हैं चाहे उनका कंपनी की सम्पत्ति पर अधिकार है अथवा नहीं।

  ऋणपत्रों को निम्न के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है :

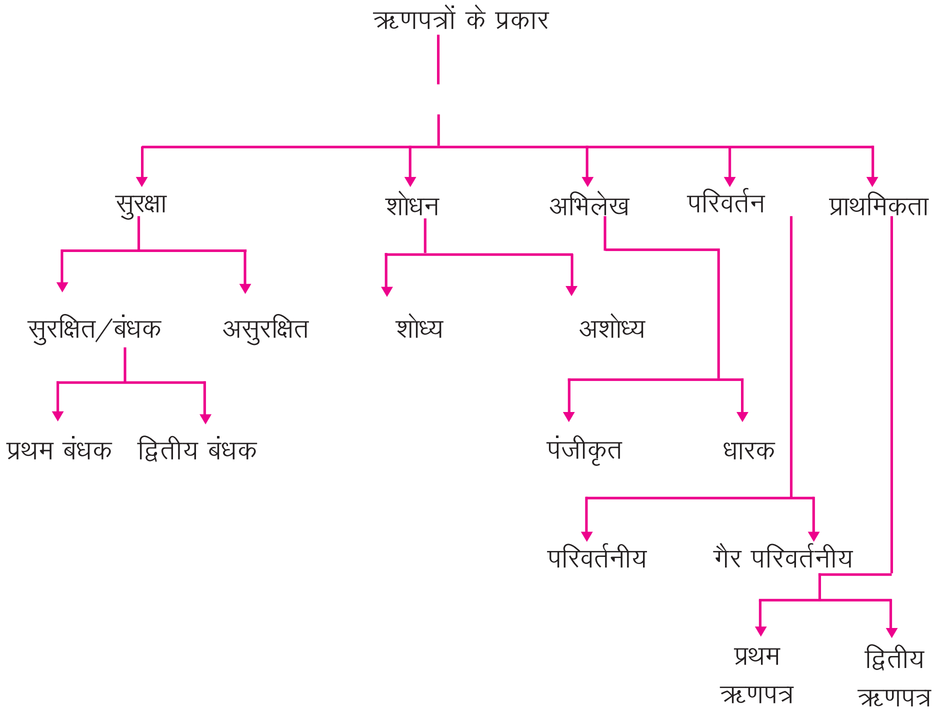

- ऋणपत्रों का निर्गमन : ऋणपत्र नकद सममूल्य पर, रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के रूप में, सह प्रतिभूति के रूप में जारी किये जा सकते हैं। ऋणपत्र अधि-अभिदान पर माने जायेंगे यदि कम्पनी के पास उसके द्वारा प्रस्तावित अभिदान से अधिक के लिए आवेदन आते हैं।

  ऋणपत्रों को प्रीमियम, बट्टे पर एवं रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के रूप में निर्गमित किये जा सकते है।

- ऋणपत्रों को शोधन के सम्बन्ध में जुड़ी निम्न शर्तों के साथ निर्गमित किया जा सकता है।
  - सममूल्य पर निर्गमन, सममूल्य पर शोधन
  - बट्टे पर निर्गमन, सममूल्य पर शोधन
  - प्रीमियम पर निर्गमन, सममूल्य पर शोधन

- ⏭ सममूल्य पर निर्गमन, प्रीमियम पर शोधन
- ⏭ बट्टे पर निर्गमन, प्रीमियम पर शेधन

- ऋणपत्रों के सह प्रतिभूति के रूप में निर्गमन का अर्थ है ऋणदात्री संस्था को ऋणपत्रों का मुख्य प्रतिभूति के अतिरिक्त/द्वितीयक प्रतिभूति के रूप में जारी करना।

टिप्पणी

पाठान्त प्रश्न

1. ऋणपत्र क्या होते हैं? विभिन्न प्रकार के ऋणपत्रों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

2. ऋणपत्रों का अधि-अभिदान कब माना जाता है? ऋणपत्रों के अधि-अभिदान की स्थिति में लेखांकन किस प्रकार किया जायेगा?

3. निम्न स्थितियों में क्या लेखांकन होगा?

   (क) ऋणपत्र प्रीमियम पर निर्गमित किये गये

   (ख) ऋणपत्र बट्टे पर निर्गमित किये गये

   (ग) ऋणपत्र रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के स्वरूप निर्गमित किये गये।

4. ऋणपत्रों का सह प्रतिभूति के रूप में निर्गमन का क्या अर्थ है? कम्पनी की लेखा पुस्तकों में इसका लेखांकन किस प्रकार से किया जाता है?

5. ऋणपत्रों के बट्टे पर निर्गमन को समझाइए। कम्पनी की लेखा पुस्तकों में बट्टे की राशि का लेखांकन किस प्रकार से किया जाता है?

6. एम.बी.एस कंपनी लि. ने ₹ 100 के 5,000 9% ऋणपत्र ₹ 20 प्रति ऋणपत्र प्रीमियम पर निर्गमित किये हैं जो इस प्रकार देय है : 60 रु. (प्रीमियम सम्मिलित कर) आवेदन एवं आबंटन पर तथा शेष याचना पर 16,500 ऋणपत्रों के लिये आवेदन प्राप्त हुये। 500 ऋणपत्रों के आवेदन पूरी तरह अस्वीकार कर दिये गये तथा शेष आवेदकों को अनुपात के आधर पर आबंटन किया गया।

   सभी राशि मांग के अनुसार प्राप्त हुई कंपनी की लेखा पुस्तकों में निर्गमन के सम्बन्ध में रोजनामचा प्रविष्टयां कीजिए।

7. न्यू वैन्चरस् लि. ने ₹ 4,95,000 के पुस्तक मूल्य पर अन्य फर्म से एक संयन्त्र क्रय किया। क्रय के प्रतिफल के रूप में 100 रु. के 10% ऋण पत्र जारी किये। यह मान लीजिए कि ऋणपत्रों को निर्गमित किया गया (1) सम मूल्य पर, (2) 10% बट्टे पर, (3) 10% प्रीमियम पर

टिप्पणी

8. एक्स, वाई, जैड लि. ए. बी. सी. लि. के व्यवसाय का, जिसमे ₹ 4,50,000 की परिसम्पत्तियां तथा ₹ 1,50,000 की देयताएं थी, ₹ 4,00,000 में क्रय किया। क्रय के प्रतिफल स्वरूप इसने ₹ 100 के 10% पूर्ण भुगतान प्राप्त ऋणपत्र निर्गमित किए। रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए।

9. गैस्पिंग फर्नीशिंग एण्ड डैकोरेशन लि. ने स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया से ₹ 10,00,000 का सुरक्षित ऋण लिया तथा सह प्रतिभूति स्वरूप 1,500 10% ऋणपत्र ₹ 1,000 प्रति ऋणपत्र निर्गमित किए। कम्पनी की लेखा पुस्तकों में इन ऋणपत्रों का लेखांकन कीजिए।

10. निम्न स्थितियों में ₹ 100 प्रति 10% ऋणपत्रों को निर्गमित करने की रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए :

(क) 4,000 ऋणपत्रों का ₹ 100 प्रति पर निर्गमन तथा ₹ 120 प्रति ऋणपत्र पर शोधन

(ख) 2,000 ऋणपत्रों का ₹ 120 प्रति ऋणपत्र पर निर्गमन तथा ₹ 100 प्रति ऋणपत्र पर शोधन

(ग) 5,000 ऋणपत्रों का ₹ 90 प्रति ऋण पत्र पर निर्गमन तथा ₹ 100 प्रति ऋणपत्र पर शोधन

(घ) 6,000 ऋणपत्रों का ₹ 90 प्रति ऋण पत्र पर निर्गमन तथा ₹ 110 प्रति ऋणपत्र पर शेधन

(ड.) 2,000 ऋणपत्रों का ₹ 100 प्रति ऋणपत्र पर निर्गमन तथा ₹ 100 प्रति ऋणपत्र पर शोधन

11. 1 जनवरी 2002 को एक सीमित कंपनी ने ₹ 10,00,000 मूल्य के ऋणपत्र 6% बट्टे पर निर्गमित किये। ऋणपत्रों का ₹ 2,00,000 के वार्षिक भुगतान से प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को शोधन करना था। बट्टे की राशि का अपलेखन प्रति वर्ष ऋणपत्र की अदत्त राशि के अनुपात में करना था।

कंपनी की खाता बही में ऋणपत्र निर्गमन बट्टा खाता उसके अपलेखन की राशि दिखाइए।

12. हाईराईज बिल्डर्स लि. ने ₹ 100 के ₹ 6,00,000 मूल्य के 10% ऋणपत्र 6% बट्टे पर निर्गमित किये जिनका भुगतान सममूल्यपर दूसरे, तीसरे एवं पाँचवें वर्ष के अन्त में समान अनुपात में होना था। बट्टा राशि के प्रति वर्ष की अपलेखन राशि की गणना कीजिए तथा ऋणपत्र निर्गमन पर बट्टा खाता बनाइए।

13. ए. बी. लि. ने 1 जनवरी, 2006 को ₹ 1,000 प्रति से 1,000 12% ऋणपत्र जारी किये वर्ष समाप्ति 31 दिसम्बर 2006 से मानते हुए रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए कि ब्याज का भुगतान 31 दिसम्बर को वार्षिक किया जाता है तथा 10% कर स्रोत पर काट लिया जाता है।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

30.1 (i) शोध्य; अशोध्य (ii) पंजीकृत; वाहक
(iii) परिवर्तनीय; गैर परिवर्त्तनीय (iv) प्रथम; द्वितीय

30.2 i. (अ) नकद निर्गमन (ब) नकद के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल पर निर्गमन
(स) सह प्रतिभूति के रूप में निर्गमन

ii. (क) आवेदन राशि लौटा दी जाती है
(ख) आवेदन राशि अगली याचनाओं में समायोजित कर दी जाती है।

30.3 I. 3,000

विक्रेता खाता	नाम	3,15,000	
10% ऋण पत्र खाता से			3,00,000
प्रतिभूति प्रीमियम खाता से			15,000

II. (i) बट्टा (ii) प्रीमियम
(iii) नकद के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल
(iv) अन्तर्नियम

30.4 (i) सह प्रतिभूति (ii) ऋण पत्र उचिंत खाता
(iii) परिसम्पत्ति पक्ष (iv) जब ऋणदाता अतिरिक्त जमानत मांगता है

30.5 (i) यह पूँजीगत हानि मानी जाती है
(ii) 10,000 ÷ 5 = ₹ 2000

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

7. निर्गमित ऋणपत्र (i) 4,950, (ii) 5,500 (iii) 4,500

8. ख्याति की राशि ₹ 1,00,000

11. ऋणपत्र बट्टा राशि–अपलेखन प्रथम वर्ष ₹ 20,000 द्वितीय वर्ष ₹ 16,000 तृतीय वर्ष ₹ 12,000 चौथा वर्ष ₹ 8,000 पांचवा वर्ष ₹ 4,000

12. ऋणपत्र बट्टा राशि अपलेखन

प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष ₹ 10,800 तृतीय वर्ष ₹ 7,200 चौथा एवं पाँचवा वर्ष ₹3,600

टिप्पणी

क्रियाकलाप

उन कंपनियों का स्थिति विवरण लें जो अपने कोषों को ऋणपत्रों का निर्गमन करके एकत्र करती हैं। इनका अध्ययन करें प्रत्येक कम्पनी द्वारा निर्गमित किये गये ऋणपत्रों के प्रकार के संबंध में जानकारी एकत्र करें। कम्पनी का नाम लिखें और उचित स्तंभ में √ का निशान लगायें :

कंपनी का नाम	*ऋणपत्रों के प्रकार*				
	परिवर्तनीय	*अपरिवर्तनीय*	*सुरक्षित*	*असुरक्षित*	*सह प्रतिभूति*